अपनी बात

बापू के जीवन का उत्तरार्ध और मुख्यतः उनका अन्तिम क
उज्ज्वल, महत्त्वपूर्ण और अपूर्व रहा है। मेरा यह सौभाग्य रहा
अन्तिम दिनों में उनके चरणों के निकट रह सकी। अन्तिम दि
निकट रहने का सौभाग्य तो मुझे मिला, पर यह नहीं पता था
आँखों मुझे बापू का निर्वाण भी देखना होगा।

के जीवन की अन्तिम एक महीने की डायरी मे अपनी टूटी-फू
नोट कर लिया करती थी। बापू के ये अन्तिम दिन भारतीय इतिहा
अध्याय हैं। इन पृष्ठों मे पाठक भारत की तत्कालीन स्थिति अं
दना, आकुलता को स्पष्ट रूप मे देख सकते हैं।

कोई विदुषी नहीं और न मुझे कोई अनुभव ही है। फिर भी अप
अनुसार अब तक जो कुछ भी टूटी-फूटी भाषा में लिखा है, उसे जन
म से स्वीकार किया है। असल में तो मेरे लेखन में जो कुछ मह
स्कर रहा है, वह सब बापू का ही है। मैंने अपने शब्दों में बापू व
करने का प्रयास किया है।

पूज्य किशोरलाल काका का आभार मानना तो मुझे कृत्रिम लगत
तो मैं हृदयपूर्वक वन्दन करके ही उनका ऋण अदा करूँगी
भाई जोधाणी (सम्पादक—'स्त्री-जीवन') तथा श्री जयन्तीलाल भा
क—'भावनगर-समाचार') का जितना आभार माना जाय, उतन
। उन्होंने अत्यन्त प्रेम और आत्मीयतापूर्वक मेरी संस्मरणात्मक य
प्रकाशित की। मूल प्रेरणा तो श्री किशोरलाल काका की थी ही।

ू ने कहा था कि "मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।" इसलिए इस
भी घटना प्रसंगवश आयी है, उसमें मैंने हर तरह से यह सावधान
कि किसीका नाम आदि न आ पाये। फिर भी इतने लम्बे विवरण म

यदि किसीको कुछ भी दुःख होने जैसी बात लगे या अपने साथ अन्याय होने जैसा मालूम हो, तो वह मुझे क्षमा करे; यह मैं बार-बार विनती करती हूँ।

इसमें मुख्यतः बापू के महाप्रयाण तक का दैनिक विवरण दिया गया है। उसके बाद उनकी अन्तिम विधि का वर्णन और उससे सम्बद्ध अनेक बातें अन्यत्र विस्तृत रूप में प्रकाशित हो चुकी हैं। अतः उनके बारे में विशेष न लिखकर जितना मैंने आँखों देखा, उसे ही संक्षेप में देकर वह झाँकी पूरी की है।

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ मेरी इस डायरी का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कर रहा है, अतः राष्ट्रभाषा-प्रेमी सभी लोगों को अब इसका लाभ मिलेगा। मुझे विश्वास है कि हिन्दीभाषी जनता में इसका समुचित स्वागत होगा।

—लेखिका

अनुक्रम

आजकल इतनी घोर हिंसा चल रही है कि उसमें से अहिंसा प्रकट होने के लिए मेरे जैसे अनेकों के बलिदान की आवश्यकता रह जायगी।

—बापू

सेवक और चित्त-शुद्धि

: १ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

३१-३-'४७

बुखार क्यों आना चाहिए?

आज तो मैं दो दिनों की डायरी पूरी करके यह लिख रही हूँ। तबीयत ठीक है। प्रार्थना से उठकर बापू ने पहला यही सवाल किया :

"देख, बुखार कितना है ? सुबह तो १०० डिग्री रहा। आज दो दिन बाद इतना उतरा। कल तो शाम के ६ बजे से ही सो गयी थी, कब उठी ? यही बताता है कि तू काफी कमजोर हो गयी है। तुझे सोचना चाहिए कि इस तरह बार-बार, महीने-दो महीने मे बुखार क्यों आता है ? यह मुझे तनिक भी अच्छा नहीं लगता। मुझे अभी तुझसे बहुत-बहुत काम लेना है। ईश्वर ने तुझे सेवा-भावना दी है, हृदय दिया है और बुद्धि, प्रेम आदि सभी कुछ दिया है। लेकिन शरीर को न सँभालेगी, तो सब-कुछ व्यर्थ है। यह भी निश्चित समझ ले कि ईश्वरीय वरदान की इस तरह अवहेलना करने से ईश्वर नाराज हुए बगैर नहीं रहेगा। तू दो दिनो तक बुखार मे पड़ी रही, इससे मेरे कितने काम रुक गये ! फिर मुझे चिन्ता भी रहती ही है। इसलिए तू खूब खुश रह, पूरा आराम कर और शरीर से ज्यादा काम मत ले। तुझे दिनभर थोडी-थोड़ी पौष्टिक चीजें भी खानी चाहिए। खूब फल खाया कर। एकबारगी बैठकर खाया नही जाता, इसलिए आवश्यक पोषण नही मिल पाता।

"ध्यान रख, मै तुझ पर बिगड़ नही रहा हूँ। तुझ पर बिगड़ने मे मेरा कोई लाभ नही और तेरा तो है ही नही। यह तो सिर्फ अपना दुख-दर्द सुना रहा हूँ। जब मै कुछ फुरसत पाता हूँ, तो लगता है कि इस बच्ची ने 'बा' की और मेरी सेवा मे अपने कोमल शरीर को सुखा डाला और मै इतना भी नही कर पाता कि तू सोलह साल की लड़की जैसी सशक्त दीखने लगे। मै इतना भी काम का नही रहा, तो फिर हिन्दू-मुसलिम-एकता का महाभारत किस तरह

हल कर सकता हूँ ? तू कल्पना ही नहीं कर सकती कि तेरे १०३ डिग्री बुखार ने मुझे कितना बेचैन कर डाला। इन दो दिनों में तू कितनी कुम्हला गयी ? यह देखकर मुझे कितना दुःख हो रहा है ? अगर मुझे तेरा ही पूरा सहयोग न मिला, तो इतनी बड़ी इकाई बनाने के लिए मैं जो सभी का सहयोग चाह रहा हूँ, वह कहाँ से मिलेगा ? (प्रेम की थपकियाँ लगाकर) तू रोती है, यह मुझे तनिक भी नहीं भाता ! आज तो मुझे दुःख ही हो रहा है। इसलिए देख, अब यह तय कर ले कि तुझे तो तन्दुरुस्त ही रहना है। काम का अधिक लोभ मत रख ! आखिर यह लोभ भी तो पाप ही है न ?"

महादेवभाई की स्मृति

सुबह-सुबह, बापू ने यों तो अत्यन्त प्रेम से, पर पूरी गम्भीरतापूर्वक मुझसे यह बात कही। इस बात को लेकर दिनभर मैं अनमनी ही रही। रात में तो बापू ने मेरी डायरी भी पढ़ने के लिए माँगी। बहुत दिनों बाद उसे पढ़ा। डायरी उन्हें पसंद आयी। हस्ताक्षर भी कर दिये। सारा-का-सारा अक्षरशः ज्यों-का-त्यों लिखा देख एकाएक कह उठे : "अहा ! आज महादेव होता, तो इस तरह अक्षरशः लिखे नोटों को देखकर नाच उठता। महादेव में यह अद्भुत सामर्थ्य थी। वह तुझे इतना अधिक विकसित कर देता कि तू उसका हाथ बँटाने लगती और इस तरह उसके काम का बोझ काफी हल्का हो जाता। आज पग-पग पर महादेव की कमी खटक रही है।...यहाँ...के बीच झगड़ा खड़ा हो गया है। अगर महादेव होता, तो वह तुरत ही शांत हो जाता। उसमें समर्पण-शक्ति तो अद्भुत थी !"

आज दिन में मेरी तबीयत ठीक रही। बापू की मालिश, स्नान, बंगाली पाठ, कताई, भोजन आदि तो नियमानुसार ही चलते हैं। आज मुलाकातों का तॉंता लगा रहा, इसलिए खास कुछ लिखवाया नहीं। सिर्फ तात्यासाहब पर एक नोट लिखवाया। ठक्कर बापा आये थे। उनकी तबीयत भी कमजोर होती जा रही है। जाड़ा इतना तेज पड़ रहा है कि हाथ-पैर ठिठुर जाते हैं। उसके साथ ही मुझे तो बुखार के कारण अन्दर से भी उतना ही जाड़ा लग रहा है।

चित्त-शुद्धि के बिना स्वराज्य कैसा ?

···को लिखते हुए बापू ने लिखवाया : "हमें अंग्रेजो से लड़ना कठिन मालूम पड़ता था। लेकिन आज मैं देखता हूँ, तो वह लड़ाई बहुत ही सरल प्रतीत हो रही थी। किन्तु आज की यह लड़ाई कठिन लग रही है। अंग्रेजो से तो हम, तिल का ताड़ बनाकर, कुछ भी कह सकते थे। लेकिन आज तो हम खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाडी मार रहे हैं। कर्तव्य सामने उपस्थित होने पर उससे भागने लगते है। बिना शुद्धि के स्वराज्य कभी स्थापित नहीं हो सकता। हममें शुद्धि नहीं थी, इसीलिए ऐसा राज्य हम लोगो के हाथ लगा। मेरे विचार से यह स्वराज्य है ही नहीं, 'स्वराज्य' का सच्चा अर्थ यही है कि मानव अपनी शासन-सत्ता के अन्तर्गत स्वयं सरलता से जीये और अपने आस-पास के लोगों को जिला सके।···"

सेवक का आचरण

दोपहर मे सुभद्रा बहन गुप्ता और दूसरी कई बहने आयी थी। उनसे बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "आप लोग निर्वासित कैम्पो मे सामाजिक कार्य करने जाती तो है, लेकिन उन पर आपका कुछ भी प्रभाव पड़ ही नही सकता। कारण आप ये रेशमी कपड़े पहन और अप-टू-डेट बनकर जाती है और वहाँ उपदेश देती है : 'हाथ-कते सादे कपड़े पहनिये, सफाई कीजिये।'···अरे ! ये तो बेचारे गरीब ही है, इन्हे आप क्या उपदेश देगी ? हाँ, आप ही चार बहने इस दिशा मे आगे आये। आप लोगो का बाह्य एवं आन्तरिक जीवन जितना ही सादा और सात्त्विक होगा, उतना ही आपके काम का असर होगा। आप लोग घर से, बॅगले से खा-पीकर, बन-ठनकर इठलाती-बल खाती और हाथ मे पर्स ले मोटर से उतरती है। किन्तु आपके सामने के लोग ऐसे होते है, जिनके पास तन के कपड़े के सिवा दूसरे कपड़े का ही टोटा है और इसी कारण जो नहा भी नही पाते। उन्हे हजारो की कीमत का अपना सारा माल-असबाब छोड़ देना पड़ा है। ऐसे लोगों के पास आप जाती तो है, पर कभी इस पर विचार किया है ? आपको तो समाज मे नाम कमाना है, यही आपकी आन्तरिक इच्छा है। आजकल बहुत-सी बहने सेवा के लिए निकल पड़ी है। इसमे कुछ अपवाद

तो है ही। कितनी ही बहनों ने सचमुच ही समाज-सेवा के निमित्त तन, मन, धन अर्पण कर दिया है। लेकिन वे इनी-गिनी ही है। मै तो ऐसी ही बहनो को चाहता हूँ, जिनके आचरण से ही सामने की बहनो को बिना कहे अपने-आप यह मालूम पड जाय कि हमे यह काम करना ही चाहिए।"

समुद्र की तरह उदार-हृदय बनिये

दोपहर मे कई स्वयसेवक आये थे। उन्हे भी सन्देश देते हुए बापू ने कहा : "क्या आपको चरखे के प्रति श्रद्धा रही है? (यहाँ चरखे से मेरा मतलब रचनात्मक काम से है।) यदि यह चरखा न होता, तो आजादी की लड़ाई भी न हो पाती। मुझे तो सन्देह है कि तब यह स्वराज्य ही हो पाता या नहीं? आप जनता के धन का किस तरह उपयोग करते है, इसका भी विचार करना चाहिए। स्वयसेवक की किसीसे भी दुश्मनी न रहे। हमे जात-पॉत का भेद भूल ही जाना चाहिए। यह सब व्यक्तिगत रूप मे ठीक है, पर सामूहिक रूप मे तो हम सब एक ही मातृभूमि के निवासी है और इस तरह भाई-भाई है। हमे अपना हृदय दरिया की तरह विशाल रखना चाहिए। दरिया मे लोग कितना कूड़ा-करकट फेंकते है? फिर भी उसमे नहाकर हम पवित्र हो जाते हैं। खारा होने पर भी उसकी कितनी ज्यादा जरूरत है, यह कभी सोचा है? अगर हम इस तरह उदार बने, तो अपनी मानवता से दुनियाभर मे दरिया जैसी आवश्यकतावाले महत्त्वपूर्ण देश के नागरिक के नाते ख्याति प्राप्त करेंगे।"

भारत के गॉवों में घूमने की इच्छा

शाम को पट्टनी साहब आये थे। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की थी कि उत्तर-दायी शासन के समय बापू भावनगर पधारें। बापू ने कहा : "यहॉ से निकलना सम्भव ही नहीं। हॉ, 'करो या मरो' इन दोनों मे से एक प्रतिज्ञा पूरी हो जाय, तो भावनगर अवश्य आऊँगा। बहुत वर्षो से काठियावाड़ नहीं गया। मेरी इच्छा है कि यह महाभारत-कार्य सन्तोषजनक रूप मे पूरा हो जाय, तो भारत के गॉव-गॉव मे घूमूँ। इस तरह देशभर घूमकर लोगो के सुख-दुःख जानूँ। लेकिन यह सब आसमानी सुल्तानी की बात है। कौन जानता है कि कल क्या होगा? दिल्ली की हालत तो इतनी बुरी है कि यदि मुझे दिल्ली छोड़नी हो, तो पहले ही

सिंध में जाना है। सिंध जाते समय मैं कोई पासपोर्ट न लूँगा। अपने भाई के घर जाना हो, तो क्या अनुमति की जरूरत होती है!"

पट्टनी साहब मेरे पास भी आये थे और मुझे भी भावनगर आने के लिए कहा। लेकिन मैं कैसे जा सकती हूँ? शाम को तो धीरे-धीरे किसी तरह प्रार्थना मे गयी थी। चलते समय कमजोरी ज्यादा मालूम पड़ती है। जाड़ा तो है ही।

शरणार्थियों की वापसी का प्रश्न

आज के प्रार्थना-प्रवचन मे बापू ने सिंध के हिन्दुओ के लिए कहा : "कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान हो आये हैं। उनका कहना है कि 'अब हिन्दू पाकिस्तान जाना चाहें, तो जा सकते हैं।' पर मैं समझता हूँ कि अभी वापस लौटने का समय नही आया है। अगर वैसा हो, तो आज जो सिन्ध मे रह गये हैं, वे डरकर क्यो यहाँ आना चाह रहे है? या तो सिन्ध मे हिन्दुओ को पूर्ण संरक्षण मिले या उन्हे सही-सलामत ढग से यूनियन मे लाने की व्यवस्था करे! जब तक इन दोनो मे से एक भी नही होता, तब तक भारत-सरकार शान्ति से नही रह सकती, यह निश्चित है। जो लोग जहाँ से आये है, जब तक वही वे वापस न लौट जायें, तब तक औरो की बात तो ठीक, मै स्वयं शान्ति से नही बैठ सकता। सम्भव है कि यहाँ अब थोड़े-बहुत शरणार्थी स्थिर भी हो गये हो। लेकिन उससे क्या? इन लोगो को अपना वासस्थान, घर-बार याद आये बगैर रह कैसे सकता है? पर मै शरणार्थियों को यह सुझाव दे रहा हूँ कि वे प्रामाणिकता के साथ शरीर-परिश्रम करके खायें। इससे उनका दुःख भी कुछ भूल जायगा और वे पापाचार से भी बचे रहेगे।"

सारा जीवन प्रार्थनामय

रेडियो मे बापू का प्रवचन आता है, उस बारे मे ··ने पत्र लिखा है। उसका भी जवाब प्रार्थना मे देते हुए बापू ने कहा : "मै जो कुछ रोज कहता हूँ, वह सारा प्रार्थना का ही एक अंग है। मेरा तो जो कुछ है, सारा भगवान् को समर्पित है। उस व्यक्ति ने भजन और प्रार्थना का रिकार्ड उतरवाने के लिए लिखा है। भजन और प्रार्थना का रिकार्ड जरूरत हो, तो ले सकते हैं। लेकिन भजनो के पीछे इन लड़कियो की भक्ति है। रेडियो पर तो अनेक रागदारियाँ

गायी जाती है। पर उनमे और इन लड़कियो के भजन मे अन्तर है। ये भगवान् को सान्निध्य मे रखकर गाती है, इसीलिए इनका पवित्र प्रभाव पड़ता है।

"जूनागढ और अजमेर के बारे मे मुझे तार मिले है। काठियावाड के जूनागढ मे तो मै वड़ा हुआ और पढ़ा-लिखा भी। मै कवूल करता हूँ कि अजमेर मे भी वहुत बुरी घटना हो गयी है। वहाँ आगजनी और लूटपाट करने मे कोई कसर नही रखी गयी। फिर भी वहाँ से अतिशयोक्ति भरे समाचार प्रकाशित किये जाते है। यह बहुत बुरी बात है। ऐसा न होना चाहिए। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को अपनी-अपनी खामियाँ मिटानी चाहिए। एक-दूसरे के दोष देखने मे किसीका भी लाभ नही है।"

ईसा का स्मरण

रात मे राजकुमारी वहन आयी थीं। आज तो साल का आखिरी दिन है। उनके साथ और भी अंग्रेज आये थे, बापू का आशीर्वाद पाने के लिए। उन सवके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "विश्व मे कोई भी आदमी पूर्ण नही है। धर्म संस्था तो समय के अनुसार ही बनती है। ईसा को हम लोगो ने (मनुष्य-समाज ने) ही वेहाल करके सूली पर चढ़ा दिया। उसी ईसा को आज हम लोग पूजते है। जीवित प्राणी को कीलें ठोकीं और मरने के बाद पूजा''इस इतिहास की हम अनेक शताब्दियो से पुनरावृत्ति ही करते आ रहे है। आजकल तो हम लोग ऐसे हो गये है कि वह चीनी कन्फ्यूशियस कहता है : 'To know what is right and not to do it cowardice.' (सत्य को जानते हुए भी उसके अनुकूल आचरण न करना कायरता है।)" और बापू ने कहा : "स्वतन्त्र धर्म तो सम्पूर्ण ही हो सकता है। हम लोगो ने उसे नही देखा, पर वैसे ईश्वर को भी कहाँ देखा है ? इसीलिए जिसकी मै गत साठ वर्षों से आतुरतापूर्वक रट लगाता आ रहा हूँ, वह आत्मदर्शन मुझे करना है। यह तो नहीं कह सकता कि आज मै उसमे पूर्ण सफल हो गया हूँ। फिर भी यह सच है कि मै उसके नजदीक पहुँच रहा हूँ और मेरी सारी प्रवृत्तियाँ इसी दृष्टि से चल रही है।"

स्वास्थ्य की सावधानी

उनके चले जाने के बाद बापू ने अखवार पढ़े और पैर धोकर, कसरत कर

सोने की तैयारी की। मैने पैर और सिर मे मालिश की। पैर दबाये। अभी बुखार बिलकुल तो उतर नही गया था। सोने के पहले बुखार दिखवाया था। पैर तो मुश्किल से पॉच मिनट ही, मुझे राजी रखने के लिए ही दबवाये और तुरन्त ही सो जाने के लिए कहा। सोते-सोते पुनः मुझसे कहा कि "आज सुबह मैने जो तुझे कहा, उसे तेरी डायरी मे तो पढा। लेकिन जरा गम्भीरता से विचार करना। अभी तो मै इतना ध्यान रखता हूॅ। अगर इतना ध्यान न रखता, तो तू कब की खतम हो गयी होती या किसी बड़े रोग का शिकार होते देर न लगती। वजन गिरने लगे, कमजोरी मालूम पडे, तो तत्काल सावधान हो जाना चाहिए। आज जीवराज भी मुझसे कह रहे थे कि यह लड़की अगर भविष्य मे ध्यान न रखेगी, तो हैरान हो जायगी। बच्ची है और चढता खून है, इसलिए पता नही चल पाता।"

मै तुरन्त सो गयी और ध्यान रखकर स्वस्थ हो जाऊॅगी, यह कहा।···को गीताजी सीख लेनी चाहिए। लेकिन 'नही' कह रहे है। बापू कहते है, तो फिर उसे मेरे पास रहने का मोह छोड़ देना ही होगा। या तो राजकोट जाय या···के पास जाय। यहाॅ रहना और सभी बातो मे हठ पकड़ना कैसे चल सकता है? यहाॅ कौन जबर्दस्ती रखना चाहता है? भाई साहब के साथ भी···के बारे मे बाते हुई। भाई साहब ने मौलाना साहब का वह भाषण सुनाया, जो लखनऊ मे हुआ था। आज तो मुलाकातियो की भीड़ इतनी अधिक रही कि देखते ही थकान मालूम पड़ने लगती थी।

दस बजे सबने सोने की तैयारी की। बापू ने जल्दी उठकर चिट्ठियाॅ नही लिखायी और वे बढ़ गयी है। शायद इसीलिए उन्होने अपने बिस्तर के पास लिखने का सारा सामान रखवा लिया है। ● ● ●

नूतन वर्षाभिनन्दन : २ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद बापू ने पत्र लिखे···
"यहाॅ का मामला मेरी राय से कुछ सुधर नही रहा है। अभी तो यहाॅ बैठा हूॅ।

पता नहीं, क्या हो सकेगा ? पुलिस के डर से ही शहर में शान्ति है। लोगों के हृदय में तो आग भरी है। या तो उस आग में मुझे जलना होगा या उस आग को बुझाना होगा। तीसरा कोई रास्ता अभी तो नहीं दीखता।"

आज अंग्रेजों का नया वर्ष होने के कारण नूतन वर्षाभिनन्दन और क्रिसमस के अनेक कार्ड बापू के पास पहुँचे। लार्ड तथा लेडी माउण्टबैटन की बधाइयाँ भी आयीं। राजकुमारी बहन तो बड़े सबेरे, भोर में ही, प्रणाम करने आयी थीं।

...एक बहन को धीरज बँधाते हुए बापू ने लिखा : "तेरा भाई चला गया ? मुझे तो बीमारी की खबर ही न थी। लेकिन प्रभु ने उसको बीमारी से मुक्त कर दिया, यह भी उसकी दया ही माननी चाहिए। इसी तरह एक दिन मुझे, तुझे और हम सबको जाना है। देश में प्रतिदिन सैकड़ों आदमी मरते होंगे। कितनों ने बेचारे निराधार बच्चे छोड दिये होंगे, तो कितने ही माँ-बाप के लाडले फूल-से बालक मुरझा गये होंगे। तुझे देश की वर्तमान स्थिति का विचार करना चाहिए और इस तरह अपना दुःख हलका करना चाहिए। हमारे अपने दुःख तो स्वार्थ के कारण ही है।"

नियमानुसार बापू टहलने के लिए निकले, तब भी बहुत-से अंग्रेज बापू को नव-वर्ष के निमित्त प्रणाम करने आये थे। एक भाई ने तो बापू की यह कहकर स्तुति की कि "आप साक्षात् भगवान् ईसा ही हैं।" बापू कहने लगे : "मैं ईसा-मसीह तो हूँ ही नहीं, हाँ, उनके पथ पर जाने का मेरा प्रयत्न अवश्य है।"

अभी चाँद बहन की तबीयत ठीक नहीं है। इसलिए डॉ० कर्नल भार्गव को टेलीफोन करके बुलाने के लिए बापू ने कहा।

लौटते समय बापू ने आँखे भी बन्द कर ली थीं। बापू को थकान ज्यादा है।

कड़ाके का जाड़ा होने से आज मालिश देर से की गयी। इस बीच बापू ने 'हरिजन' की तैयारी की।

अहिंसा के रूप में निर्बलता

एक लेख में बापू ने बताया कि "जिसे मैं अहिंसा मान बैठा था, वह वास्तव में सच्ची अहिंसा नहीं थी; बल्कि अहिंसा के नाम पर निरी निर्बलता ही थी।

कहने का मतलब यह कि अहिंसा कभी निष्फल नहीं होती। हाँ, अहिंसक निष्फल अवश्य हो जाते है। किन्तु मैं उतनेभर से रुक नही जाता। 'जगे तभी से सवेरा' के अनुसार मै पिछली भूलों को सुधारकर आगे बढ़ना ही ठीक मानता हूँ। आदमी इसी तरह आगे बढ सकता है।"

दोपहर मे मुझे अस्पताल जाना पड़ा। वहाँ से लौटने पर एकाएक मुझे बुखार चढ़ आया। बुखार खूब जाडा देकर आया और घण्टेभर मे १०४ डिग्री तक पहुँच गया। मुझे इससे उतनी परेशानी नही होती थी, जितनी मेरी बीमारी देख चिन्ता मे पड़ जानेवाले बापू को देखकर होती थी।

देशवासी आपस मे ही भयभीत

पट्टनी साहब आये थे। उनसे बापू ने रोज आने के लिए कहा है, इसलिए वे आये। डेढ़ बजे भोजन के लिए गये। सियाम के थेनेट रोमन के साथ यहाँ फूट पड़नेवाली अमानुषी हिसा के विषय मे बातचीत हुई। उन्होने बापू का अभिनन्दन भी किया कि "आपके परिश्रम से ही भारत आजाद हुआ है। उसका असर सभी देशो पर पड़ा। उससे सभीके हृदय मे आजाद होने की अभिलाषा जगनी ही चाहिए।" बापू ने कहा : "लेकिन मै तो इसका श्रेय ले ही नही सकता। मै इस आजादी को आजादी मानता ही नही। यदि मुझे पहले से ही पता होता कि हमारी यह अहिंसा निष्क्रिय प्रतिकार (पैसिव रेजिस्टेन्स) मात्र था, तो कदाचित् ऐसा परिणाम रुक भी जाता। आज तो इस राजधानी के शहर मे भी लोग निश्चिन्त होकर घूम-फिर नही सकते। अपने भाइयो को देश-बन्धुओ का डर लगता है। तब मै कैसे कह सकता हूँ कि हमारा देश आजादी की खुशी मना रहा है? किसका दोष है, इसमे मै आपको नही घसीटता। फिर भी यह निश्चित है कि यह सब विदेशी सत्ता का ही परिणाम है, यह कहे बगैर रह नही सकता।"

उनके जाने के बाद ज्ञानी करतारसिंहजी और सरदार दिलीपसिंहजी आये। उन्होने पंजाब और कश्मीर की खबरे सुनायी। अभी तो राख से ढँकी आग-सी लग रही है। कब, कहाँ यह ज्वालामुखी फूट पड़ेगा, कहा नही जा सकता।

प्रार्थना-सभा मे बापू ने सर्वप्रथम ईसाई भाइयो का नववर्षाभिनन्दन

किया। आज की प्रार्थना-सभा भी रोज की अपेक्षा बहुत बड़ी रही। बहनो को बैठने के लिए कठिनाई हो रही थी।

बापू ने कहा : "आज ईसाई वर्ष का पहला दिन है। इसलिए मैं सबका नूतन वर्ष पर अभिनन्दन कर रहा हूँ।"

बहनो को बैठने की जगह करने मे सात-आठ मिनट बिगड़ जायँ, तो करोडो के अनेक मिनट बिगड़े, ऐसा माना जाता है। हमारे देश मे ऐसी पद्धति ही नही कि बहनो को हमेशा सरलता से जगह मिल जाय। लेकिन अन्य देशो मे वह है। जिन देशो मे स्त्रियो को सम्मान प्राप्त होता है, वह देश गौरवान्वित माना जाता है। हमारे शास्त्रों में एक सस्कृत श्लोक है कि जहाँ-जहाँ नारी का पूजन होता है, वहाँ-वहाँ सभी देवता निवास करते हैं। फिर अब तो आजादी मिल गयी है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ गयी है।

जो लोग यहाँ आते है, वे केवल राजनैतिक लक्ष्य से ही न आये। प्रार्थना तो आत्मा की खुराक है। जिस तरह खुराक के बगैर शरीर कमजोर होता जाता है, उसी तरह प्रार्थना के बगैर हम लोग दिनोदिन असंस्कारी बनते जायँगे।

हरिजन और शराब-बंदी

आज मुझे आपसे हरिजनो के बारे मे कुछ बातें कहनी है। हाल ही मे उत्तर प्रदेश में एक हरिजन-परिषद् हुई थी। उसमे एक मन्त्री ने उनसे गदे न रहने और व्यसन छोड़ देने के लिए कहा। इस पर एक हरिजन भाई ने उठकर बड़ी हिम्मत के साथ कहा : "हम लोग नगे-उघाड़े घूमेगे, पर गदे न रहेगे। शराब तो जहर से भी खराब है। गरीब लोग काफी मेहनत-मजदूरी करके घर लौटते है। अपनी थकान मिटाने के लिए, साथ ही गरीबी का दुःख न देख सकने के कारण उसे भुलाने के लिए ही ये लोग शराब पीते हैं। लेकिन शराब पीने से शरीर और आत्मा की बेहद दुर्दशा होती है। मेरी चले, तो मैं सरकार से नम्रतापूर्वक यह सूचित करूँ कि आप शराब की सारी दूकाने बन्द करवा दे और उन दूकानो पर इन गरीबो के लिए चोखा, पर कम कीमत का खाने लायक माल रखें। साथ ही वह ऐसे साहित्य का भी विकास करे, जिससे लोगो को कुछ जानने-समझने को मिले। आज एक ओर ऐसे व्यसनो मे, तो दूसरी ओर भद्दे सिनेमा आदि मे पैसे बहाये जा रहे है।

"मैंने खुद देखा है कि गॉववाले कठोर परिश्रम कर शहर मे अपना माल बेचने आते है, तो उनमे एकआध ही कोई ऐसा किसान निकलेगा, जो विना सिनेमा देखे अपने गॉव लौटता हो। मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर हम ऐसा ही करते रहे, तो अपना शरीर और मन स्वस्थ नही रख सकते। काग्रेस के विधान के अनुसार तो सन् १९२० से ही मद्य-निषेध-आन्दोलन शुरू हुआ है। अब तो काग्रेस की सरकार बनी है। इसलिए सर्वप्रथम उसे इस ओर बड़ी ही गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए कि हमने प्रजा के साथ क्या-क्या वायदे किये है ओर कौन-कौन-से सिद्धान्त विधान के विरुद्ध है? उसे ऐसी नापाक आबकारी आय को सर्वथा त्याग ही देना चाहिए। अगर मेरी तूती की आवाज सुनाई दे, तो मै सुनाना चाहता हूँ कि इससे न तो सरकार का नुकसान होगा और न प्रजा का ही। दोनों को परस्पर लाभ ही होगा। फिर प्रजा को सस्कारी बनाने मे कदाचित् सरकार को कुछ घाटा भी उठाना पड़े, तो भी मै मानता हूँ कि आजादी के इस युग मे जनतान्त्रिक सरकार को उतना सहन कर ही लेना चाहिए।"

प्रार्थना के बाद बापू टहलने गये। मै तो तबीयत ठीक न होने के कारण टहल न सकी। टहलते समय बापू के साथ कौन था, यह मै नही जानती।

टहलकर लौटने के बाद बापू ने भाषण लिखा। ···के साथ भीतर-ही भीतर अपार मतभेद चल रहे है। उसका असर चारो ओर है। प्रजा मे तो होगा ही। अगर इसी तरह चला, तो बापू मानते हैं कि एक बार छेद हो जाने पर सारी इमारत चकनाचूर हो जायगी। बापू के हाथ मे ही यह बाजी है। अगर इसमे बापू का प्रयत्न सफल न हुआ, तो यह कुछ और ही रूप पकड़ेगा।

···के साथ घंटेभर से ऊपर बातचीत की। कश्मीर के लिए बापू बेचैन है।

···को लिखते हुए उसके पॉच पन्ने के लंबे पत्र पर बापू ने सूचित किया कि "अन्ध अनुकरण भी बुद्धि का लकवा है। क्या कभी बुरी वस्तु का भी अनुकरण या माप किया जा सकता है? याने हिन्दुस्तान ने कितने मुसलमान मारे या पाकिस्तान ने कितने हिन्दुओ का सफाया किया, इस झमेले मे पड़ना अपने ओछेपन का नग्न प्रदर्शन ही है। भगवान् सबको सन्मति दे। आज तो आखिर इस प्रार्थना के बल पर ही मै जी रहा हूँ।"

साढ़े नौ बजे बापू उठे। व्यायाम कर बिस्तर पर लेटने के पहले मेरा बुखार

देखा गया—१०१'६ था। ये सारी बातें और वातावरण को जान सकने के लिए मैं बिस्तर पर लेटी नहीं रहती थी। इसीलिए बापू नाराज हुए: "ऐसे तो एक महादेव ही थे। अगर बिस्तर पर पड़े रहने की इच्छा न हो, तो बुखार भी न आना चाहिए न? बुखार आते ही उसी समय बिस्तर पर सो जाना धर्म हो जाता है। ऐसा होते हुए भी अगर तू यह लोभ न छोड़ेगी, तो कदाचित् मैं माफ कर दूँ, पर ईश्वर कभी माफ नहीं कर सकता। उसके पास तो सदैव न्याय-तुला रखी ही है। अपने शरीर के उपभोग के बारे में तू इतना लोभ रखेगी, तो इतनी ज्यादा कमजोर हो जायगी कि उसे सूद के साथ चुकाना पड़ेगा। (बहुत दिनों तक सोना पड़ेगा।) महादेव तो तभी बिस्तर पर लेटे, जब कि वे सदा के लिए सो गये।"

बापू ने मुझे पैर नहीं दबाने दिये। इन दिनों महादेवभाई बापू को बहुत ही याद आया करते हैं।···के बीच के संघर्ष में बापू ने कहा कि "आज महादेव की कमी पूरी खटक रही है। यदि वे होते, तो ऐसी स्थिति पैदा ही न होने देते।"···लगभग १० बजे बापू सोये। जाड़ा काफी है।···के सोने के विषय की बात भी मुझसे कही।

● ● ●

हिन्दू-मुसलिम एकता की समस्या : ३ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२-१-'४८

साढ़े तीन बजे नियमानुसार प्रार्थना! दतौन करते ही मुझे टेंपरेचर देखने के लिए कहा। बापू को भी सर्दी हो गयी है। इसीलिए मैं बापू से दूर रहती हूँ, ताकि मेरी सर्दी उन्हें न लग जाय। तब भी अभी सबको एक-के-बाद-एक करके असर हो ही गया है। ठंड भी कड़ाके की चल रही है। सुशीला बहन की आवाज तो बिलकुल बैठ गयी है। चाँद बहन भी बिस्तर के अधीन-सी ही थी। अभी तो हम सबकी तबीयत का यही हाल है।···लेकिन बापू तो स्पष्ट कहते हैं: "हम सच्चे हृदय से राम का नाम लेते हों और प्रकृति के नियमों का पूर्ण रूप से पालन करते हों, तो बाह्य आबोहवा का शरीर पर असर हो ही नहीं सकता। ऋतु भी

प्रकृति ने हमारे हित के लिए ही रची है। प्रकृति की अपार दया है कि वह पृथ्वी के सभी प्राणियों के हितार्थ ही सब कुछ रचती है। लेकिन हम उसे पहचान नही पाते और इसीलिए उसे दोष दिया करते है।" मुझे अभी १००° बुखार रहा—बापू को टाइफाइड का डर लग रहा है। मीरा बहन की सेवा मे थी, इसलिए शायद ऐसा हुआ हो! पर मुझे तो ऐसा नही लगता। प्रार्थना में तो बैठने नहीं दिया, लेटे-लेटे ही सुनने को कहा।

सब अपने-आप दुःखी

प्रार्थना के बाद तो मैं बापू के पास ही सो गयी। इसलिए बाद मे बापू ने क्या-क्या किया, यह नहीं जानती। लेकिन नियमानुसार चिट्ठियाँ पढी और उत्तर लिखे: "आज तो मानव ही मानव से डरते है। अरे, अपने पड़ोसी से डरते है, तब राष्ट्र की बात तो क्या बताऊँ? हम खुद ही अपने-आप जान-बूझकर दुःखी होते हैं। अपने को धोखे मे डालते है। कोई किसीका बुरा कर ही नही सकता। मैं तो मानता हूँ कि मनुष्य के दुःख का कारण मनुष्य ही है। यह राजधानी का शहर होते हुए भी मरा हुआ-सा लगता है। कोई किसीका एतबार नहीं करता। जो शान्ति है, वह तो पुलिस के डर की शान्ति है। क्या बात है कि अहिंसा का स्वराज्य हिंसा से रक्षित माना जाता है? मैं अपने दिल को ढूँढ़ता हूँ। निराशा तो क्या, मगर ईश्वर को मुझे यह भी दिखाना होगा! अब तो करना है या मरना है। देखे, स्थितप्रज्ञ-अवस्था मे और कितनी कमजोरी होगी? ईश्वर का अहसान मानता हूँ कि मुझमे जाग्रति आयी।..."

मनु की बीमारी

"चि० मनु आजकल काफी बीमार हो गयी है। उस लड़की मे शक्ति तो बहुत भरी है, मगर शरीर बहुत नाजुक हो गया है। मै कबूल करता हूँ कि उस लड़की से मैने काफी निष्ठुर बनकर काम लिया, उसीका यह नतीजा है। आखिर बेचारी का शरीर कहाँ तक सहन करे? उसके शरीर से जितना काम लिया, उससे भी ज्यादा उसके मन से लिया है। मगर मुझे इतना जरूर सन्तोष है कि उसने कुछ खोया नही है। लडकी काफी तैयार हो गयी है—अगर अब मै उसका शरीर दुरुस्त कर सका! वह खुद भी अपने स्वास्थ्य के बारे मे काफी लापरवाह

है। मेरी सेवा मे सब कुछ भूल जाती है। तुम चिन्ता मत करना। खैर, मेरे मन मे तो उसके स्वास्थ्य की गहरी चिन्ता है ही। शायद टाइफाइड होगा, ऐसा भी लगता है।

"तुम सब कैसे हो? विहार का मामला कठिन तो है ही। मगर आज तो जो नतीजा देहली का होगा, वही सारे हिन्दुस्तान का होगा।..."

सत्य की पहचान

.. ने "गीता मे कहा है कि ज्ञानशून्य सारा कर्म व्यर्थ है। वह बिलकुल सच है। मुझे तो इसके कई अनुभव आये हैं और बहुतो को भी आये ही होगे। अगर कर्म ज्ञानमय हो जाय, तो उसमे भक्ति तो अपने-आप ही आ मिलती है। इसके लिए आदमी को हमेशा सत्य का आश्रय लेना पड़ता है। अगर सत्य पहचान लिया, तो उसके लिए और कोई भी प्रयत्न बाकी नही रहता। जैसे दर्पण मे हम अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं, चेहरे पर जरा-सा दाग होने पर वह भी दीख पड़ता है, वैसे ही हमें पहले अपना हृदय टटोलना चाहिए। बाद मे ही दूसरे की आलोचना करनी चाहिए। शायद ही कोई सर्वांगपूर्ण होने का दावा कर सके। इसलिए मेरी तुझे नम्र सलाह है कि...के दोष देखने के बदले अपना दोष देखता जा। अगर मेरी सलाह...के गले उतरे, तभी उसका विचार किया जाय। नही तो उसे फेंक दे सकते हैं।"

दूसरा पत्र मेरे बड़े बापूजी को लिखा था: "मैं तो अभी भट्ठी मे पड़ा हूँ। क्या होगा, कहना कठिन है। शायद शीघ्र ही कुछ परिणाम निकले। चि० मनुड़ी (मनु) अत्यन्त दुबली हो गयी है। इस समय उसकी दशा चिन्ताजनक है। इसमें दोष जितना उसका है, उतना ही मेरा भी होगा। मैंने उससे १८-१८ घंटे काम लिया है और उतना ही या उससे भी ज्यादा मानसिक श्रम भी करवाया है। आखिर बेचारी १५-१६ साल की छोकरी ही ठहरी! फिर भी मैं मानता हूँ कि अगर उसके हृदय में राम-नाम अंकित हो जाय, तो उसका शरीर कभी कमजोर नहीं हो सकता। लेकिन इसे मैं कैसे देख सकता हूँ? अभी जब तक मैं उसकी तबीयत ठिकाने नहीं ला पाता, तब तक मुझे चिन्ता तो रहेगी ही। इस यज्ञ में उसका भाग मामूली नहीं है। मेरे निकट असंख्य लड़कियाँ आयीं और

गयीं। उनमें मनुडी की सेवा का हिस्सा उसकी उम्र को देखते हुए शायद सबसे पहला है। अगर मैं उसे अपने पास न बुलाता, तो इस लड़की के साथ अपार अन्याय करने का दोष मुझ पर रहता। अब उसे मैं भली-भाँति पूर्ण स्वस्थ देखूँ, इतना ही बस है।

"अभी यहाँ कब तक रहना होगा, कहा नहीं जा सकता। करना है या मरना है, तो बीच के मार्ग को अवकाश ही नहीं रहता।

"आपकी तबीयत कैसी है? अब खुराक के प्रयोग तो नहीं करते न! बाकी चि० मनुड़ी लिखेगी। इतने बोझ में भी मेरी तबीयत ठीक है, यह ईश्वर की महान् कृपा है।

—बापू के आशीर्वाद।"

बापू ने लिखे हुए पत्र नकल करने के लिए दिये और टहलने चले गये। मुझे लेटे रहने के लिए कहा।

...दिनभर बुखार रहा। काफी कमजोरी मालूम हो रही है। बापू के पास कौन-कौन आया-गया, इसका पता नहीं। रात में चाँद बहन के विवाह के बारे मे बातें चल रही थी। बापू ने तय किया है कि जब तक हिन्दू-मुसलिम एकता नहीं हो जाती, तब तक किसीके विवाह-शादी में नहीं पड़ूँगा। लेकिन देवप्रकाशभाई (नैयर) और चाँद बहन का आग्रह है। इसलिए जब तक एकता नहीं हो जाती, तब तक कदाचित् वे लोग विवाह न भी करें। बापू की भी अजब बलिहारी है! किसीके शादी-विवाह मे—किसीके विवाह-विच्छेद मे—किसी निर्वासित के जीवन मे—तो पण्डितजी और सरदार दादा के राजनैतिक प्रश्नो मे तथा मुझ जैसी की बीमारी मे—ऐसी अनेक समस्याओं को बड़े प्रेम से हल करते है।

वे देवभाई और चाँद बहन को समझाने-बुझाने मे भी काफी समय देते है, ताकि कही उनको यह न लगे कि बापू हमारे नही है। वैसे देखा जाय, तो सचमुच सभीको यह लगता है कि बापू हमारे ही है।

सुशीला बहन तो अमेरिका जाने की तेजी से तैयारी कर रही है। उनकी समस्याओ पर भी बापू उतनी ही चिन्तापूर्वक बारीकी से ध्यान देते है।

आज तो बारिश ही हो रही है। दिन बड़ा ही खराब गया। शाम को

कमलनयनजी आये थे। उन्हे बापू ने खूब हँसाया। प्रार्थना मे जाते समय बारिश के कारण बापू ने नोआखालीवाली हैट पहनी थी। श्रोताओं को इससे आश्चर्य भी हुआ था।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा : "आप सबको यह टोप देखकर आश्चर्य हुआ होगा। लेकिन यह मेरे लिए एक कीमती चीज है। एक तो यह टोप नोआखाली के एक मुसलिम किसान ने मुझे भेंट दिया है और दूसरे, यह छाते की आवश्यकता भी पूरी कर देता है। यह छाते से बहुत सस्ता भी है और एक ग्रामीण हाथ-कारीगरी का नमूना है। इस तरह हम लोग गाँवो मे जाकर ऐसी कितनी ही उपयोगी चीजें पैदा कर सकते है।

"अभी आपने जो भजन सुना ('दर्शन देना प्राण पियारे'), वह प्रातःकाल गाने का है। भक्त भगवान् से दर्शन देने के लिए कैसी अनुनय-विनय कर रहा है ? हम इस तरह अनुनय करनेवाले दुःखी भाइयों की यथाशक्ति मदद करें तो ? ईश्वर कभी नहीं सोता। वह सदा-सर्वदा जागता ही रहता है।

"अभी-अभी इलाहाबाद से मेरे नाम एक पत्र आया है। वे भाई स्पष्ट लिखते है कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को छोड़ दें, तो कदाचित् ही कोई ऐसा मुसलमान निकले, जो हिन्दुस्तान के प्रति पूर्ण वफादार रहे। अगर हम लोगों के बीच लड़ाई घोषित हो जाय, तब तो एक नन्हा-सा बच्चा भी वफादार न रहेगा। इसलिए जैसे बने, वैसे भारत से मुसलमानो को जाने ही देना चाहिए।

"इस भाई को मुझे सूचित करना होगा कि अगर हमारी ऐसी ही भावना रही, तो निश्चय ही हमारा स्वराज्य खतरे मे पड़ जायगा। जब तक हकीकत साबित न हो, तब तक उस पर आक्षेप कर बैठना मानवता नहीं है। कुछ ही दिन पहले लखनऊ मे एक लाख मुसल्मान जुटे थे और उन्होंने कहा था कि हम लोग अपनी जान कुर्बान करके भी देश के प्रति वफादार रहेंगे। क्या ऐसी घोषणा पर विश्वास न रखना एक राष्ट्र के लिए शोभा के लायक माना जा सकता है ? फिर भी मान लीजिये, कोई बेवफा ही निकला, तो उसे गोली मार सकते है। फिर भी यहाँ मे इसका भी स्पष्टीकरण कर देता हूँ कि यह तरीका मेरा नहीं है।

"यदि ऐसी भावना रही, तो कदाचित् सभी देशो मे ये भागनेवाले कायम

रहेंगे। मान लीजिये कि दोनों देशों के बीच लड़ाई घोषित हो जाती है, तो मुझे तो जरा भी जीने की इच्छा नहीं होगी। फिर भी जब तक सरदार [illegible] सम्पूर्ण सत्य और अहिंसा को माननेवाले होंगे, तब तक इन दोनों देशों में कभी लड़ाई का कदम नहीं उठाया जायगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।"

प्रार्थना के बाद पंडितजी आये। कश्मीर की समस्या उनकी तंग हो रही है कि हो सकता है, लड़ाई छिड़ जाय। दूसरी ओर देशी रियासतों को भी अब शीघ्र यूनियन में मिला दिया जायगा। देशी रियासतें क्या करेंगी, कहा नहीं जा सकता। हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर, ये तीनों सूबे कदाचित् भयंकर भविष्य उपस्थित कर दें, तो कोई अचरज नहीं।

शेख साहब अभी तो बहादुरी के साथ काम कर रहे हैं। लेकिन सरदार दादा का मन उनके बारे मे जरा खटक जरूर रहा है। पंडितजी का तो शेख साहब पर अगाध विश्वास है।

और कांग्रेस संस्था में भी रोज-ब-रोज सभी एक-दूसरे पर ऐसे व्यक्तिगत आक्षेप किया करते है, जिससे बहुत दुःख होता है। आखिर ये सारे जहर के घूँट बापू को ही पीने पड़ते हैं।

रात मे करीब १० बजे सोये। सोने के पहले···की मेरे साथ बाते हुईं। बापू कनुभाई को···इस बारे मे लिखनेवाले है। लेकिन···को अच्छा नहीं लगता। अभी कुछ वातावरण अत्यन्त उदासी से भरा रहता है। अगर बापू नाराज हो, तो···को इन लोगो को खूब हैरान होना पड़ेगा।

मुझे देख लेने के बाद बापू सोये। गरम पानी खूब पीने को कहा। वे मुझसे कहते: "तेरे शरीर की कमजोरी मुझे सचमुच चिंता कराती है। लेकिन जैसे बने, वैसे पानी पी, आराम कर और सोना अच्छा न लगे, तो भी आँखें बन्द कर राम का नाम लेती हुई पडी रह। यह तेरा धर्म है, तेरा फर्ज है।···" मुझे तो रोना ही आ गया—एक तो इन सबकी सेवा लेना! इनके उपकार सिर पर चढ़ रहे है और उसका मन मे काफी रंज रहता है। मुझ पर सारे-के-सारे उपकार चढ़ रहे है।

● ● ●

कमलनयनजी आये थे। उन्हें बापू ने खूब हँसाया। प्रार्थना में जाते समय बारिश के कारण बापू ने नोआखालीवाली हैट पहनी थी। श्रोताओं को इससे आश्चर्य भी हुआ था।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा : "आप सबको यह टोप देखकर आश्चर्य हुआ होगा। लेकिन यह मेरे लिए एक कीमती चीज है। एक तो यह टोप नोआखाली के एक मुसलिम किसान ने मुझे भेंट दिया है और दूसरे, यह छाते की आवश्यकता भी पूरी कर देता है। यह छाते से बहुत सस्ता भी है और एक ग्रामीण हाथ-कारीगरी का नमूना है। इस तरह हम लोग गाँवों में जाकर ऐसी कितनी ही उपयोगी चीजें पैदा कर सकते हैं।

"अभी आपने जो भजन सुना ('दर्शन देना प्राण पियारे'), वह प्रातःकाल गाने का है। भक्त भगवान् से दर्शन देने के लिए कैसी अनुनय-विनय कर रहा है ? हम इस तरह अनुनय करनेवाले दुःखी भाइयों की यथाशक्ति मदद करें तो ? ईश्वर कभी नहीं सोता। वह सदा-सर्वदा जागता ही रहता है।

"अभी-अभी इलाहाबाद से मेरे नाम एक पत्र आया है। वे भाई स्पष्ट लिखते हैं कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को छोड़ दें, तो कदाचित् ही कोई ऐसा मुसलमान निकले, जो हिन्दुस्तान के प्रति पूर्ण वफादार रहे। अगर हम लोगों के बीच लड़ाई घोषित हो जाय, तब तो एक नन्हा-सा बच्चा भी वफादार न रहेगा। इसलिए जैसे बने, वैसे भारत से मुसलमानों को जाने ही देना चाहिए।

"इस भाई को मुझे सूचित करना होगा कि अगर हमारी ऐसी ही भावना रही, तो निश्चय ही हमारा स्वराज्य खतरे में पड़ जायगा। जब तक हकीकत साबित न हो, तब तक उस पर आक्षेप कर बैठना मानवता नहीं है। कुछ ही दिन पहले लखनऊ में एक लाख मुसलमान जुटे थे और उन्होंने कहा था कि हम लोग अपनी जान कुर्बान करके भी देश के प्रति वफादार रहेंगे। क्या ऐसी घोषणा पर विश्वास न रखना एक राष्ट्र के लिए शोभा के लायक माना जा सकता है ? फिर भी मान लीजिये, कोई बेवफा ही निकला, तो उसे गोली मार सकते हैं। फिर भी यहाँ मैं इसका भी स्पष्टीकरण कर देता हूँ कि यह तरीका मेरा नहीं है।

"यदि ऐसी भावना रही, तो कदाचित् सभी देशों में ये भागनेवाले कायम

रहेगे। मान लीजिये कि सभी देशो के बीच लड़ाई घोषित हो जाती है, तो मुझे तो जरा भी जीने की इच्छा नही रहेगी। फिर भी जब तक मुट्ठीभर किन्तु सम्पूर्ण सत्य और अहिंसा को माननेवाले लोग हैं, तब तक इन सब देशों के बीच लड़ाई का कदम नही उठाया जायगा, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।"

प्रार्थना के बाद पंडितजी आये। कश्मीर की समस्या इतनी उग्र हो गयी है कि हो सकता है, लड़ाई छिड़ जाय। दूसरी ओर देशी नरेशो को भी अब शीघ्र यूनियन मे मिला दिया जायगा। देशी नरेश क्या करेंगे, कहा नही जा सकता। हैदराबाद, जूनागढ़ और कश्मीर, ये तीनो टुकड़े कदाचित् भयकर भविष्य उपस्थित कर दे, तो कोई अचरज नही।

शेख साहब अभी तो बहादुरी के साथ काम कर रहे है। लेकिन सरदार दादा का मन उनके बारे मे जरा खटक जरूर रहा है। पडितजी का तो शेख साहब पर अगाध विश्वास है।

और काग्रेस संस्था मे भी रोज-ब-रोज सभी एक-दूसरे पर ऐसे व्यक्तिगत आक्षेप किया करते हैं, जिससे बहुत दुःख होता है। आखिर ये सारे जहर के घूँट बापू को ही पीने पड़ते है।

रात मे करीब १० बजे सोये। सोने के पहले···की मेरे साथ बाते हुई। बापू कनुभाई को·· इस बारे मे लिखनेवाले है। लेकिन···को अच्छा नही लगता। अभी कुछ वातावरण अत्यन्त उदासी से भरा रहता है। अगर बापू नाराज हों, तो···को इन लोगो को खूब हैरान होना पड़ेगा।

मुझे देख लेने के बाद बापू सोये। गरम पानी खूब पीने को कहा। वे मुझसे कहते : "तेरे शरीर की कमजोरी मुझे सचमुच चिंता कराती है। लेकिन जैसे बने, वैसे पानी पी, आराम कर और सोना अच्छा न लगे, तो भी ऑखें बन्द कर राम का नाम लेती हुई पड़ी रह। यह तेरा धर्म है, तेरा फर्ज है।···" मुझे तो रोना ही आ गया—एक तो इन सबकी सेवा लेना! इनके उपकार सिर पर चढ़ रहे है और उसका मन मे काफी रज रहता है। मुझ पर सारे-के-सारे उपकार चढ़ रहे है।

❁ ❁ ❁

राष्ट्रभाषा और लिपि का मसला

: ४ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
३-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना ! प्रार्थना से पहले बापू ने मेरी तबीयत देखी। अब तो यह मियादी बुखार-सा लगता है। वैसे उठने-बैठने की तो बापू ने मनाही कर दी है, पर मैं थोड़ा उठ-बैठ लेती हूँ। रात मे आभा भाभी बापू के पास सोयी हुई थी। फिर भी रात दो बजे खुद बापू ने मुझे पानी पिलाया। पता नहीं, किस जन्म का बापू का यह ऋण निकला है !

नोआखाली से'' का पत्र आया है। बापू कहते है : "जब अपने ऊपर बीतती है, तभी हमेशा आदमी को हर बात की समझ आती है। इन दिनो मैं जितना अध्ययन कर रहा हूँ और मनुष्य की जो अन्तिम स्थिति देख रहा हूँ, ऐसी जिन्दगीभर नही देखी। कदाचित् यह सारा समय मेरी बीती हुई जिन्दगी का क्यो नहीं हो सकता ? मैं जिसकी कल्पना तक नहीं कर सकता, ईश्वर मुझे उतना स्पष्ट दर्शन करा रहा है। और वह मुझसे कह रहा है कि तू चेत''यह सारी चेतावनी की लीला है।"

"तुझे पूरी तरह स्वस्थ हो जाना चाहिए। तभी मुझे शाति मिलेगी। तूने अपनी डायरी दो दिनों से मुझे नहीं दी। आज देना। देख तो सही कि'' के जैसी अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ भी आज बरताव करती हैं। यह सारा मेरी आँखो से ओझल नहीं है। लेकिन कल ही मैने प्रार्थना मे कहा था कि 'मैं तो विश्वासी मनुष्य हूँ।' विश्वास रखने मे मानव कुछ भी गमाता नहीं। वह अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है। इसीका नाम है, सच्ची जिन्दगी !"

आज दोपहर मे तो बुखार नार्मल हो गया। बापू बहुत प्रसन्न हुए और अब खूब ध्यान रखने के लिए कहा।

आज के पत्र मे : "मै अब तक राम के नजदीक नही पहुँचा। वहाँ पहुँचने की कोशिश है। अगर वहाँ पहुँच गया, तो मेरी अहिंसा का तेज चारो तरफ फैलेगा।

"यहाँ की हालत बहुत खतरनाक है। कश्मीर के बारे मे माउण्टबैटन

खुद भी काफी प्रयत्न कर रहे है। कुछ भी हो, अब बंगाल और बिहार को जलना न होगा। अगर वहाँ जरा-सी भी गड़बड़ होगी, तो आप मुझे जिंदा नहीं देखेंगे। यह मेरा संदेश सबके पास पहुँचा देना।"

सुबह राजेन्द्र बाबू के साथ की बातचीत के वक्त भी बापू बहुत व्यथित थे। इस ओर··के बीच के संबंध बिगड़ रहे है। उसका असर इतना बुरा हो रहा है कि मानो पाकिस्तान मे इस परिणाम की राह ही न देखी जा रही हो! भले ही माउण्टबैटन प्रयत्नशील हो। लेकिन आखिर अन्दरूनी पारिवारिक बातों में उन्हें इतना अधिक रस-रुचि क्यो लेने देनी चाहिए?

और अब तो मानो इस संस्था की एक-एक ईट खिसकती जाय, वैसे यह निस्तेज बनती जा रही है। बापू कहते है: "यदि मुझे दिल्ली छोड़ दे, तो मैं सारे हिन्दुस्तान की यात्रा ही करना चाह रहा हूँ। हमे अपने पहले दिये हुए वचनों को याद कर उन्हे योग्य आकार (मूर्तरूप) देना होगा या यह कबूल करना होगा कि राज्य करना एक बात है और भाषण करना दूसरी। अगर ऐसी बातो से मन मे दुःख होता ही रहे, तो भी हमे उसे घोषित कर देने मे देश की अधिक सुरक्षा है। कश्मीर की समस्या दिन पर दिन गभीर स्वरूप धारण कर रही है और यदि हम लोग यूनो मे जायँ, तो समझ ले कि हमारी इज्जत मिट्टी मे मिल गयी! सर्वप्रथम तो—अगर आपका स्वास्थ्य साथ दे, तो मै यह अवश्य चाहता हूँ कि—आप देश के कोने-कोने मे घूमे और सरकार की दृष्टि तटस्थ रूप से प्रजा को समझाये। अगर कांग्रेस-अध्यक्ष का पद 'तटस्थ' होगा, तो सरकार और प्रजा, दोनो का लाभ होगा, यह मै मानता हूँ।"

जाड़ा अधिक होने के कारण आज बापू मालिश के लिए देर से गये। चिट्ठियाँ देखी।··का खूब गरमागरम पत्र है। बापू ने उसे लिखा: "···तेरा तीखा पत्र मिला। तू इतना अधिक गरम हो जाय, क्या यह उचित है? लोहा गरम हो जाने पर उसमे से चिनगारियाँ निकलने लगती है। लेकिन हथौड़ा चाहे जैसा पीटिये, वह लाल होकर जलता नही। अगर तू हथौड़े जैसी बन जाय, तो तेरे इच्छानुसार सब कुछ होकर रहेगा। यो अगर दरिया मे ही आग लग जाय, तो किसे क्या कहा जाय?"

आश्रम आत्मनिर्भर हों

"मुझे नहीं लगता कि मैं यहाँ से निकल सकूँगा। करना है या मरना है। आप समझते होंगे कि दिल्ली में शान्ति है। मगर वह हृदय की नहीं, शस्त्र की है। मैं भारत की आवाज की प्रतीक्षा में हूँ। मेरे पास आजकल तीन-चार लड़कियाँ तो सेवा में हैं ही। बिरला के इतने बड़े महल में पड़ा हूँ, मगर मुझे जरा भी चैन नहीं। लड़कियाँ तो काफी सेवा कर रही हैं। आपकी सेवा की जरूरत अभी तो महसूस नहीं कर रहा हूँ। हाँ, सब लड़कियाँ चाहे जब मुझसे इजाजत लेकर जा सकती है। केवल मनु ही इस यज्ञ की भागीदार है। और सब लड़कियाँ तो इत्तफाक से आ गयी हैं, वैसे ही जा भी सकती हैं। मुझे कबूल करना पड़ेगा कि इस यज्ञ में मनु की सेवा अजीब ही बनी रही। वह केवल अपने शरीर की तरफ से काफी बे-खबर रहती है। आप सब कैसे हैं? खादी-प्रतिष्ठान का क्या हाल है? आश्रम में कितनी संख्या है? आश्रमों को दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। मैं तो सेवाग्राम के लिए भी इसी निश्चय पर पहुँचा हूँ कि या तो आश्रम अपने पैरों पर खड़ा रहे या उसे बंद ही कर दिया जाय। आजकल तो आश्रम पिंजरापोल-सा बन गया है।

"···जो निश्चय करना हो, वह खूब विचारपूर्वक करना चाहिए। भरी दरिया में गिर पड़ने पर यदि कोई दूसरा विचार करे, तो उसका एक ही परिणाम होगा और वह होगा, डूब जाना!"

बापू के कई पत्र तो साढ़े तीन लाइनों के होते हैं। लेकिन कभी-कभी तो काव्यमय भी हुआ करते हैं।

मालिश और स्नान में एक घण्टा बीत गया। नहाते समय मैंने हजामत की। मुझसे कहने लगे: "अब अगर मैं जीवन का कोई अलग ही प्रकरण शुरू करूँ, तो तू आश्चर्य मत करना। इन सबमें तू तो रहेगी ही, पर अब और लोगों को यहाँ नहीं चाहता। किसी-न-किसी बहाने एक-एक करके सभी नोआखाली छोड़ यहाँ चले आते हैं। यह सब ठीक नहीं मालूम देता।···को भी विचारपूर्वक··· को लिख देना चाहिए।···भी अपने विचारों पर दृढ़ नहीं और फिसलती ही जा रही है। अगर मैं यहाँ मर जाऊँ, तो और कुछ करना बाकी ही नहीं रह जाता। लेकिन अगर कुछ शान्ति हो जाय, तो मेरा नया ही जीवन शुरू होगा।

इस बार की कसौटी कुछ अधिक विपत्तिमय होगी। अपनी अन्तरात्मा की पुकार सुनने के लिए कान लगाये बैठा हूँ। उसके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आभा और सुशीला तो जरा भी विचलित नहीं हो सकतीं। इस विषय का इस सर्दी-गर्मी से कोई सम्बन्ध नहीं। आज तक जो भाई-बहन तेरे ऊपर टूट पड़े—१६-१७ साल की मेरी नन्हीं पौत्री पर अनुचित आक्षेप किये—वे ही तेरी पूजा करेंगे। मेरे पास दंभ दिखानेवाले खुद ही अपने-आप दूर हट जायँगे। अहिंसा और प्रेम से ही दंभियों को हटाया जा सकता है। इस विषय में सभी को आत्म-परीक्षण करना चाहिए। तभी माना जायगा कि इन लोगों ने दुनिया की बहुत बड़ी सेवा की। अगर मैं तेरी पवित्र और सच्ची माता होऊँ, तो मुँह से राम का नाम रटते हुए, स्वाभाविकता के साथ तुझसे बातें करते-करते तेरी गोद में सो जाऊँगा।

"लेकिन तू बीमार रहा करती है, यह मुझे बड़ा ही दुःखदायी लगता है। यह सच है कि तू अपनी शक्ति से अधिक टिक सकी है। तू सादी, सरल और भोली है, इसीलिए ईश्वर तुझे यह हिम्मत दे रहा है। लेकिन दिल्ली की परिस्थिति दिन-दिन बिगड़ती जा रही है। मन्त्रिमण्डल में एकमत नहीं है। ये सारी बातें तुझे इसीलिए कह रहा हूँ कि अब कदाचित् मैं देह से तेरे पास न भी रहूँ—आत्मा से तो हूँ ही—तो पीछे से तुझे परेशानी न हो। तेरी प्रकृति बहुत ही कमजोर हो गयी है, इसकी मुझे अत्यधिक उलझन है। अगर यह तू समझ सके, तो मैं समझाना चाहता हूँ। तू आज की इन बातों को एक कागज पर लिखकर मुझे दे देना। मैं उसे सुधारकर तुझे दे दूँगा, ताकि तू उसे अपने भाई को भेज दे। आजकल तेरी डायरी भी नियमित देख नहीं पाता, यह मुझे अच्छा नहीं लगता।"

यह बात सुनकर मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। बापू बड़े प्रेम से थपकियाँ देकर कहने लगे: "क्या इस तरह कभी घबड़ाने से काम चल सकता है?" मैंने पूछा: "क्या आप उपवास करने की सोच रहे हैं?"

बापू: "अभी तो किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा, पर निर्णय तो करना ही पड़ेगा। तू घबरा न जाय, इसीलिए अभी से तुझे तैयार करने का मेरा यह प्रयत्न है।"

नहाकर बाहर निकले, तो पण्डितजी आये हुए थे। उन्हे भी बापू ने मेरे साथ की गयी बातो का थोड़ा सार बतलाया। भोजन के समय स्थानीय मौलाना लोग आये। उनसे भी बापू ने कहा : "अब आप लोगो के धीरज की कसौटी है। देखे, खुदा मुझसे क्या करवाता है?"

चूँकि बापू ने मुझसे कहा था कि "मेरी कही हुई बातो की किसीसे चर्चा मत करना", इसीलिए मैने किसीको कुछ नहीं बताया। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि बापू कहीं आमरण अनशन तो नहीं कर देगे? कलकत्ते मे भी बापू ने ऐसा ही किया था।

आराम के बाद राष्ट्रभाषा सबंधी कई प्रश्नो के उत्तर लिखते हुए उन्होने बतलाया :

राष्ट्रभाषा का प्रश्न

प्रश्न : राष्ट्रभाषा को 'हिन्दी' कहिये या 'हिन्दुस्तानी' यह कोई खास विवाद का सवाल नहीं है। रोज की बातचीत मे तो चालू हिन्दुस्तानी काम मे आयेगी ही। ऊँचा साहित्य, विज्ञान और ऐसे ही अन्य विषयो के लिए नये शब्दो का कोष सस्कृत भाषा से ही बनेगा, इससे भी शायद ही कोई इनकार करे! यह बात साफ-साफ सबको बतलायी जाय, तो क्या हर्ज है?

उत्तर : "इस सवाल का पहला हिस्सा तो ठीक है। अगर एक नाम के सभी एक ही मानी करे, तो झझट रहता ही नहीं। झगड़ा नाम का नहीं, काम का है। काम एक हो, तो अनेक नामो का विरोध वितण्डावाद होगा।

"ऊँचे साहित्य और विज्ञान के शब्द सस्कृत से ही क्यो लिये जायँ? इस बारे मे किसी तरह का आग्रह होना ही नही चाहिए। एक छोटी-सी समिति ऐसे शब्दो का कोष बना सकती है। उसमे चालू शब्द इकट्ठे किये जायँ।

"मान लीजिये, एक अग्रेजी शब्द हिन्दुस्तानी मे पड़ा है। उसे निकालकर हम क्यो खास सस्कृत शब्द वहाँ बनाये? अगर अग्रेजी का चालू शब्द ले लेते है, तो उर्दू का क्यो नहीं? 'कुर्सी' शब्द के लिए 'चतुष्पाद-पीठिका' शब्द ले या बे रोक-टोक 'कुर्सी'? ऐसी मिसाले और भी निकल सकती है?

लिपि की समस्या

"जो मसला है, वह लिपि का है। दो लिपियाँ चालू रहते हुए भी यह

सवाल—और ठीक सवाल—सभी करते हैं कि दो लिपियो का चलाना राष्ट्र का काम चलाने मे बेकार बोझ साबित होगा। तब तो दो लिपियो के बदले एक लिपि, जो सभी प्रान्तों के लिए सहज और आसान हो, क्यो न मानी जाय?

"दो लिपियाँ मानने के मानी भी मैं समझना चाहता हूँ। क्या उसका यह मतलब होगा कि केन्द्रीय सरकार के सारे विज्ञापन दोनो लिपियो मे छपेंगे? फिर तार-घर वगैरह से जो तार आदि निकलेंगे, वे तो किसी एक ही लिपि में लिखे जायेंगे। दूसरी लिपि का उपयोग इन जगहो मे किस तरह हो सकेगा, यह भी मैं जानना चाहता हूँ। मै यह मानने के लिए तैयार नही कि दूसरी लिपि मुसलमान भाइयो को खुश करने के लिए रखी गयी है। हमें तो यह देखना चाहिए कि किसी पर भी अन्याय किये बिना राष्ट्र का भला किस लिपि के चलने में होगा। 'नागरी' के चलने से मुसलमान भाइयो का नुकसान होगा, ऐसा मानना भी ठीक नहीं है।

"जहाँ तक मैं समझा हूँ, दोनो लिपियो का चलन थोड़े अर्से के लिए ही जरूरी है, ताकि वे लोग, जो इन लिपियो के जानकार नही है, धीरे-धीरे जान जायँ। आखिर मे सभी एक लिपि अपना लेंगे, इसमे सन्देह ही क्या है?

"दो लिपियो को रखते हुए भी आखिर मे जो आसान होगी, वही चलेगी। बात इतनी ही है कि उर्दू का बहिष्कार न हो, इस बहिष्कार मे द्वेष है, इस झगड़े की जड़ मे द्वेष था, आज वह बढ़ गया है। ऐसे मौके पर हम, जो एक हिन्दुस्तान चाहते हैं और वह हथियारो की लडाई से नही, उनका फर्ज होगा कि दोनो लिपियो को जगह दे। हम यह भी न भूले कि बहुतेरे ऐसे हिन्दू, सिख भी पड़े हैं, जो नागरी लिपि जानते ही नही। मुझे इसका तजुर्बा हमेशा होता है।

"करोड़ो को दोनो लिपियाँ सीखने की बात नही है। जिन्हे अपने सूबे से बाहर काम करना है, उन्हे वे सीखनी चाहिए। केन्द्र के दफ्तर मे भी सब कुछ दोनो लिपियो मे छापने की बात नहीं है। विज्ञापन सबके लिए हो, उन्हे दोनो लिपियो मे छापना जरूरी है। जब दोनो कौम के बीच जहर फैल गया है, तब उर्दू लिपि का बहिष्कार लोक-वाद का विरोध ही बताता है। तार आदि जब रोमन लिपि मे नही लिखे जायँगे, तब शायद उर्दू या नागरी लिपि मे लिखे जायँगे। इसे मै छोटा सवाल मानता हूँ। जब हम अंग्रेजी और रोमन लिपि का मोह छोड़ेंगे,

तब हमारा दिल और दिमाग ऐसा साफ हो जायगा कि हम इस झगड़े के लिए शरमायेंगे।

"किसीको राजी रखने के लिए कोई बेजा काम हम कभी न करें। पर राजी रखना हर हालत मे गुनाह नही है। एक ही लिपि को सब खुशी से अपनायें, तो क्या अच्छा नही है? मगर ऐसा होते हुए भी दोनो लिपियो का चलना आज जरूरी है।"

इसके सिवा बापू का भोजन, कातना, मालिश वगैरह नियमानुसार चलता है। दोपहर को राजकुमारी बहन आयी थी। उसके साथ भी कश्मीर सम्बन्धी बातें हुईं। कौन जानता है कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच लड़ाई छिड़ जाय। बापू कहते हैं: "मै तो यह देखने के लिए जीता ही नही रहूँगा। क्या आजादी का परिणाम इतना भयानक और करुण लिखा होगा?"

आज तो दिनभर जो-जो लोग आये, सबसे बापू ने एक ही बात कही कि "अब दिल्ली मे मेरे निवास का परिणाम शीघ्र ही प्रकट होगा।" सुबह मुझसे भी यही बात कही थी। मुझे तो ऐसा लगता है कि···बापू तो कौमी झगड़े के बजाय कौटुंबिक (कांग्रेस के अन्दर नेताओ के एक-दूसरे के प्रति अविश्वास से) करुण परिस्थिति से काफी बेचैन हो उठे है और कही अनशन ही न कर बैठें। इस समय अनशन करना बापू के लिए भयानक सिद्ध होगा। क्योंकि कलकत्ते के अनशन को अभी कुल छह महीने ही हुए है। उस समय की क्षीण हुई शक्ति अभी उनमे कहाँ आ पायी है?

शाम को भाई साहब से भी मैने यह बात कही। आज की प्रार्थना 'वावेल-कैम्प' मे थी। इस कैम्प मे सुचेता दीदी की बडी ही अच्छी व्यवस्था थी। कैम्प मे रहनेवाले लोग भी कुछ समझदार थे। दुःख रहने के बावजूद वे हँसते हुए बहादुरी के साथ उसका सामना कर रहे है।

आज की प्रार्थना-सभा में बापू ने कहा: "मुझे ऐसी छावनी मे आकर आप लोगो के साथ बातें करने का अवसर मिला, इसे मैं अपना सौभाग्य ही मानता हूँ। बहुत दिनो से आप लोगो के बीच आने की अपनी इच्छा आज पूरी कर सका हूँ। यहाँ उपस्थित सभी भाई-बहनो से, जो हजारो की संख्या मे अपना सर्वस्व खोकर आये हुए है, प्रार्थना करता हूँ कि आप इन लड़कियो द्वारा प्रभु

से की गयी मेरी इस प्रार्थना में हृदय से अपना स्वर मिलाइये कि भगवन् ! आप पुनः हमारे देश में एकता और शान्ति स्थापित कर हमें सन्मति दें।

"मानव के पास कितना ही धन या सुख-सामग्री रहे, फिर भी जब तक आन्तरिक शान्ति नहीं होती, तब तक कभी बरकत नहीं आती। सभी धर्मों में सत्य को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। अगर वह मिल जाय, तो मानव चाहे जहाँ रहे, अपार सुख का अनुभव करता है। उसे भविष्य की चिन्ता नहीं रहती। भावी बतलानेवाला एकमात्र परमेश्वर ही है। श्री रामचन्द्रजी जैसों को भी पता न था कि अपने राज्यारोहण के दिन वनारोहण करना पड़ेगा। राजकीय पोशाक के बदले वल्कल धारण करने पड़ेंगे। किन्तु रामचन्द्रजी के मन में बाह्य सुख से ही शान्ति नहीं थी। वे तो अपने हृदय में ही शान्ति का अनुभव करते रहे। इसलिए उनके मन ने वन या राजगद्दी, दोनों को समान ही माना। हम हिन्दू, सिख और हममें से हरएक को आयी हुई विपत्ति में शान्ति खोजनी चाहिए। अगर हम रामचन्द्रजी का आदर्श अपने जीवन में उतार लें, तो ऐसे पागलपन के शिकार कभी न होंगे।

"सबसे पहले मुझे यह बताया गया कि सभी कैम्पों की अपेक्षा इस कैम्प में रहनेवाले भाई-बहन अधिक सुव्यवस्थित हैं। मैं यह देख भी सकता हूँ। कैम्प-जीवन का अनुभव भी एक प्रकार का वैभव है। मैं तो कैम्पों में काफी रहा हूँ और यदि यह कहूँ कि वहाँ किस तरह रहना चाहिए—इस बारे में मैं पूर्ण निष्णात हूँ, तो यह अतिशयोक्ति न होगी। फिर भी आपको यहाँ काफी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं, यह मैं भुला नहीं सकता। आपमें से बहुतों ने धूप-छाँह तक नहीं देखी है। फिर भी अगर आप इस आयी हुई विपत्ति को सम्पत्ति समझकर मौके के अनुरूप बन जायँ, तो आप अपने वे सुखमय दिन भूल जायँगे। सन् १८९९ में बोअर-युद्ध शुरू होने पर अंग्रेज ट्रान्सवाल छोड़ नेटाल चले गये थे। लेकिन उनको मामूली काम से लेकर सब कुछ आता था और वहाँ सभी लोग समान रूप से रहते थे। एक अंग्रेज इंजीनियर तो मेरे साथ बढ़ई-गिरी भी करता था।

"सारांश, इस कैम्प में रहनेवाले सभी भाई-बहन समान दर्जे से रहें और इसे ऐसा आदर्श कैम्प बना दें कि दुनियाभर के और हिन्दुस्तान के लोग खास

रूप में इसे देखने को आये। अभी आपने 'ईशावास्य' का श्लोक सुना होगा। उस मंत्र का अर्थ भी यही है कि अपने पास जो कुछ हो, वह सब भगवान् को अर्पण कर अपने लिए जितना आवश्यक हो, उतना ही ले। अगर हम इस मन्त्र के अनुसार बरतें, तो न केवल इस कैम्प को, बल्कि जहाँ शरणार्थियों की बदनामी हो रही है, उस दिल्ली शहर को भी नवीन तेज प्राप्त होगा और दिल्ली द्वारा हिन्दुस्तानभर के आतंकग्रस्त क्षेत्रों में सच्चा और आन्तरिक सुख प्रकट होगा।"

प्रवचन के बाद कई भाई-बहनों ने हस्ताक्षर लिये। कितनी ही जर्जर वृद्धाएँ और बूढ़े बापू के चरण-स्पर्श के लिए अधीर हो रहे थे। इस छावनी के भोजन आदि के बारे में भी हमें बतलाया गया।

बापू शरणार्थी हिन्दुओं के बहुत-से कैम्पों में हो आये है। उनकी अपेक्षा इस कैम्प में इतने दुःखों के बावजूद, शान्ति और भक्ति अत्यधिक दीख पड़ी। कैम्प के व्यवस्थापकों के प्रति भी शरणार्थियों के मन में अपार सम्मान का भाव देखा गया।

रास्ते में बापू कहने लगे : "हर कैम्प में भक्त और सुव्यवस्थित लोग रहते ही हैं। लेकिन अत्यधिक दुःख झेलकर आने पर और कैम्प के व्यवस्थापक की ओर से भी सन्तोष न हो, तो ये नाराज होंगे ही। यहाँ के व्यवस्थापक ही भावुक है और वे शरणार्थियों के दुःखों में पूरा साथ देते है। व्यवस्थापिका बहन भी कितनी सादी थी, जब कि दूसरे के कैम्पों में इसका अभाव था। इन दुःखी शरणार्थियों के पास जाना हो, तो संचालक को अत्यन्त मर्यादित, संयत होकर रहना चाहिए। दूसरे कैम्पों में संचालिका बहनों की वेश-भूषा देखकर ही मैं तो आश्चर्यचकित हो जाता था। उससे उनका प्रभाव पड़ ही नहीं सकता।"

वहाँ से आने के बाद बापू टहले। नियमानुसार पंडितजी आये। बापू ने प्रार्थना-प्रवचन लिख लिया है। अभी साढे नौ बजे है। थोड़ी ही देर में पंडितजी उठने की तैयारी में है। ऐसा लगता है कि सभीको कश्मीर का प्रश्न व्याकुल कर रहा है।

● ● ●

कश्मीर की समस्या : ५ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
४-१-'४८

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना ! दतौन करते समय···के साथ बातें।···के विषय में कनुभाई का पत्र। अब सबको कदाचित् पता लगेगा। नारणदास काका को भी सूचित करने के लिए कहा। देखें, आगे क्या होता है ! अभी तो यहाँ पुनः सभी जुट गये है, इसलिए बापू चाहते हैं कि खुद ही सप्ताहभर के अन्दर उचित निर्णय कर ले। वे ऐसा ही सोच रहे है। दतौन करते समय उन्होंने कहा : "अभी तो हृदय में मथन चल रहा है। ठीक-ठीक प्रकाश नही मिल पाया है। फिर भी प्रकाश के मार्ग पर हूँ, ऐसा अवश्य मालूम पड़ रहा है। अब तू जरा भी बीमार न पड़े, तो बाकी सब-कुछ मै हल कर लूँगा। शरीर से बुखार को हटाना ही चाहिए।"

देवभाई (देवप्रकाशभाई नैयर) और चॉद बहन का वातावरण खूब डॉवाडोल है। सुशीला बहन अमेरिका जाने की तैयारी में व्यस्त हैं। उनकी स्थिति भी अजीब है। बापू अभी ऐसी एक-न-एक बात कहते है, जिससे लगता है कि कदाचित् वे बिरला-भवन छोड़ किसी मुसलिम बस्ती मे चले जायॅ और वही अकेले रहने का निर्णय कर ले। साफ-साफ कुछ समझ मे नही आता। सबसे ज्यादा अपने ऊपर ईश्वर की कृपा मानती हूँ। वे जिनसे बातें करते हैं—पडितजी और राजेन्द्र बाबू जैसो के साथ भी—उनसे यही कहते है कि "मै कुछ सोच रहा हूँ। उसमे सिर्फ मनु ही साथ रहेगी, और किसीकी जरूरत नही। आखिर देखे क्या होता है ?"

प्रार्थना के बाद छात्रावासो में हरिजन-प्रवेश के बारे मे परीक्षितलाल भाई का पत्र पढ़ा। उसके नीचे नोट लिख दिया : "इसमे इतना बढ़ा देना चाहिए कि अगर छात्र सच्चे होगे, तो कोई उन्हे रोक नही सकता। इस जमाने में छात्रो के आगे संचालको की चल नही सकती—उसमे भी अगर छात्रो के पक्ष मे धर्म हो और संचालक अधर्म का आचरण करते हों, तब !···लोगो को भोजन

से मतलब है, दूसरे झगड़ों से नहीं। चाहे जो हो, छात्रावासों में हरिजन हक से और आदरपूर्वक दाखिल होने ही चाहिए।"

एक बालिका को लिखा : "बालकों को पेन्सिल से कभी नहीं लिखना चाहिए। उसी तरह फाउण्टेनपेन से भी नहीं। बरू की कलम से लिखने पर अक्षर सुधरते हैं। तू अपनी माँ के घरेलू कामों में मदद करती ही होगी। नियमित आध घंटा कातते रहना। कसरत करके शरीर खूब मजबूत बनाना। तुझे रोटी और शाक बनाना आ गया है न? ठीक, जब मिलेंगे, तब मुझे जरूर खिलाना। खूब हँसती-खेलती रह। बाकी मनु बेन लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

एक बहन को : "कल की कौन जानता है? मेरा तो सभी अनिश्चित है। लेकिन प्रकाश के पथ पर हूँ। तेरा प्रदर का रोग मिटना ही चाहिए। नमक तो खाना ही नहीं चाहिए। द्विदल (दाल) इस रोग में जहर-सी है और मिर्च-मसाला भी। कटि-स्नान और पेड़ू पर मिट्टी रखना और आराम करना! मेरे साथ रहती, तो उपवास कराता। पर मुझे विश्वास है कि इतने बाह्य उपचारों के साथ हृदय से राम-नाम रटती रहेगी, तो निश्चय ही रोगमुक्त हो जायगी। हिन्दुस्तान में पचहत्तर प्रतिशत बहनों को यह रोग है। इसके प्रमुख कारण हैं: बहनों की शर्म, इस विषय का पूर्ण अज्ञान, कृत्रिम जीवन, खानपान आदि। अगर मैं यह कहूँ कि सभी रोगों में यह रोग कितना भयानक और त्रासदायक है, इसका बहनों को भान ही नहीं है, तो वह झूठ न होगा। अगर मैं इन सब कामों से मुक्त हो जाऊँ, तो सर्वप्रथम प्राकृतिक उपचार से बहनों के सभी रोग मिटा दूँ—ऐसी मेरी पूर्ण श्रद्धा है। लेकिन आज तो यह आसमानी सुलतानी की बात है!

"चाँद अभी पूरी तरह अच्छी तो हुई ही नहीं है। उसे शारीरिक रोग की अपेक्षा मानसिक रोग अधिक है। आभा और मनु अच्छी है। आज बबई से सुशीला आनेवाली है। यह सुबह के समय लिख रहा हूँ। कदाचित् मैं चिट्ठी देर-अबेर से दूँ, तो भी तुझे तो नियमित लिखना ही चाहिए। बाकी मनुड़ी लिखेगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

दिल्ली में कौमी आग

टहलते समय राजेन्द्र बाबू आये। उन्होंने कश्मीर की गंभीरता समझायी। भाई साहब ने खबर दी कि रात को दिल्ली मे पुनः कौमी आग फूट पड़ी। अब तो बहनें भी निकल पड़ी हैं। एक मुसलिम मुहल्ले मे बहने और बच्चे मुसलमानो के घरो मे घुस गये। पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। आज के अखबारो मे भारत-पाकिस्तान की लडाई की अफवाहे छपी है। कोई कहता है कि इसमे माउण्टबैटन का स्थान कहॉ होगा, यह विचारणीय है। इसमे अन्दर से अंग्रेजों का ही हाथ हो, तो आश्चर्य नही। बापू कहते है : "यह तो जैसा होगा, दीख ही पड़ेगा, पर मै नही मानता कि इसमे अंग्रेजो का सीधा हाथ होगा। फिर माउंटबैटन हमारे गवर्नर जनरल है, इसलिए हम सुरक्षित है।"

प्रतिदिन मामला चारो तरफ से बिगडता जा रहा है। जूनागढ़ की अस्थायी हुकूमत की अव्यवस्था का भी एक अलग रूप है। अब तो कुछ दिनो मे भावनगर अपना उत्तरदायी शासन प्रजा को सौप ही रहा है। लगभग तारीख भी तय हो गयी है। लेकिन महाराज साहब, पट्टनी साहब और बलवंत भाई सभी चाहते है कि बापू के हाथो मे ही उत्तरदायी शासन सौपा जाय। बापू कहते हैं कि "दिल्ली मुझे छोडे, तो सब कुछ हो सकता है।"

आज तो बादल भी है। रात मे बारिश भी हुई थी। धूप न होने से आज मालिश जरा देर से हुई। मालिश में सो नही पाये। दिल्ली और पाकिस्तान के आज के कश्मीर विषयक वक्तव्य से बापू बेचैन है। बगाली पाठ नियमानुसार हुआ।

भोजन के समय नियमानुसार स्थानीय मुसलमान भाइयो ने खबर दी कि "हमारे लिए तो आफत ही है। शहर मे रोज कुछ-न-कुछ होता ही रहता है। आपके सिवा अब किसीका भी आधार नही रहा। पुलिस भी बे-दरकार हो गयी है।"

केवल मानववाद ही सही

बापू कहते है : "आपकी बात सच है। जब हमारी नीति का रुख ही ऐसा बना है, तो फिर उससे और दूसरा क्या हो सकता है ? हमारी पुलिस और

इंग्लैण्ड की पुलिस मे जमीन-आसमान का अन्तर है। वहाँ की पुलिस 'फर्ज' समझकर ही नौकरी करती है, जब कि यहाँ कि पुलिस पेट भरने का साधन समझकर नौकरी करती है। इतना महान् अन्तर है। जब हम सबको यह अपना देश प्रतीत होगा, तभी यह स्थिति सुधरेगी। जिस दिन हम लोगो के दिलो मे यह भावना जाग उठेगी, उस दिन हमारे देश की आजादी दुनियाभर मे विख्यात हो जायगी। तब न तो साम्यवाद की जरुरत होगी, न समाजवाद की और न पूँजीवाद की। तब 'मानववाद' के सिवा और किसीकी भी जरुरत न होगी। आज हम लोगों में से मानवता उठ गयी है। उसीका यह परिणाम है।

"इसके साथ ही आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ कि जहाँ तक हो सके, आप लोग अपना प्रभाव मुसलिम भाई-बहनों पर डालिये और उन्हें शान्त रखिये, तो हिन्दू और सिख तो अपने-आप ठिकाने पर आ जायँगे। अब तो कदाचित् आपको जितनी राह देखनी पड़ी, उतनी देखनी भी न पड़े। एक ओर पाकिस्तान भी लड़ाई की बातें कर रहा है। आपको भी उस बात का गम्भीरता से विचार करना ही होगा। अगर आप उसमे सहमत हों, तो मुझे कुछ कहना नहीं है। लेकिन अगर असहमत हो, तो आपको इसकी खुली घोषणा कर देनी चाहिए। अगर आप ऐसा करें, तो भारत के मुसलमानो की बहुत बड़ी सेवा करेंगे।"

उनके जाने के बाद बापू ने कुछ देर तक विश्राम किया। लेकिन लगता है कि आज की दिल्ली की अशान्ति से बापू काफी सोच मे पड़ गये है। पंडित सुन्दरलालजी ने भी बापू से अशान्ति के बारे मे बहुत कुछ कहा। जब बार-बार एक के बाद एक बुरी खबरें आती रहती है, तो बापू को तो यही लगता है कि कदाचित् यह सारा गम्भीर तूफान उठ पड़ा है। सुन्दरलालजी के समाचार की भी यही प्रतिक्रिया हुई। लेकिन ऐसी स्थिति में हम लोग न इधर ही बोल सकते है और न उधर ही। क्योंकि जब हकीकत ही खराब है, तो उसमे फिर कमी-बेशी को बापू महत्त्व देते ही नहीं।

आज तो दिनभर काफी बादल रहे। करीब चार बजे से तो बारिश भी शुरू हो गयी। फिर भी कुछ लोग प्रार्थना मे आये ही हुए थे। पहले तो विचार

हुआ कि प्रार्थना अन्दर ही की जाय। पर बापू ने कहा कि "जब लोग इतने कष्ट सहन कर बाहर से—दूर से, आये हो, तो मुझे वहॉ तक जाना ही चाहिए।"

बापू ने प्रार्थना मे आनेवालों का अभिनन्दन करते हुए कहा : "आप लोग यहॉ केवल कुतूहल की दृष्टि से नही, बल्कि प्रभु का भजन करने के लिए ही आये है—ऐसा मानता हूँ।

"मुझे तो आज आपसे कुछ अलग ही बाते कहनी है। आज के समाचार-पत्रो मे और सर्वत्र एक ही चर्चा चल रही है कि यूनियन और पाकिस्तान के बीच लड़ाई शुरू होगी। अभी तो स्वतन्त्र होकर छह महीने भी पूरे नही हुए और हम लोगों ने लड़ाई की बाते शुरू कर दी है, यह हमारा कितना दुर्भाग्य है! पाकिस्तान ने आज यह विज्ञप्ति प्रकाशित की है कि यूनियन ने लड़ाई करने के लिए राष्ट्रसंघ के पास गुहार की है। ऐसा सफेद झूठ देख मुझे तो अपार आश्चर्य हो रहा है। यह तो 'उल्टा चोर कोतवाल को डॉटे' जैसी बात है। अलबत्त आप मुझसे पूछ सकते है कि यूनियन राष्ट्रसघ से न्याय मॉगे, तो क्या यह उचित माना जा सकता है? इस पर मेरा जवाब दोनो प्रकार का है। न्याय मॉगने के लिए दौड़ना अच्छा भी है और बुरा भी। अच्छा इसलिए कि कश्मीर मे एक प्रकार से हमले चल ही रहे है और ऐसी अफवाह है कि उसमे पाकिस्तान का भी हाथ है। अगर पाकिस्तान ऐसा दावा करता हो कि यह बात सच नही है, तो मुझे उतने मात्र से सन्तोष हो ही नही सकता।

"अगर कश्मीर यूनियन से मदद मॉगता है, तो यूनियन को भी पड़ोसी और मित्र के नाते उसकी मदद करनी चाहिए। इसमे यूनियन भूल करता हो, तो उसका न्याय ईश्वर दे देगा। यूनियन का सिद्धान्त है कि जो पड़ोसी शरण आये, उसकी मदद अवश्य की जाय। लेकिन पाकिस्तान ने जो यह वक्तव्य दिया है, मैं मानता हूँ कि उसमे उसकी गंभीर भूल ही है। ऐसा गंभीर वक्तव्य देने से पूर्व उसे यहॉ की सरकार से बातचीत कर लेनी चाहिए थी। खुले तौर पर तो ये लोग यही कहते है कि हम यूनियन के साथ रहकर ही सब कुछ करेगे, पर यथार्थ मे इसके विपरीत ही आचरण करते है। धर्म के नाम पर पाकिस्तान की स्थापना हुई है, इसलिए ऐसा पाकिस्तान तो हर प्रकार से 'पाक' याने संपूर्ण शुद्ध रहना चाहिए। मै मानता हूँ कि भूले तो दोनो देशो मे समान ही

हुई है। तो क्या अब भी उन भूलों की परम्परा बनाये रखनी है? अगर दोनों देशों के बीच युद्ध हुआ, तो तीसरी कोई प्रबल सत्ता हम लोगों पर चढ़ बैठेगी और इस तरह हम लोग गत १५० वर्षों से अपार विपत्तियाँ झेल और हजारों-लाखों के बलिदान के बाद पायी हुई बहुत ही महँगी इस आजादी को खो बैठेंगे। तब तो वह हमारी मूर्खता की हद ही मानी जायगी।

"अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है। दोनों देशों के नेता लोग ईश्वर को साक्षी रखकर परस्पर विश्वास पैदा करें। अगर राष्ट्रसंघ के पास मामला गया हो और हम लोग उसे वापस लौटा लें, तो वे लोग भी राजी ही होंगे। मैं ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करूँगा कि वह हमें इस युद्ध से बचाये। अगर युद्ध होना तय ही हो, तो कम-से-कम मैं तो उसका साक्षी बनना चाहता ही नहीं। लेकिन यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण कर लेना चाहता हूँ कि मन-ही-मन दुश्मनी रखने और एक-दूसरे के प्रति षड्यंत्र करने की अपेक्षा बेहतर है कि दिल खोलकर लड़ ही लिया जाय।

"अभी दिल्ली के दिल में भी शान्ति स्थापित नहीं हो रही है। गत रात बच्चों और बहनों को आगे करके अमुक लोग मुसलमानों के मकानों में घुस गये और उस समय मार-काट छिड़ गयी। लाचार हो पुलिस को अश्रुगैस छोड़नी पड़ी। दुःखी तो सचमुच दुःखी हैं ही, पर ऐसी आफत के समय वे मर्यादा का खयाल न करें, तो दुःख बढ़ता ही जायगा। इस तरह मारकाट करने से आप सरकार के मददगार होने के बदले उसके लिए परेशानी बढ़ानेवाले ही बन जायेंगे। स्वतंत्र भारत में यहाँ दुनियाभर के राजदूत स्थायी रूप से आकर बसे हैं। उन सबको हम अपना झगड़ा बताकर अहिंसा को लजा रहे हैं। एक ओर तो कहा जाता है कि भारत ने खून की एक बूँद भी बहाये बगैर आजादी पायी है और दूसरी ओर हम ही अपने भाइयों के बीच कत्लेआम शुरू करके क्या कर रहे हैं? बच्चों और बहनों को आगे रखकर दूसरों का सामना करने में कोई बहादुरी नहीं। पुराने जमाने में गायों को आगे रखकर मुसलमान कत्लेआम करते थे, जिससे हिन्दू लोग सामने वार न कर सकें। इस तरह तो हम अपनी बहनों का दुरुपयोग कर उन्हें लजा रहे हैं, इसलिए हमें शरम आनी चाहिए। भगवान् आपको सन्मति दे।"

प्रार्थना के बाद अन्दर पेसेज में ही बापू टहले। टहलते समय भाई साहब ने बापू को बतलाया कि "कंट्रोल हटा देने से जनता बड़ी ही खुश है और भावों में भी काफी परिवर्तन हो गया है।" बापू ने भी उनसे कल सभी के बाजार-भाव लिख लाने के लिए कहा। .

जहीर साहब के साथ शिक्षण और नयी तालीम के बारे में बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "नयी तालीम का प्रत्येक छात्र पूर्ण स्वावलबी होना चाहिए। अगर यह नही होता, तो इसे मैं नयी तालीम की नहीं, बल्कि आप सब शिक्षकों की ही असफलता मानूँगा। आखिर हमारे यहाँ शिक्षित लोग कितने प्रतिशत होगे ? बड़ी मुश्किल से पॉच निकले, तो क्या उनमे अक्ल नही ? सब कुछ है, लेकिन गरीबी के कारण वे अक्षर-ज्ञान से भी वचित है। इसलिए देश की आर्थिक स्थिति और शिक्षा—दोनों विभाग सगे भाई जैसे ही है। एक प्रश्न हल करेंगे, तो दूसरा अपने-आप हल हो जायगा। मेरी चले और कोई मुझे नौकरी पर रखे, तो मै शिक्षक होना ही पसद करूँगा। जब तक थोड़े मे पेट का गड्ढा नही भरता, तब तक देश कभी भी ऊँचा नहीं उठ सकता। अगर यह गड्ढा भरने की कोई कला हो, तो वह नयी तालीम ही है, अतः उसे व्यापक बनाना चाहिए। उसी तरह प्रत्येक छात्र शिक्षा के साथ-साथ अपना खाना, कपड़ा और निवास भी खुद ही पैदा करे। इस देश के लिए यह सब सुलभ है। लेकिन मेरी यह तूती की आवाज कहाँ तक पहुँच सकेगी, यह खुदा ही जाने।"

चॉदवानीजी ने हिन्दी प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद किया। बापू को उसमे काफी सशोधन करना पड़ा। रात मे नियमानुसार पंडितजी आये थे। घटेभर बैठे। कसरत करके ९॥ बजे के बाद सोने की तैयारी हुई। सोने पर मैंने रोज की तरह तेल की मालिश की और बापू ने बीमार और स्वस्थ सभी की तबीयत का दिनभर का हाल सुना। दिनभर तरह-तरह की माथापच्ची करते हुए भी बापू एक बात नहीं भूलते। किसको कितने दस्त हुए और कितना बुखार रहा ? कितना खाया और कितनी बार बाथ लिया—यह सारा बारीकी से पूछा।

● ● ●

खादी और कंट्रोल की समस्या : ६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
५-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना ! आज मौन का दिन होने से बापू को खुद ही लिखना था। मैं तो प्रार्थना के बाद बापू को भीतर पहुँचाकर थोड़ी देर सो गयी।

बापू ने आज हिन्दी में खादी पर लिखते हुए बताया कि लोग नीचे के सवाल उठाते हैं :

"आजादी मिलने के बाद शुद्ध खादी, अप्रमाणित खादी, मिल के कपड़े और विलायती कपड़ों में बहुत फर्क नहीं रह जाता। जितनी जरूरत हो, उतना खुद ही कातकर और बुनकर पहनें, तो जरूर फर्क पड़ जाता है। क्योंकि इससे एक खास विचार-धारा का पता चलता है। पर जितना कपड़ा चाहिए, उतना सूत तो काता नहीं जाता ! खादी तो खादी-भंडार से ही खरीदते हैं ! उसके लिए भी जितना सूत देना पड़ता है, खुद नहीं काता जाता। शुद्ध खादी में कोई सुधार दिखाई नहीं देता। अप्रमाणित खादी में कई तरह के कपड़े काम आते हैं। इसका कारण यह दिखाई देता है कि शुद्ध खादीवाले को सुधार में कोई रुचि नहीं है। आजकल मजदूरी इतनी ज्यादा हो गयी है कि जीवन-वेतन का भी सवाल नहीं रहता। फिर जरूरत हो, तो अप्रमाणित खादी लेने में क्या हर्ज है ?

"सारे देश में कपड़े की काफी कमी है। राष्ट्रीय सरकार खुद विलायती कपड़ा मँगाती है। विलायती कपड़ा मँगाना या न मँगाना सरकार के हाथ में है। फिर भी वह कपड़ा मँगाती है, तो फिर उसे खरीदने में क्या बुराई है ?

"प्रमाणित खादी ही प्रमाण हो सकती है। यहाँ 'प्रमाणित' शब्द का सही मतलब पूरी तरह जाहिर नहीं होता। 'प्रमाणित' का असली मतलब है—वह खादी, जिसमें पूरा दाम देकर सूत खरीदा गया हो, जिसे ठीक दाम देकर बुनवाया गया हो, और खरीद का दाम नफाखोरी के लिए नहीं, बल्कि लोक-लाभ के लिए ही रखा गया हो। स्वावलम्बी यानी अपनी बनायी खादी के सिवा बाकी ऐसी खादी, जो बाजार से लेनी पड़ती है, उस खादी के लिए प्रमाण जनता के

लिए जरूरी है। ऐसा प्रमाण देनेवाली एक ही संस्था हो सकती है और वह है—'चरखा-संघ!' इसलिए चरखा-संघ जिसे प्रमाण-पत्र दे, वही प्रमाणित खादी है।

"उसे छोड़कर जो खादी मिले, वह अप्रमाणित खादी हो जाती है। प्रमाण-पत्र न लेने से कुछ-न-कुछ दोष तो होना ही चाहिए। दोषवाली खादी हम क्यों ले? दोषयुक्त और निर्दोष मे फर्क है, इसमे संदेह के लिए गुजाइश ही नही हो सकती।

"यह सवाल किया जा सकता है कि प्रमाण-पत्र की शर्त मे ही दोष हो सकता है। अगर दोष है, तो उसे बताना जनता का धर्म हो जाता है। आलस के कारण दोष बताने के बदले अप्रमाणित और प्रमाणित का फर्क ही उठा देना किसी हालत मे ठीक नही। हो सकता है कि हममें कुचाल इतनी बढ़ गयी हो कि हम जनता के बीच में ठीक चाल चल ही नही सकते या जिसे हम ठीक चाल मानते हैं, वह धोखा ही हो। इस हद तक जाना जनता के प्रतिनिधि का काम है ही नही।

"खादी, स्वदेशी मिल के कपड़े और विदेशी कपड़ों मे फर्क है, इस बात मे शक ही कैसे पैदा हो सकता है? विदेशी राज्य गया, इसलिए विदेशी कपड़ा लाना ठीक बात कैसे हो सकती है? ऐसा खयाल करना ही बताता है कि हम विदेशी राज्य के विरोध का असली कारण ही भूलते है। विदेशी राज्य होने से मुल्क को बड़ा भारी नुकसान होता था। इस भारी नुकसान को मिटाना ही स्वराज्य का पहला काम होना चाहिए।

"निचोड़ यह कि **स्वराज्य में शुद्ध खादी को ही जगह है। उसीमें लोक-कल्याण है। उसीसे बराबरी पैदा हो सकती है।**"

सेवाग्राम की चिट्ठी

आज सेवाग्राम से मुन्नालाल भाई आये। उन्होंने वर्धा के आश्रम की तथा अन्य भी नयी-पुरानी बाते सुनायी। बापू तो अब स्पष्ट मानते है कि 'आश्रम को अपने पैरो पर ही खड़ा होना चाहिए।' दवाखाना आश्रम के बाहर चला गया है। वह तो कुल मिलाकर ठीक ही चल रहा है। बापू ने एक चिट पर लिखा: "यदि सेवाग्राम मे रचनात्मक कार्यक्रम संपूर्ण स्वावलम्बी न बना, तो

समझिये कि आश्रमवासी सोये हुए हैं। 'रचनात्मक कार्यक्रम का सर्वथा अखड और संपूर्ण अमल यानी संपूर्ण स्वराज्य' यह मेरी व्याख्या है।

"मैं स्वयं अभी दृढ़ निश्चय पर नहीं पहुँचा हूँ। सेवाग्राम आने की बात को तो हवाई ही समझें। हवाई जहाज तो दिन पर दिन बढ़ ही गये हैं न? मैं तो आकाश के नीचे बैठा होऊँ और ऊपर खरर-खरर जोर से आवाज आये, तो देख लूँ! यह सब देखता हूँ, तो यही लगता है कि सारी दुनिया कर्तव्यनिष्ठ है। दुनिया मे अगर कोई बेकार है, तो एक मैं ही हूँ।"···(एक साथ विनोद और गम्भीरता का वातावरण छा गया)।

नोआखाली मे कनुभाई को लम्बा पत्र लिखा, पर···को वह पसन्द नही पडा, इसलिए कदाचित् न भेजे।···लेकिन काफी दुविधा मे है। सुशीला बहन को इस महीने मे अमेरिका जाना था, पर अब मई में जाना तय हुआ है। इससे वे भी प्रसन्न हुई। बापू को छोड़कर जाना वे बिलकुल ही नहीं चाहती थीं।

आज सुशीला बहन ने बापू की मालिश की। मालिश के समय नित्य नियमानुसार बंगला पाठ किये गये। सर्दी इतनी बढ़ी है कि शरीर मे से हटती ही नहीं। फिर भी बापू 'बाथ' मे बरफ जैसे ठण्डे पानी मे बैठते हैं। दतौन करने और हाथ-मुँह धोने के लिए भी ठण्डा पानी ही काम में लाते हैं।

बाथ मे हजामत करते समय बापू १० मिनट सो गये। पंडितजी आये। कुछ देर बातें करके चले गये। इन्दिरा बहन भी नन्हे-मुन्ने को लेकर आयीं। बापू ने उसे सतरा दिया। वह तो खूब खुश हो गया और बापू की गोद मे बैठकर खूब खेला।

मालूम पडता है कि बापू को सर्दी होगी। भोजन मे भी परिवर्तन कर दिया गया।

हिन्दू-मुसलिम झगड़े का अन्त?

नियमानुसार मौलाना लोग आये। वे शिकायत करने लगे: "हिन्दू लोग मुसलमानों को हिन्दू-महल्ले में हैरान तो करते ही है, हथियार भी उनके पास हैं। बापू ने लिखकर बताया कि "इसके प्रमाण देगे, तो बहुत सुविधा होगी। मेरे पास यह भी शिकायत आयी है कि मुसलमानो के पास भी काफी हथियार

हैं। इसलिए आपका पहला फर्ज तो यह है कि मुसलमान भाइयो से प्रार्थना कर उनके पास जो हथियार हो, वे मुझे लाकर सौप दे। फिर अगर सरकार मुसलमानों का पूर्ण संरक्षण नही करती, तो पहले मै मरूँगा, बाद मे उन्हे मरने दूँगा।"

बाकी मुलाकाते तो रोज जैसी ही चल रही थी। सुभद्रा बहन गुप्ता ने भी मुसलमानो को हैरान करने की बात कही। बापू ने लिखा : "अगर तेरे जैसी किसी लड़की के ऐसी शिकायत करने के लिए आने के बजाय, यह सुनता कि मुसलमानो को बचाते हुए एक हिन्दू के हाथों सुभद्रा का खून हो गया, तब मै नाच उठता। मुझे लगता है कि जब ऐसी बहादुरी के साथ हिन्दू-बहनों और भाइयों के बलिदान होगे, तभी इस झगड़े का अन्त होगा।"

मिट्टी, कताई, चिट्ठी-पत्री आदि नित्य की तरह ही हुए। आज बापू ने हरिजन-फड और अन्य हिसाब भी जॉचा। बची हुई खादी हरिजन कॉलनी मे हरिजन बालको के लिए भेज देने की सूचना दी। 'अपने पास आवश्यकता से अधिक—भेट की खादी मे से—एक रूमाल का टुकड़ा भी नही रखा जा सकता।'

कंट्रोल उठा देने का परिणाम

शाम को प्रवचन लिखा। आज के प्रवचन मे कण्ट्रोल पर विवेचन हुआ। अनाज के पहले के और हाल के भाव बतलाये।

प्रवचन मे बताया कि "कण्ट्रोल उठा देने से मेरे पास चारो ओर से मुबारकबादी के तार आ रहे है। अभी भी जिन-जिन चीजो पर कण्ट्रोल हो, उसे भी उठा लेना चाहिए, यह माननेवाला वर्ग भी काफी बड़ा है। मेरे आग्रह पर एक बड़े व्यापारी ने मेरे नाम अंग्रेजी मे एक पत्र लिखा है, जिसमे उन्होने अपने विचार व्यक्त किये हैं।"

वे लिखते हैं कि "कण्ट्रोल थे, तब के और उसके हटने के बाद के भावो मे निम्नलिखित परिवर्तन हुआ है :

वस्तु	तौल	चालू भाव (कण्ट्रोल उठने पर)	कण्ट्रोल के समय का भाव
खॉड़	मन	३७॥)	८०) से ८५)
गुड़	,,	१३) से १५)	३०) से ३२)

शक्कर	मन	१४) से १८)	३७) से ४५)
खाँड की आधा सेर की थैली		॥≥)	१॥) से १॥।)
खाँड़ (देशी)	मन	३०) से ३५)	७५) से ८०)

इस तरह खाँड़ और तत्सम अन्य चीजों मे ५० प्रतिशत कमी हुई। अब अनाज के भाव देखिये :

वस्तु	तौल	चालू भाव	कंट्रोल के समय का भाव
गेहूँ	मन	१८) से २०)	४०) से ५०)
चावल (वासमती)	,,	२५)	४०) से ४५)
मक्का	,,	१५) से १७)	३०) से ३२)
चना	,,	१६) से १८)	३८) से ४०)
मूँग	,,	२३)	३५) से ३८)
उड़दी	,,	२३)	३४) से ३७)
अरहर	,,	१८) से १९)	३०) से ३२)
चने की दाल	,,	२०)	३०) से ३२)
मूँग की दाल	,,	२६)	३९)
उड़दी की दाल	,,	२६)	३७)
अरहर की दाल	,,	२२)	३२)
सरसों	,,	६५)	७५)

"गरम और अन्य कपड़ों पर से भी कण्ट्रोल उठ गया, इसलिए बाजार मे उस किस्म का कपड़ा बेशुमार आ गया है। रेशम की तो ५० या ६५ प्रतिशत तक कीमत गिर गयी है।

"सूती कपड़े और सूत के भाव पर से भी कदाचित् एकाएक कंट्रोल उठा दिया जाय, ऐसा लोग सोचने लगे हैं। इसलिए उनके भाव भी काफी गिर गये हैं।"

"लेकिन मुझे तो विश्वास है कि अभी भी जिन-जिन चीजो पर कंट्रोल है, उसे तत्काल उठा लिया जाय, तो हर चीज के भावो मे ६० से ६५ प्रतिशत गिरावट आ सकती है। इसके सिवा कपड़ों की किस्मो मे भी काफी सुधार होगा,

यह भी निश्चित है। जब तक माल की तगी मालूम पडे, तब तक उसका बाहर निर्यात होना ही नहीं चाहिए।

"पेट्रोल पर भी लड़ाई के कारण कट्रोल लगाया गया था। मेरी दृष्टि से अब उसकी भी जरूरत नहीं। क्योंकि कट्रोल के कारण अमुक ट्रान्सपोर्ट चलानेवाली कंपनी को बेहद नफा होता है। अगर पेट्रोल पर कट्रोल न रहे और व्यक्तिविशेष को मार्गविशेष पर मोटरे चलाने का ठीका न दिया जाय, तो मै मानता हूँ कि एक ही गाड़ी के मालिक को शायद ३००) से अधिक की आय हो। लेकिन आज तो पेट्रोल के परमिटो का भी धड़ल्ले से व्यापार चलता है। इससे देश मे मकानो और अनाजो की अदला-बदली की समस्याएँ भी हल हो जायँगी। कण्ट्रोल के साथ आप लड़े, वह आम जनता के लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद साबित हुआ।

"मै मानता हूँ कि प्राप्त ऑकड़ो को देखते हुए कदाचित् ही इस कदम से घाटा उठाना पड़ेगा। इतना होते हुए अगर कोई सबूत के साथ इस पर उज्र पेश करेगा, तो मै उसका बड़ा आभारी होऊँगा।

"जनता का बहुत बड़ा समुदाय जो बात चाहता हो, उसे कर देने के लिए जनता के प्रतिनिधियो को किसी भी तरह से डरने की जरूरत नही। मान लीजिये, इसमें कदाचित् वे निराश हो जायँ, तो पुनः जनता पर कण्ट्रोल तो लगाया ही जा सकता है!"

"मुझे यह बतलाया गया है कि दुनिया मे जितना पेट्रोल निकलता है, उसका सिर्फ एक प्रतिशत भारत मे निकलता है। लेकिन इससे हमे निराश नही होना चाहिए। हम लोगो की मोटरें कही भी चलती हुई रुकी ही नही है। हम लोग कोई लडाकू नही, इसलिए हमे पेट्रोल की ज्यादा जरूरत ही नही है। अगर हमे उसकी जरूरत पड़े और आज दुनिया मे जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले, तो क्या दुनिया को भी इसकी तगी उठानी पड़ेगी? मेरे अज्ञान की आलोचना करनेवाले इसे मसखरी न समझे। मुझे तो ज्ञान प्राप्त करना है। इसलिए अगर अपना अज्ञान जाहिर न करूँ, तो मुझे वह कहाँ से प्राप्त होगा?

"साराश, जब पेट्रोल यहाँ इतना कम है, तो फिर वह चोर-बाजार मे कहाँ से आता है? एक भाई ने लिखा है कि जिसके पास एक ही ट्रक या

एक ही लारी होती है और एक ही रास्ते पर चलने का लाइसेन्स मिलता है, वह महीने में दस से पन्द्रह हजार रुपया तक कमाता है। अगर यह सच हो, तो चौंक उठने जैसी ही बात है। तब क्या यही मानना होगा कि कण्ट्रोल गरीबों के लिए शाप और पैसेवालों के लिए वरदान बना है? अगर इजारा पद्धति और कण्ट्रोल का ऐसा ही बुरा परिणाम हो, तो एक क्षण का भी विचार किये बगैर तुरन्त इसे उठा देना चाहिए।

"फिर कपड़े पर कण्ट्रोल तो मुझे जरा भी समझ में नहीं आता। क्योंकि अगर हम खादी को भूल न गये हों, तो कपड़े पर फिर कण्ट्रोल किस बात का? कपड़े पर कण्ट्रोल की दलीलों में एक भी ऐसी नहीं, जिसका समर्थन किया जा सके। हम लोगों के पास पर्याप्त मात्रा में रूई और करोड़ों हाथ हैं। गाँवों में घर-घर चरखे हैं। इसी तरह हाथकरघे चलाये जा सकते हैं और खेल की तरह बड़ी सरलता से अपने काम लायक कपड़ा प्राप्त किया जा सकता है। कपड़े के बारे में तो मेरा दृढ़ मत है कि उसके लिए जरा भी हायतोबा मचाने की जरूरत नहीं। उसी तरह मोटरें या लारियाँ दौड़ाने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। गुलामी के जमाने में हमारी रेलों का पहला काम सेना की सेवा करना था और दूसरा काम बन्दरगाहों पर रूई पहुँचाना तथा बाहर से आनेवाला तैयार कपड़ा देश के भीतर ले आना था। लेकिन हमारी 'कैलीको', जिसका नाम 'खादी' है और वह गाँवों में ही बनती ही हो, तो ऐसे एक भी केन्द्र बनाने की तनिक भी जरूरत नहीं। हमारा आलस ही हमें रोकता है और अज्ञान भी। फिर भी इन दोनों दुर्गुणों को ढाँकने के लिए हम लोग अपने गाँवों की फजीहत करते हैं, यह कोई कम बदनामी नहीं है।"

आज का प्रवचन काफी लम्बा रहा। मौन के दिन बापू के प्रवचन हमेशा लम्बे ही हुआ करते हैं।

मौन खुला, तो बिड़लाजी और सभी घर के ही मुलाकाती थे। बापू का जब तक मौन रहता है, तब तक सभी कुछ शान्त रहता है। जब मौन खुलता है, तो पुनः शोरगुल शुरू हो जाता है।

लगभग पूरा दिन लिखने, पढ़ने और आराम में ही बीता। फिर भी बापू

थकने की बात कहते थे। कदाचित् सर्दी होने की तैयारी है, उसका भी यह कारण हो।

मुन्नालाल भाई ने भी बातें शुरू कर दीं। लेकिन वे अभी ठहरनेवाले हैं, इसलिए बातचीत दूसरे समय के लिए रखी गयी।

लगभग १० बजे कसकर सोने की तैयारी हुई। पाकिस्तान ने 'नेशनल हेरल्ड' मे कश्मीर-संबधी जो वक्तव्य दिया है, उसके बारे मे पडितजी के साथ चर्चा हुई। बापू तो यह भी मानते है कि राष्ट्रीय मुसलमानो को भी (यूनियन मे से) इस बारे में वे जैसा कुछ मानते हों, उसे घोषित कर देना चाहिए।

● ● ●

सच्चा लोकतन्त्र : ७ :

बिरला भवन, नयी दिल्ली
६-१-'४८

बापू प्रार्थना से १० मिनट पहले जग गये। आज रात मे सर्दी भी कड़ाके की रही। कनुभाई के लबे पत्र के बारे मे···के साथ चर्चा की। बापू ने एक बात पर कहा : "लगता है कि अभी मुझे सोचने को काफी रह गया है। क्योंकि जो जहाँ हो, वे वहाँ शान्ति से बैठकर काम नही करते। सब यही मानते है कि सारा काम तो दिल्ली मे रहने पर ही होता है। हम लोगो से शहरो का मोह छूटता ही नही। असख्य गाँवो की बदौलत ही आज दिल्ली, कलकत्ता, बबई जैसे शहर बने है। उनकी भी परवाह नही। फिर भी आखिर लोगो का नैतिक जीवन ऊँचा उठने के बदले आज अत्यधिक बिगड़ गया है। परिणामस्वरूप हुल्लड़ और अराजकता बढ़ गयी है। इसलिए अगर हम यह सारा मूलरोग नही मिटाते और जीवन-दर्शन के लंबे-चौड़े भाषण देते हैं, तो अब चल नही सकता। हमे लोगो को काम देना होगा और स्वयं भी काम करना होगा। अब ही तो आश्रमवासियों की कसौटी है। अगर इस कसौटी पर आप खरे उतरे, तो ठीक; नहीं तो उसमे भी अपनी असफलता जाहिर कर मैं नया रास्ता अपनाऊँगा। मैं तो 'आज क्या सच है और क्या सच लगता है' इसी पर निर्भर हूँ। अगर कल का सच हो, तो उसे अपनाऊँगा, नहीं तो उसे फेक देने मे भी क्षणभर का विलंब

न करूँगा। इसलिए यह सब आप लोगो को सोचना होगा। मै तो जैसा हूँ, वैसा ही हूँ। अगर मुझे अपने इस यज्ञ मे कुछ भी हानि दीख पड़े, तो उसे जैसी की तैसी पेश कर दूँगा। कारण मुझ पर सर्वसाधारण जनता जो अटल विश्वास रखती है, उसका मुझसे विश्वासघात हो ही नही सकता। मैं जनता का हूँ और जनता मेरी है। इसलिए मेरे पास व्यक्तिगत जीवन जैसा कुछ भी नही है, यह सभीको विचारपूर्वक समझ लेना चाहिए।"

आज तो आये हुए पत्र बापू ने ही पढ़े। प्रायः यदि बापू को दिल्ली मे कुछ सफलता मिली, तो वे कश्मीर जाने की भी सोच रहे हैं।

स्थानीय मुसलमानो ने शिकायत की कि शरणार्थी तो मुसलमानो के घर चाहते है। अगर उन्हे दूसरी कोई सुविधा मिलती होती, तो भी मान्य नहीं। बापू ने कहा : "यह बहादुरी यहाँ दिखलाने की क्या जरूरत है ? अगर ऐसा ही था, तो उन्हें सर्वप्रथम अपना देश ही छोड़ने की जरूरत न थी और वहाँ अगर मुकाबला किया होता, मुझे कोई परवाह न होती।"

जेब यानी संग्रह की इच्छा

बाथ मे बापू ने हजामत की। मेरा कुर्ता फट गया था। मेरा ध्यान ही न था, पर बापू का उधर ध्यान गया और उसे सीने के लिए कहा। लेकिन वह इतना गल गया है कि सीधा सिल नही सकता, यह उनके भी ध्यान मे आ गया। मुझसे कहने लगे : "इस जेब के हिस्से का कपड़ा निकालकर यहाँ जोड़ देगी, तो ठीक पेबद बैठ जायगा। आखिर हमे जेब की क्या जरूरत है ? ऐसे जेब रखने लगे, इसलिए हमारे जीवन की आवश्यकताएँ बढ़ गयी। जेब रखने पर उनके भीतर कुछ रखने की इच्छा होने लगती है। अगर जेब न हो, तो कदाचित् ही अधिक सग्रह करने की वृत्ति हो।"

बापू छोटी-सी बातों से भी जाने कहाँ से दार्शनिकता ढूँढ़ निकालते है !

बापू को खूब सर्दी हो गयी है। आवाज भी भारी हो गयी है। नाक से गरम पानी पीते है। कदाचित् ठंडी, बादल और बारिश के कारण ऐसा होता हो।

मुर्शाद बहन आयी। उन्होंने बापू को खूब हँसाया और कहा : "पानीपत नहीं गये, यह ठीक ही हुआ। नहीं तो आप वहाँ पुनः पानीपत का महायुद्ध

ही खेलते (अनशन या ऐसा ही कोई कदम उठाते), इसकी मुझे भारी चिन्ता थी।"

बापू ने कहा : "वह तो अभी कायम ही है। अब तो यही लगता है कि 'करो या मरो', इनमे से किसी एक दिशा की ओर शीघ्र ही मुड़ना चाहिए।"

बापू और अन्य लोगो के (बड़ो के) विनोद मे भी काफी गम्भीरता मालूम पड़ती है। कौन जानता है, बापू क्या करेगे ?

बा का स्मरण

आज· · ·को विदेश जाना था, अतः उनके लिए रेशमी कपड़े आये। अगर वहाँ खादी ले जायँ, तो पेटियो मे बहुत ही कम समायेगी। फिर धोने की भी कठिनाई !

बापू दुःखी हुए : "ये सारे बहाने हैं। कम ले जायँ, तो भी क्या हर्ज था ? · · ·के जैसे भी अगर खादी पहनकर न जायँ, तो हमारे देश का प्रभाव क्या पड़ेगा ? क्या यह सब मुझे कहना पड़ेगा ? यह तो मेरी कल्पना से परे की बात है। ओहो ! ईश्वर ने मुझे कितना जाग्रत कर दिया ? अभी तक तो अन्धा ही था न ?· · से कहना कि बापू कहते हैं या बापू को पसन्द है, इसलिए कुछ भी मत कीजिये। आपको खुद को जो अच्छा दीखे, पसन्द आये, जिसमे आनन्द हो, वैसा ही करना चाहिए।

"अब मै समझ सकता हूँ कि बिना समझे आज क्या-क्या चल रहा है ? इन पढ़े-लिखे लोगो की अपेक्षा बा कितनी ऊँची रही ? उसने जो कुछ किया, उसमे वह पूर्ण और निरन्तर अखण्ड वफादार रही। ऐसी बहुत-सी बहने (आज के जमाने के अनुसार तो 'अनपढ़' ही कहलायेगी) मुझे मिली है—शकरी बहन, दुर्गा, गोमती। आश्रम की इन सभी बहनो को जब मै देखता हूँ, तो मेरा सिर झुक जाता है। कभी भी आगे आने या अखबारो मे नाम, प्रचार आदि की वृत्ति नही। फिर भी आजादी की लड़ाई मे इन बहनो का हिस्सा अपूर्व था, यह मुझे कबूल करना होगा।" इस घटना से बापू को आन्तरिक दुःख हुआ। मुझे क्या पता था कि इससे यह परिणाम निकलेगा ? मैने तो· · ·के लिए पार्सल आया, तो दस्तखत कर उसे ले लिया और बापू को सौप दिया। बापू ने कहा कि "इसे

खोल दे और देख, भीतर क्या है ? तुझसे पूछे, तो कह देना, मैंने खुलवाया है'''। इसमे अब बेचारी खादी कहाँ निभ पाती ? आजादी मे जैसा इस बूढे का हाल है, वैसा ही अगर खादी का करेंगे, तो कदाचित् आजादी टिकी रहे, पर आबादी टिक न पायेगी—तू तो जिन्दा ही रहेगी—इसे देख लेना और फिर बापू को याद करना कि इस बूढ़े का हिसाब बिलकुल झूठा नही था।"

कृष्णनभाई नायर आये। वे तो रिलीफ का काफी काम करते है। बापू को कोई खास तकलीफ देने नहीं आते। कई बार तो सिर्फ बापू को देखने के लिए ही आते और भाई साहब जैसो से या हम लोगो से बातचीत करके चले जाते।

मंडी के राजासाहब और रानीसाहिबा आये हुए थे। बापू को राजा साहब ने १०१) का एक चेक और रानी साहिबा ने अपनी हीरे की अँगूठी दी। उन्होने दुशाला भी दिया था। लेकिन बापू ने विनोद मे कहा : "अब तो इन सबकी मुझे जरूरत नही—अब तो खुद आपकी मुझे जरूरत है।" उन्होने कहा : "आपके हुक्म के अधीन ही है।"

हकीम अजमल खाँ आये। उन्होने कहा कि "मुसलमानो के तो अब आप ही है। अगर आप न होते, तो यहाँ हमारा कोई भी न था।"

बापू ने कहा : "हम सबका खुदा ही है। मनुष्य मनुष्य का क्या रक्षक हो सकता है ? लेकिन अब आपको मुसलिम परिवार मे विश्वास पैदा कर उनके पास जो हथियार हो, उन्हे ले लेने का प्रयत्न करना चाहिए।"

रामेश्वरी बहन और ब्रजलाल नेहरू भी आये थे। ब्रजलालजी ने तो बापू को सर्दी मिटाने के लिए आसन के अमुक प्रयोग बतलाये। बापू मेरी ओर उँगली दिखाकर कहने लगे : "इस लड़की को आप अगर बिलकुल स्वस्थ कर सके, तो उसे आपको सौपने के लिए मेरा उत्साह बढ़े। वैसे तो उसके अन्तर मे राम-नाम बसता हो, तो कुछ भी न होगा।"

ब्रजलालजी ने मुझसे विनोद मे कहा : "हृदय फाड़कर बता तो कि राम-नाम है या नही ? लेकिन यह ताकत भी तो आसन आदि से आ सकती है।"

संस्कृति के लिए कलंक-रूप

आज की प्रार्थना मे बापू ने बतलाया : "अभी भी मेरे पास ऐसी शिकायते आती है कि निर्वासित लोग मुसलमानों पर घर खाली कर देने के लिए दबाव

डाला करते हैं। इसी कारण जबरन अपने घर खाली कर मुसलमानो को खुले आसमान के नीचे रहना पड़ता है। ऐसी असह्य सर्दी मे इस तरह खुले मे रहना पड़े, यह कोई साधारण बात नही है। ठंढक के साथ बारिश भी हो रही है। शरणार्थी ऐसा ही आग्रह क्यों रखते है कि मुसलमानो के मकान ही हम लेगे ? अगर वे मुसलमानो के सिवा और घरों का कब्जा लेने के लिए जुटते हों, तब तो मकान की तंगी समझ सकता हूँ। इस बिरला-भवन से मुझे, एक बीमार बहन को और इन सबको निकाल बाहर करने का प्रयत्न हो, तो वह भी ठीक है। लेकिन निर्दोष मुसलमान-परिवार को निकालना हमारी सस्कृति के लिए कलंकरूप ही माना जायगा। मुसलमानों को राजधानी के शहर से खदेड़ने की मनोवृत्ति का परिणाम बहुत बुरा होगा, यह आप सबको समझ लेना चाहिए।

"हाल ही मे मुझे समाचार मिला है कि बम्बई के जहाजो से गोदी मे माल ढोनेवाले मजदूर हड़ताल कर रहे है। कांग्रेस के नेता या सदस्यो, साम्यवादी या समाजवादी—इन सभी दलो से मै प्रार्थना करता हूँ कि इस तरह हड़ताल न कराइये। अपना विरोध हो, उस बारे मे हमे अवश्य झगड़ना चाहिए और उसके लिए अमुक को नेता चुनकर उसके नेतृत्व मे समिति स्थापित कर समझदारी से काम लेना चाहिए। आजादी के जमाने में वे रस्म-रिवाज चल नही सकते, जिन्हे हम गुलामी के जमाने मे आजमाते थे। सदैव व्यावहारिकता का ध्यान रखना चाहिए। समय, समाज और वस्तुस्थिति को समझकर तदनुसार ही काम लिया जाय। अभी हड़ताल कराने का समय नही है। इससे जनता और हड़ताली सभी का नुकसान होगा।

सच्चा लोकतंत्र

"आज तो मुझे 'सच्चे लोकतन्त्र' पर कुछ बाते कहनी है। आप सब जानते ही होगे कि औंध के राजा ने वर्षो पहले वहाँ की जनता को उत्तरदायी शासन सौप दिया है और अप्पासाहब ने भी अपना जीवन प्रजा की सेवा मे ही बिताया है। अब राजा साहब और नेताओ ने अपना राज्य यूनियन में मिला देने का लगभग तय कर लिया है। इस तरह जो राज्य यूनियन मे मिल जायेंगे, उन्हे वार्षिक गुजारा दिया जायगा। किन्तु औंध के राजासाहब तो ऐसे है कि वे प्रजा के लिए जरा भी भारभूत होना नही चाहते। वे तो प्रजा की सेवा के

बदले जो मेहनताना मिलेगा, वही लेने को राजी होंगे। उन्होंने मुझे एक पत्र भेजा है, जिसमे वे लिखते हैं कि 'हमने अपने राज्य मे जो पचायत बनायी है, वह चालू रखी जाय या नहीं।' इसका अधिकृत उत्तर तो मैं नहीं दे सकता, लेकिन अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा कि यूनियन मे मिल जाने के बाद सारे भारत मे जैसी राज्यशासन-व्यवस्था होती होगी, वैसे ही होगा। अगर लोगों को पचायत रखनी हो, तो उस तरह की व्यवस्था चलाने से रोकने की बात हमारे सविधान मे नहीं है।

"औध राज्य भले ही मिट जाय, पर औध के नाम से पहचाने जानेवाले गाँवो के समूह का विशिष्ट स्वरूप मिट नहीं सकता। वह कायम ही रहेगा। भारत में पचायत हो या न हो, पर अगर वह समूह के एक अंग के रूप मे सेवा और अपना फर्ज अदा करती हो, तो उस अधिकार को कोई न छीनेगा। औध मे पंचायत-पद्धति लोगों की सेवा के लिए ही चलायी गयी है। सच्चा लोकतंत्र प्रधान की कुर्सी पर बैठने से ही नहीं आता। मौलिक रूप मे वह तो हर गाँव और शहरवाले, सबकी मदद से ही होगा।

"एक भाई ने मुझे आयात-निर्यात का सन्तुलन रखने के बारे में सूचित किया है: 'भारत मे माल का आयात निर्यात की अपेक्षा कम रहे, यह आवश्यक है। आज जैसा चल रहा है, वैसा सदैव चलता रहा, तो कुछ ही दिनो में भारत की संपत्ति समाप्त हो जायगी। खिलौने और ऐसी ही जिन चीजो की हमें विशेष जरूरत न हो, उन्हे बाहर से मँगाना बन्द कर देना चाहिए। आज भारत से कच्चा माल बाहर जा रहा है और हम उसीका पक्का माल मँगाते है। इससे भारत सर्वथा कंगाल बन जायगा।' इस भाई की विचारसरणी का मैं समर्थन करता हूँ कि हिन्दुस्तान को अधिक-से-अधिक स्वावलंबी बनना चाहिए। इससे ये सारे झगड़े भी अपने-आप मिट जायेंगे। भारत और अन्य देश भी कोई किसी का शोषण न करेगा। बल्कि परस्पर मदद देने की भावना से ही एक-दूसरे की चीजों का आदान-प्रदान करेंगे।"

प्रार्थना के बाद बापू टहले। आँखें बन्द कर के घूमे। घूम आने के बाद प्रवचन देखा। तुरत ही पंडितजी आये। कश्मीर में पुनः खूब मारकाट मची हुई है। एक घंटे तक बातचीत की। पंडितजी के जाने के बाद पैर धोकर, कसरत

कर सोने की तैयारी हुई। मैंने रोज की तरह पैर दबाये। तेल मला। बापू ने सबकी तबीयत का हाल पूछा। चॉद बहन को अभी कमजोरी काफी मालूम पड़ रही है।

○ ○ ○

करने या मरने का संकल्प : ८ :

विरला-भवन, नयी दिल्ली
७-१-'४८

गरीबी का कंपन

नियमानुसार ३।। बजे प्रार्थना के लिए उठे। मालूम पड़ता है, बापू की सर्दी और खॉसी फिर बढ़ रही है। खुद मुझे भी सर्दी और खॉसी हुई है। बापू को भीतर ले जाकर चिट्ठी लिखने के लिए कागज दिये। चिट्ठी मे आये हुए कुछ लिफाफे वैसे के वैसे पड़े थे। उन्हे लेकर बापू ने स्वयं ही बड़े सुन्दर ढग से कैची से काटा और 'पैड' बनाया। मैने पूछा : "क्या जाड़े मे हाथ नही कॉपते ?" बापू ने कहा : 'कुदरती सर्दी तो आदमी के बहुत ही काम आती है। मैं तो अपनी गरीबी से कॉपता हूॅ कि इसका कब अन्त होगा ? इस महल में तो तुझे गरीबी लगती ही न होगी ? इसी कारण इस तरह लिफाफे और कागज इकट्ठा रख छोड़े है। जिन्हे गरीबी मे पढ़ना पड़ता है, वे ही जान सकते है कि इन कोरे कागजों का कितना मूल्य है। वे इन्हे इस तरह बेकार नहीं छोड़ेगे। यह काम तो रोज-के-रोज ही कर लेना चाहिए।'

मै तो क्षणभर चकित ही रह गयी कि बापू का ध्यान बिसेनभाई के टेबुल पर भी क्या-क्या पड़ा है, यहॉ तक पहुॅचता है और किसीको कहे बगैर खुद ही कर दिखाते है।

इसके बाद चिट्ठियॉ पढ़कर थोड़ा-सा लिखा : "सिन्ध की खबर से मै बेचैन हो उठा हूॅ। सिन्ध जाने की इच्छा तो हो ही रही है, पर कौन-सा मुॅह लेकर जाऊॅ ? घर को जलता छोड़कर दूसरो को बचाने जाने पर आग और भभक उठती है। उसकी अपेक्षा अपना घर बचाने का प्रयत्न सफल हो जाय, तो दूसरे को मदद मिले।"

एक दूसरे पत्र मे : "समुद्र मे रहकर मगर के साथ दो-दो हाथ दिखाने की

बहादुरी करना निरी मूर्खता ही मानी जायगी न ? इसलिए आश्रम के नियमों का पालन न कर सकें, तो सुख से आश्रम के बाहर रहकर अनेक जन-कल्याणकारी काम हो सकते है। इससे ज्यादा लिखने का अब समय नही।

"मेरी उम्मीद तो है कि अब यहाँ थोड़े ही दिनो मे कुछ काम हो जायगा। अभी तो यहाँ आग जल रही है। आज हम अपनी इन्सानियत को ठुकरा रहे है। ईश्वर को जैसा मंजूर होगा, वैसा मार्ग दिखलायेगा। हमे तो अपना पुरुषार्थ नही छोड़ना चाहिए।

"आज तो सो नहीं पाया। कुछ तो चि० मनुड़ी का काम किया और चिट्ठियाँ देखी। यहाँ काम इतना ज्यादा है कि सुबह ही प्रार्थना के बाद अगर चिट्ठियाँ देख सके, तभी उनका उत्तर दिया जा सकता है। फिर तो मुलाकातों का ताँता ही लग जाता है। यहाँ तो मै करने या मरने के लिए बैठा हूँ। क्या होगा, यह कैसे कह सकता हूँ ? प्रकाश की खोज मे हूँ और अस्पष्ट किरणे दीख भी रही है। यदि सम्पूर्ण प्रकाश मिले, तो दिल्ली से 'दिली दोस्ती' बनी रहेगी। चलो, इतना तो बड़ी मुश्किल मे लिखा। आप सब कैसे है ? तेरी तबीयत कैसी है ? चि० मनुडी को तो लिखते ही रहना। बाकी सब वही लिखेगी। उसका शरीर मे सुधार नही पाता। नोआखाली मे मेरी सेवा मे यह काफी दुबली हो गयी है। अगर पुनः यह अपने को सुधार ले, तो मुझे अपार सन्तोप हो। मेरी बात मानकर अगर यह दो महीने आराम करे और प्रसन्न रहे, तो बाकी के सभी बाह्य उपचार मै कराऊँ। आज तो यह हो नहीं रहा है। मै पूरा ध्यान नहीं दे पाता। यहाँ कुछ परिणाम ला सकूँ, तो फिर दूसरा काम मनुडी को पहलवान जैसा बनाना है। अथवा भले ही मर जाय…यह विनोद मे लिख रहा हूँ।"

चिट्ठियो के बाद घूमने निकले। घूमते समय सिख के बारे में चर्चा की। आज खबर मिली है कि गोपाल स्वामी आयंगार कश्मीर के मामले के लिए कल 'यूनो' रवाना होंगे।

घूम आने के बाद बापू के पैर धोये। मैने मालिश की तैयारी की। मालिश मे बापू बगाली पाठ कर अखबार पढते-पढ़ते सो गये।

बाथ मे मुझे तबीयत के लिए व्याख्यान मिला। मैंने कहा : "पर आपकी तबीयत कहाँ अच्छी है ?" बापू ने कहा : "मै तो ७८ साल का हुआ और तू तो १७ साल की है न ? ७८ साल की तो हो जा, तब मेरे साथ स्पर्धा करना ! मै यह विनोद नही करता। मुझे समय नही मिलता। लेकिन यहाँ के लिए जैसा 'करने या मरने' का संकल्प है, वैसा ही संकल्प अब तेरे लिए भी करना पड़ेगा कि 'अच्छा होना या मरना !' आज ही तेरी बहन को मैंने चिट्ठी मे लिखा है। अगर न देखा हो, तो देख लेना।"

हजामत के समय बापू ने साबुन का उपयोग करना छोड़ दिया है। बापू का ध्यान इस ओर आकृष्ट करते हुए मैंने कहा कि "साबुन के बगैर जल्दी हजामत नही बन पाती।···" बापू ने कहा : "पगली लड़की ! बात पलट दे रही है न ?" मैं तो इतनी हँसी कि बापू को भी हँसना पड़ा।

यों बापू हर बात या हर प्रसंग को कभी गंभीरता से नही लेते। लेकिन आज तो गंभीरता से मेरे बारे मे अपने अन्तर की चिन्ता प्रकट कर रहे थे। मुझे लगा कि लगभग हर दो दिन बाद या तो मेरा बुखार बढ़ जाता है या सर्दी वगैरह कुछ हो जाता है। फिर भी कुछ याद न आये, तो बापू ड्रेसिंग-रूम मे रखे तौल के काँटे पर ही मुझे चढ़वाते। जाने क्यो हर वक्त वजन घटता ही रहता है या कभी-कभी उतना ही रहता है। कभी भी एक भी औंस बढ़ा ही नही। इसलिए और भी चिन्ता किया करते है। मेरा तो यह रोज का हो गया। यह बुखार, सर्दी आदि मुझे तो बहुत भयंकर नही लगते। फिर बापू को व्यर्थ चिन्ता मे क्यों डाले ? लेकिन आखिर बापू ने भावभरी आवाज मे और मुझे खूब थपथपाते हुए कहा : "तू तो नादान है ! नव अंकुरों को मै पानी न दूँ, तो यह मेरा भयकर अपराध होगा। तुझे इससे अधिक कहना भी व्यर्थ है, क्योकि तुझे कहने की अपेक्षा मुझे ही अधिक ध्यान रखना चाहिए। तेरी इस तबीयत का उत्तरदायी मै ही हूँ।" ···मेरी आँखो से आँसुओं की धाराएँ बह पड़ी। बापू का यह कैसा अद्भुत प्रेम है !

भोजन के समय थोड़ी देर मेरे नोट देख हस्ताक्षर कर दिये। घर से आये हुए पत्र पढ़वाये। परिवार का हाल भी बहुत दिनो बाद पूछा।

श्री आयगार मिलने आये थे। बापू का तो यही मन है कि "हमे खुद ही

अपना झगड़ा तय करना सीखना चाहिए। लेकिन अब मेरी और आपकी पद्धति जुदी है। मैं तो इसलिए कह रहा हूँ कि 'इतो भ्रष्टः, ततो भ्रष्टः' (इधर से भी गये और उधर से भी गये) ऐसा मत कीजिये। या तो आप अपने ही ढंग से शासन चलाइये और उचित निर्णय कीजिये या सम्पूर्ण सत्य-अहिंसा से। अब बिचला रास्ता अख्तियार करने से काम नहीं चल सकता।"

उनके जाने के बाद माधवराव अणे साहब आये। दरियागंज के मुसलमानों में अब्दुलगनी साहब, मौलाना हबीब उल रहमान साहब प्रमुख थे। उन्होंने रोज की तरह मुसलमानों पर होनेवाले अत्याचारों के बारे में शिकायतें कीं। बापू भी काफी बेचैन हैं। डॉ० सूर्यकान्त और शन्नोदेवी भी आयीं। हमारी अपहृत बहनों के बारे में लाहौर में एक सम्मेलन हुआ था। मृदुला बहन और रामेश्वरी बहन उस सम्मेलन में गयी थीं। ये लोग वहाँ की चौंका देनेवाली बातें कह रही थीं। इन्होंने तो अपने जीवन की बाजी लगाकर बहनों को यहाँ लाने का खूब प्रयत्न किया है। हिन्दू बहनों को तो इस बात का भी डर है कि अब समाज कदाचित् उन्हें न अपनाये। उससे तो यहीं रहना ठीक है। उन्हें काफी समझाना पड़ता है। इन लोगों ने कहा कि "इन बहनों के प्रति जनता का क्या धर्म हो सकता है, इस बारे में अगर आज बापू अपने प्रवचन में कुछ कहें, तो अच्छा होगा। श्रीनगर में हम लोग जहाँ टिके थे, उन सेठी साहब ने कश्मीर छोड़ दिया है। वहाँ अन्न-पानी की बड़ी ही कठिनाई हो रही है।" इस तरह उन्होंने अत्यधिक दुःखभरी बातें कहीं।

बापू की कताई, मिट्टी, भोजन वगैरह नित्य के अनुसार ही चलता है। आज के प्रार्थना-प्रवचन में चिट्ठियाँ तो काफी आयी थीं। लेकिन रेडियो रेकार्डिंग में १५ मिनट से अधिक समय न मिलने से उतने ही समय में प्रवचन पूरा करना पड़ा।

एक चिट्ठी में एक निर्वासित भाई ने लिखा था कि "जब तक यहाँ से मुसलमानों को न खदेड़ा जायगा, तब तक मैं अनशन करता रहूँगा।" उसे उत्तर में बापू ने सूचित किया कि "उनका अनशन निरा अधर्म है। लेकिन जिसे अधर्म ही करना हो, उसे कौन रोक सकता है? अनशन के बारे में सभी की अपेक्षा मेरा ज्ञान

अधिक है, ऐसा मैं मानता हूँ। कारण यह शस्त्र खोजनेवाला भी मैं ही हूँ। इसलिए सार्वजनिक अनशन कहाँ किया जाय, इस पर पूर्ण विचार करना चाहिए।"

एक दूसरी खबर मिली है कि "छात्र लोग हड़ताल कराकर अपना मनचाहा कर लेते है। इस तरह हड़ताले की ही नहीं जा सकती। मै स्वयं इस विषय में भी निष्णात हूँ। इतना ही नहीं, बल्कि मैंने कई बार हड़तालो का सचालन भी किया है। हर हड़ताल या अनशन उचित नही होते।"

"दिन मे मेरे पास बहुत से शरणार्थी आये थे। उन्होने मुझसे अपने पर हुए असह्य अत्याचारो की आपबीती बड़े ही दुःखभरे हृदय से कह सुनायी। उन्होने मुझसे यह भी कहा कि मैं उनकी ओर कुछ भी ध्यान नही देता। किन्तु यह सच नहीं है। उनके कल्याण के लिए ही मै यहाँ पड़ा हुआ हूँ। नही तो मेरा यहाँ क्या काम था? अपना हाल तो मैं ही जान सकता हूँ या जान सकता है एक ईश्वर! आज मेरी कौन सुनता है?

असमर्थ सरकार हट जाये

"एक जमाना था, जब मै जबान से एक शब्द भी निकालता, तो लोग तत्काल उसे झेलने के लिए तैयार थे। यह सच है कि उस समय मै अहिसक सेना का सेनापति रहा। किन्तु आज तो मानो जंगल मे रोता रहूँ, ऐसा मेरा यह अरण्य-रोदन है। आप अपनी पूरी शिकायते कीजिये। मकान और खाने-पीने की सुविधा माँगते है, तो इसका आपको पूर्ण अधिकार है। लेकिन उसके साथ-ही-साथ आपको जो-जो काम सौपे जायँ, उन्हे भी पूरी वफादारी के साथ पूरा करना चाहिए। आज राज्यशासन चलानेवाले मेरे मित्र है। लेकिन इसका यह मतलब नही कि मै जैसा कहूँ, वैसा ही वे चलते है। ऐसे चले भी क्यो? मित्र के नाते मेरी बात सुन ले। फिर उस पर अमल करना या न करना उन लोगो की इच्छा पर निर्भर है। मै कोई परमेश्वर तो हूँ ही नही। वैसे ही गर्व से भी नही कहता। लेकिन अगर कोई मेरा थोड़ा भी माने, तो मुझे लगता है कि यह दुर्दशा न भुगतनी पड़े। कदाचित् ऐसा भी हो कि इसमे मै कुछ भूल भी करता होऊँ!

"कराची और सिध मे आज हिन्दू-सिख रह नही सकते। सिन्ध से रवाना होने से पूर्व ये सब वहाँ के गुरुद्वारे मे जुटे थे। उसी समय उन पर हमला किया

गया। वहाँ की सरकार कहती है कि 'हम लाचार है। हमारी कुछ भी नहीं चलती। जो हुआ और हो रहा है, उसे रोकने मे हम असमर्थ है। कोई भी सरकार ऐसा कैसे कर सकती है?' मै तो दोनो सरकारों से कहता हूँ कि आप तो पूर्ण निःसहाय बन जाइये। कुछ भी करने की शक्ति न रखते हो, तो बेहतर है कि आप वहाँ से हटकर रास्ता साफ कर दीजिये, फिर भले ही जनता लुटेरा बन जाय। कोई भी सरकार इस तरह लोगों को मरने दे, इससे पहले खुद उसे मर मिटना चाहिए।"

बापू ने आज के प्रवचन में सरकार को जो सुनाया, जनता पर उसका काफी असर हुआ। प्रार्थना के बाद घूमते समय रामेश्वरी बहन थीं। मृदुला बहन भी आयी थीं। उन्होने पंजाब की अपेक्षा सिन्ध मे काफी खून-खराबी हुई, इसके समाचार सुनाये।

प्रवचन जॉच लिया और पण्डितजी आये। वे ३५ मिनट बापू के साथ अकेले बैठे। पण्डितजी आते है, तो बड़ा ही उदास चेहरा लेकर आते है और जाते है, तब तो उतने ही प्रफुल्लित होकर और मन का बोझ हलका कर विदा होते है। लेकिन बापू तो उनके जाने के बाद उतने ही अधिक चिन्तन मे दिखाई पड़ते है। क्योंकि दिनभर तो लोगो की तरह-तरह की अनेक समस्याएँ हल करनी पड़ती हैं—मारकाट की दुःखद बातें सुननी पड़ती हैं और रात मे पण्डितजी द्वारा दिनभर से भी गम्भीर तथा उदासीभरी बातें सुनकर हल निकालना पड़ता है। कारण, यह सारा कष्ट बड़ों के कारण ही आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। राज्य-संचालकों की अंदरुनी विचारणा ही भयंकर होती है। लेकिन पण्डितजी पर से यह बोझ बापू अपने ऊपर ठीक वैसे ही उठा लेते है, जैसे कोई पिता पुत्र के पास से किसीकी ऑखो पर चढने या अप्रिय बनने का उत्तरदायित्व स्वयं उठा लेता है। सचमुच रात मे तो बापू धीरता और वीरता के अजीब संगम दिखाई पड़ते और अपना रास्ता साफ करते है।

• • •

गहरी चिन्ता में : ९ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
८-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना ! काका साहब कल से ही यहाँ आये हुए है, इसलिए आज प्रार्थना मे वे भी उपस्थित थे। प्रार्थना के बाद काका साहब अन्दर बैठे थे। बापू ने उनसे पूछा : 'क्यो आपको समय चाहिए न ?' काका साहब ने कहा : 'मिल सके तो, नही तो नही।'

बापू ने कहा : 'ऐसा कहोगे, तो रह ही जायँगे। मेरे पास इन दिनो जितना काम लदा है, उतना कभी भी लदा नही रहता था। यह देखकर मुझे ऐसा लगता है कि अब मेरा ऐन मौका आ गया है। मै इतना काम देख पागल क्यो नही हो जाता ? ईश्वर मुझे कैसे निभा रहा है, यही आश्चर्य हो रहा है ! ऐसी मेरी स्थिति है।

बापू का कहना भी सच ही है। उनके पास मुलाकाती भी इतने ज्यादा है और चिट्ठियाँ भी लदती ही जा रही है। फिर तबीयत भी ठीक नही।

काका साहब से बाते करते समय बापू थोड़ी देर लेट गये। करीब दस मिनट आँखे भी लग गयी। दरमियान घूमने का समय हो जाने से गरम पानी और शहद लेकर घूमने के लिए उठे। मैने बापू के पास उन्हीके हाथो लिखने की चिट्ठियाँ रख दी।'

आराम का समय आ रहा है

घूमते समय काका साहब साथ थे। भाई साहब ने भावलपुर के दगे की बात कही। रोज कुछ-न-कुछ नयी बात हो ही जाती है। कही से शान्ति के समाचार आते ही नही। बापू भी काफी बेचैन हो उठे है। मैने मालिश की तैयारी की। मालिश मे बापू के बगला पाठ के बाद मैने कहा : 'बापू, आज आप आराम ही कीजिये न ? क्यों पढ़ रहे हैं ?' बापू ने कहा : 'अब तो मुझे भी लगता है कि आराम का समय नजदीक आता ही जा रहा है। फिर तो तू झकझोर कर जगायेगी, तो भी मै न जागूँगा। देख तो सही कि चिट्ठियो का

कितना ढेर लग गया है। दूसरी ओर दिन-दिन भयंकर अशान्ति के समाचार आ ही रहे हैं। इस बारे में तो मुझे और तुझे विचार करना है कि हमारी कसौटी कहाँ है? हम जाग्रत हैं या इस बिरला-भवन में आकर सो गये हैं? इसका खूब विचार कर।'

मैं तो एक शब्द भी न बोली और अपना काम चुपचाप किया। बाथ में आज बापू की हजामत का दिन था। स्वयं को चिट्ठी लिखने का समय नहीं मिलता, इसलिए हजामत का 'रेजर' खुद लिया, मुझसे कागज और कलम ले आने के लिए कहा और स्वयं हजामत करते हुए दो पत्र लिखवाये: 'दो दिनों से यहाँ काका साहब आये हुए हैं। हिन्दुस्तानी के बारे में और अन्य भी कई बातें करने का बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाये। अगर वे न कहते, तो यहाँ हफ्तों रह जाने पर भी बात करने का समय मिल पाता या नहीं, कहा नहीं जा सकता। दिनभर सैकड़ों भाई-बहन आते रहते हैं और चिट्ठियों का ढेर लगा हुआ है। 'हरिजन' का तो पूरा करना दूर ही रहा। जरा भी समय नहीं। चि० मनु ही मेरी हजामत करती है, पर आज उसका काम मैंने ले लिया है। बाथ में पड़ा-पड़ा मैं दाढ़ी पर उस्तरा फेर रहा हूँ और यह चिट्ठी, याद रखकर, चि० मनु से लिखवा रहा हूँ।

'मेरी तबीयत चाहिए, वैसी नहीं है। राम-नाम की न्यूनता!···को राजकोट जाना चाहिए, ऐसा मैं मानता हूँ। यहाँ रखने और रहने में खुद ही अपने को ठगता है और दूसरे को भी। आदमी खुद ही अपना दुश्मन बनता है। कोई किसीका दुश्मन नहीं बन सकता। इसी तरह दुनिया में कोई किसीका बिगाड़ भी नहीं सकता।

'अब आश्रम में रहने का मोह त्याग दें। आश्रम में तो अब जो इने-गिने लोग हैं, उनसे भी कहता हूँ कि जो अपने पैरों पर खड़े रह सकते हों, वे ही रहें।

कण्ट्रोल टूटने से राहत मिली। उसका तो मुझे जरा भी डर नहीं था। किन्तु अमुक के हितों को नुकसान पहुँचेगा, इसलिए सरकार ही डरती रही। लेकिन क्या इस तरह डरने से राज्य चलाया जा सकता है?

'इन दिनों मेरी तो अस्त-व्यस्तता ही समझिये। यहाँ अभी आग दबी हुई है। कब प्रकट हो उठेगी, कहा नहीं जा सकता।'

"...'आपका खत अंग्रेजी मे लिखा हुआ मिला था। पहले तो मै माफी माँगता हूँ कि आपको जवाब देर से दे रहा हूँ। मेरे पास एक मिनट की फुर्सत नहीं रहती। इस समय भी टब मे लेटा हूँ। हजामत कर रहा हूँ। वैसे तो रोज मनु करती है। मगर आज मै खुद अपने हाथ से हजामत करता हुआ मनु से यह लिखवा रहा हूँ। यह है आज की मेरी हालत!

'बहावलपुर का मामला बहुत बिगड़ रहा है। बिगरी कौन सुधारे? मै काफी बेचैन हो उठा हूँ। पडितजी तो दिन मे एक दफा आते ही है। उनसे बात कर लूँगा। वहाँ जाने से कुछ लाभ नही है। अगर यहाँ कुछ कर सकूँ, तो सारे हिन्दुस्तान मे कुछ हो सकेगा। वैसे इधर-उधर दौड़धूप करने से कुछ होनेवाला नही है। यहाँ तो करना है या मरना! अगर बहादुरी से मर सकूँ, तब भी बहुत लाभ होगा। देखे, आखिर ईश्वर क्या करवाता है? हम सब उन्हीके हाथ मे है।

'आप वहाँ की जनता को छोड़कर हरगिज मत आइये। अगर वहाँ आप बहादुरी से मर भी जायँ, तो बहावलपुर की खैरियत है।'

मर-मिटने का समय

स्नान मे बहुत देर लग गयी और बाहर सुचिता बहन कृपलानी वगैरह आये हुए थे। इसलिए ज्यादा नही लिखवाया। कीकी बहन ने सिंध की हालत सुनायी। बापू ने जवाब दिया कि 'वहाँ का वर्णन तो मै खूब-खूब सुनता हूँ। लेकिन यह नहीं सुनता कि कांग्रेस का एक भी नेता मारा गया हो। आप यह वर्णन सुनाने आयी, इससे बेहतर होता कि अगर मै यह सुन पाता—बहनो की इज्जत बचाते हुए कीकी बहन पर हमला हुआ और वे मर गयी। जिस दिन हममे ऐसी बहादुरी आयेगी, उसी क्षण अपने-आप शान्ति स्थापित हो जायगी। अब समय बाते करने, उपदेश देने या वर्णन करने का नही है। यह तो मर-मिटने का समय है।'

रोज की तरह स्थानीय मुसलमान भाई आये हुए थे। दोपहर मे तो कताई और कुछ डाक भी देखी गयी। रुक्मिणी बहन येरुळकर आयी थी।

दोपहर मे सरदार दादा भी आये। आज तो बापू की सर्दी ठीक मालूम

पड रही है। वर्तमान परिस्थिति पर बातचीत के सिलसिले मे बापू ने विनोद किया कि 'आपको तो १०० साल जीना है न ! और अब जीना ही चाहिए।' तुरत ही सरदार दादा ने जवाब दिया : 'शर्त लगाकर कि आपके १२५ तो मेरे १००; नहीं तो नहीं !'

पट्टनी साहब भी मिलने आये थे। ठक्कर बापा और हरिजी सिर्फ मिलने के लिए ही आये थे। मीरपुर के निर्वासितो ने रोते-कलपते बापू को अपनी आप-बीती सुनायी। उसे सुनकर तो क्षणभर सुननेवाले भी कॉप उठते।

प्यारेलालजी अपने साथ नोआखाली की एक निर्वासित बहन को लेकर आज ढाका से आये। उन्हे सभी 'दीदी' कहते है। मालूम पड़ता है कि वे हिन्दी नहीं जानतीं। लेकिन चेहरे पर से बुद्धिमान् दीख पड़ती हैं। करीब ४० साल की होगी। भटियालपुर मे वे खुद जिस गॉव मे काम कर रहे थे, उसी गॉव की ये बहन है।

पंडितजी भी चालू मुलाकात कर गये। रात मे पुनः शेख साहब के साथ आयेंगे। खासकर वे बापू की तबीयत देखने के लिए ही आये थे।

शराब, हड़ताल और सत्याग्रह

आज के प्रार्थना-प्रवचन मे बापू ने कहा : 'एक भाई की शिकायत है कि उन्होंने कल दोपहर मे ३॥ बजे एक चिट्ठी लिखी होगी, पर मैंने उसका जवाब नहीं दिया। मेरे पास असख्य चिट्ठियॉ आती है। कितनी ही बार ऐसी भी चिट्ठियॉ आती है, जिनकी भाषा मै नहीं जानता। इसलिए उस भाषा के जान-कार जब मुझे उसमे का मजमून समझाते है, तब काम चलता है। लेकिन बहुत जरूरी बात हो, तो मुझे अवश्य बता सकते है।

"एक दूसरा प्रश्न यह पूछा गया है कि 'आप हरिजनो से शराब छोड़ने के लिए कहते है, तो औरो से क्यों नहीं कहते ? क्या पैसेवाले और पढ़े-लिखे लोग उसे न छोड़े ?' यह प्रश्न ही अनुचित है। एक आदमी पाप करे, तो क्या दूसरो को भी वह करना चाहिए ? और जो पढा-लिखा वर्ग है, सेना में काम करता है, उसे क्या समझाया जाय ? गरीब और मजदूर तो दिनभर खूब मशक्कत करके घर आते है। उन्हे वहॉ कुछ भी मानसिक और शारीरिक आराम नहीं

मिलता। इसी कारण वे शराब पीते है। लेकिन धनिक वर्ग के लिए तो ऐसी बात नही है। किन्तु मै तो सेना को ही नही मानता। तब सेना के सैनिको के शराब पीने की बात ही कहाॅ रही ? लेकिन ऐसे अग्रेज और भारतीय भी काफी तादाद मे है, जो कभी शराब को छूते नही।

"छात्रो की हड़ताल के बारे मे मुझे यह पत्र मिला है कि उसमे काग्रेसी छात्र नही है, कम्युनिस्ट है। कम्युनिस्ट या सोशलिस्ट, आखिर सबका लक्ष्य देश-सेवा ही करना है। यह समझकर राजी हो सकते है। लेकिन छात्र जब तक पढ़ रहे हो, तब तक उनका एक दल होना चाहिए और वह है—विद्या हासिल करने का दल। जब हिन्दुस्तान स्वतंत्र नही हुआ था, तब मैने हड़ताल करने और कराने मे भाग लिया है। पर सभी हड़ताले अहिसक और सत्य मूलक होती है, यह मानने का कोई कारण नही। आज जब कि देश भयंकर स्थिति मे से गुजर रहा है और उसे सच्चे छात्रो की जरूरत है, तब इस तरह हड़ताल कराने से विपत्ति और बढ़ जाती है, यह समझना चाहिए।

"एक दूसरे भाई ने मुझे सूचित किया है कि 'आप पाकिस्तान जाकर वहाॅ की भयानकता का सामना क्यों नहीं करते ? वहाॅ जाकर आप अत्याचारो के सामने सत्याग्रह क्यो नही करते ?' वहाॅ मै किस मुॅह से जाऊॅ ? जब यहाॅ हम पाकिस्तान की पुनरावृत्ति कर रहे हैं, तो वहाॅ जाकर किसे क्या कहूॅ ? अगर भारत मे शान्ति स्थापित हो जाय, तो आज ही और अभी ही मै पाकिस्तान के लिए चल पडॅू। यहाॅ राजधानी के शहर मे ही हिन्दू, सिख पागल बन गये है और वे चाहते है कि यहाॅ से सभी मुसलमानो को निकाल बाहर कर दे। अगर हम ऐसा करेगे, तो वह हमारे लिए बड़ी ही लज्जा की बात होगी। फिर पाकिस्तान मे हिन्दू, सिख तो रहना ही नही चाहते, तब कौन सत्याग्रह करे और किसके सामने करे ? आज सत्याग्रह और अहिंसा रह ही कहाॅ गयी है ? आज तो सभी को सेना का सरक्षण चाहिए। हमने सेना को ईश्वर की जगह ही बैठा दिया है। अभी भी मै कहता हूॅ कि अगर मेरी बात मान ले, तो देश का रूप ही बदल जाय। सत्याग्रह तो हर हालत मे और हर मौके पर काम आनेवाली चीज है। लेकिन उसे चलानेवाले होने चाहिए न !

"आज मेरे पास कश्मीर के, मीरपुर के और बहावलपुर के लोग आये थे।

वे सभी अत्यधिक हैरान, परेशान थे; फिर भी बातें विवेक से ही करते रहे। पंडितजी के साथ भी उनकी बातें हुईं और उन्होंने कहा कि मुझसे जो कुछ बनेगा, अवश्य करूँगा। भले ही वहाँ लड़ाई शुरू न हुई हो, पर एक प्रकार की तो लड़ाई चल ही रही है न? ऐसी स्थिति में से रास्ता निकालकर सबको खदेड़ना भी मुश्किल हो जाता है। हमारे पास पर्याप्त गाड़ियाँ भी नहीं हैं।

"बहावलपुर में भी भीषण अत्याचार हो रहा है। एक आदमी से अधिक-से-अधिक जितना हो सकता है, मैं उतना करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

"उनकी एक और शिकायत है कि जब कोई किसी अन्य प्रान्त से आता है, तो उसे वहाँ नौकरी मिल सकती है। लेकिन जब कोई देशी राज्यों से आता है, तो उसे नौकरी नहीं मिलती। मैंने सरदार साहब से इस बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि इस तरह भेद हो ही नहीं सकता। फिर भी गलतफहमी से किसी पर ऐसा अन्याय हो गया हो, तो वे उसकी सूचना दे सकते हैं।"

प्रार्थना के बाद बापू टहले। रात में डा० किचलू साहब और शेख साहब आये थे। कश्मीर की बातें चल रही थीं। हम लोग आज बाहर घूमने के लिए निकल पड़े थे। सरदार दादा के घर तक गये। हमें देख सरदार दादा ने पूछा, तो हमने जवाब दिया : तबीयत नहीं लगती, इसलिए आज बिरला-भवन से बाहर घूमने निकले। सरदार और मणिबेन दोनों आफिस में काम कर रहे थे। हम लोगों का जवाब सुनकर मणिबेन ने कहा : 'इन लड़कियों को खिलौने की पिटारी ला दो, जिससे ये खेलें।'

मणिबेन ने हमें लावा का लड्डू और अचार, वह भी बंगाल का था, प्रेम से खिलाया। लौट आने तक तो बापू के सोने का समय हो चुका था। पर वे इतने अधिक थक गये थे कि शाम को ही ७–७॥ के बीच सो गये थे। उठने के बाद प्रवचन देखा।

"बापू आजकल बहुत दुःखी रहते हैं। प्यारेलालजी के साथ आयी हुई बंगाली बहन तो कमरे से बाहर ही नहीं निकलतीं। बापू मुझसे कहते हैं कि तुझे इन्हें बहलाना चाहिए। लेकिन ये तो प्यारेलालजी के सिवा किसीसे बातें ही नहीं करतीं।

आजकल तो बापू का आहार इस प्रकार चलता है : प्रार्थना के बाद भोर

मे गरम जल और शहद । फिर ५॥ बजे २ चम्मच शहद और गरम जल । ९॥ बजे भोजन मे एक दिन ३ पतली रोटियाँ, कच्चा शाक, दूध १६ औंस, २ संतरे, १ सेब और एक दिन ३ केले, १६ औंस दूध—दूध और केला अलग कर और केले के दिन गेहूँ नही—और उसके साथ सतरा या कोई फल । फिर १२॥ बजे आराम कर लेने के बाद गरम जल और २ चम्मच शहद तथा जरा-सा सोड़ा । फिर ३॥ बजे मिट्टी रखने के बाद गरम जल और शहद—गरम जल हर बार १ गिलास और शहद २ चम्मच । ४ बजे उबला हुआ शाक, थोड़ा-सा सतरा या उसीके जैसा रसदार फल तथा १६ औंस दूध और प्रार्थना के बाद ७ बजे गरम जल और शहद ।

रात मे नित्य के अनुसार बापू पैर धोकर और कसरत कर बिस्तर पर लेटे । कह रहे थे कि "आज दिनभर इतनी मुलाकाते थी कि इस समय थकान मालूम पड़ रही है । कश्मीर का मामला सरलता से हल हो जाय, ऐसा नही दीखता । शेख साहब के साले तो सब कुछ इन्दौर मे लेकर बैठे है, ऐसी भी एक शिकायत आयी है । देखे, जो कुछ हो सो सही ।" बापू कुछ गहरे विचार मे हो, ऐसा लग रहा है । पहले जैसे प्रफुल्लित नही दीख पड़ते, यद्यपि उनका विनोद, काम आदि सब कुछ नियमानुसार ही चलता रहता है ।

रोज की मुलाकातो मे मिलने आनेवालो मे प्रतिदिन दो-चार विदेशी हुआ ही करते हैं । उनसे भी बापू नम्रता के साथ कह देते है कि "आजकल जो कलह मचा है, वह हमारे लिए बड़ी लज्जा की बात है ।"

सम्बन्धियो मे एक विवाह हुआ, इस बारे मे नारायण काका का एक पत्र आया था ।

...को बापू ने लिखा—उसमें भी ऐसी भयानक स्थिति मे यह सब होता है, इसी कारण उन्हे जरा भी उत्साह नही—इसका प्रतिबिम्ब यह रहा : 'चि०···के बारे मे आश्चर्य और खेद ! जो हो, उसे मुझे देखते रहना है । सब कुछ अपने स्वभाव के अनुसार ।···फिर नवीन ही अपवाद क्यो बने ? इस विवाह के विषय मे मैं पूर्णतः उदासीन हूँ । मुझे क्या सोचकर आपने लिखा होगा ? मेरे आशीर्वाद कैसे ? —बापू के आशीर्वाद ।'

यह पत्र ९ तारीख को "पोस्ट" किया गया ।

दिली दोस्ती ही हमें बचायेगी　　: १० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

९-१-'४८

बापू आज प्रार्थना-समय से १० मिनट पहले ही जग गये थे। उन्होंने··· को लिखे पत्र में सुधार करने के लिए कहा। बापू ने कहा : "मैं जो मानता हूँ, वह मुझे कनु और नारायणदास को भी सूचित कर ही देना चाहिए। अहिंसा और सत्य को माननेवाले के लिए किसीसे डरने या छिपाने की कोई बात ही नहीं होती। मैं तो उस संस्कृत श्लोक को मानता हूँ : "अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्, असाधुं साधुना जयेत्।' आखिर इस श्लोक को माननेवाला और इसके प्रति श्रद्धा रखनेवाला और लिख या कह ही क्या सकता है? इसमें अगर जरा भी नरमाई करूँ, तो वह चल ही नहीं सकती। कौन क्या सोचेगा, इसकी दरकार करने का यह समय नहीं। यह तो महायज्ञ है, जिसमें अब सम्पूर्ण और सर्वांगशुद्धि ही निभ सकती है। दम्भी लोग एक के बाद एक अपने आप नीचे गिरते जायँगे, यह सुनिश्चित है।

"अगर हम जैसे अनेक मिट जायँ, तो भी सत्य या अहिंसा का गज इंच-भर भी घट नहीं सकता। मैं स्वयं भूलों से भरा हुआ हूँ। मैंने भूलें नहीं की या न करूँगा, ऐसा अहंकार किया ही नहीं जा सकता। लेकिन ये भूलें अगर इरादे के साथ न की गयी हों, तो सदैव क्षमा के लायक हैं।"

हमें दिली दोस्ती ही बचायेगी

"आज यह राजधानी भी एक तरह से कैद में ही है। भारत की राजधानी स्वतन्त्र होते हुए भी पुलिस और सेना के संरक्षण से ही सुरक्षित है। इसके बीच में बैठा हूँ और देखा करता हूँ। अहिंसा को माननेवाले लोगों को भी आज हिंसक यन्त्रों का सहारा लेना पड़ रहा है, इसमें मेरी कैसी कसौटी होगी? ईश्वर की इच्छा में न जाने क्या अजीब रहस्य समाया होगा? लेकिन मुझे तो करना है या मरना! दिल्ली में हथियार हमें बचा सकते हैं, ऐसा माननेवाले भारी भूल

कर रहे हैं। क्या दिल्ली को और क्या दुनिया को, एक ही चीज बचा सकती है और वह है, दिली दोस्ती !

"समय बिलकुल नही है। चिट्ठियों से दबा पडा हूँ। आज तो इतना ही।"

बापू के कोई-कोई पत्र कभी काव्यमय बन जाते हैं। उन्होने यह पत्र नही, पोस्टकार्ड लिखा है। और इस कार्ड मे अहिंसा पर एक महानिबंध (थीसिस) लिखा जाय, वैसे शब्द प्रयोग किये है और गूढ़ ज्ञान भर दिया है।

आज घूमने के समय कोई खास बाते नहीं हुई। वर्तमान परिस्थिति पर ही बाते हुई। बापू ने कहा : "हम लोगो के पापों से (देश के नेताओं के निर्णयो से) बेचारे निरपराध हजारो गॉववाले को यह भुगतना पड़ रहा है और हम लोग तो ऐसे आलीशान बंगलो मे मजा लूट रहे है। मोके-बेमौके लोग पार्टियो और उत्सवो मे कही भी भाग लेने से नही चूकते। इसी कारण दुःखी प्रजा को स्वराज्य होने का किसी भी प्रकार अनुभव नही होता। घर मे किसी की मृत्यु होने पर यह प्रथा है कि सारा परिवार कुछ नियत समय तक उसका शोक मनाता है। इससे जिस पर वह आपत्ति आयी हो, उसे सहानुभूति का अनुभव होता है। इसी तरह अगर हम लोग भी इस दुःखी प्रजा की सहानुभूति मे अमुक-अमुक त्याग किये होते, तो उन्हे यह दुःख होने के बावजूद एक प्रकार का आनन्द ही होता। लेकिन हम लोग मुँह से तो लम्बी-चौड़ी बाते करेगे, भाषण देगे कि हमे आपसे सहानुभूति है, पर आचरण मे शून्य ही रहेगे।

आत्म-निरीक्षण

"मुझे खुद को ऐसा मालूम पड़ता है कि मै इतने बड़े महल मे किसलिए रहता हूँ। अपनी आवश्यकता से एक इञ्च भी अधिक जमीन इस्तेमाल करने का मुझे कतई हक नही। अगर हर नेता और हर बॅगले का मालिक इस तरह सोच-समझकर आचरण करे, तो देश मे आपत्ति होने के बावजूद एक तरह का गौरव मालूम पड़ सकता है। बेचारे निर्दोष निर्वासित इस कड़ाके की सर्दी मे खुले आकाश के नीचे पड़े-पड़े अपने बच्चों और बहनो की भयकर दुर्गति और वेदना से आह भर रहे है, उनकी वह जलन भी इस तरह कुछ शान्त की जा सकती है। पर यह सब कहॉ कहूँ और किससे कहूँ ? यह सुनने की फुर्सत ही किसे है ?

यह कहूँ, तो चल सकता है कि इसके लिए फुर्सत मेरे सिवा और किसीको है ही नहीं।"

बापू अपनी मनोवेदना तो स्वय ही समझ सकते हैं। वे ही उसे पी सकते और सँभाल सकते है। दूसरा होता, तो हार्टफेल ही हो जाता। फिर भी दिल्ली, बहावलपुर, सिन्ध और पजाब की परिस्थिति से आजकल वे काफी बेचैन है और कहा करते हे कि 'इसका अपराधी तो मैं ही हूँ। अपनी अहिंसा और सत्य का सूक्ष्मता से विचार और आचरण करने मे निश्चय ही मैने कहीं भूल की, फिर उसका प्रतिबिब तो पड़ेगा ही। मैंने मान लिया कि यह शूरो की अहिसा और शूरो का सत्य है। कदाचित् ईश्वर ने उस समय मुझे जान-बूझकर अन्धा बना दिया हो। अच्छा हुआ कि जिन्दगी की समाप्ति के समय ही मै जाग सका और यह देख सका। इसी तरह बहादुरी के साथ मर सकूँ, इतनी ही मेरी भगवान् से प्रार्थना है। अपने आपके लिए इतना भी कर सकूँ, तो भी उसमे मेरी विजय ही होगी।'

मालिश के समय बापू ने अखबार देखे और बगाली पाठ किया। स्नान के समय 'टर्किश बाथ' की चर्चा करते हुए कहा : 'उसमे पहले गुनगुना पानी, फिर अधिक गरम और फिर तो इतना ज्यादा गरम होता कि सहन ही नहीं हो पाता। इसकी फी भी बहुत होती है, पर लाभ भी काफी होता है।'

सरदार दादा सिर्फ मिलने के लिए आये। भावनगर का मन्त्रिमण्डल भी लगभग तय हो गया है। वे लोग आज मिलेगे, सब कुछ तय हो जायगा।

जीवनजी भाई ने कहा कि 'उर्दू हरिजन' बहुत नहीं खपता, इसलिए उसमें काफी घाटा उठाना पड रहा है। बापू उसके बारे मे 'हरिजन' मे लिखते है। बहावलपुर के लोग भी आये। वे चाहते है कि बापू की ओर से कोई वहाँ जाकर प्रत्यक्ष आँखों से सारी स्थिति देख आये। पडितजी, मेकडानल्ड और दूसरे भाई सिर्फ भेट करने के लिए आये थे।

भावनगर की चिन्ता

गोहिलवाड जिले की ओर से आये हुए प्रतिनिधि-मण्डल मे मनुभाई पचोली, बलवन्त भाई, मोहन भाई मोतीचद (गढ़डावाला) आदि थे। एक सुझाव

यह भी आया था कि नानाभाई भट्ट को भावनगर के उत्तरदायी शासन का प्रधान मन्त्री बनाया जाय। बापू ने कहा : "मैं तो चाहता हूँ कि जैसे रामराज्य मे वसिष्ठ मुनि सलाहकार थे, वैसे ही आप भी नानाभाईको सलाहकार नियुक्त करें। ये प्रधान बनकर इससे अधिक उस पद को सुशोभित न कर पायेगे। अगर प्रजा और राज्य के बीच सघर्ष हुआ, तो ये कड़ी का काम करेगे। ये अपना कार्य-क्षेत्र भी शहर मे नही, 'आबला' गॉव मे ही रखे। मै नही मानता कि इसके लिए नानाभाई ना कहेगे। वे सत्ता के पद पर विशेष सुशोभित न हो सकेगे। उनका स्थान शिक्षा के पद पर ही हो सकता है। अगर सभी मन्त्री बन जायँ, तो प्रजा कौन होगी ? जैसे मन्त्री शिक्षित चाहिए, वैसे ही प्रजा भी शिक्षित होनी चाहिए न ? जब प्रजा शिक्षित होगी, तभी वह मन्त्रियो को जाग्रत रख सकती है। देश की समृद्धि का मार्ग तो शिक्षित जनता ही दिखा सकती है। इसकी अपेक्षा मेरी तो निजी राय है कि बलवन्त राय को प्रधान मन्त्री बनाया जाय। वे वर्षो पुराने भावनगर के सेवक हैं। सिवा बलवन्त मे प्रधान मन्त्री बनने की जो योग्यता है, वह नानाभाई मे नही है और नानाभाई मे जो है, वह बलवन्त राय मे नही हो सकती। अकेले ढेबर से भी काठियावाड़ का काम चलना कठिन है। पूरे काठियावाड़ मे अगर ये दोनों रहे, तो फिर मुझे तनिक भी चिन्ता नही। इस समय सारे काठियावाड़ का बोझ अकेले ढेबर पर डालने का भी कोई अर्थ नही।"

दूसरी एक विशेष बात का ध्यान रखते हुए बापू ने कहा : "इस उत्सव मे पट्टनी को बड़े आदर के साथ रखना चाहिए, यह मेरी निजी सलाह है। लेकिन अगर उन्हे बुलाकर उनकी निन्दा करनी हो, तो मत बुलाइये। किसी भी प्रकार का पूर्वग्रह रखेगे, तो सदैव पिछड़ जायँगे। इनसे बहुत कुछ सीखना है। कितनी बार तो इनके अनुभवो से ही इस राज्य को उन्नत किया जा सकता है। लेकिन यह तो मेरी बिना मॉगी हुई सलाह है। गले न उतरे, तो पूरी तरह त्याग दे। फिर भी ऐसा न मानिये कि बापू ने इतना कहा, उन्हे यह अच्छा लगेगा, इसलिए करना ही चाहिए और करते है। मुझे रिझाने के लिए कुछ करेगे, तो रिझानेवाला और मै, दोनो पिछड़ जायँगे।"

आज तो निर्वासित भी काफी आये। कितने ही निर्वासितो ने, यहॉ के

मुसलमानो के साथ संपर्क होने के कारण, ये शर्ते रखी कि वे यहाँ के मुसलमानों को वहाँ के अपने घर दे दे और वहाँ के हिन्दुओ को यहाँ के मुसलमानों के घर मिले। इस तरह निजी सम्बन्ध के कारण उन्होने आपस मे ही अदला-बदली कर ली है। किन्तु सरकार विदेशी राजदूतो की व्यवस्था के लिए उनसे वे मकान खाली करवा रही है। यह भी बापू को अच्छा नहीं लगा। सरकार, जनता और नेता लोग एक के बाद एक ऐसी-ऐसी भूले कर बैठते है कि मुश्किल से एक आपत्ति का अन्त होता नहीं, तब तक दूसरी खड़ी हो जाती है।

आज के प्रवचन मे बापू ने कहा : "बहावलपुर मे एक मन्दिर था और आज भी है। लेकिन अब वह हिन्दुओ के पास नहीं रहने दिया गया है। वहाँ के मुखियाजी मेरे पास आये और बड़ी ही कठिन स्थिति से बचकर आये है। वे कुछ बहनो को तो बचा सके, पर सभी न बच सकीं। अब वहाँ जो पड़े हैं, उनकी कुछ-न-कुछ व्यवस्था तो होनी ही चाहिए। एक मानव से जितना हो सकता है, उतना तो मै कर ही रहा हूँ। बाकी एक-दूसरे के राज्य मे एक-दूसरा दखल न दे, इसलिए मै अधिक क्या कर सकूँगा, इसकी जामिन तो दे ही नहीं सकता। मै तो यही कहता हूँ कि ईश्वर के सिवा और किसी पर भरोसा रखना मूर्खता ही है।

"आज मेरे पास अमुक भाई-बहन आये थे। उन्हे सरकार ने विदेशी राजदूतो के रहने के लिए मकान की आवश्यकता बतलाकर उसे खाली करने की सूचना दी है। इसमे सचाई कितनी होगी, यह तो मै नही कह सकता। उन लोगों का दावा है कि उन्होने वहाँ रहनेवाले मुसलमानो के साथ आपसी अदला-बदली कर ली है। लेकिन उनके पास कोई प्रमाण तो है नही। ऐसी स्थिति में इस मामले मे मै एक ही बात कह सकता हूँ कि किसी भी रहनेवाले आदमी को किसी भी सरकार द्वारा यह कभी नहीं कहा जा सकता कि आप सड़क पर जाकर रहिये या चाहे जहाँ रहिये, पर मकान खाली कर दीजिये। विदेशी राजदूतो के लिए मकान अवश्य माँग सकते है, पर उसमे रहनेवाले लोगो को सन्तुष्ट करके ही। फिर भी मै कोई सरकारी आदमी नही। मेरी वहाँ कौन सुने ? इन लोगो से भी कहता हूँ कि आपके पास किसी भी तरह का प्रमाण तो है ही नहीं। इसलिए सरकार को ऐसा भी लगा हो कि क्या ये लोग लुटेरो की तरह तो घुस

नही गये ? चाहे जो हो, फिर भी सरकार व्यवस्था करने के बाद ही मकान खाली करा सकती है।

"एक भाई ने मुझे बतलाया कि मै 'बिरला-हाउस मे रहता हूँ, इसलिए गरीब यहाँ आ नही पाते। मै हरिजन-बस्ती के बदले यहाँ क्यों रहता हूँ ?'

बापू: "मै दिल्ली मे आया, तो यहाँ मारकाट चल रही थी और हरिजन-बस्ती शरणार्थियो से भर गयी थी। इसी कारण मै यहाँ रहा हूँ। मुझे कुछ इस महल मे रहने का शौक नही है। लेकिन अगर वहाँ की हरिजन-बस्ती शरणार्थियो के सत्कार्य मे काम आ रही हो, तो उसे खाली करवाना मुझे पसन्द नही। यहाँ जिसे आना हो, वह आ ही सकता है। मै तो यहाँ पड़ा-पड़ा जितनो को आश्वासन दे सकता हूँ, देने का प्रयत्न करता हूँ।"

शेष सारा कार्यक्रम रोज जैसा ही साधारण रहा। प्रार्थना के बाद टहलते समय श्रीमन्नारायणजी साथ थे। फिर ब्रिटेन के हवाई-विभाग के अधिकारी "आर्थर" आये। बापू उनसे "हवाई जहाज किस तरह बनता है, कितनी देर मे कहाँ पहुँचता है", आदि बातो को ध्यान से सुनते रहे। कुछ विनोद भी चलता रहा। उस बीच बापू ने कहा: "मै अब ऊपर जाने के सिवा अपने लिए दूसरा कोई रास्ता ही नही देखता। मुझे तो करना या मरना ही है।... हाँ, रात मे मै कई बार जहाज की हरी-लाल बत्तियाँ देखता हूँ, तो वे आकाश मे तारो जैसी लगती है। ऐसी अजीब खोजो के सामने भी मानव का मस्तिष्क ऐसा पागलपन और दुर्बुद्धि अपनाकर इस तरह भीषण मारकाट करता है, यह सोचकर तो स्तब्ध ही हो जाना पड़ता है। नन्ही-सी बुद्धि क्या-क्या कर गुजरती है ?"

बापू उनके वर्णन मे इतना रस ले रहे थे कि मै पूछ ही बैठी: "बापू! अब आपको हवाई जहाज चलाना तो नही सीखना है न ?" बापू ने कहा: "हाँ, रोज इन सबके साथ हवाई गोले जैसी गप तो लगाते ही है ?"...छोटी-छोटी बात भी इतने ध्यान से सुनते है कि वह कैप्टन भी उतना ही खिल उठा।

फिर पण्डितजी दूसरी बार आये। उनके साथ 'हैण्डरसन' भी थे। ये बैठे थे। इसी बीच रामेश्वरी बहन नेहरू भी आ गयी। इस कारण प्रवचन देखने मे थोड़ी देर हो गयी। बापू ने गरम पानी पीया, कसरत की और ९॥

बजे सोने की तैयारी की! रोज सिर में तेल तो मैं ही मलती हूँ। इस कारण बापू उसी समय सबका हाल भी पूछ लेते हैं। काठियावाड़ की चर्चा करते हुए उन्होंने मुझसे कहा :

"मुझे लगता है कि भावनगर राज्य में बलवन्त राय मुख्य मन्त्री के लिए विशेष योग्यता रखते हैं। फिर भी कल अनन्त राय आये, तो तू उनकी इच्छा भी समझ ले। हमें राजा, प्रजा और दीवान—सबकी मनोभावनाएँ तो जान ही लेनी चाहिए। कदाचित् कुछ बातें मेरे पास तक न पहुँच पायें, तो तेरे पास तो पहुँच ही जायँ। किसीको दुःखी करके तो कुछ करना ही नहीं है, खास-कर महाराज और अनन्त राय को। यह जिम्मेदारी तो अब तेरे ही ऊपर है।..."

हिन्दुस्तानभर का ध्यान रखते हुए भी बापू नन्हे-से भावनगर राज्य के साथ जरा भी अन्याय न हो, इसका भी इतना असीम ध्यान रखते हैं! मुझे तो रोज ही मन में यह विचार आता है कि बापू क्या हैं और भगवान् ने इनका कैसा भव्य मस्तिष्क बनाया है! ● ● ●

एशिया खंड एक और अखंड : ११ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१०-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना हुई! फिर बापू की चिट्ठियों की फाइल थी। फाड़ने योग्य कागज फाड़ लिये और लिखने के काम आनेवाले कागज छाँट लिये। जिनका पोस्टेज आया था, उन्हें उत्तर लिखे और बापू को उन्हें सुना दिया।

पत्र-व्यवहार की चिन्ता

आज बापू की ओर से करीब छह चिट्ठियाँ तो मैंने ही लिख डालीं। हरएक की अलग-अलग शिकायत थी। किन्हीं मुसलमानों को हिन्दुओं से परेशानी थी, तो किन्हीं हिन्दुओं को मुसलमानों से। सबको पहुँच भेज दी कि "पू० गांधीजी आजकल बहुत अधिक कार्यव्यस्त रहते हैं और आप सबके कष्ट-निवारण के लिए ही वे यहाँ रह रहे हैं। उन्होंने निश्चय ही कर लिया है कि करना है या मरना

है। बाकी रोज रेडियो पर या अखबारों मे जो प्रार्थना-प्रवचन आते हैं, उन पर मनन करेंगे, तो आपको प्रकाश मिलेगा।"

बापू यह पढ़कर खुश भी हुए। यों तो जब से मै बापू के पास आयी हूँ, तभी से कई बार इस तरह उत्तर भेज दिया करती हूँ। लेकिन अगर इस आन-बान के काम मे बापू के नाम आयी चिट्ठियों के बारे मे उन्हे न बताया जाय, तो वह उन्हे अधिक पसन्द नही पड़ता। एक बार तो उलहनाभरा यह व्याख्यान भी सुनना पड़ा था : "लिखनेवाला वर्ग कितनी आशा से मुझे पत्र लिखता होगा ? भले ही मै उन्हे उत्तर न दे पाऊँ, लेकिन मुझ पर दया करने के लिए आयी हुई चिट्ठियों को मुझे न बताने का अधिकार आप किसीको भी नही है। मेरी दया करनेवाला तो बैठा ही है। उसे मेरी आवश्यकता होगी, तो मुझ पर दया करेगा। नही तो कोई बात नही।" इसीलिए आयी हुई सभी चिट्ठियाँ उन्हे बतानी ही पड़ती है।

बापू कुछ देर सो गये थे। टहलते समय आज तो खास कोई न था, हम घर के ही लोग थे। सचमुच कई बार बापू अत्यधिक गम्भीर दिखाई पड़ते हैं। हम बच्चो के साथ हँसते-खेलते है। सब कुछ करते है। लेकिन खुद मुझे तो ऐसा ही लगता है कि बापू अब दिल्ली के वातावरण से ऊब गये हो, दुःखी हो उठे हो, और उसमे से कुछ रास्ता निकालने की सोच रहे हो। चाहे जो हो, बापू का वातावरण बदला हो, ऐसा मालूम पड़ता है।···राजकोट जाना चाहते है, ऐसा लगता है। सो कहा : "मेरा मन इतना अधिक अस्वस्थ है कि अब यह सब देखना नही चाहता। कब, कैसा कदम उठाऊँगा, इसका मुझे ही पता नही।"

वचन का मोल

स्नान के समय बापू को एक हलका-सा चक्कर आ गया। उसमे भी बापू अत्यधिक थके तो हैं ही। वे कहते है : "मै काम से थकता नही। लेकिन लोग कभी कुछ और कभी कुछ कहा करते है। एक निश्चय पर दृढ़ नही रहते। मुझे खुश रखने के लिए मेरे सामने तो मेरे अनुकूल बाते कही जाती है और इस बिरला-हाउस के बाहर निकलते ही पैतरे रचे जाते है कि किसके सामने कैसा बरताव करें, जिससे आगे आ सके।···के बीच के मतभेद भी दिन-दिन उग्र

होते जा रहे है। किसीको समझा नही सकते। पाकिस्तान देते समय हमने वचन दिया था कि ५५ करोड़ रुपये देंगे। इस सम्बन्ध मे मतभेद खडा हुआ है। अब हम मुकर जायॅ, तो हमारा मूल्य ही क्या रहा ? जिसे अपने वचन का मूल्य नहीं, वह दो कौड़ी का है।"

बाथ में बापू ने मुझे ये बाते कही। इससे लगता है, कदाचित् मेरा यह अन्दाज ठीक ही निकले। इन सभी मानसिक परेशानियों से या भीतर-ही-भीतर धधकते हुए इस दावानल के कारण ही बापू इतने गम्भीर विचार मे व्यग्र है।

स्थानीय मुसलमान भाई आये। उन्होंने बापू से रोज की तरह ही अपनी शिकायते कही। बापू ने कहा : "अब तक आपको जितनी प्रतीक्षा करनी पड़ी, उतनी अब नहीं करनी पडेगी। इतने महीने धैर्य रखा, तो सप्ताहभर और धीरज रख देखें कि क्या होता है ?"

पट्टनी साहब के साथ 'प्रीवीपर्स' के बारे मे बाते की। महाराज की क्या मिल्कियत है, आदि पूछा। भावनगर के महाराज ने तो बापू ज्वार-बाजरा जो भी दे, वही लेना तय किया है।

बापू ने गाडगिल साहब को सलाह दी कि कल जो पासवाले निर्वासित आये थे, उन्हे न खदेडा जाय। गाडगिल साहब ने कहा कि "हमे मेहमानो को रखना है।"

बापू ने बिगड़कर कहा : "तो पहले मुझे निकालने की नोटिस दीजिये और इस बिरला-भवन का कब्जा लीजिये। इसी तरह आप सभी मन्त्री अगर बड़े-बड़े बॅगले दबाये बैठे हो, तो अपनी आवश्यकताभर दो-चार कमरे रखकर आपको चाहिए कि बाकी का सारा भाग खाली कर दे, उन पर कब्जा करें। जो आश्रित अपने जमे हुए बैठे है, उन्हें क्योकर निकाला जाय ? मैंने इस बारे मे जवाहर से भी कहा है। वह तो तत्काल समझ गया कि मेरी बात ठीक है। जवाहर मे यह एक महान् गुण है, वह अपनी भूल अजीब ढग से स्वीकार कर लेता है।..."

गाडगिल साहब ने भी तय कर लिया कि पास के बॅगले मे रहनेवाले निर्वासितो को नहीं निकाला जायगा। वे सरकारी मेहमानो के लिए स्थान का अलग प्रबन्ध करेंगे।

सचमुच बापू से सभी डरते हैं। उनके पास पोल तो चल ही नहीं पाती।

दिल्ली के चीफ कमिश्नर साहब भी आये। उनके साथ बातचीत करते हुए बापू ने कहा : "अब तो आप छुट्टी दें या भगवान् छुट्टी दे, तभी आराम लिया जा सकता है न ?"

दिल्ली का वातावरण तो काफी बिगड़ चुका है। राजकुमारी बहन ने तो··· के साथ हुई बातें कही। डा० कर्नल भार्गव साहब, जिन्होने मेरा आपरेशन किया था, हमें भोजन का निमन्त्रण देने आये थे। बापू ने स्वीकृति दे दी। लेकिन मुझे बुखार आया करता है, इसलिए कल पुनः जॉचकर खिलाने के लिए कहिये। मैने कहा : "बापू ! आपका यह धधा तो खूब रहा। डाक्टर जॉच करके तो रोगी से फीस लेता है, पर आप तो उसके बदले मुझे उनके घर खाने के लिए भेज रहे है !" बापू ने कहा : "और खाने के लिए जाने की मै छुट्टी देता हूॅ, उसकी फीस नही !" इस तरह थोड़ी देर विनोद हुआ।

ईरान और पाक की समस्या

ईरान के राजदूत बापू से मिलने आये थे। उन्होने कहा : "ईरान और भारत के बीच मधुर सम्बन्ध तो है ही। लेकिन साथ ही यहॉ के भारतीय ईरानियो को मुसलमान मानकर दुश्मन समझकर हैरान करते है, यद्यपि बम्बई सरकार या भारत-सरकार के प्रति हमारी कोई भी शिकायत नही है। इसी तरह हम लोग भी ईरान मे रहनेवाले भारतीयो की पूर्ण सुरक्षा करने के लिए जाग्रत है और रहेगे। किन्तु अगर यहॉ के भारतीय ईरानियो को हैरान करेगे, तो कह नही सकता कि ईरान के भारतीयो को ईरानी सुरक्षित रहने देगे या नही ?···"

बापू ने कहा : "ईरान, अफगान, चीन, जापान, हिन्द या पाकिस्तान—सभी देशो को मै एक, पूरा एशिया खण्ड, एक ही मानता हूॅ। अगर अकेला हमारा एशिया खण्ड ही मजबूत हो जाय, एक दूसरे की ओर अविश्वास की दृष्टि से न देखते हुए पूरी मित्रता के साथ रहे और तदनुसार आचरण करे, तो जमीन पर स्वर्ग ही उतर पड़े। प्रेम, सत्य और अहिंसा पर रचा गया यह आर्य-देश सारी दुनिया के सुख-शान्ति का विश्राम-स्थान बने। यहॉ की सरकार जाग्रत है, फिर भी ईरानियो को भय तो रहता ही है। ऐसी स्थिति मे ईरान मे रहनेवाले भारतीयो के साथ आप जितने ही प्रेम से बर्ताव करेगे, उतना ही असर यहॉ दीख

पड़ेगा। इस तरह यहाँ के ईरानियों की तो आप वहाँ बैठे-बैठे ही रक्षा कर सकते हैं।"

आज का प्रवचन शुरू हो रहा था कि इसी बीच एक साधु जैसे आदमी ने चिल्लाना शुरू किया। उसे शान्त करने के बाद पूछा गया, तो वह कहने लगा : "मुझे अपना पत्र यहाँ खुद ही पढ़कर बापू को सुनाना है।"

बापू ने कहा : "यह देखने लायक बात है कि आज हम कहाँ तक गिर गये हैं। ये साधु पुरुष होने का दावा करते हैं, गीता-गायत्री जपते हैं; फिर भी इतनी सभ्यता नहीं कि इस तरह बहस नहीं करनी चाहिए।" वह साधु बड़ी कठिनाई से शान्त हो पाया।

फिर बहावलपुर के बारे में चर्चा करते हुए बापू ने कहा : "मुझे यह समाचार मिला कि बहावलपुर के लोग प्रार्थना-सभा में गड़बड़ी पैदा कर सभा पर पत्थर फेंकने और सभा भंग करने का इरादा कर रहे हैं। लेकिन मेरे मना करने पर ये लोग मान गये। आप सबको यह आदर्श अपनाना चाहिए। इन्हें जो दुःख सहने पड़े हैं, उसका मैं साक्षी हूँ। नवाब साहब ने यह आश्वासन दिया है कि वहाँ के सभी हिन्दू सिख यहाँ सकुशल आ जायँगे। आखिर आपको इस पर विश्वास तो करना ही चाहिए। नवाब साहब तो यह भी कहते हैं कि भविष्य में बहावलपुर के लोगों का अधिक नुकसान न हो पाये, इसकी वे अचूक सावधानी बरतेंगे। इसी तरह यहाँ की सरकार भी बे-खबर तो है ही नहीं।

"फिर भी ये सारे चिह्न अच्छे नहीं। हमारा देश एक था, उसके दो टुकड़े हुए। इसके अतिरिक्त दोनों राज्य परस्पर दुश्मन बने और अपने ही वतन में दुश्मन बने। सिन्ध में तो इससे भी भयानक स्थिति है। अब परिस्थिति इतनी नाज़ुक होती जा रही है कि आखिर भारत पर भी इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे मौके पर गुस्सा तो करना ही नहीं चाहिए। गुस्सा करने से कुछ भी सुधार नहीं हो सकता। ऐसे समय यही एक अच्छा उपाय है कि हम लोग परिस्थिति किस तरह काबू में आ सकती है, इसका शान्त चित्त से विचार कर योग्य आचरण करें।

"ईरान के राजदूत मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा कि बम्बई में रहनेवाले ईरानियों को—अधिकतर तो वहाँ ईरानियों के होटल ही हैं—भी नुकसान

पहुँचाया जा रहा है। अवश्य ही वहाँ ईरानियो की चाय काफी पसन्द की जाती है। लेकिन वहाँ कुछ भीतर-ही-भीतर झगड़ा हुआ, बात बढ गयी और काफी ईरानी मारे गये। फिर भी उन्होने बम्बई और दिल्ली-सरकार के सहयोग की तारीफ की। एक दृष्टि से ईरानी और भारतीय सभी आर्य ही है। 'जेदावेस्ता' देखेगे, तो उसमे आपको कितने ही संस्कृत शब्द मिलेगे। आपस मे बहुत ही पुराना मधुर सम्बन्ध है। अगर वह बिगड़ जाय, तो सभी के लिए शर्म की बात होगी।

"अनाज पर से कण्ट्रोल उठा लेने से जनता मुझे धन्यवाद देती है। लेकिन मै कोई ईश्वर नही कि लाभ होगा या हानि, यह पहले से कह सकूँ। मेरे पास किसी तरह के दिव्यचक्षु भी नही है। मेरे पास तो आँख, कान, पैर जो भी कुछ कहे, जनता ही है। इसलिए आखिर आपको ही अपना भविष्य तय करना है। मै कहता हूँ, इसलिए किसीको मेरी बात मान ही लेनी चाहिए या मुझ जैसे बीस-बीस महात्मा कहलानेवाले मिले, तो भी उनका कहना सच ही होगा, ऐसा भी मानने की कोई जरूरत नही। सभी को अपनी बुद्धि से ही विचार करना सीखना चाहिए। तभी सुखी हो सकेगे।"

टहलते समय बापू काफी थक गये थे। उनके मन मे कुछ विशेष चिन्ता और बोझ है। रोज की तरह १० बजे कसरत करके सोने की तैयारी हुई। प्रार्थना-प्रवचन देखा। पंडितजी के साथ बाते की। सुबह लिखने की सामग्री अलग छाँट ली।

संकुचितता और भ्रष्टाचार : १२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
११-१-'४८

कांग्रेस मे भ्रष्टाचार

नियमानुसार प्रार्थना! प्रार्थना से पहले बापू ने कहा कि "हमारा इतना अधिक नैतिक अधःपतन हो रहा है—जिसे मै अभी समझ पाया हूँ—कि हमारा सत्याग्रह या सारी लड़ाइयाँ दुर्बलता की थी। अगर कांग्रेस के प्रमुख जन इस बारे में स्थिर और दृढ़ निश्चयी न रहे, तो यह सस्था चूर-चूर हो जायगी।

इससे बेहतर है कि इसका विसर्जन ही कर दिया जाय। संस्था का ध्येय तो स्वराज्य लेने तक ही सीमित था। मुझे आज ही इस संस्था के बुरे दिनो की आगाही हो रही है। मन्त्री और संस्था के कर्मचारी ठीक-ठीक काम करने मे बेदिली दिखा रहे है। आन्ध्र से आया हुआ कल का पत्र देखकर तो मैं अत्यन्त व्यग्र हो उठा हूँ। सब तरह की पहुँच रखनेवाले और केन्द्र मे बैठे ... जैसो के लडके भी किस तरह पैसा कमाया जाय, इसके लिए धमाचौकड़ी मचाते है! आखिर यह सब किस बात का संकेत है! अगर हम सचमुच ऐसे ही हो, तो कहना पडेगा कि हम गुलाम ही रहने लायक है। ... जैसे लोग भी, जिन्होने बम्बई सरीखे क्रियाशील जाग्रत शहर मे बसते हुए भी स्वेच्छा से जान-बूझकर धन कमाना त्याग दिया हो, सिर्फ कांग्रेस संस्था और खादी के बिल्ले की बदौलत मनमानी ढग से चारो ओर से अन्धाधुन्ध कमाई करते रहे, तो आखिर यह सब कहॉ जाकर रुकेगा? मैं तो यह सब जानकर स्तब्ध हो गया हूॅ। अब तो कम-से-कम उस गज-ग्राह की तरह भगवान् ही स्वयं समझकर मेरी लाज रख लें, तो मैं उनके अनन्त उपकार मानूॅगा।"

बडे तडके बापू ने अत्यन्त दुःखभरी आवाज मे ... की घटना से बेचैन होकर ये बात कही। मुझे कल से ही मालूम पड़ रहा था कि बापू किसी गहरे विचार मे हैं, पर कारण ध्यान मे नही आ रहा था। यो वे भले ही गम्भीर मालूम पड़ते थे, पर उनका विनोद, भेट करनेवालो से बातचीत और अन्य कार्यक्रम—भोजन आदि, सारा नित्य की तरह ही चलता रहा, जिससे बाहरी लोग इसे समझ ही न सके। फिर भी बापू की जरा-सी गम्भीरता का भी असर इस कमरे मे तो फैल ही जाता है। मान ले कि ... जैसे बम्बई के विख्यात व्यक्ति के बारे मे भले ही कदाचित् ये बाते झूठी हो, फिर भी ऐसी बाते क्यो फैलती है? यद्यपि इस घटना मे कुछ तथ्य है ही, लेकिन इससे अकल्पित और न माने जा सकनेवाले कितने ही मौके खडे हो जाते है। इसीसे बापू को अत्यधिक हृदयद्रावक दुःख होगा, यह समझ सकते है।

मिश्र-खाद और किसानो की तालीम

प्रार्थना के बाद भावनगर के ग्राम-दक्षिणा मूर्तिवाले हरिलाल भाई ने पैदावार

कैसे बढ़ायी जाय, इस बारे मे कुछ सुझाव दिये थे। उन्हे नोट के साथ 'हरिजन' मे छापने के लिए बापू ने यह नोट लिखाया :

"भाई हरिलाल के सुझावो मे कोई नयी बात नहीं। फिर भी आज जिसके हाथ मे देश की बागडोर है, वह किसान नही है। इसलिए ये सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। अगर हम लोग राजनीति से अवकाश पाकर रचनात्मक काम मे लगे और कृषि-सुधार को उचित महत्त्व दे, तो किसानो को बहुत कुछ सिखा सकते है और उनसे भी बहुत कुछ सीख सकते है।"

जमीन को मिश्र-खाद या कम्पोस्ट देने से खेत बहुत दिनो तक बिना जोते रखने की जरूरत नही रहती। यह खाद उसे सदैव ताजा रखती है। मिश्र-खाद को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं पड़ती। थोड़े से अनुभव से हर गॉव मे यह खाद सरलता से तैयार हो सकती है। लेकिन ये काम यन्त्रवत् नही होते। हर लेख से उपयोगी ज्ञान प्राप्त कर मौलिक प्रयोगो द्वारा देश करोड़ो किसानो मे सच्ची तालीम दे सकता है।

स्व० तोतारामजी

तोतारामजी के देहावसान पर यह नोट लिखाया कि "वयोवृद्ध तोतारामजी किसीसे भी सेवा लिये बगैर ही गये। ये साबरमती-आश्रम के भूषण थे। विद्वान् तो नही, पर ज्ञानी थे। भजनो के भण्डार थे, फिर भी गायनाचार्य न थे। अपने एकतारे और भजनो से आश्रमवासियो को मुग्ध कर देते थे। जैसे वे, वैसे ही उनकी पत्नी भी थी। पर तोतारामजी पहले ही चल बसे!

"जहॉ आदमियो का जमाव रहता है, वहॉ तरह-तरह के झगड़े चलते ही रहते हैं। मुझे ऐसा एक भी मौका याद नही, जिसमे इस दम्पति ने भाग लिया हो या ये किसी तरह के झगड़े की जड़ बने हो। तोतारामजी को धरती प्यारी थी। खेती उनका प्राण थी। आश्रम मे वे बरसो पहले आये और कभी उसे नही छोड़ा। छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष उनके मार्गदर्शन के भूखे रहते। उनसे अचूक आश्वासन पाया करते।

"वे कट्टर हिन्दू थे, पर उनका हृदय हिन्दू, मुसलमान और अन्य धर्मियो के प्रति समान रहा। उनमे अस्पृश्यता की बू तक न थी और न किसी तरह का व्यसन ही था। राजनीति मे उन्होने भाग नही लिया। फिर भी उनका देश-

प्रेम चाहे जिसकी तुलना में खड़ा रह सके, इतना उज्ज्वल रहा। त्याग उनमें सहज ही था। उसे ही वे शोभित करते थे।

"ये फीजी द्वीप में गिरमिटिया के तौर पर गये थे। दीनबन्धु एण्ड्रूज ने ही उन्हें खोज निकाला था। उन्हें आश्रम में लाने का श्रेय श्री बनारसीदास चतुर्वेदी को है। उनकी अन्तिम घड़ी तक जो कुछ उनकी सेवा हो सकती थी, वह भाई गुलाम रसूल कुरेशी की पत्नी और इमाम साहब की बहन ने की थी। "परोपकाराय सतां विभूतयः"—तोतारामजी में यह अक्षरशः सत्य रहा।"

बापू करीब १० मिनट सो गये। मैं भी सो गयी थी। ६॥ बजे उठी, नाश्ता किया और बापू के साथ टहली। सरला भी साथ थी। ७॥ बजे बापू के पैर धोकर मालिश की तैयारी की। धीरेनभाई और इन्दिरा (रंगूनवाले डा० प्राणजीवन मेहता की पौत्री) की सगाई से सरला और उसके परिवारवाले को सन्तोष नहीं है, आदि सारी बातें हुईं। बापू भी सभी की सभी बातों में पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं। सुबह तो बापू कांग्रेस के इस भ्रष्टाचार पर अति दुःखी थे और दो-चार घण्टे बाद उन्होंने अपने पुराने मित्र की पौत्री की सगाई में इतना अद्भुत रस लिया!

बाथ में बापू ने मुझसे एक तीसरी ही बात बतलाते हुए कहा: "तू बोलती क्यों नहीं?...की सारी बातें मैं जानता हूँ; लेकिन तू दुःखी रहे, यह मुझे नहीं भाता। तेरा मुँह जरा भी गम्भीर देखता हूँ, तो मुझे अच्छा ही नहीं लगता। अगर मैं तेरी दृष्टि से तेरा माँ-बाप होऊँ, तो तुझे मन में किसी भी तरह का बोझ न रखना चाहिए।"

साढ़े बारह बजे हम लोग डा० भार्गव के यहाँ भोजन के लिए गये और ढाई बजे वहाँ से लौटे। बापू के लिए मिट्टी रखकर गये थे। आकर हम लोग रोज जहाँ मुलाकातें रखते हैं, वहाँ गये। इस कारण आज १२॥ से ३॥ तक की मुलाकातियों की बातें नोट नहीं की जा सकीं। दोपहर में बापू के भोजन के समय शंकररावजी और राजेन्द्र बाबू आये हुए थे। उनके साथ बहावलपुर की और ५५ करोड़ की बातें हुईं। भीमसेन सच्चर ने भी बहावलपुर का बहुत-सा विवरण बताया। लेकिन अब मामला कुछ काबू में आ रहा हो, ऐसा मालूम पड़ता है।

मौलाना हबीब-उल रहमान साहब और स्थानीय अन्य मुसलमानों ने

शिकायत की कि "अब तो हमे इग्लैण्ड का ही टिकट कटा दे, तो अच्छा हो। आज तक हम लोगो ने काग्रेस मे पापड़ बेले।···बलिदान आदि किये। लेकिन आज जब हमे कांग्रेस ही नही अपनाती, तब पाकिस्तान मे तो हमारे लिए स्थान ही कहॉ?"

बापू को यह बात अत्यन्त चुभ गयी। उन्होने कुछ नाराज होकर कहा: "आपको आपके देशबान्धव हैरान कर रहे है, यह मै जानता हूॅ। इसीलिए तो मै यहॉ पडा हूॅ। लेकिन ये देशबान्धव कदाचित् पागल हो गये हैं और आपको अमन चैन से नही रहने देते। आखिर यह कितने दिनो तक चलेगा? और कितने दिन चला? कुछ दिनो से आप पर इस आजाद हिन्द से थोड़ी आफत आ गयी, तो क्या आपको गुलामी प्यारी है? फिर यह सारी गन्दगी तो उन्हीकी नीति की आभारी है। फिर भी क्या आपको अपने देश-भाइयो के हाथों मरने की अपेक्षा गुलाम रहना ही पसन्द है? क्या यही है आपका वह स्वराज्य और वह आत्म-सम्मान? जिन्दगी के बनिस्बत गुलामी प्यारी है?" खूब कही!

लेकिन बापू यह तो इतनी वेदना से बोल रहे थे कि इस वेदना की अग्नि वे ही सह सकते थे। इसके साक्षी तो बापू के भगवान् ही होगे। इससे बापू का (रक्तचाप) भी बढ़ गया। ये सारे लक्षण अच्छे नही मालूम पड़े। जाने क्यों, मुझे भी कही अच्छा नहीं लगता। बापू ने सुबह बाथ मे मुझसे विनोद मे कहा था कि तू जरा भी उदास मत रहना। लेकिन किसी भी बात मे मन नहीं लगता। बहुत दिन हुए, घर से भी बहन और भाई के पत्र नही आये। जो कुछ हो, मेरा मन कह रहा है कि दो-चार दिनो के वातावरण से यह समझ मे ही नही आता है कि अब बापू क्या करेगे?

दक्षिण अफ्रीका के बापू के साथी श्री सोराबजी भाई, रुस्तमजी और प्रागजी भाई के साथ कातते हुए बापू ने दक्षिण अफ्रीका के बारे मे बाते की।

पॉच बजे पट्टनी साहब और मॉ (यशोमती बहन पट्टनी) आयी। ये लोग भावनगर राज्य के दीवान-दम्पति के नाते अन्तिम प्रणाम करने आये थे। ये भावनगर जा रहे है। साठ-साठ साल की पिता-पुत्र की दीवानगिरी या राज्य की एकनिष्ठा से सेवा करने मे यह परिवार आगे रहा है। आज वह उसे प्रजा को सौंप रहा है। पट्टनी साहब की ऑखो से ऑसू छलक आये। मुझसे कहने

लगे : "तुझ पर मेरा बहुत हक है।" बापू विनोद में कहने लगे : "तो इसे भावनगर राज्य का दीवान बना दीजिये !"

पट्टनी साहब : "यह आपके पास की, 'इस दरबार' की दीवानगिरी छोड़कर क्यों आने लगी ?"

मैंने कहा : "बापू को दीवान बना दीजिये और चपरास और गरम कोट मुझे दे दीजिये, तो काम बन गया !..." इस तरह बातें चलती रहीं कि प्रार्थना का समय हो गया।

रोज रेडियो पर बापू का जो प्रवचन आता है, उसमें बहनों और बच्चों की आवाज भी शामिल हो जाती है। इसलिए लोग स्पष्ट रूप से बापू का प्रवचन सुन नहीं पाते। आज के प्रवचन में बापू ने कहा :

"आज आप लोग ज्यादा शोर-गुल नहीं करते, इसलिए आपको मेरा धन्यवाद ! आप आपस में बातें करते रहते हैं और बच्चे रोते रहते हैं। अगर ऐसा ही हो, तो प्रार्थना में आने का लोभ छोड़ देना चाहिए। इस बूढ़े को देखने से क्या लाभ ? बूढ़े की कही बात जरा भी कर सकें, तो उससे कुछ लाभ भी हो सकता है। सिर्फ सुनने से क्या मिलेगा ?

"आज तो मुझे दुःख की बातें कहनी हैं, यद्यपि रोज यही होता है। आज आन्ध्र से मेरे पास एक बड़ा ही करुण और मेरी आँखें खोल देनेवाला पत्र आया है। उन बूढ़े भाई को मैं जानता हूँ। उन्होंने जताया है कि १५ अगस्त को जब से हमें आजादी मिली, तब से हम लोग यह मानने लग गये हैं कि हम चाहे जहाँ, चाहे जैसे बरत सकते हैं। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए कांग्रेस और जनता ने असीम बलिदान किये हैं। लेकिन उनके फलस्वरूप आज कांग्रेस इतनी नीचे क्यों गिर गयी ? उसे ऊँचा उठना चाहिए था न ? सभी कोई एक दिन भी जेल जा चुके हों या खादी पहनी हो, तो नेता बनने की उधेड़-बुन में अनेक दाँव-पेंच रचते हैं। एम० एल० ए० या एम० एल० सी०, लोकसभा के सदस्य चारों ओर गन्दगी फैलाने का काम करते हैं। इस तरह कैसे चलेगा ? इसलिए धारासभा और लोकसभा के सदस्यों की संख्या कम कर दी जाय, तो बहुत अच्छा होगा। उस भाई ने इस तरह की बातें लिखी हैं।

"उस प्रान्त को मैं भलीभाँति जानता हूँ। मेरे लिए तो यहाँ रहूँ या वहाँ

जाकर रहूॅ, उसमे कोई फर्क नही। सारा देश मेरा ही है और मैं सारे देश का हूॅ। पाकिस्तान को मैं अपने मन मे जरा भी विदेश नही मानता। इस प्रदेश में साम्यवादी और समाजवादी भाई है। वे सब यही चाहते हैं कि जिस किसी तरह हो, कांग्रेस को तोड़ दिया जाय। लेकिन अगर इस तरह सभी हिन्दुस्तान का कब्जा लेने के लिए तैयार हों, तो उसकी क्या हालत होगी? मेरी तो हर भारतीय से यही सलाह है कि हम हिन्द के बने और हिन्द को अपना बनाये। यह समय इतनी कठिनाई का है कि एक तो हम हिन्दू, मुसलमान कहकर एक दूसरे के सिर काटते हैं और उसमे जो इस तरह झगड़े पर झगड़े खड़े करे, तो पुनः भयानक स्थिति मे गिर पड़ेगे। अगर हम सिर्फ खुद और अपने सगे-सम्बन्धियो को सरकारी नौकरी मे लगाने और उनकी सारी व्यवस्थाएँ करने मे जुट जायॅ, तो हमे ईश्वर कभी क्षमा नही करेगा।

"आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आये थे। उनकी हमेशा की शिकायत तो है ही। लेकिन अब वे कहने लगे है कि हम यह भारी हैरानी कब तक सहते रहेगे? इसकी अपेक्षा हम यहॉ से चले जायॅ, तो मार खाना तो मिट जाय। पाकिस्तान मे तो हम लोगो के लिए जगह है ही नही। अब तो इंग्लैण्ड ही बाकी रहा है। और कुछ भी नही सूझता।'...

"इन भाइयों से मै एक ही बात कहता आया हूॅ और आगे भी कहता रहूॅगा कि 'आप लोग थोड़ी शान्ति रखिये। चुप रहिये। सरकार तो हर सम्भव कोशिश करती ही है। फिर भी जो कुछ हो सकना मुश्किल होगा, वह और देखा जायगा। आज तो 'यूनियन' मे जो बैठे है, उन्हे यह भूल जाना चाहिए कि मै हिन्दू हूॅ या मुसलमान, सिख हूॅ या पारसी या यहूदी। हम सभी हिन्दुस्तानी हैं, इतना ही याद रखना चाहिए। धर्म तो सबकी निजी चीज है, उसे हमे राजनीति मे नही घसीटना चाहिए। जो दूसरो को दबाने की कोशिश करता है, वह खुद दब जाता है। गड्ढा खोदनेवाला ही उसमे गिरता है, यह प्राकृतिक नियम है। हम सब भारतीय है। अगर हम भारत और भारतीयो की रक्षा करते-करते मर जायॅ, तो उससे अच्छी मृत्यु कौन-सी हो सकती है? मानवमात्र के लिए एक दिन यही सच्चा रास्ता है। जन्म के साथ ही मृत्यु मुॅह बाये खड़ी है। फिर उससे डर क्यों?"

प्रार्थना के बाद तुरत ही बापू ने मौन लिया। मैने और चॉदवानीजी ने

प्रवचन तैयार कर देखने के लिए दिया। टलहते समय बापू कुछ अधिक उल्लास मे थे। हम दोनों के कन्धो पर लटककर हमें खूब दौड़ाते थे। हमे ठढ लगती है, उसे भगाने के लिए ही मानो ऐसा कर रहे हो !

रात मे देवदास काका, गोपू और काकी आयी थी। गोपू के साथ हम सभी खेले। गोपू आता है, तो आनन्द और खेल से घड़ीभर कमरे का गम्भीर वातावरण काफी हल्का हो जाता है। राजकीय कमरा मानो बाल-भवन का कमरा ही हो, ऐसा बन जाता है।

अब तो बापू का मौन है। इसलिए लगभग वैसे तो पूरी शान्ति ही है। और कोई खास बात नही हो पायी। सारा कार्यक्रम नित्य के अनुसार चल रहा है। शाम के बाद बापू भी प्रफुल्लित दीखते थे, जिससे कुछ तो अच्छा लगा।

● ● ●

अनशन का निर्णय : १३ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१२-१-'४८

३॥ बजे प्रार्थना। फिर मैं बापू को भीतर ले गयी। मौन-दिवस होने से आज तो बापू सब कुछ हाथ से ही करेगे। बापू को कपड़ा ओढ़ाकर मैं भी सो गयी। ६। बजे जगी और नाश्ता करके ६॥। बजे उठी। इसी बीच बापू ने 'हरिजन' के लिए लेख लिखा और वे भी ६ बजे सो गये थे। ठीक ७ बजे उठे। आज सुबह बापू घण्टाभर सोये। मालिश, स्नान आदि नित्य के अनुसार ही हुआ। आज बापू अत्यन्त प्रफुल्लित दीख रहे हैं। थकान के कारण भी उन पर बोझ रहा हो, इसलिए सुबह घण्टेभर सो गये, यह बहुत ही अच्छा हुआ। भोजन के समय जमनादास काका आये थे। १॥। पर भोजन समाप्त हुआ। इसी बीच सरदार दादा आये। कश्मीर की स्थिति पर बाते की। शेख साहब कश्मीर से महाराज को हटाना चाहते है। महाराज बड़ी उलझन मे पड़ गये है। उन्होंने सलाह भी माँगी थी। इन्दौर मे शेख साहब (शेख अब्दुल्ला) के साले भी कुछ हथियार करके बैठे है। इसका भी सरदार दादा को उलहना दिया। बापू का आज मौन होने से मुँह से किसीको उत्तर देने की तो बात ही नहीं।

बापू के पैर दबाकर मिट्टी रखी। दोपहर मे हम सगीत सीखने के लिए गये और ३।। बजे वहाँ से लौटे। इस बीच बापू ने अग्रेजी मे भाषण लिखा और मुझसे कहा कि "चल, हम लोग अनुवाद कर डाले।" हर सोमवार को बापू के भाषण का हिन्दी अनुवाद सुशीला बहन करती है। वे मुझे लिखवाती और मैं तेजी से लिखती जाती हूँ, जिससे सबका समय बच जाता है।

अनशन का निर्णय

जहाँ बापू की मालिश होती है और आजकल जहाँ प्यारेलालजी और उनके साथ आयी हुई बगाली बहन रहती है, वहाँ खाली जगह होने से मै और सुशीला बहन अनुवाद करने बैठी। सुशीला बहन एकाएक चीख उठी : 'अरे! मनु! बापू तो कल से अनशन करने जा रहे हैं।' एकाएक यह जोशीली आवाज सुन मै तो भौचक्-सी ही रह गयी। 'हैं?' एकदम बोल उठी। वे दौड़ी बापू के पास। बापू ने किसीको भी दलील करने से इनकार कर दिया। "मौन खुलेगा, तब बाते होगी। अभी तो जो अनुवाद हो, वही करो।" फिर वे (सुशीला बहन) गयी घनश्यामदासजी के पास—उनसे पण्डितजी और सरदार दादा को खबर देने के लिए कहा।

हम लोगो के पास पलभर भी समय नही था। आज प्रवचन का अनुवाद अन्तिम घड़ी मे करने बैठे। इसलिए मैंने सुशीला बहन से कहा : "अब हम बातो मे समय बिता देगी और अनुवाद समय पर न हो पायेगा, तो बापू नाराज हो जायँगे।" इसलिए हम लोग पुनः अनुवाद करने के लिए बैठ गये। इस बार बापू ने अजीब ढंग से यह निर्णय किया। दोपहर मे सरदार दादा, पंडितजी सभी आ गये थे और हम सब भी थे। फिर भी बापू ने इस बार अनशन करने के निर्णय का पता अपनी अन्तरात्मा के सिवा और किसीको भी नही लगने दिया।

लेकिन मुझे गत सप्ताह से ही बापू की बातो, रग-ढंग, मुलाकातियो के साथ वार्तालापो और प्रश्नोत्तरो से यह लगता था कि बापू किसी गहरे चिन्तन मे तो है ही। खुद मुझे भी कही अच्छा नही लग रहा था। बापू कई बार पूछते कि 'तू उदास क्यो रहती है?' लेकिन आखिर मेरा अनुमान सच निकला। बापू को कुछ होनेवाला हो, तो स्वभावतः ही मुझे चैन नहीं पड़ता। कई बार

मन उदास हो जाता और बुखार चढ़ आता है। जब यह सब होने लगता है तो मुझे ईश्वर अशुभ की आगाही करा देता है। बापू से कहती, तो वे कहते कि "यह तेरा शुभ है। तुझ पर एक तरह की छाप पड़ गयी है।" लेकिन यह तो मेरा अनेक अनुभवो में से प्रत्यक्ष अनुभव है। परसो और कल मेरी डायरी बापू देख रहे थे, तब भी मुझे व्यग मे कहा: "मालूम पड़ता है कि पुनः तू बीमार पड़ेगी। तू खुश नहीं रहती, इसका असर तेरी डायरी पर भी है। तुझे जो बीमारी या बुखार आता है, वह अधिकतर तेरे स्वभाव पर ही निर्भर है। जब खुश और प्रफुल्लित रहती है, तब बड़ी सुहावनी लगती है और उदास हो जाती है, तो १०२ डिग्री तक बुखार चढ़ आता है, यह भी गजब है!"

फिर इस अनशन मे क्या होगा, कहा नही जा सकता! अभी छह महीने पूर्व कलकत्ते मे बापू का भयकर अनशन देखा। लेकिन वहाँ का उत्तरदायित्व तो सुहरावर्दी साहब ने अपने ऊपर ले लिया था। लेकिन यहाँ तो जनता पँचरगी है। कोई किसीका नेता नही। फिर कौन उत्तरदायित्व उठायेगा? यो तो बापू के ये अनशन इस प्रकार के अपराधो के लिए है ही नहीं, लेकिन नेताओ मे जो गदे ढग और भीतर ही भीतर जो खूब अड़गेबाजी चलती है, उसके लिए है। इस अग्नि-परीक्षा मे क्या होगा?

प्रवचन

आज का प्रवचन शब्दशः इस प्रकार था: "लोग सेहत सुधारने के लिए सेहत के कानून के मुताबिक उपवास करते है। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है, तब प्रायश्चित्त के रूप मे भी उपवास किया जाता है। इन उपवास करनेवालो को अहिंसा मे विश्वास रखने की जरूरत नहीं। अगर ऐसा मौका भी आता है, जब अहिसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिए उपवास करने पर मजबूर हो जाता है, वह ऐसा तभी कर सकता है, जब अहिसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता। वैसा ही मौका मेरे लिए आ गया है।

"जब मै ९ सितम्बर को कलकत्ते से देहली आया, तो पश्चिमी पजाब जा

रहा था। मगर वहाँ जाना नसीब मे नहीं था ! खूबसूरत, रौनक से भरी दिल्ली उस दिन मुर्दों के शहर के समान दीखती थी। जैसे ही मै ट्रेन से उतरा, मैने देखा कि हरएक के चेहरे पर उदासी छायी हुई थी। सरदार, जो हमेशा हँसी-मजाक करके खुश रहते है, वे भी उदासी से बचे न थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नही था। वे स्टेशन पर मुझे लेने के लिए आये हुए थे। उन्होने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि 'युनियन' की राजधानी मे झगड़ा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्ली मे ही करना या मरना होगा। फौज और पुलिस के कारण आज दिल्ली मे ऊपर से तो शान्ति है, मगर दिल के भीतर आग भभक रही है। किसी भी समय वह फूटकर बाहर आ सकती है। इसे मैं अपने 'करने' की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं समझता, जो कि मुझे मृत्यु से बचा सकती है। मृत्यु से, जिसके समान दूसरा मित्र नही, मुझे बचाने के लिए पुलिस या फौज द्वारा रखी हुई शान्ति ही पर्याप्त नही। मै हिन्दू, सिख और मुसलमानों मे दिली दोस्ती देखने के लिए तरस रहा हूँ। कल तो ऐसी दोस्ती थी; मगर आज बड़े-से-बड़े मुसलमानों की जिदगी हिन्दू या सिख की छूरी, गोली या बम से सुरक्षित नही है। यह ऐसी बात है, जिसे कोई हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो इस नाम के लायक है) शान्ति से सहन नही कर सकता।

उपवास : आखिरी हथियार

"मेरे अन्दर से आवाज तो कई दिनो से आ रही थी। मगर मै अपने कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतान की यानी मेरी कमजोरी की आवाज तो नही है ? मै कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नही करता। किसी भी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरो की तलवार की जगह लेता है। मुसलमान भाइयो के लिए सवाल था कि 'अब वे क्या करे ?' मेरे पास कोई जवाब नही। कुछ समय से मेरी यह लाचारी मुझे खाये जा रही थी। उपवास शुरू होते ही यह मिट जायगी। मै पिछले तीन दिनों से इस बारे मे विचार कर रहा हूँ। आखिर निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया और अब मै खुश हूँ। कोई भी इन्सान—जो पवित्र है—अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नही कर

सकता। मैं आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि मुझमे उपवास करने लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबू के साथ या इन चीजो के वगैर पानी पीने की छूट मैं रखूँगा। उपवास कल सुबह पहले खाने के वाद से शुरू होगा।

"उपवास का अरसा अनिश्चित है। जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमों के दिल मिल गये है—और वह बाहर के दवाव के कारण नहीं, बल्कि अपना-अपना धर्म समझने के कारण—तब मेरा उपवास छूटेगा।

"आज हिन्दुस्तान का सम्मान सब जगह कम हो रहा है। एशिया के हृदय पर और उसके द्वारा सारी दुनिया के हृदय पर हिन्दुस्तान का साम्राज्य आज तेजी से गायब हो रहा है। अगर इस उपवास के निमित्त हमारी ऑखे खुल जायँ, तो यह सब वापस आ जायगा। मैं यह विश्वास रखने का साहस करता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की आत्मा खो गयी, तो तूफान से दुःखी और भूखी दुनिया की आशा की (ऑख की) किरण का लोप हो जायगा।

"कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई है, तो—मुझ पर गुस्सा न करें। कई ऐसे मित्र है, जो मनुष्य हृदय को सुधारने के लिए उपवास का तरीका ठीक नहीं समझते। वे मेरी बरदाश्त करेंगे और जो आजादी वे अपने लिए चाहते हैं, वह मुझे भी देगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है, यह निर्णय मुझे किसी और की सलाह के बिना ही करना चाहिए। अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूल का पता चल जाता है, तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूँगा और अपना कदम वापस लूँगा। मगर ऐसी सम्भावना बहुत कम है। अगर मेरी अन्तरात्मा की आवाज स्पष्ट है और मैं दावा करता हूँ कि ऐसा है, तो उसे रद्द नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारे में दलील न की जाय। जिस निर्णय को बदला नहीं जा सकता, उसमे मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कम-से-कम दिल्ली पर ठीक असर हुआ, तो उपवास जल्दी ही छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देर से या कभी भी न छूटे, ऐसे मौके पर किसीको कमजोरी नहीं जतानी चाहिए।

उपवास : आत्मजाग्रति के लिए

"मेरे जीवन मे कई उपवास आये है। मेरे पहले के उपवास के वक्त

आलोचकों ने कहा है कि उपवास ने लोगों पर दबाव डाला। अगर मैं उपवास न करता, तो जिस मकसद के लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतंत्र गुण-दोष के विचार से निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है, तो विरुद्ध निर्णय की क्या कीमत? शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्म-पालन की तरह है! उसका बदला अपने-आप मिल जाता है। मैं कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।

"मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शान्त चित्त से इस उपवास का तटस्थ वृत्ति से विचार करें। अगर मुझे मरना ही है, तो शान्ति से मरने दें। मैं आशा करता हूँ कि शान्ति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तान का, हिन्दू-धर्म का, सिख-धर्म का और इसलाम का बेबस बनकर नाश होते देखने के बनिस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तान में दुनिया के सब धर्मों के लोगों को समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और युनियन भी पाकिस्तान की नकल करे, तो दोनों का नाश निश्चित है। उस हालत में इसी काम का हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में तो नाश होगा, बाकी दुनिया में नहीं। मगर हिन्दू-धर्म और सिख-धर्म हिन्दुस्तान के बाहर है ही नहीं।

"जो लोग दूसरे विचार रखते हैं, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी ही मैं उनकी इज्जत करूँगा। मेरा उपवास लोगों की आत्मा को जाग्रत करने के लिए है, उसे मार डालने के लिए नहीं। जरा सोचिये तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तान में कितनी गन्दगी पैदा हो गयी है! तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तान का एक नम्र यशकर्ता, जिसमें इतनी ताकत है और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गन्दगी को मिटाने के लिए कदम उठा रहा है। अगर इसमें ताकत और पवित्रता नहीं, तब तो वह पृथ्वी पर बोझरूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाय और हिन्दुस्तान को इस बोझ से मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है।

"मेरे उपवास की खबर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आये। अपने आसपास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें, तो काफी है।

आन्ध्र का पत्र

"मैने कल आपसे आन्ध्र से आये हुए दो खतो का जिक्र किया था। पत्र लिखनेवाले वृद्ध मित्र देशभक्त कोंडा वेंकटप्पैया गारु है। मैं उनके खत का कुछ हिस्सा यहाँ देता हूँ।

"राजनीति का—आर्थिक प्रश्न के सिवा—एक बड़ा पेचीदा सवाल यह है कि काग्रेस के लोगो का नैतिक पतन हो गया है! दूसरे प्रान्त के बारे मे तो मै बहुत कुछ नही कह सकता, मगर मेरे प्रान्त मे हालत बहुत खराब है। राज-नीति की सत्ता पाकर लोगो के दिमाग ठिकाने नही रहे। लेजिस्लेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौसिल के कई मेम्बर इस मौके का अपने लिए पूरा-पूरा फायदा उठाने की कोशिश कर रहे है।

"वे अपनी जान-पहचान का फायदा उठाकर पैसा बना रहे है और मजिस्ट्रेट की कचहरियो मे पहुँचकर न्याय के रास्ते मे भी रुकावट डालते हैं! डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर और दूसरे माल-अफसर भी आजादी से अपना फर्ज अदा नही कर सकते! कौसिल के मेम्बर उसमे दखल-अन्दाजी करते है। कोई ईमानदार अफसर लम्बे वक्त तक अपनी जगह पर रह नही सकता। उसके बर-खिलाफ मिनिस्टरों के पास रिपोर्ट पहुँचायी जाती है और मिनिस्टर ऐसे बे-उसूल और खुद-गरज लोगो की बाते सुनते है। स्वराज्य की लगन एक ऐसी चीज थी कि जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष आपके नेतृत्व को मानने लगे थे। मगर मकसद हल हो जाने पर अधिकतर काग्रेसी लड़वैयो के नैतिक बन्धन छूट गये हैं। बहुत से पुराने योद्धा, जो लोग हमारी हलचल के कट्टर विरोधी थे; आज उनका साथ दे रहे हैं। अपना मतलब निकालने के लिए वे लोग आज काग्रेस मे अपना नाम लिखा रहे है। मसला दिन-ब-दिन ज्यादा पेचीदा बनता जा रहा है। नतीजा यह है कि काग्रेस की और काग्रेस सरकार की बदनामी हो रही है। लोगो का काग्रेस पर से विश्वास उठ रहा है। अभी-अभी यहाँ म्युनिसिपैलिटी के चुनाव हुए थे। ये चुनाव बताते है कि कितनी तेजी से जनता काग्रेस की काबू से बाहर जा रही है। चुनाव की पूरी तैयारी करने के बाद गुन्तूर मे लोकल बोर्ड के मन्त्री का 'फोरी सन्देना' आने से चुनाव रोक लिये गये।

"मै समझता हूँ कि करीब दस साल से यहाँ सब सत्ता एक नियुक्त की हुई

कौंसिल के हाथो मे रही है और अब करीब एक साल से म्युनिसिपैलिटी का काम-काज एक कमिश्नर के हाथो मे है। अब ऐसी बात चलती है कि सरकार शहर की म्युनिसिपैलिटी का कारोबार सम्भालने के लिए कौंसिल नियुक्त करेगी।

"मैं बूढ़ा हूँ, टाँग टूट गयी है। लकड़ी के सहारे लँगड़ाते-लँगड़ाते घर मे थोड़ा-बहुत चलता-फिरता हूँ। मुझे अपना कोई स्वार्थ नही साधना है! इसमे शक नहीं कि जिले की और प्रान्त की कांग्रेस-कमेटी जिन दो पार्टियों मे बँटी हुई है, उनके मुख्य-मुख्य कांग्रेसवालो के सामने मै कड़े विचार रखता हूँ और मेरे विचार सब लोग जानते है! कांग्रेस मे फिरकेबाजी, लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बरो की पैसे बनाने की प्रवृत्ति और मन्त्रियों की कमजोरी के कारण जनता मे बलवे की वृत्ति पैदा हो रही है। लोग कहते है कि इससे तो अंग्रेजी हुकूमत बहुत अच्छी थी। वे कांग्रेसियो को गालियाँ भी देते है।

"आन्ध्र और दूसरे प्रान्तो के लोग इस त्यागी सेवक के कहने की कीमत करे! वे ठीक कहते है कि जिस बेईमानी का उन्होने जिक्र किया है, वह सिर्फ आन्ध्र मे ही नही पायी जाती। मगर वे आन्ध्र के बारे मे ही अपना निजी अभिप्राय दे सकते है। हम सब सावधान बनें।

"अपने बहावलपुर के मित्रों से मुझे यही कहना है कि वे धीरज रखे। सरदार पटेल आज दोपहर को मेरे पास आये थे। मेरा मौन था और मैं बहुत काम मे था। इसलिए उनसे बात न कर सका। उनके आफिस के श्री शंकर मेरे पास आनेवाले थे, इसलिए आपका केस मैं उनके सामने न रख सका।"

अन्तरात्मा का आदेश

प्रार्थना से लौटने पर बापू सीधे लार्ड माउण्टबैटन से मिलने गये। हमारे बिरला-भवन का वातावरण तो भारी उदासी से भर गया है और बापू उतने ही अधिक प्रफुल्लित है।

भाई साहब, सुशीला बहन और प्यारेलालजी को लार्ड माउण्टबैटन ने कल पार्टी का निमन्त्रण दिया। भाई साहब की पार्टी मे जाने की जरा भी इच्छा न थी। उन्होने बापू से पूछा। बापू ने कहा: "वहाँ जाना ही चाहिए। वहाँ जाकर देखिये कि शराब परोसी जाती है या नही? वहाँ भी अनशन के

बारे में चर्चा चलेगी ही। तब आप लोग इस सम्बन्ध में मेरे विचार उन्हें समझा सकेंगे।"

३॥ बजे बापू माउण्टबैटन साहब से मिलने गये थे। वहाँ से ७॥। बजे लौटे, तो कमरा ठसाठस भरा हुआ था। सभीसे बापू ने कहा : "कोई भी न घबड़ाये। सभी जहाँ-जहाँ हों, अपना-अपना काम करें।" देवभाई से पटना जाने के लिए कहा। सुहरावर्दी साहब आये। मैंने कहा : "बापू! आपके अनशनों के साथ सुहरावर्दी साहब का गहरा ऋणानुबंध (पूर्व जन्म की लेन-देन) मालूम पड़ता है।" बापू ने उनसे कहा : "देखो, यह लड़की क्या कह रही है?"

इसी बीच जवाहरलालजी आये। सभी बाहर चले गये। सुशीला बहन सरदार दादा के पास गयीं। सरदार दादा बड़ी ही चिन्ता में हैं और नाराज भी हैं।

" सिख-हिन्दू की एक ट्रेन पेशावर से आयी है। उस पर असाधारण हमला हुआ। बापू ने किसीसे सलाह-मशविरा किये बगैर अनशन शुरू किया, इसलिए बहुत नाराज हैं।

बापू कहते हैं : "मैं गत सितम्बर से यहाँ हूँ। देख रहा हूँ कि लोग मेरे मुँह पर एक बात कहते हैं और होती है दूसरी बात ! फलतः मैं तो भरोसा कर लेता हूँ और जनता मुझ पर भरोसा करती है।" के बीच के गंभीर मतभेदों का दण्ड आम जनता को भुगतना पड़ रहा है।" के भीतर भारी गन्दगी बढ़ती ही जा रही है। इस अनशन को, जो किसी व्यक्ति के लिए तो है नहीं, माउण्टबैटन भी मान गये हैं और वे भी मेरी बात समझ सके हैं कि इससे शुभ परिणाम ही निकलेगा। अगर हिन्दुस्तान सुधर जाय, तो उसके साथ बाकी सब सुधर जायगा।"

१० बजे बापू बड़े ही प्रसन्न होकर बिस्तर पर लेटे। मैंने बापू के सिर में तेल मला। देवदास काका और जमनादास काका आये थे। उन्होंने बापू के प्रवचन में आवश्यक संशोधन किया। देवदास काका ने उपवास के विरुद्ध तो बहुत दलीलें नहीं कीं, लेकिन यह अवश्य पूछा कि "आखिर यह अनशन पाकिस्तान के सम्मुख ही है न?"

बापू : "हाँ एक दृष्टि से यह सच है। मेरे अनशन सभीके सम्मुख हैं। सभी को अपनी आत्मा की शुद्धि करनी चाहिए।"

जमनादास काका को बापू ने विनोद मे कहा : "भई ! लगता है कि तू तो मुझे अनशन करवाने के लिए ही आया है ?"

जमनादास काका कहने लगे : "कौए का बैठना और ताड़ का गिरना— यह काकतालीयन्याय बन ही गया, तो और क्या कहूँ ?"

बापू प्रवचन आदि से निवृत्त होकर करीब १२॥ बजे ही सोये और सभी लोग १२॥ बजे अलग हुए।

देवदास काका जाने से पहले पू० बापू के नाम एक पत्र लिखकर मुझे देते गये और सुबह उन्हे पढ़ने के लिए देने को कहा।

मुझे तो रात मे पू० बापू की अत्यधिक चिन्ता रही। उनकी मनोवेदना अभी-अभी अन्तिम सप्ताह से असह्य हो उठी थी। नैतिक और सामाजिक आन्तरिक गन्दगी की बात तो ठीक है, पर इस नन्हे-से बिरला-भवन मे भी इन्हे शान्ति न थी। वे खुद कहते : "आदर्श हिन्दुस्तान का मेरा स्वप्न टूटता चला जा रहा है, इसकी मुझे परवाह नही। लेकिन अब मुझे ऐसा लगता है कि मेरी अन्तरात्मा मुझे आदेश दे रही है कि 'तू अपना काम कर'।"

...एक बंगाली बहन ले आये है। कदाचित् उससे शादी करना चाहते है। बापू कहते है : "मेरे पास लगातार पचीस साल बिताये, फिर भी इस तरह ठगी करता है और भगवान् मुझे अन्धा बना देता है। लेकिन वही पुनः बिजली की चमक की तरह मुझे एकाएक जाग्रत कर देता है। इसलिए मुझे तनिक भी अफसोस नही।"

मैं तो यही सोचती हूँ कि एक ओर बापू तो इस तरह भयकर वेदना और परिस्थिति से गुजर रहे है और दूसरी ओर पचास साल की अवस्था मे इन्हे ऐसे खयाल कैसे आते होगे ? बलिहारी है इनकी किस्मत की ! मुझे तो रात मे तीन बजे तक इन सभी विचारों के कारण नीद ही न आ पायी। बापू के अनशन मे ये सभी कारण जुट गये है; पर मुझे लगता है कि अब हिन्दुस्तान बापू के योग्य रहा ही नही। अब बापू बहुत अधिक दिन बितायेगे, ऐसा नही दीखता। बहुत उदास हूँ, पर क्या करूँ ? मै...को समझाने के लिए बहुत ही छोटी हूँ। इसलिए कहने मे भी बड़ा सकोच हो रहा है। फिर भी अत्यन्त चिढ़ हो रही है।

● ● ●

पन्द्रहवाँ अनशन
: १४ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१३-१-'४८

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना ! प्रार्थना में हम लोगों ने यह भजन गाया :

'हरि नो मारग छे शूरानो
नहि कायर नुं काम जोने रे।'

बापू का वात्सल्य

प्रार्थना के बाद बापू ने मुझसे...की चर्चा करते हुए कहा : "कल से तू मेरी फिक्र में पड़ी है। इसके बदले तुझमें जो तड़पन है, उसका उपयोग कर हिम्मत के साथ तू...से पूछ और उसे समझा। तुझसे बड़े हैं या छोटे, यह प्रश्न कोई विशेष महत्त्व नहीं रखता। इस समय कलकत्ते की अपेक्षा स्थिति सर्वथा भिन्न है। तू मेरी चिन्ता का विचार भगवान् को सौंप दे और उसके बदले प्रेम से किसी तरह सच्ची बात समझाने से उसका, समाज का और हम सबका लाभ होगा—इसका विचार कर। यह तड़पन तुझमें है ही, पर हिम्मत नहीं है। तू अपने में विश्वास बढ़ा, तो सब कुछ अपने-आप होकर रहेगा। अगर वे शादी करना चाहते हों, तो उन्हें कर लेनी चाहिए। इस तरह तो वे जैसे हैं, वैसे ही दीखेंगे, इससे सभी का लाभ है। इस बार का यह अनशन सिर्फ हिन्दू-मुसलमानों के लिए ही नहीं है—बल्कि सभी जैसे हैं, वैसे नहीं दीखते; अपनी आत्मा को, मुझे और समाज को भी जो ठग रहे हैं—उन्हींके सम्मुख मेरा यह अनशन है। इन्हीं गन्दगियों के कारण भाई-भाई के बीच मारकाट का रोग फैल गया है। इस तरह मैं तुझसे बहुत आशा रखता हूँ। तू हिम्मत कर, तो सब कुछ हो जायगा। अगर इसमें तू दब जायगी, तो सदा के लिए दबी ही रहेगी। भले ही सब कोई मुझे छोड़ चले जायँ, पर मैं अकेला ही रहूँगा। यह महायज्ञ की दूसरी मंजिल है। तुझे तो काफी सहना होगा। इस तरह ढीली होने से काम न चलेगा।"

मैं तो फूट-फूटकर रोने लगी। कुछ नहीं कह पायी। बापू के ये उपदेश-पूर्ण हार्दिक वचन मेरी जगह कोई दुश्मन भी सुनता, तो काँप उठता ! बापू

को अपने कहे जानेवाले लोगों की भी बेवफाई का शिकार बनना पड़ता है। फिर भी वे सभी 'गाधीजी के व्यक्ति' के नाते बच जाते है। है न भगवान् की बलिहारी !···नोआखाली मे रहते हैं और अब किसी तरह का भी विरोध नहीं करते। राजकोट से भी कोई विरोध नही। इस तरह लोग बापू के नाम पर भलीभाँति बच निकलते हैं, फिर भी दंभ दिखाते हैं। किन्तु बापू की इस सहनशीलता और संचित शान्ति का परिणाम क्या होगा, यह तो भगवान् ही जाने !

मैं तेरा अपराधी !

भगवान् की मुझ पर सचमुच अपार कृपा ही है कि बापू को मेरे बारे में और किसी भी तरह का असन्तोष नही है। मैने विशेष रूप से इस सम्बन्ध में उनसे पूछा, तो कहने लगे : "तेरी तबीयत का ही इतना असन्तोष है कि इस अनशन मे कदाचित् भगवान् मुझे उठा ले, तो मेरे प्राण इसीलिए अटके रहेगे कि तुझे स्वस्थ नही कर पाया ! मेरे बाद तेरा कौन ध्यान रखेगा, यह मै खोज नही पाया ! तू इतनी कमजोर हो गयी है, इसका दोषी भी आखिर मैं ही हूँ न ? मैंने तुझ जैसी १६-१७ वर्ष की नन्ही बच्ची से रोज १८ से २० घण्टे तक काम लिया। मैं तेरी माँ बना हूँ, इसीलिए अपराधी हूँ। अगर तू थोड़ी-सी सावधान बने, तो मुझे बचा सकती है।"

मैं स्वयं इतनी शिथिल हो गयी हूँ कि इस समय यही लगता है कि कदाचित् बापू को खो न देना पड़े। मेरे प्रति बापू का प्रेम और विश्वास भी दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। पहले ही मेरी डायरी देखी। यद्यपि गत अगस्त मे कलकत्ते मे बापू को अनशन करते हुए मैंने जीवन मे पहली ही बार देखा, फिर भी उस समय मेरा मन इतना दुर्बल नही हुआ। लेकिन इस बार कुछ वचित्रता का ही अनुभव करती हूँ। भगवान् से मै हृदय से यही प्रार्थना करती हूँ कि प्रभो ! भले ही मुझसे कुछ भी न बन पड़े, पर इतना अवश्य हो कि मै जाने-अनजाने कभी बापू को बेवफा न मानूँ। बापू को इतने दुःख में मै और दुःखी न बनाऊँ, इतनी शक्ति मुझे दो !

बापू के आशीर्वाद

बापू की असह्य वेदना की सीमा ही नही है। सचमुच आज महादेव काका याद आ रहे हैं। बापू और नेताओं के बीच कड़ी के रूप मे अब कोई नहीं

रहा। बापू और बापू के 'अपने' कहलानेवाले निजी मित्रों तथा लोगों के बीच भी कोई कड़ी के रूप में नहीं। भगवान् ने क्या सोचा होगा, यह तो वही जाने। मैं तो यही चाहती हूँ कि मेरे हाथों ऐसा कोई भी अनुचित काम न हो और न ऐसी कोई अनुचित घटना ही घटे।

सुबह की बापू की वह गम्भीरता और साथ ही मेरे प्रति अति वात्सल्य एवं अति विश्वासभरी उनकी वाणी सुनने के बाद पू० देवदास काका का दिया हुआ वह पत्र बापू को देने की मेरी हिम्मत ही न हो पायी। इतना रोना आ गया कि कदाचित् ही कभी ऐसी रोयी होऊँ। यह डायरी रात १२॥ बजे लिख रही हूँ। लेकिन बापू का स्नेहभरा मीठा हाथ मेरी पीठ सहला रहा है और जो कुछ कह रहा है, उससे मैं कुछ अलग ही भविष्य का अनुभव कर रही हूँ। उसकी आवाज मेरे कानों में गूँज रही है।

सोने से पहले बापू ने मुझे एक चिट्ठी भी दी।

"चि० मनुड़ी,

अगर तू हिम्मत रखने लगे, तो मेरा रंग ही बदल जाय। तुझमें अत्यन्त सामर्थ्य है, पर वह पूरी तरह खिल नहीं उठता। इसका कारण तेरा संकोच ही है। तू विचार कर—यह संकोच तुझे मार डालता है। 'मेरे माँ-बाप को अच्छा लगता है, इसलिए वहाँ खाना मेरा धर्म है'—इस तरह शूरता के साथ वहाँ भी कहने की हिम्मत होनी चाहिए। इतना अवश्य मंजूर करना चाहिए कि मैंने इसे निश्चित करना नहीं सीखा; इसलिए इसके पास खाऊँ, तो इसकी मर्जी में आये, वह और उतना खाऊँ। फिर मुझे आदत पड़ जायगी—यह बेखटके सभीसे कहना चाहिए। ऐसा करने पर ही मेरे भीतर के गुण बाहर व्यक्त हो सकते हैं, और खिल सकते हैं। तू जानती नहीं कि मैं तेरे बीमार रहने से कितना दुःखी होता हूँ। देख, मुझ पर जयसुखलाल का कितना अटल विश्वास है। इसलिए अगर तू ठीक-ठीक नहीं सुधरती, तो हृदय और शरीर से मुझे बहुत दुःख होगा।

१३-१-'४८　　　　　　　　बापू के आशीर्वाद।"

यह चिट्ठी पढ़कर मैं एक कोने में जा बैठी और कोई देख न पाये, इस तरह फूट-फूट कर रोयी। इस वात्सल्यभरे प्रेम से सँभालने का बदला मैं कैसे चुका सकूँगी? अपनी इतनी सारी कड़ी कसौटी में भी बापू मुझे नहीं भूले!

बापू के अनशन

बापू के जीवन में यह १५वीं बार का अनशन है।

१. सर्वप्रथम १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के फिनिक्स-आश्रम में' ' 'के नैतिक पतन के लिए उन्होंने ७ दिनों का अनशन किया था।

२. सन् १९१४ में दूसरी बार फिनिक्स-आश्रम में' ' ने बापू को दिये हुए वचन का भंग किया और बापू का विश्वासघात किया। इसलिए उन्होंने १४ दिनों का अनशन किया।

३. सन् १९१८ में अहमदाबाद में मजदूर-हड़ताल के समय ३ दिनों का अनशन किया।

४. सन् १९२१ में जब प्रिंस ऑफ वेल्स भारत आये थे, तो उनके स्वागत और बहिष्कार को लेकर सहयोग-असहयोग का झगडा रोकने के लिए ४ दिनों का अनशन किया।

५. सन् १९२४ में हिन्दू-मुसलिम संघर्ष होने पर प्रायश्चित्त, प्रार्थना और आत्मशान्ति के लिए दिल्ली में २१ दिनों का अनशन किया।

६. सन् १९२४ में साबरमती-आश्रम में विद्यार्थियों के चारित्रिक दोष के लिए १ सप्ताह का अनशन किया।

७. सन् १९३२ में अप्पासाहब पटवर्धन ने यरवदा के सेण्ट्रल जेल में भंगी का काम करने की माँग की। जेल-अधिकारियों ने इसका विरोध किया। फलतः उन्होंने आमरणा अनशन शुरू कर दिया। उनकी सहानुभूति में बा ने २ दिनों का अनशन किया।

८. सन् १९३२ में हरिजनों के लिए आमरण अनशन का संकल्प किया। लेकिन सप्ताहभर में उसका निर्णय हो जाने से उसे रोक दिया।

९. सन् १९३३ में यरवदा-जेल में २१ दिनों तक हरिजन-आन्दोलन और साथियों की आत्मशुद्धि के लिए अनशन किया। लेकिन बापू को जेल से रिहा कर देने के कारण पूना की पर्णकुटी में वह उपवास पूरे किये गये।

१०. व्यक्तिगत सत्याग्रह करने के कारण बापू को यरवदा-जेल में रखा गया। वहाँ उन्होंने केवल 'हरिजन' कार्य ही करने की अनुमति माँगी। पर

सरकार ने अनुमति नहीं दी, इसलिए अनशन शुरू किया और ७वें ही दिन बापू को छोड़ दिया गया।

११. सन् १९३४ में हरिजन-यात्रा के समय अजमेर की एक आम सभा में एक सनातनी ने हरिजन को मारा। इसके प्रायश्चित्तस्वरूप सेवाग्राम-आश्रम में ७ दिनों का अनशन किया।

१२. राजकोट-सत्याग्रह के समय (सन् १९३५ में) अनशन किया। लेकिन वाइसराय की सफल मध्यस्थता के कारण ४ दिनों में यह अनशन समाप्त हो गया।

१३. सन् १९४२ में आगा खाँ महल में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय उचित न्याय पाने के लिए २१ दिनों का अनशन किया।

१४. हिन्दू-मुसलिम कटुता के लिए कलकत्ते के बेलियाघाट में ७३ घंटे का अनशन किया। और

१५. सन् १९४७ में दिल्ली में दिली दोस्ती करने या मरने के संकल्प के साथ यह अनशन होने जा रहा है।

शान्तिपर्यन्त अनशन

टहलते समय सोराबजी रुस्तमजी अफ्रीकावाले और जोहान्सबर्ग के प्रागजी भाई तथा मोहनलाल अमरशी साथ थे। उससे पूर्व बापू ने रोम्याँ रोलाँ की एक पुस्तक की प्रस्तावना लिखकर दी।

घूमते समय एक व्यक्ति ने कहा : "अगर इस उपवास में मृत्यु हो जायगी, तो यूनियन में एक भी मुसलमान जीता नहीं रह सकता।"

इस पर बापू ने कहा : "आपमें से किसीकी सलाह या अक्ल काम नहीं आ सकती। क्यों? इसका जवाब मैं नहीं दे सकता। जवाहरलाल पर तो मैं यकीन करता हूँ। उसने इस बारे में मेरे साथ जरा भी दलील नहीं की। लेकिन अब सरदार मान जायँ, तो ठीक। जवाहर को न हर्ष है और न शोक ही।"

साथ में राजकुमारी बहन आयी हुई थीं। मालूम पड़ता है कि इन्हें बापू का यह कदम उचित मालूम पड़ता है। वे यह भी मानती हैं कि इससे देश को लाभ ही होगा। ५५ करोड़ रुपये पाकिस्तान को देने के बारे में बातें हुईं।

सरदार दादा को समझाना होगा। इस बीच बाहर तो कई पत्रकार और फोटो-ग्राफर, कार्की, डा० जीवराज काका तथा अन्य अनेक लोग आये हुए थे।

बापू ने अनशन के पूर्व का अपना अन्तिम भोजन इस प्रकार किया : ढाई रोटियाँ, आठ औंस सेव, १६ औंस दूध, तीन टुकड़े ग्रेइप फ्रूट। ठीक ११ बजे बापू ने अन्तिम भोजन समाप्त किया और प्रार्थना शुरू हो गयी।

'नम्यो हो रेंगे क्यो ?' इस बुद्ध-मन्त्र के बाद 'अउज्बिल्लाह' यह मुसलिम प्रार्थना हुई। उसके बाद 'ईशावास्य०', 'यं ब्रह्मा०' और अन्त मे 'ॐ असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय' और सबके अन्त मे भजन 'वण्ड्रस् क्रॉस' गाया गया। वातावरण तो अत्यन्त गम्भीर और खिन्न बन गया था।

सभी एक सवाल पूछते हैं कि "अब तो कुछ है नही, फिर बापू ने अनशन क्यो शुरू किया ?"

बापू : "कोई आदमी असाध्य बीमार पड़े और घुल-घुलकर मर जाय, इसकी अपेक्षा एकबारगी मर जाना ही अच्छा है न ? चीन मे फाँसी की सजा बड़े ही अच्छे ढंग से दी जाती है—बटन दबाते ही आदमी साफ हो जाता है। मैंने कितने ही दिनो तक धैर्य रखा। क्या आज मौलाना साहब या सुहरावर्दी हिन्दुओं के महल्लो मे खुलेआम जा सकेंगे ? जब तक ये इस तरह जा नही सकते, तब तक मै सच्ची शान्ति नही मानता।"

हकीम अजमल खाँ के लड़के ने कहा कि "आप अनशन स्थगित कर दीजिये। अभी तो कुछ हो नहीं रहा है।" मौलाना साहब बीच में ही बोल उठे : "अभी उन्होने जो निश्चय कर लिया है, वह हम सर पटक-पटककर मर जायँ, तब भी बदल नहीं सकता। अब तो हमे उनका फाका छूटे, ऐसी ही कोशिश करनी चाहिए।"

यहाँ के डी० आई० जी० साहब आये हुए थे। उन्होने बापू को कलकत्ते का किस्सा पूरा सुनाया और उन्हे विश्वास दिलाया कि वे अपने से जितना हो सके, उतना कर गुजरेंगे।

सरदार दादा और मणि बहन : ···"सब कुछ त्याग करके भी हमे अपना सत्य का मार्ग नही छोडना चाहिए। अगर अपने दिये हुए वचनो का हम ही

पालन न करें, तो हममें और दूसरों में अन्तर ही क्या है ?" वापू ने देशबन्धु गुप्ताजी और हंसराज वायरलेस के प्रयोग देखे। आगरा के महाराज साहब आये हुए थे। पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास भी आये थे। उन्होंने बंबई की खलबली की आन्तरिक विक्षेप और उसमें भी एक उच्च कांग्रेसी नेता की सिफारिश की कान खड़ा करनेवाली बातें सुनायी।

रामराज्य स्थापित करें!

कातने के बाद पट्टनीसाहब आये। वे बापू के कई ऐतिहासिक फोटो पर उनके हस्ताक्षर कराने के लिए मुझे दे गये थे। हर फोटो पर 'बापू के आशीर्वाद' इस तरह हस्ताक्षर कराये गये। वे मुझे दो हजार रुपये इस शर्त पर दे गये कि मैं किसीको देनेवाले का नाम न बताऊँ और बापू की मर्जी के अनुसार इनका उपयोग करूँ। लेकिन मैंने उन रुपयों को उनके सामने ही बापू को सौंप दिया। मुझसे कहने लगे : "तुझ पर मेरा हक नहीं और मुझ पर तेरा हक है।" यद्यपि यह भाषा समझने में मुझे जरा देर लगी, लेकिन मैं हँस पड़ी।

वे कल भावनगर जा रहे हैं। बापू ने ही उन्हें इस उत्सव में भाग लेने की साग्रह सलाह दी।

आज से बापू का उपवास शुरू हो रहा है। वातावरण विषाद से भरा हुआ है। कब क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। ऐसे वातावरण में उन्हें जाना पसन्द नहीं आया। फिर भावनगर के महाराज साहब और दीवान साहब की प्रबल इच्छा थी कि इस अवसर पर बापू भी उपस्थित हों। उनका गला भर आया। और उन्होंने बापू से कहा : "आप अपनी अनुकूलता देख अगर मेरे यहाँ के ५, मानसिंह रोडवाले मकान में पधारें, तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

बापू ने कहा : "जहाँ तक मुझे स्मरण है, मैं वहाँ आ ही गया हूँ। लेकिन अब तो दिल्ली में करना या मरना है। यदि कुछ होगा, तो यहाँ से मैं तो मुक्त ही हूँ न ? फिर तो भावनगर में आपके यहाँ ही आऊँगा। अगर यहीं कहीं हुआ होता और शान्ति होती, तो इस अवसर पर मैं अवश्य ही आता। लेकिन अपनी सभी इच्छाएँ पूर्ण थोड़े ही होती हैं ? अब मुझे लगता है कि इसका कुछ परिणाम अवश्य होगा। ईश्वर को मुझसे काम लेना हो, तो वह लोगों को अवश्य सद्बुद्धि

देगा। अथवा यदि मेरा काम पूरा हो गया हो, तो मुझे उठा लेगा; तो भी मेरा कल्याण ही है। इस बीच आपसे मुझे बहुत काम लेना है और उसमे आप अपनी पूरी कला उँड़ेलिये।

"भावनगर का राज्य प्रजा को सौंपने के बाद काठियावाड़ के अन्य राजाओ को इसी मार्ग पर लाने की कुशलता बरते। काठियावाड़ के राजाओ को आप भलीभॉति जानते है और वे भी आपको भलीभॉति जानते है। दुनिया को बतलाइये कि काठियावाड़ के राजा और दीवानो के बीच के ये कौटुम्बिक सम्बन्ध दोनो ने परस्पर किस तरह निभाये हैं। मै वह दिन देखने के लिए आतुर हूँ कि सभी राजा लोग स्वेच्छा से भावनगर के महाराज की तरह प्रजा को अपना सर्वस्व समर्पण कर उसकी सेवा के लिए खड़े हो जायँ और रामराज्य की मेरी कल्पना भारत के इस कोने मे साकार करने का यत्न करे। तब मुझे काठियावाड़ और भावनगर मे अपने घर ले जाइये। नही तो मुझसे जाया ही नहीं जा सकता।

महुआ के लिए आग्रह

"वहॉ से तरया किनारे एक सुन्दर गाँव है। आपके पिता के समय मैं वहॉ गया था। वहॉ नरसिह मेहता को भगवान् का साक्षात्कार हुआ, ऐसा माना जाता है।" बापू को गॉव का नाम याद नही आ रहा था, इसलिए वे जरा रुक गये। इस बीच पट्टनी साहब ने कहा : 'गोपनाथन् ?' बापू ने कहा : "हॉ-हॉ ! मुझे वह बहुत ही पसन्द पड़ा था। उस समय मेरे साथ महादेव भी था। आपके पिताजी ने चरखा कातते हुए भजन भी सुनाया।"

मैंने बीच मे ही कहा : "तब तो बापू ! मेरा महुआ बिलकुल पास है।" पट्टनी साहब ने कहा : "यह लड़की मुझे बताती ··है और महुआ-महुआ करती है। गन्दा से गन्दा गॉव है वह !" मैंने कहा : "आपके कारण ही न ?" उन्होंने कहा : "हमने तो कब से वहॉ की म्युनिसिपैलिटी को वह सौप दिया है। प्रजा के म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष मे ही कुछ दम न हो, तो क्या हो सकता है ?" "लेकिन भावनगर की बात चलती है, तो मेरा महुआ खड़ा ही हो जाता है।" "पगली ! बापू को पहले भावनगर तो आने दे, फिर तेरे महुआ को देखा जायगा।" पट्टनी साहब ने अपनी लाक्षणिक शैली मे कहा।

बापू हँस पड़े। लेकिन उन्होंने बापू को प्रणाम कर विदा लेने के लिए हाथ जोड़कर नमस्कार किया। आँखों से आँसुओं की धाराएँ निकलीं। मेरे भी रोंगटे खड़े हो गये।

अनुभव से लाभ उठायें!

उनके जाने के बाद बापू ने कहा: "उपवास के कारण ये जरा निराश हो गये हैं। उन्होंने कहा है और तेरी भी इच्छा हो, तो एक दिन के लिए जाना हो, तो चली जा। दिल बहल ही जायगा।" मैंने इनकार कर दिया। अनशन शुरू न हुआ होता, तो कुछ सोचती।

बापू ने कहा: "मेरे बदले तुझे देखकर भी वे प्रसन्न हो जायँगे। देख, ये भी तो जा रहे हैं न? क्योंकि मेरी सलाह मानना इन्हें अच्छा लगता है। नहीं तो इनका स्वभाव भी कम जिद्दी नहीं है। फिर भी मेरी बातें खूब मानते हैं। देख तो सही कि ये तुझ पर अपनी औरस लड़की से भी अधिक ममता रखते हैं; क्योंकि तू मेरी सेवा करती है। याने मेरी कही हुई बात को इच्छा या अनिच्छा से भी मानती है। उन्हें मेरे प्रति पूर्ण श्रद्धा है कि बापू की सलाह मानने में मेरा कल्याण ही हो सकता है।...यही सोचकर वे मेरी सलाह मान लेते होंगे।"

मैंने पूछा: "ये दीवान का पद छोड़ देंगे, तो फिर क्या करेंगे?"

बापू ने कहा: "देख, अगर मैं इस तपश्चर्या से जीवित रहा, तो उनसे बहुत-सा काम लेनेवाला हूँ। ये कुशल व्यक्ति हैं। काफी काम देंगे, सिर्फ इनसे काम लेने की योग्यता चाहिए। जिसे काम लेना आता हो, उसे ही ये काम देते हैं; दूसरों को नहीं। इसलिए मैं तो इनके अनुभवों से लाभ उठाऊँगा ही। मैं मानता हूँ कि अगर हम ऐसे अनुभवी आदमी के सामने पूर्वग्रह रखकर उनसे लाभ न उठायें, तो ठोकर खायेंगे। तुमने देख ही लिया कि मैंने बलवन्त राय को खास सूचना दी है और मनुभाई से भी कहा है कि इनके सुझाव एवं अनुभवों से लाभ उठाने में कभी मत चूकिये। नम्रता अवश्य रखनी चाहिए। देखें, अब क्या होता है!"

बापू को अभी आज कुछ थकान या कमजोरी मालूम पड़ती हो, ऐसा नहीं लगता। वे कहते हैं: "मैं रोज की अपेक्षा आज अधिक स्फूर्ति का अनुभव कर रहा हूँ: कारण मानसिक बोझ हलका हो गया है।"

पहला दिन

नियमानुसार बापू प्रार्थना-सभा में बड़ी ही स्फूर्ति से गये। उन्होने आरम्भ मे कहा : "मुझे जो कुछ कहना होगा, उसे १५ मिनट मे ही पूरा कर देने की उम्मीद रखता हूँ। लेकिन आज कहने के लिए इतना अधिक है कि कदाचित् कुछ मिनट और भी लग जायँ।

"आज तो उपवास का पहला ही दिन है और फिर सुबह खाया भी है। ९॥ बजे खाना शुरू किया, पर बीच मे इतने अधिक लोग आ गये कि मैं अपना भोजन ठीक ११ बजे पूरा कर पाया। सम्भव है कि कदाचित् कल से मै प्रार्थना स्थल तक चलकर न आ सकूँ। अगर आप सबकी इच्छा हो कि प्रार्थना होनी ही चाहिए, तो आप सभी आ सकते है। इन लड़कियों में से सभी या एक आध कोई वहाँ प्रार्थना करायेगी।

"कल मैने बहावलपुर के शरणार्थियों के बारे मे कहा। सरदार के मत्री श्री शंकर अपनी इच्छा से मुझसे मिलने नही आ सकते, इसमे कुछ गलतफहमी हो गयी है। मणिबेन ने उस बारे मे बताया कि वे दो बजे नही आ सकते, और समय आ सकते है। यह मुझे ठीक समझ मे नहीं आया, इसीलिए ऐसा घोटाला हुआ। लेकिन यह कोई बड़े महत्त्व की बात नही है। मै यह आशा ही नही करता कि सरकारी नौकर गैर-सरकारी व्यक्तियों के यहाॅ चक्कर काटते रहे। लेकिन इन लोगों को मेरी हकीकत पसन्द नही आयी, इसलिए आज इसका खुलासा करना मुझे आवश्यक मालूम पड़ा।

अपना अपराध स्वीकार करें!

"अस्तु, अब मुख्य बात पर आयें। आज दिनभर मे मेरे पास असंख्य लोग आ गये। सभी एक ही सवाल पूछते हैं कि यह अनशन किसके समक्ष है? यह आक्षेप किस पर है? लेकिन आक्षेप करनेवाला मै कौन होता हूँ? और मान लीजिये, इस अनशन से मै जीवित न रहा, तो यह आक्षेप मुझ पर ही है, यही समझिये। अगर मै नालायक साबित होऊॅ, तो ईश्वर मुझे जीने ही नहीं देगा। आज हिन्दू अपने धर्म का पालन नही करते, इसका मुझे बहुत दुःख है, क्योंकि मै एक आदर्श हिन्दू हूँ। आज हिन्दू और सिख यह वृत्ति रखते है कि यहाॅ से

एक-एक मुसलमान को खदेड़ दिया जाय। लेकिन वह अच्छी नहीं है। इस तरह तो वे अपने धर्म और अपनी जाति को अधर्मी बना रहे हैं। यह सच है कि मैं अल्पसंख्यकों का पक्ष लेता हूँ; लेकिन निरपराध लोगों को नेताओं या अमुकों के निर्णयों की बलि होना पड़े और उन्हें निराधार बनाकर रखा जाय, तो उन सबको उचित मदद करना मानवमात्र का कर्तव्य ही है। इसलिए सच पूछें तो यह उपवास मेरी आत्मशुद्धि के लिए ही है। भगवान् सभीको शुद्ध करे तथा सम्मति दे, इसलिए है। याने सभीको शुद्ध होना है। यह नहीं कि हिन्दू, सिख शुद्ध हों और मुसलमान नहीं। मुसलमानों को भी सर्वांगशुद्ध होना चाहिए। यहाँ के मुसलमान भी सर्वथा निर्दोष नहीं हैं। इस तरह सभीको अपना-अपना अपराध स्वीकार करना ही चाहिए। मैंने कभी भी किसीकी खुशामद के लिए अनशन नहीं किये, एकमात्र भगवान् की ही खुशामद करता हूँ।

"जब भारत का विभाजन नहीं हुआ था, उस समय भी मुसलिम लीग ने देश के टुकड़े कराने के सिवा दिल के टुकड़े करवाने में भी कम हिस्सा नहीं लिया। मुसलिम लीग जैसी संस्था इस अमानुष कृत्य के लिए अत्यन्त और गम्भीर जिम्मेदार है। लेकिन अन्य मुसलमान, हिन्दू और सिखों ने भी भूलें तो की ही हैं। अब इन तीनों के दिलों में दिली दोस्ती करनी हो, तो सबको अपने-अपने दिल साफ करने चाहिए।

मुसलमान भाइयों के प्रति

"अब दो शब्द अपने मुसलमान भाइयों से अदब के साथ कहना चाहता हूँ। यह अनशन उनके नाम से शुरू हुआ है, इसलिए उनकी जिम्मेदारी बढ़ गयी है। उन्हें कम-से-कम इतना तो निश्चय करना ही चाहिए कि हम हिन्दू और सिखों के दोस्त बनकर रहेंगे। जो यूनियन में रहना चाहते हों, वे यूनियन के प्रति वफादार रहें। ये लोग कहते तो हैं कि हम वफादार रहेंगे, पर आचरण वैसा नहीं करते। मैं तो कहूँगा कि कम बोलो, पर करके ज्यादा दिखाओ!

"बहुत से मुसलिम भाई मुझसे कहते हैं कि जवाहरलालजी अच्छे हैं, पर सरदार मुसलमानों के साथ सहानुभूतिपूर्ण बर्ताव नहीं करते। इससे मैं स्तब्ध

ही हो जाता हूँ। ऐसी बातें मुसलमान कहे, तो कैसे चलेगा? सरदार और जवाहर मिलकर ही सारी हुकूमत चलाते है। ये सभी आपके सेवक ही हैं और सभीकी मंत्रिमण्डल जैसी पूरी ही जिम्मेदारी है। सरदार ने सचमुच ऐसी कुछ भूलें की हो, तो निडर होकर मुझे बतलाइये। मैं अपने से जो कुछ बन पड़ेगा, देख लूँगा। लेकिन सिर्फ अफवाहों से इस तरह पूर्वग्रह नही बनाया जा सकता। मै तो अपना न्याय अलग ही ढग से दूँगा। मै कहूँगा कि सरदार, जवाहर, गाधी या मुसलिम लीग किसीके भी भरोसे न रहे, सिर्फ ईश्वर के भरोसे ही रहना हितावह होगा।

"मै जानता हूँ कि कदाचित् सरदार की जीभ पर काँटा हो, कड़वाहट हो, पर उनके हृदय में काँटा या कडवाहट बिलकुल नही है। हाँ, वे सच्ची बातें किसीसे भी कहने मे नहीं डरते और न कहने से चूकते ही है। उन्होने लखनऊ में कहा है कि मुसलमानो को भारत मे रहना हो, तो खुशी से रह ही सकते हैं। लेकिन लीगी मुसलमानो का उन्हे कोई भरोसा नहीं। इसमें उन्होने कुछ अयोग्य कहा, ऐसा मै नही मानता। आदमी को जैसा मालूम पड़े, वैसा ही कहना चाहिए। और सन्देह रखने का उन्हे अधिकार है ही। लेकिन उस सन्देह का मुसलमानो को गलत अर्थ नही करना चाहिए। यो मै तो यह माननेवाला हूँ कि सन्देह रखना ही नही चाहिए और अपराधी सिद्ध हुआ, तो उसे योग्य दण्ड देना चाहिए। लेकिन सरदार तो सरदार ही है। इनके सिर पर यह जिम्मेदारी है।

'एकला चलो'

"आज अभी 'एक लो जाने रे' 'एकला चलो' भजन गाया गया। यह भजन मुझे बहुत ही प्रिय है। नोआखाली की मेरी यात्रा के बीच रोज यह गाया जाता था। इसमे कहा गया है कि 'तेरे साथ कोई भी न आये, तो भी तू अपने रास्ते अकेले ही चला जा। ईश्वर तो तेरे साथ है ही।' इसलिए हिन्दू-सिख अगर यहाँ के अल्पसंख्यको को सँभाल न सके, तो फिर मुझे जीकर ही क्या करना है? मैं तो कहूँगा कि चाहे पाकिस्तान मे सभी हिन्दू-सिख काट डाले जायँ, तो भी यहाँ एक नन्हा-सा मुसलिम बच्चा भी सुरक्षित रहना चाहिए। जो कमजोर हैं, निराधार हैं, उन्हे मारना बुजदिली ही है।

अंतर्मुखता अपेक्षित

"दिल्ली की अब ही कसौटी है। मेरी शर्त इतनी ही है कि भारत के चाहे जिस भाग मे या पाकिस्तान मे चाहे जितनी मार-काट मचे, तो भी दिल्ली अपने फर्ज से न चूके। दिल्ली की शान्ति जैसे है वैसी ही आबाद रहे, दिल्ली की आबादी आबाद रहे और सुहरावर्दी जैसे भी, जिन्हे गुण्डो का सरदार कहा जाता है, चाहे जहाँ आजादी से घूम-फिर सके। आज तो सुहरावर्दी साहब-जैसो को यहाँ प्रार्थना मे लाने मे भी खतरा देख रहा हूँ, तब और जगह की तो बात ही क्या है? अगर उनका अपमान होता है, तो उसमे मैं अपना ही अपमान समझता हूँ। इसीलिए यहाँ नही ला सकता। लेकिन मुझे इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि वे चाहे जैसे हो, पर कलकत्ते मे मुझे उनका पूरा-पूरा साथ था। वहाँ तो उन्होने—जितने मुसलमान हिन्दुओ के मकान दबाकर बैठे थे—उन सबको निकाल बाहर किया और उनके घर हिन्दुओ को सौप दिये। सभी कौमे याने हम सब भारतीय अन्तर्मुख बने, सच्चे भारतीय बने और हैवानी को मिटाकर आदमियत कायम करे। अगर ऐसा नहीं होता, तो कम-से-कम अब मेरा जीना ही व्यर्थ है।"

बापू ने आज से टहलना बन्द कर दिया। प्रवचन देखने के बाद पडितजी के साथ बहुत-सी बाते की। बापू का वजन १११ पौण्ड हुआ।

आज की बापू की शारीरिक स्थिति इस प्रकार रही: दिन मे ११। बजे गरम सादा पानी। फिर पाखाने गये। फिर १२ औंस मिट्टी लेकर सो गये। दो बजे ८॥ औंस गरम सादा पानी। ४ बजे ८ औंस पानी और फिर कताई। प्रार्थना के बाद गरम सादा ८ औंस पानी। रात १० बजे सोने की तैयारी। १०॥। बजे सभी अलग-अलग हो गये। आज तो परिचित-अपरिचितो की मुलाकातो की सीमा ही नही रही।

प्रार्थना के बाद हम लोग बिरला-मन्दिर गये। आज कुल पानी ३६॥ से ४० औंस तक पेट मे गया, पर निकला कम ही। गत अनशन से ही 'किडनी' (गुर्दा) खराब है। देखे, इस बार क्या होता है? सभव है, इसी कारण वजन मे अन्तर नहीं पड़ा। रात मे सोते समय आवाज मे और चेहरे पर सर्वत्र काफी कमजोरी मालूम पड़ रही है। यो आज परिश्रम भी काफी हुआ है।

अब यह डायरी पूरी कर रही हूँ। किन्तु सोने से पूर्व भगवान् से यही हार्दिक प्रार्थना करती हूँ कि हमारे उन बापू को अधिक कसौटी पर मत कसो, जो करोड़ों के आश्रय हैः देश के बालक, स्त्री-पुरुष, युवक, गरीब, अमीर, राजा से रंक तक सभीका जो मुट्ठीभर हड्डियोंवाला अस्सी बरस का बुड्ढा एकमात्र आधार है और जो उनका आश्वासन-स्थान है !

अनशन का स्पष्टीकरण : १९ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१४-१-'४८

पिता-पुत्र का अन्तिम पत्र

रात मे दो बार मै जग पड़ी। यो बहुत सोयी ही नही और नींद मे भी बापू की चिन्ता तो थी ही। सर्दी तेज है, इसलिए अधिक चिन्ता हो रही है। रात तो एक तरह से ठीक ही बीती। बापू ने अपने बल पर ही रोज की तरह खड़े होकर दतवन किया। मैने पूछा : "बापू, कमजोरी तो नही मालूम पड़ती ?" बापू ने कहा : "आज ऐसा नहीं मालूम पड़ता कि अनशन कर रहा हूँ।" फिर उन्होने सरला के साथ बाते की : "तुझे अपना कार्यक्रम स्वयं ही बना लेना चाहिए। अभी मै तुझ पर मुग्ध हो सकूँ, ऐसा नहीं दीखता।"

प्रार्थना के बाद मै बापू को भीतर ले गयी। रात का देवदास काका का पत्र पुनः पढ़ा। उत्तर दिया। पिता-पुत्र के बीच असख्य पत्र-व्यवहार हुआ होगा, लेकिन यह पत्र और यह उत्तर दोनो के जीवन मे अन्तिम ही सिद्ध हुए। देवदास काका का पत्र और बापू का जवाब दोनो अद्भुत है।

ता० १३-१-'४८, सुबह ३॥ बजे

"परमपूज्य पिताश्री की पवित्र सेवा मे,

आपका वक्तव्य बड़ी उतावली मे हो गया है। अभी बहुत से सुधार हो सकते थे। अनशन के औचित्य के विषय में मुझे बहुत कुछ कहना था; लेकिन मुझे तो कोई सूचना थी ही नही और न किसीने यह खबर देने का कष्ट ही उठाया।

में बहुत जल्दी आ सकता और मुझे जो कहना था, कहता। किन्तु अभी ही चि० मनु ने मुझे यह खबर दी। मेरी मुख्य चिन्ता और दलील यह है कि आखिर आप अधीरता के वश हो गये। यह काम ही धैर्य का था। आपने दिल्ली आने के बाद कितनी अधिक सफलता सिर्फ धैर्यपूर्वक मेहनत करके पायी है—इसका आपको खयाल नहीं। आपकी मेहनत से लाखों बच गये हैं और लाखों बचते। लेकिन आप एकाएक धैर्य खो बैठे हैं। आप जीते हुए जो कर सकते हैं, वह इस बारे में मरकर नहीं कर सकते। यही एक विचार मन में रखकर इस समय अनशन छोड़िये, यही प्रार्थना है।

—देवदास के प्रणाम।"

१४-१-'४८, मकरसंक्रांति

"चि० देवदास,

तेरा पत्र सुबह प्रार्थना के बाद पढ़ गया। कल तूने जो थोड़ी-सी बातें कीं, उन्हें भी समझ गया। मेरा वक्तव्य तू जिस दृष्टि से उतावली में दिया हुआ कहता है, वैसा नहीं है। हाँ, मेरी अपनी दृष्टि से उतावलीभरा अवश्य है। कारण, उसके देने में साधारणतः मुझे जितना समय लगना चाहिए, उससे कम समय लगा। उससे पहले चार दिनों का विचार-मंथन था और प्रार्थना थी। यह वक्तव्य मंथन और प्रार्थना के फलस्वरूप था। इसलिए उसे मेरी भाषा या किसी भी जानकार की भाषा में 'उतावलीपूर्ण' कहा ही नहीं जा सकता। ऐसे वक्तव्य के विचार की भी भाषा सुधारने या सफाई करनेमात्र के सुधार की गुंजाइश जरूर थी और तेरे सुझाने के साथ ही मैंने सुधार भी दिया। उपवास की योग्यता के बारे में तुझसे या और भी किसीसे मैं कुछ सुनना नहीं चाहता था। जो सुन लिया, वह तेरे विवेक और धैर्य की ही निशानी है। सूचना तो तुझे पहले ही मिल चुकी थी। तेरी मुख्य चिन्ता और दलील सर्वथा निरर्थक मानी जायगी। तू मित्र तो अवश्य है और यह भी सच है कि ऊँचे पद पर पहुँच गया है, फिर भी 'पुत्र' तो किसी भी हालत में मिट नहीं सकता। इसलिए तेरी चिन्ता स्वाभाविक मानता हूँ। लेकिन तेरी दलील तेरे छिछले विचारों और अधीरता का ही दर्शन है।

इस कार्य को मैं अपने धैर्य की पराकाष्ठा मानता हूँ। जो धैर्य उद्देश्य का हनन करे, उसे धैर्य माना जाय या मूर्खता? मेरे दिल्ली आने के बाद जो परिणाम हुए हो, उसके लिए मैं श्रेय नही ले सकता। उसे लूँ, तो वह मोह ही माना जायगा। मेरे परिश्रम से एक या अनेक बचे हो, दुनिया मे उसका मूल्य हो ही नही सकता। उसका मूल्य तो केवल सर्वज्ञ ही निर्धारित कर सकता है। जिसने सितम्बर के आरम्भ से आज तक धैर्य रखा, उसे 'एकाएक धैर्य खो दिया' यह कहना अज्ञान नही, तो और क्या कहा जा सकता है? व्यावहारिक दृष्टि से विचार करें, तो जब मैं पुरुषार्थ से हार गया, तभी ईश्वर की गोद मे सिर रखा। 'उपवास' का यह अर्थ समझने के लिए तू 'गजेन्द्रमोक्ष' को पढ़ और समझ, जो दुनिया का महाकाव्य कहा गया है। तभी तू कदाचित् मेरे कार्य का मूल्य कर सकेगा।

तेरे पत्र का अन्तिम वाक्य तेरे प्रेम का सुन्दर प्रदर्शन है। इस प्रेम का मूल अज्ञान या मोह है। यह मोह सार्वजनिक है, इसलिए यह ज्ञान का स्थान प्राप्त नही कर सकता। जहाँ हम जन्म-मरण के प्रश्न को ही हल नही कर सकते, वहाँ यह कहना कि 'जीकर ही अमुक कार्य हो सकता है', आकाश-कुसुमवत् है। 'जियो तब तक सियो' यह अच्छा है, लेकिन इतना अध्याहार समझ लेना चाहिए कि 'यह सीना हो निष्काम भाव से।' अब शायद तू समझ जायगा या नही? तेरी प्रार्थना मानने योग्य नही है। इसलिए उपवास जिसने करवाया, वह राम ही अगर छुड़वाना हो, तो उसे छुड़ा सकेगा। इस बीच मैं, तू और सभी यह समझे और माने कि 'राम मारेगा, तो भी श्रेय है और राम जिलायेगा, तो भी श्रेय है।' मुझे तो एक ही प्रार्थना करनी थी कि 'हे राम, उपवास के बीच मेरा मन सबल रखो, जिससे मैं जीने के लालच की उतावली मे उपवास न छोड़ बैठूँ।' विचारपूर्वक चि० मनु से लिखवाये इस पत्र को तू संग्रह कर रखना और मौके-मौके इसे पढ़ते रहना!

—बापू के आशीर्वाद।"

गुजराती भाई-बहनों के नाम पत्र

"यह चिट्ठी मैं बुधवार को सबेरे पड़ा-पड़ा लिखता रहा हूँ। आज उपवास का दूसरा दिन है, फिर भी अभी चौबीस घण्टे नही बीते। 'हरिजन' की डाक

भेजने का यह अन्तिम दिन है। इसलिए गुजरातियों को दो शब्द लिखना ठीक मानता हूँ :

"इस अनशन को मै साधारण नहीं मानता। गम्भीर विचारपूर्वक यह शुरु किया गया है। फिर भी उसका प्रेरक विचार नहीं, वल्कि विचारों का स्वामी राम कहो या रहमान कहो, वही है। यह अनशन किसीके लिए नही, या सभीके लिए है। इसके पीछे किसी प्रकार का क्रोध नही और न रत्तीमात्र उतावली ही है। सभी चीजों का एक मौका होता है। वह मौका चूक जाने के वाद उसके करने का मूल्य ही क्या? इसलिए अव सोचना इतना ही है कि क्या प्रत्येक भारतीय के लिए कुछ करना शेष है? भारतीय मे गुजराती आ गये और यह गुजराती भाषा मे लिखा जा रहा है, इसलिए गुजराती वोलने-वाले सभी भारतीयो के लिए है।

"दिल्ली हिन्दुस्तान की राजधानी है। अगर हम हृदय से हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान—ये दो विभाग न मानें याने हिन्दू और मुसलमान दो भेद न मानें—तो अव तक हम हिन्दुस्तान का जो नक्शा जानते आये हैं, आज दिल्ली उसकी राजधानी नहीं हुई है, यद्यपि यह तो सदा से ही भारत की राजधानी रही है। हस्तिनापुर भी यह है और इन्द्रप्रस्थ भी यही है। उनके खँडहर आज भी पड़े हैं। यही दिल्ली हिन्दुस्तान का हृदय है। इसे हिन्दुओं या सिखों का कहना मूर्खता की पराकाष्ठा है। यह कहने मे तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। भले ही आपको यह कठोर मालूम पड़े, पर है शुद्ध सत्य ही। इस पर कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और कराची से लेकर आसाम के डिब्रूगढ़ तक रहनेवाले और इस प्रदेश को सेवाभाव और प्रेमभाव से अपना वनानेवाले सभी हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी और यहूदियो का हक है। इसमे वहुसंख्यकों का ही स्थान है या अल्पसंख्यको की अवहेलना है—यह कहा ही नहीं जा सकता। जो उसका शुद्धतम सेवक है, वह वड़ा-से-वड़ा हकदार है। इसलिए यहाँ से मुसलमानों को खदेड़नेवाला दिल्ली का पहले नम्वर का दुश्मन है और इसी कारण हिन्दुस्तान का भी। दुर्भाग्य से आज हम इसी स्थिति पर पहुँच रहे हैं!

"इस कुअवसर को टालने के लिए हर भारतीय को भाग लेना चाहिए। वह किस तरह लिया जा सकता है? देखिये, अगर हम पंचायत-राज चाहते हों, लोक-

तंत्र स्थापित करना चाहते हों, तो हमें मानना होगा कि छोटा-से-छोटा भारतीय बड़े-से-बड़े भारतीय जितना ही हिन्द का राजा है। इसके लिए उसे शुद्ध होना चाहिए और न हो, तो बनना चाहिए। वह जैसे शुद्ध हो, वैसा ही समान होना चाहिए, जिससे जाति-भेद, वर्ण-भेद का शिकार न बने। वह सबको अपने समान माने और दूसरों को अपने प्रेमपाश मे बाँध ले। उसकी दृष्टि मे कोई अस्पृश्य न हो और उसके हृदय मे मजदूर और महाजन एक समान हो, इससे वह करोड़ो मजदूरो की तरह पसीने की रोटी कमाना जानेगा और कलम तथा कुल्हाड़ी को समान मानेगा। यह शुभ अवसर निकट लाने के लिए वह खुद भगी बनेगा। सयाना हो, तो अफीम और शराब को छुएगा ही क्यो? वह सहज ही स्वदेशी व्रत का पालन करेगा। पत्नी के अतिरिक्त सभी स्त्रियों को अवस्था के अनुसार माता, बहन या लड़की मानेगा। किसी पर कुदृष्टि न रखेगा और मन मे भी बुरी भावना न रखेगा। वह अपने समान ही स्त्रियों का हक समझेगा। मौका आने पर स्वय मरेगा, पर दूसरे को कभी न मारेगा और वह सिखो के गुरु जैसा बहादुर होगा। अकेले सवा लाख के सामने खड़ा हो जायगा और एक कदम भी पीछे न हटेगा। ऐसा भारतीय पूछेगा ही नही कि मुझे इस यज्ञ मे क्या भाग लेना चाहिए।

१४-१'४८ मो० क० गाधी।"

अन्याय और पाप का प्रायश्चित्त

आठ बजे बापू चलकर मालिश के टेबुल तक गये। ९ बजे बाथ मे आये। बाथ मे सुशीला बहन ने देश-विदेश से आये हुए तार पढ़ सुनाये। सुहरावर्दी की बातें करते हुए बापू ने कहा: "यह आदमी अत्यन्त बुद्धिमान् है। इसे जिन्नासाहब ने तरह-तरह से मन्त्रिमण्डल मे या वह जिस सम्मान्य पद को चाहें, वहाँ आने के लिए निमन्त्रित किया था। जब उन्होने मुझसे पूछा, तो मैंने एक ही जवाब दिया: "आपने हिन्दुओं के साथ जो अन्याय और पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त लेना हो, तो हिन्दुओ का वफादार मित्र होना चाहिए और यह मोह छोड़ देना चाहिए।' इसने वह छोड भी दिया है। अब मै इसे पूर्वी बगाल में भिजवाऊँगा।"

हम मानव बनें !

··· के ऊपर बापू बाथ में नाराज हो गये।···एक ही बात दूसरे ढंग से रखी जाय, तो बापू अत्यन्त दुःखी हो जाते हैं। बापू को कमजोरी काफी मालूम पड़ रही है। एक बात पर उन्होंने कहा : "इस लड़की को भी मैं जाँचता हूँ। यह दंभ या असत्यता अग्नि-परीक्षा में अपने-आप जल जायगी। मैंने उन दोनों को इस तरह का नहीं समझा था। महादेव ने मुझे आगाह तो जरूर किया था, पर अब उसका कुछ फल नहीं। ईश्वर जो कुछ दिखाता है, देख ही लेना चाहिए। आखिर युधिष्ठिर जैसे चक्रवर्ती राजा ने भी जब स्वर्गारोहण किया, तो अपनी माता और पत्नी सहित चार-चार भाइयों को सुलाने (मरने) का दृश्य अपनी आँखों देखा ही।"

इतना समझाते हुए बापू को थकान हो आयी। मैंने उनसे कहा कि आज आप बाथ में इतना अधिक बोले हैं कि अब न बोलें तो ? बापू कहने लगे : "बहुत जीने के लिए मेरा प्रयत्न होना ही नहीं चाहिए। लेकिन मैं जो कुछ बोलता हूँ, वह भी मेरी इस अग्नि-परीक्षा और यज्ञ के अविभाज्य अंग के रूप में ही है। अगर मैं तुमसे लेकर सभी मण्डली और बिरला-भवन दिल्ली और उसके द्वारा भारत एवं समस्त मानव-जाति को समझा सकूँ तथा उनके हृदय के द्वार खुल जायँ, तो कदाचित् ये अमानुष कृत्य होने से रुक जायँ। हम लोग आदमी बनें। इसीलिए मैं कहता हूँ।"

मैं उस समय चुप ही रह गयी। हम दलील करते हैं, तो बापू समझाने के लिए खूब बोलते हैं। आज तो आवाज बहुत ही धीमी हो गयी है। बापू के मुँह के पास कान लगाने पड़ते हैं। वे अनशन के बीच हजामत भी नहीं बनवाते, इसलिए हजामत बनवाते समय पाँच-दस मिनट सोया करते थे: वह भी बन्द हो गया।

मीठी चुटकी

बाथ से निकलकर बाहर धूप में बैठे। सरला को गीता सिखाने के लिए बापू ने मुझसे कहा। १० से १२ तक जवाहरलालजी, मथाई, षण्मुखम् चेट्टी और सरदार दादा (मन्त्रिमण्डल) के साथ बातचीत की। हम लोग मणिबेन

के पास बैठे। उन्होंने बापू के बारे में अपनी चिन्ता व्यक्त की। सरदार दादा बहुत ही चिन्ताग्रस्त हो उठे हैं। वे जब तक भावनगर में रुके, तब तक रोज पत्र द्वारा बापू की तबीयत का हाल सूचित करने के लिए उन्होंने मुझसे कहा है। कराची में तो बहुत ही आतंक है। १,५०० आदमी कल कत्ल हुए। फिर भी कोई राष्ट्रीय मुसलमान कुछ भी नहीं बोलता।

१२॥ बजे स्थानीय मौलाना लोग आये। उनके साथ एक हबीब-उल रहमान भी थे, जिन्होंने ११ तारीख को बापू से कहा था कि 'हमें विलायत भेज दीजिये'। बापू ने उनसे मीठी चुटकी लेते हुए, पर बड़े ही गम्भीर होकर कहा : "क्यों अब तो खुश हैं न ? मैंने आपके लिए विलायत के टिकट की व्यवस्था कर दी है और मैं कहूँगा कि हिन्दुस्तान के बेवफा मुसलमान विलायत जा रहे हैं।"

वे भाई तो इस गजब के व्यंग्य पर क्या बोलते ? इनमें से एक भाई बोले : "आपको दुःख हुआ हो, तो मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ।"

बापू ने कहा : "यह तो आप अंग्रेजी चाल चल रहे हैं—सता-सताकर फिर माफी माँगना ! आपको यह कहते शर्म आनी चाहिए कि अंग्रेजी हुकूमत अच्छी थी। यानी हम गुलाम थे, वह ज्यादा अच्छा था। इसलिए हम फिर अंग्रेजों से अपने ही भाइयों से रक्षा करने के लिए उनकी गुलामी की भिक्षा माँगते हैं—यह कितनी वाहियात बात है !

"लेकिन अब आपके मन में जो भरा है, वह दीख पड़ा। आप सोचिये—शुद्ध होकर सच्चे बनिये। अगर ऐसे ही रहेंगे, तो भारतीय कब तक सहन करेंगे ?"—बापू ने भी खरी-खरी सुना दी।

पौने बजे मिट्टी का प्रयोग किया। उसी समय मृदुला बहन का तार आया कि पाकिस्तान के मुसलमान पूछ रहे हैं कि गांधीजी का अनशन छुड़वाने के लिए हम लोग क्या करें ?"

बापू ने मुझसे कहा : "देख अगर फोन आये, तो कह देना कि आज के प्रार्थना-प्रवचन में मैं उस बारे में कहूँगा। फिर भी यहाँ के मुसलमानों से जो कहता हूँ, वही उन पर भी लागू है।"

दूसरी एक बात पर "मैं तो ईश्वर का कैदी हूँ। उसने जो अनशन करवाया, उसे कर रहा हूँ; जब वह छुड़वायेगा, तभी ये समाप्त होंगे। अगर इस

कैद से जीवित निकला, तो नया जीवन प्राप्त होगा; तब पाकिस्तान जाऊँगा। नहीं तो मृत्यु को ही अपना मित्र मानता हूँ।" औसतन आज बापू प्रसन्न हैं और उन्होंने ठीक-ठीक काम किया है। आज मुलाकातों का तो अन्त ही नहीं रहा।

शाम को बापू पैदल प्रार्थना-स्थल तक गये और बोले भी। अन्दर आकर लेटने के बाद कहने लगे: "आज मैं बहुत तरोताजा हूँ।" सुशीला बहन ने पैदल चलकर जाने और बोलने से मना किया था। उसके उत्तर में बापू ने कहा: "मैं तो ईश्वर के ही हाथ में हूँ, और किसीके भी हाथ में नहीं।"

रात में यहाँ कितने ही सिख पंजाबी चिल्लाते हुए आये। बापू को गालियाँ भी दे रहे थे। दिल्ली में उन्हें कहीं काम में लगा दिया जाय, तो हो सकता है, लेकिन यह कोई आसान बात नहीं है।

सहानुभूति के तार

आज के प्रवचन में बापू ने कहा: "हिन्दुस्तान और विदेशों से मेरे पास तारों का ढेर लग गया है। कितने ही तारों में तो मेरे अनशन के निर्णय का स्वागत किया गया है और मुझे ईश्वर की गोद में रखा है। थोड़े-से लोग अनशन छोड़ने के लिए प्रेमपूर्वक दलील कर प्रार्थना करते हैं। तारों का ढेर बढ़ता ही जा रहा है। हर कौम और हर देश से तार आये हैं।

"पहले तो इन सभी भाई-बहनों ने मेरे लिए जो चिन्ता व्यक्त की है, उसके लिए मैं उनका अत्यन्त ऋणी हूँ, लाहौर से पाकिस्तान के गण्यमान्य मुसलमान मित्र भी मेरी तबीयत की फिक्र करने के साथ यह भी सूचित करते हैं कि हम लोग इसमें किस तरह मदद कर सकते हैं? इस सूचना से मैं खुश होता हूँ। मेरा यह अनशन तो जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, आत्मशुद्धि के लिए ही है। इसलिए जो लोग इस अनशन के प्रति सहानुभूति दिखलाते हों, वे सभी आत्म-शुद्धि करें, यही मेरी प्रार्थना है।"

पाकिस्तान के प्रति दो शब्द

"आज तो मैं पाकिस्तान से दो शब्द अदब के साथ कहना चाहता हूँ। पाकिस्तान को मैं अपना मित्र ही मानता हूँ; इसलिए मित्रता के नाते जो सच मालूम पड़े, उसे मुझे कहना ही चाहिए।

"पाकिस्तान मे मुसलमानो ने अपराध किया है और अभी भी वहाँ मारकाट चल रही है। हजारो हिन्दू, सिख लूटे जा रहे है और अब तो वहाँ कोई हिसाब ही नही रह गया है। कितनी ही लड़कियाँ भगायी गयी है। पंजाब के गुजरानवाला रेलवे-स्टेशन पर गाड़ी भी लूटी गयी। अगर पाकिस्तान में ऐसा ही चलता रहा, तो भारत कब तक सहन करेगा? और उसके बाद मेरे जैसा एक आदमी अनशन करे या १०० साधु भी अनशन करें, तो यह निश्चित है कि भारतीय जनता का रोष काबू मे नही लाया जा सकता। इसलिए पाकिस्तान के मुसलमानों को अब विचार कर सदाचरण करना चाहिए। साथ ही हिन्दू और सिखों को हिम्मत से विश्वास मे लाकर उनसे कहना चाहिए कि अब हम आपको जाने न देगे। अपनी जान-माल लगाकर भी आपकी रक्षा करेगे। अगर आप ऐसा करेंगे, तो पाकिस्तान सचमुच पाक और पवित्र बनेगा। पाकिस्तान ऐसा पाक होना चाहिए कि जिन्ना साहब की जान-माल जितनी सुरक्षित है, पाकिस्तान मे रहनेवाले प्रत्येक मानव-मात्र की जान-माल उतनी ही सुरक्षित रहनी चाहिए। ऐसा पाकिस्तान कभी भी नही करेगा। तब पाकिस्तान को मैंने जो एक पाप के रूप मे माना है, उसके विषय मे भी मै अपना खेद सचमुच घोषित कर दूँगा।

सदाचरण, सत्कर्म की माँग

"आज तो मै हिम्मत के साथ कहता हूँ कि पाकिस्तान एक 'पाप' ही है। मै पाकिस्तान के नेताओ के लेख या भाषण देखना नही चाहता। मै तो माँगता हूँ उनका सदाचरण, सत्कर्म! और यही देखने के लिए जीना भी चाहता हूँ। अगर ऐसा होगा, तो भारत के लोग अपने-आप सुधर जायँगे।

"आज मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि हम लोग सचमुच पाकिस्तान की बुराइयों की ही नकल कर रहे है। अगर इन बुराइयों की जड़ गहरी पहुँचेगी, तो भविष्य मे भारत का क्या होगा, इसकी कल्पना करना ही कठिन है।

ध्येयपूर्ति के लिए मदद की याचना

"बचपन से ही मुझे हिन्दू-मुसलिम एकता का अनुपम शौक रहा है। मेरी जीवन-उषा की वह उत्कण्ठा जीवन-संध्या मे पूर्ण होगी, तो मैं एक नन्हे बच्चे की तरह नाच उठूँगा और प्रसन्न होऊँगा। १२५ साल जीने की मेरी इच्छा, जो

अभी मर गयी है, पुनः जाग्रत हो उठेगी। मेरा वह स्वप्न सफल होने पर ही आपको सच्चा स्वराज्य प्राप्त होगा। भले ही पाकिस्तान और भारत भौगोलिक दृष्टि से अलग रहें, पर दिल से एक होंगे, तो यह ध्येय आपके और मेरे लिए बडा ही आदर्शमय और भव्य है। जब तक यह कार्यरूप मे परिणत नहीं होता, तब तक किसी प्रसिद्ध चित्रकार के चित्र के बालक की तरह मुझे जरा भी सन्तोष न देगा। इससे कम सिद्धि के लिए मै जीना नही चाहता और अभी जिन्दा हूँ, तो भी मरा हुआ ही मानिये। इसलिए पाकिस्तान के मेरे मुसलिम मित्र मुझसे जो सलाह माँगते है, उनसे कहूँगा कि मेरा यह ध्येय पूरा करने मे वे मदद दें।

ईश्वरेच्छा बलीयसी

"सन् १८९६ मे मैं एक बार दिल्ली और आगरे का किला देखने गया था, तो उसके एक दरवाजे पर इस आशय की कविता पढ़ी कि 'दुनिया में जो कुछ स्वर्ग हो, वह यही है।' अपना इतना वैभव होते हुए भी यह किला मेरी दृष्टि मे स्वर्ग जैसा तो नही ही लगा। किन्तु अगर पाकिस्तान इसके योग्य बने और उसके दरवाजे-दरवाजे ऐसी कविताएँ लिखी जायँ, तो सचमुच ही मुझे अत्यधिक सन्तोष होगा, भले ही ऐसा स्वर्ग भारत मे हो या पाकिस्तान मे। इस स्वर्ग मे कोई गरीब न होगा। कोई पूँजीपति न होगा। कोई कारखाने का करोड़पति न होगा, तो कोई आधा-पेट काम करनेवाला मजदूर भी न होगा। सबको समान और खुद कमाई की रोटी खाने को मिलेगी। स्त्री और पुरुष समान हक और समान रहन-सहन से रहेंगे और ऊपर लिखे अनुसार अपनी स्त्री को छोड़ सभी स्त्रियाँ अपनी माँ, बहन या लड़कियाँ ही होगी। ऐसे देश मे अस्पृश्यता नही रहेगी। 'सर्वधर्म समभाव' भरपूर रहेगा। जो कोई मेरी इस भव्य कल्पना को पढ़े या सुने, वह—इस काल्पनिक आनन्दभरी मेरी कल्पना मे आज मै बह गया—इसके लिए मुझे माफ करेगा। लेकिन जो लोग 'ऐसा होगा या नहीं', ऐसी शका रखते हो, उन सबको मै विश्वास दिलाता हूँ कि मेरा अनशन जल्दी टूटे, इसका मुझे जरा भी उत्साह नहीं। मुझ जैसे बेवकूफ और 'तरंगी' 'लोगो की तरंग मे दीखनेवाले सब्जबाग कभी न फलें, तो उसमे मुझे जरा भी घबड़ाहट नहीं। समय की प्रतीक्षा करने का धैर्य मुझमे है। लेकिन सिर्फ मुझे बचाने के

लिए ही अगर कोई मुझे ठगेगा, तो उससे मेरा दुःख और भी बढ़ जायगा। ईश्वर की इच्छा पर ही मैंने अनशन शुरू किया है और उसकी इच्छा होगी, तभी वह टूटेगा। उसकी इच्छा के बगैर एक पत्ता भी हिल नही सकता। उसकी इच्छाएँ कोई टाल न सका और न भविष्य मे ही टाल सकता है।"

शारीरिक स्थिति और स्वास्थ्य

३॥ बजे बापू जगे। दतवन कर १५ मिनट बाते की। लेटे ही लेटे देवदास काका का पत्र पढ़ा। ३॥। बजे प्रार्थना—आध घटे। ४। बजे सादा गरम पानी ७ औंस। ५–२५ बजे सोये। आधे घंटेतक पत्र और नोट लिखवाये। ७॥। बजे सादा गरम पानी ६ औंस। ८ बजे मालिश के लिए गये। उससे पहले 'फूट बाथ' याने गरम पानी मे पैर डुबोये। ४० मिनट टेबुल पर मालिश और अखबार पढ़ा। ८॥। बजे बाथ में गये। अखबार सुना। राजकुमारी बहन और मेरे साथ बाते की। ९॥। बजे बाथ से लौटे। ९–५५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। १० से १२ तक मन्त्रिमण्डल की बैठक। ११ बजे ८ औंस सादा गरम पानी। १२-१० बजे सादा गरम पानी ८ औंस। १२॥ बजे लेटे-लेटे ही अखबार पढ़ा। पैरों मे घी मला। १–५५ बजे श्री वी० पी० मेनन। १–२० बजे मिट्टी का प्रयोग। २–५ मिट्टी पर उतारी। २–२५ बजे जगे। २–५० पर सादा गरम पानी आठ औंस। ३॥ बजे लेटे-लेटे लिखाया। ३॥। बजे महाराज पटियाला के साथ। ४–२५ पर गुरुवचन सिंहजी के साथ। ४–२५ गरम सादा पानी आठ औंस। ४–३४ पर सुचिता बहन के साथ ४–२५ पर सरदार भगतसिंह के साथ। ४–४६ पर सुहरावर्दी साहब के साथ बाते। ५ बजे प्रार्थना। ५–४५ बजे श्री मेहरचन्द खन्ना, पेशावर का डेपुटेशन, १५ मिनट बातचीत, जयराम दासजी तथा मणि बहन। ६–२० बजे सरदार सोहनसिहजी, ६–४० बजे गुलाम मुहम्मद बक्शी साहब, ७–५ पर सुचिता बहन, ७–२० पर मौलाना साहब, जवाहरलालजी और सरदार दादा। ८–५ बजे तक लेटे बाते की। ९–१० पर सभी चले गये, राजकुमारी बहन। ९–४० पर बाथ रूम में गये, पैर दबाये। १० बजे बिस्तर पर लेट गये। १० बजे रात वजन लिया गया—१०९ पौण्ड हुआ। दो पौंड वजन घटा। ब्लड प्रेशर अधिक रहता है। सुशीला बहन का कहना है कि इसी कारण बापू को कदाचित् शक्ति मालूम पडती हो।

हाथ-पैर बहुत ही ठंडे रहते है। आवाज अपेक्षाकृत अधिक धीमी पड़ गयी है। इस समय तो मानसिक स्थिति भी काफी अच्छी है। यहाँ हम लोग सितम्बर से आये हुए है। इस बीच मैं देखती हूँ कि बापू सर्वथा प्रफुल्लित और पूर्णतः चिन्तामुक्त तो कल से ही मालूम पड़ते है। आज तो अत्यन्त प्रसन्न है, क्योंकि अब चाहे जो हो, एक परिणाम तो दो दिनो मे दिखाई ही पड़ जायगा। प्रभो! सभी को सन्मति दो; यही प्रार्थना है!

आजकल तो यह सब लिखते-लिखते, और पू० बापू की तबीयत का हाल जानने के लिए रात मे आने-जानेवाले बाहरी लोगो से बातचीत करने मे मुझे रोज ही सोने के लिए बारह या साढ़े बारह तो बज ही जाते हैं। लार्ड माउण्ट-बैटन साहब का बीकानेर का कार्यक्रम बहुत दिन पहले ही तय हो गया था। उन्हे बापू के अनशन के कारण जाने की तो इच्छा ही नही हो रही थी। लेकिन उनका यह कार्यक्रम अगर रद्द हो जाय, तो उससे बापू को दुःख ही होगा। इसलिए उन्होने जाना निश्चित ही रखा। फिर भी उन्होंने पूज्य बापू के इस अनशन के सम्मान मे राजकीय भोज रद्द कराया—ऐसी खबर रात मे गवर्नमेण्ट हाउस से मिली।

● ● ●

पत्रकारों को संदेश : १६ :

विरला-भवन, नयी दिल्ली
१५-१-'४८

राम का कराया उपवास

रात ठीक बीती। दो बजे बापू जग गये और रात मे जिन प्रश्नो पर वक्तव्य देना था, उसे लिखने बैठ गये। भाई साहब से बिजली जलाने के लिए कहा। मुझसे कहा कि अभी सोती ही रह और प्रार्थना के समय उठ, पर नींद आने जैसा वातावरण ही न था। मुन्नालालभाई (आश्रम वासी) आये, तब बापू सोये हुए थे।

३॥ बजे प्रार्थना। प्रार्थना के बाद बापू को मै भीतर ले गयी और उनके पास बैठ गयी। पैर दबाये। रात २॥ बजे से जो वक्तव्य लिखना शुरू किया था, उसे पुनः लिखने लगे; लेकिन बीच मे कमजोरी के कारण आँखे मूँद ली थीं।

सात बजे बापू बिस्तर पर लेटे। बिरलाजी के साथ बातचीत करते हुए उन्होने कहा : "मैं राम का कराया उपवास कर रहा हूँ। जब आप सबके साथ दलील करता हूँ, तो मेरा मन मुझसे कहता है कि 'रे जीव ! तू क्यो दलील करता है ? क्या तुझे ईश्वर पर श्रद्धा नहीं ?' अगर मेरी मृत्यु हो जाय और दुनिया मे अशान्ति फैले, तो भी अच्छा ही है। इसलिए आप सब मेरी चिन्ता छोड़ अपना-अपना काम कीजिये। सरदार को दुःखी होने की कोई भी बात नही। मेरा ही आग्रह था कि उन्हे भावनगर जाना जरूर चाहिए। फिर वे जहाँ रहेंगे, आखिर मेरा ही काम करनेवाले हैं न ?"

अन्त मे बिरलाजी ने कहा : "आप तो किसीकी भी माननेवाले नहीं हैं। आप ईश्वर के हाथ मे है, यह तो हम लोग मानते ही है।"

८॥ बजे बापू मालिश के लिए गये। ८॥ बजे गरम पानी से उनके पैर धोये गये।

आत्मशुद्धि की अपेक्षा

···ने बापू को कड़ी चिट्ठी लिखकर अपने अतर की पीड़ा उँड़ेल दी है। उन्होने लिखा है कि 'उनके हट जाने से सारी व्यवस्था सुधरती हो, तो वे मन्त्रिमण्डल मे रहने के लिए जरा भी तैयार नही।' पत्र एक दृष्टि से हृदय-द्रावक भी है।

बापू जब बाथ मे आये, तो गरम पानी का बाथ लेते-लेते सुशीला बहन ने कुछ कटिंगे पढ़ सुनायीं। फिर बापू ने प्रार्थना मे सुनायी जानेवाली प्रश्नोत्तरी प्यारेलालजी से लिखवाना शुरू किया। बापू जो बोलते थे, प्यारेलालजी को उसे नोट करना मुश्किल हो रहा था; क्योंकि आज तो आवाज बहुत ही धीमी पड़ गयी है। बाथ में उन्हे चक्कर भी आ रहे थे; इसलिए तुरत ठंढे पानी मे बिठाकर पकड़ रखना पड़ा। बाद में कुर्सी पर ही बाहर धूप मे लाया गया। आज तो बाथ में मैं अकेली ही रही और बापू को चक्कर आ रहे थे, इसलिए बहुत डर लग रहा था। सुशीला बहन को संकेत कर रोका था, इसलिए उनकी सहायता से मैंने बापू का शरीर तत्काल ही पोंछ डाला।

२ बजे एनिमा तैयार कराया। उसे तैयार करने मे १५-२० मिनट तो सहज

लगते ही हैं, इतने में बापू नाराज हो गये; पर तुरत ही मानो अपने से भूल हो गयी हो, इस तरह कहने लगे : "मैं इतना अधीर कैसे हो सकता हूँ ? अभी भी मुझमें इतनी खामी रह गयी है। यह मिट जायगी, तभी मैं हिन्दुस्तान के लोगों से आत्म-शुद्धि की अपेक्षा रख सकता हूँ। तब तक मैं उसकी अपेक्षा कैसे करूँ ? इसका पता भी ऐसी परीक्षा याने अनशन करने से ही चलता है।' इतना कहते हुए वे थक गये।

मैंने कहा : "बापू, मेरी भी भूल थी न ? आपका अनशन शुरू हुआ, तभी से मुझे रोज गरम पानी तो कम-से-कम सदा तैयार रखना ही चाहिए था। फिर चाहे वह काम में आये या न आये।" इस पर कहने लगे : "नहीं-नहीं, इस तरह व्यर्थ आग जलाने से मुझे उल्टा अधिक दुःख ही होगा। तेरी गलती है ही नहीं, क्योंकि मुझे तुझसे आध घटा पहले कहना चाहिए था या जब कहा, तब से तैयार होने तक धैर्य रखना चाहिए था !" मैं चुप हो गयी; क्योंकि हम एक वाक्य कहे, तो बापू को चार कहने पड़ते हैं और उनकी उतनी ही शक्ति क्षीण होती जाती है।

मनु के प्रति

एनिमा में मल काफी निकला। बापू को यह पसंद भी आया। लेकिन बहुत ही थक गये। बापू की हालत ऐसी हो गयी है कि उन्हे देखते-देखते कदाचित् ही किसी पाषाणहृदय मानव की आँखों मे आँसू न आये। उसमे भी विशेषतः चाय, एनिमा जैसे थकावट बढ़ानेवाले काम भी खास तौर पर वे मेरे द्वारा ही करवाते हैं। अतः उस समय तो बापू सफेद पूनी की तरह हो जाते है। उसमें भी मैं घबड़ा जाऊँ या मुझे रोना आ जाय, तो मेरी पूरी आफत ही समझिये ! कलकत्ते के अनशन की अपेक्षा यहाँ काफी लोग होने पर भी न जाने क्यों, मुझे इस आखिरी कसौटी में घड़ी-घड़ी और पल-पल डर लगता है। कई बार सोचती हूँ कि कहीं मेरी नसीब मे कलंक का टीका तो नहीं बदा है ? बापू बिस्तर पर लेटे रहते हैं, तब उनके लिए सभी काम आसान होते हैं, लेकिन जब वे उठते-बैठते हैं, तब उन्हें चक्कर आता है, कमजोरी मालूम पड़ती है और सफेद पड़ जाते हैं। फिर किसीको बुलाने भी नहीं देते और यही कहते हैं कि "राम को मेरी जरूरत

होगी, तो वही रखेगा । मैं उसीके करवाये अनशन करता हूँ । इस यज्ञ मे तेरे सिवा और कोई हिस्सेदार नही है" आदि ।" "बापू कहते ही रहते हैं । भगवान् इस मॅझधार से नाव पार लगा दे, तो बस !

एनिमा के बाद विधान बाबू और डॉक्टर गिल्डर साहब आये । बापू कहने लगे : "एनिमा नंबर वन और एनिमा नंबर टू आये ।"

आज से बापू की तबीयत की बुलेटिन प्रकाशित हुआ करेगी । ४॥ बजे बापू ने प्रार्थना के लिए जो लिखवाया था, उसका हम लोगो ने अनुवाद किया । हम सभी प्रार्थना के लिए गये । बापू प्रार्थना-सभा मे आये नहीं थे । घर से ही खाट पर लेटे-लेटे उन्होंने अत्यधिक थकी आवाज मे रेडियो-माइक पर और रेकार्ड करने के लिए निम्नलिखित भाषण किया :

मृत्यु अपरिहार्य

"भाइयो और बहनो ! मेरे लिए यह एक नया अनुभव है । मुझे इस तरह लोगों को सुनाने का कभी अवसर नही आया और न मैं चाहता ही था । मै इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है, वहॉ जा नही सकता । इसलिए प्रार्थना मे जो लोग आये है, वहॉ तक आप लोगो तक, जिधर आप बैठे है—मेरी आवाज पहुॅच सके, तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझे भी बड़ा आनन्द होगा । मैने लोगो के सामने कहने के लिए जो तैयार किया है, उसे तो लिखवा दिया है । ऐसी हालत कल रहेगी या नही, मै नहीं जानता ।

"आप लोगो से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हरएक आदमी दूसरे क्या करते हैं, इसे न देखे और स्वयं जितनी आत्मशुद्धि कर सके, करे । मुझे विश्वास है कि जनता बड़े परिमाण मे आत्मशुद्धि कर लेगी, तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा, हिन्दुस्तान का कल्याण होगा और सम्भव है कि जो यह उपवास चल रहा है, उसे मैं जल्दी से छोड़ सकूॅ । मेरी फिक्र कोई न करे, फिक्र अपने लिए ही की जाय । हम कहॉ तक आगे बढ़ रहे है और देश का कल्याण कहॉ तक हो सकता है, इसका ध्यान रखे । आखिर मे सभी इन्सानो को मरना है । जिसका जन्म हुआ है, उसे मृत्यु से मुक्ति नही मिल सकती । ऐसी मृत्यु का भय ही क्या ? और उसका शोक भी क्या करना ? मै समझता हूॅ कि मृत्यु हम

सबके लिए आनन्ददायक मित्र है। वह हमेशा धन्यवाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुःखों से हम एक बार तो बच ही जाते हैं।"

बापू इतने शब्द बोले। फिर सुशीला बहन ने बापू से लिखवाये हुए प्रवचन का अनुवाद पढ़ सुनाया। वह लिखित सन्देश इस प्रकार था :

पत्रकारों को उत्तर

"कल शाम की प्रार्थना के दो घण्टे बाद अखबारवालो ने मुझे सन्देश भेजा कि उन्हें मेरे भाषण के बारे मे कुछ बाते पूछनी है। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिनभर काम किया था, प्रार्थना के बाद भी काम मे फँसा रहा; इसलिए थकान और कमजोरी के कारण उनसे मिलने की मेरी इच्छा नहीं हुई। मैने प्यारेलालजी से कहा कि उनसे कहो कि वे मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हो, वे लिखकर कल सुबह ९ बजे के बाद मुझे दे दें। उन्होंने ऐसा ही किया है।"

पहला सवाल यह है कि "आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है, जब कि भारत के किसी हिस्से मे कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा है!"

बापू : "लोग जबर्दस्ती मुसलमानों के घरों का कब्जा लेने की बाकायदा, निश्चयपूर्वक कोशिश करें, क्या यह झगड़ा नहीं कहा जायगा? यह झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि फौज को इच्छा न रहते हुए भी अश्रुगैस इस्तेमाल करनी पड़ी और भले ही हवा मे हो, मगर कुछ गोलियाँ भी चलानी पड़ीं। तब कहीं लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मै मुसलमानों का ऐसे टेढ़ी तरह निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। इसे मै सुला-सुलाकर मारना कहता हूँ।"

सरदार के लिए अनशन?

प्रश्न : "आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डर की और असुरक्षा की कहानी लेकर आपके पास आते है, तो आप उन्हे कोई जवाब नहीं दे सकते। उनकी शिकायत यह है कि सरदार, जिनके हाथों मे यह विभाग है, मुसलमानो के खिलाफ है। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी हाँ मे हाँ मिलाते थे, 'जी हजूर' कहलाते थे। मगर अब ऐसी हालत नहीं रही। इससे लोगों के मन पर यह असर होता है कि आप सरदार का हृदय पलटाने के लिए

अनशन कर रहे हैं। आपका अनशन गृह-विभाग की नीति की निन्दा करता है। अगर आप इस चीज को साफ करेंगे, तो अच्छा होगा।"

बापू: "मै समझता हूँ कि मै इस बात का साफ जवाब दे चुका हूँ। मैने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है, वह तो मेरी कल्पना मे भी नही आया। अगर मुझे पता होता कि इसका ऐसा अर्थ भी किया जा सकता है, तो मैं पहले ही इस चीज को साफ कर देता।

"कई मुसलमान दोस्तो ने शिकायत की थी कि सरदार का रुख मुसलमानो के खिलाफ है। मैने कुछ दुःख से उनकी बात सुनी, मगर कोई सफाई पेश न की। अनशन शुरू होने के बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगा दी थी, वह चली गयी। इसलिए आलोचको से कहा कि सरदार को मुझसे और पण्डित नेहरू से अलग करके तथा मुझे और नेहरू को खामख्वाह आसमान पर चढ़ाने की गलती करते हैं, इससे उन्हे फायदा नही पहुँच सकता। सरदार के बात करने के ढंग मे एक तरह का अक्खड़पन है, जिससे कभी-कभी लोगो का दिल दुख जाता है। मगर सरदार का इरादा किसीको दुःखी करने का नही होता। उनका दिल बहुत बड़ा है, उसमे सबके लिए जगह है। सो मैंने जो कहा, उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभर के वफादार साथी को एक बेजा इल्जाम से बरी कर दूँ! मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले यह न समझ बैठे कि मै सरदार को अपना 'जी हुजूर' मानता हूँ। सरदार को प्रेम से मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था, इसलिए मैंने उनकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मन के मजबूत है कि किसीके 'जी हुजूर' हो ही नही सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे, तब वे ऐसा कहने देते थे, क्योकि जो कुछ मै कहता था, वह अपने-आप उनके गले उतर जाता था, जो अपने क्षेत्र मे बहुत बड़े थे।

सरदार के प्रति

"अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी मे उन्होने शासन चलाने मे बहुत काबलियत दिखायी थी। मगर वे इतने नम्र थे कि उन्होने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होने इसका कारण मुझे बताया था कि जब मै हिन्दुस्तान मे आया और उन दिनो यहाँ जिस तरह का राज-काज चलता था,

उसमें हिस्सा लेने का उनका मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले में आ पड़ी, तब उन्होंने देखा कि जिस अहिंसा को वे आज तक सफलता-पूर्वक चला सके, अब नहीं चला सकते। मैंने कहा कि मैं समझ गया हूँ कि जिस चित्र को मैं और मेरे साथी 'अहिंसा' कहा करते थे; वह सच्ची अहिंसा नहीं थी। वह तो नकली चीज थी, जिसका नाम है, 'मन्द विरोध !' हाँ, किनके हाथों मे मन्द विरोध किसी काम की चीज है ? जरा सोचिये तो सही कि एक कमजोर आदमी जनता का प्रतिनिधि बने, तो वह अपने मालिकों की हँसी और बेइज्जती ही करवा सकता है। मै जानता हूँ कि सरदार कभी उन्हे सौंपी हुई जिम्मेदारी को दगा नही दे सकते। वे उसका पतन बरदाश्त नहीं कर सकते।

इंसान खुद जिम्मेदार !

"मै उम्मीद करता हूँ कि यह सब सुनने के बाद कोई ऐसा खयाल नहीं करेगा कि मेरा अनशन गृह-विभाग की निन्दा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करता है, तो मै उससे कहना चाहता हूँ कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने आपको नुकसान पहुँचाता है, मुझे या सरदार को नहीं। मैं जोरदार लफ्जों में कह चुका हूँ कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती, इन्सान को नीचे गिरानेवाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मै जानता हूँ कि मेरे जवाब के साथ इस वाक्य का कोई ताल्लुक नही है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि हर मौके पर दोहराया जा सकता है।

"मैं साफ लफ्जो में कह चुका हूँ कि मेरा अनशन भारत के मुसलमानों के लिए है; इसलिए यह भारत के हिन्दू और सिखों तथा पाकिस्तान के मुसलमानों के सामने है। इस तरह यह अनशन पाकिस्तान की असलियत के खातिर भी है। जो विचार मै पहले समझा चुका हूँ, उसे यहाँ थोड़े मे दोहराने की कोशिश कर रहा हूँ।

"मै यह आशा नही रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सान का फाका दोनो तरफ की असलियतों को सब तरह के खतरों से पूरी तरह बचाने की ताकत रखे। फाका सबकी आत्मशुद्धि के लिए है। उसकी पवित्रता के बारे में किसी तरह का शक करना गलत होगा।"

फाका : पागलपन छुड़ाने के लिए

प्रश्न : "आपका अनशन ऐसे वक्त शुरू हुआ है, जब कि सयुक्त राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है । साथ ही अभी कराची मे फसाद हुआ है । हम नही जानते कि विदेश के अखबारों मे इन वाकयात की तरफ कहाँ तक ध्यान दिया गया है । इसमे शक नही कि आपके अनशन के सामने ये वाकयात छोटे लगने लगे है । पाकिस्तान के प्रतिनिधियो के पिछले कारनामो से हम समझ सकते हैं कि वे जरूर इस चीज का फायदा उठायेगे और दुनिया से कहेगे कि गाधीजी अपने हिन्दू अनुयायियो से—जिन्होने हिन्दुस्तान मे मुसलमानो की जिन्दगी आफत मे डाल रखी है—पागलपन छुड़वाने के लिए अनशन कर रहे हैं । सारी दुनिया में सच्ची बात पहुँचने मे तो देर लगेगी, इस दरमियान आपके अनशन का यह नतीजा आ सकता है कि सयुक्त राष्ट्रसघ पर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े ।"

बापू : "इस सवाल का लम्बा-चौड़ा जवाब देने की जरूरत थी । दुनिया की हुकूमतो और दुनिया के लोगो पर, जहॉ तक मै मानता हूँ—यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि उपवास का असर अच्छा ही हुआ है । बाहर के लोग जो हिन्दुस्तान के वाकयातों को निष्पक्ष भाव से देख सकते है, मेरे फाके का उलटा अर्थ नही लगायेगे । फाका भारत और पाकिस्तान के रहनेवालो से पागलपन छुड़वाने के लिए है ।

"अगर पाकिस्तान मे मुसलमानो की अफसरियत सीधी तरह न चले, वहॉ के मर्द और औरते शरीफ न बने, तो भारत के मुसलमानो को बचाया नही जा सकता । मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बहन के सवाल पर से ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के मुसलमानो की ऑखे खुल गयीं हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे है ।

"सयुक्त राष्ट्रसघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करने मे मदद देगा, ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का उचित पथ-प्रदर्शन कर सके ।"

प्रार्थना के बाद लोगो को बापू का दर्शन करने की उत्कट इच्छा होना स्वाभाविक ही था । खाट बरामदे मे रखी गयी । पहले बहनें और बाद मे भाई

लोग दर्शन करते गये। बापू इस समय सो गये थे। चेहरा अत्यन्त शान्त, तेजस्वी और दयनीय मालूम पड़ता था। मुट्ठीभर हड्डियों का यह मानव सिर्फ मानवता के सुख के लिए ही एकता की रट लगाने के निमित्त जूझ रहा है, फिर भी मानव नहीं समझता! थोड़ी देर में बापू जागे। सामने हाथ जोड़कर लेटे रहे। यह दृश्य भी अद्‌भुत रहा।

हम लोग खा-पीकर काकी के पास बैठे। सभी लिखते हैं कि रोज एक चिट्ठी सिर्फ बापू की तबीयत के बारे में ही लिखिये। लेकिन मन ही कहीं नहीं लगता और अभी तो दिल्ली का यह हाल है, मानो कुछ हो ही नहीं रहा है। कलकत्ते में तो अनशन के पहले ही दिन से सभी जाग्रत हो गये थे। जो न हो, वही थोड़ा है!

शारीरिक स्थिति और प्रवृत्ति

बापू ने रात २॥ बजे पेशाब की; लेटे-लेटे ही लिखा। ३॥ बजे दतवन और प्रार्थना की तैयारी। ४॥ बजे प्रार्थना; सादा गरम पानी ८ औंस; प्यारेलालजी को लिखवाया। ६॥ बजे सोये। ७। बजे जगे। ७–३५ बजे उठकर तकिया लगाकर बैठे। ७–४० बजे पेशाब की। ७–४२ बजे गरम पानी ८ औंस। अखबार सुने। ७–५५ पर घनश्यामदासजी बिरला के साथ बातें। ८–५ तक अनशन के बारे में। ८–२५ बजे पुनः उठ बैठे। उठाते समय सहारा देना पड़ता है। ८–४० बजे पेशाब की। ८–४५ बजे मालिश की तैयारी। उस समय मालिश के टेबल पर बैठे-बैठे ८ औंस गरम पानी पिया और 'फूटबाथ' किया। राजकुमारी बहन आयी थी। डॉ० जीवराज काका, डॉ० विधान बाबू और डॉ० सुशीला बहन ने बापू की परीक्षा की। ९–३५ बजे चलकर बाथरूम में आये (मालिश के लिए चलते हुए ही गये थे)। पाखाना या पेशाब नहीं हुआ। बाथ में चक्कर आने लगा। कुर्सी पर बैठे। १०–४० बजे बाथरूम से बाहर आये। वजन १०७ पौण्ड हुआ, ब्लड-प्रेशर १८।१००; इस समय पंडितजी भी थे। बापू का वजन पण्डितजी ने ही किया। १०।।। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ११। बजे जवाहरलालजी गये। स्थानीय मौलाना लोग आये। मौलाना हिफजुल रहमान, मौलाना हबीबुल रहमान, डॉ० जाफरी १८ मिनट रहे। ११–३३ बजे गये। ११–३५ बजे पण्डित

सुन्दरलाल के साथ वार्ता। १२। बजे गोस्वामी गणेशदत्त। लेटे-लेटे ही तार सुने। इसी बीच लेटे-लेटे घी मलवाया। १२–२५ बजे उठ बैठे। सुशीला बहन को भाषण लिखवाया। तुरत ही वी० टी० कृष्णमाचारी, कस्तूरभाई, लालभाई और घनश्यामदासजी, वृजमोहनजी बिरला आये। ये सभी सिर्फ बापू को देखने आये। १२॥। सोये और १-१० बजे जगे। १-३५ बजे गरम पानी आठ औंस। २॥। बजे एनिमा लिया। मेरे साथ बातें कीं। ३ बजे मिट्टी का प्रयोग किया और ४ बजे उसे उतारा। ४ बजे गरम पानी सादा आठ औंस। डॉ० विधान-बाबू, शंकररावजी, आचार्य जुगलकिशोरजी, खेर साहब, महाराज देवास, राजेन्द्र बाबू उनकी पत्नी और बच्चे, खुरशेद अहमद रूगर और उनकी पत्नी, स्विस मिनिस्टर, तोकिले और डॉ० गिल्डर साहब गये। डॉक्टर जीवराज काका बड़े कड़े चौकीदार हैं। इनकी आज्ञा पाने पर ही भीतर जाया जा सकता है और वे बातें करने की मनाही की शर्त करवाकर ही भीतर जाने देते थे।

बापू ५ बजे प्रार्थना मे नहीं जा सके। लेटे-लेटे ही रेडियो पर बोले। सुशीला बहन ने बापू का सन्देश पढ़ सुनाया। फिर सभी भाई-बहन कतार बॉध शाति से बापू का दर्शन करते हुए लौटे। १५ मिनट सोये। ५-५० बजे गरम पानी ८ औंस पीया। शाहनवाज साहब आये। ६। बजे से ७-५५ तक सोये। ७ बजे देवदास काका और काकी आयी। जयरामदासजी, राजकुमारी बहन, जवाहरलालजी, नियोगी और षणमुखम् चेट्टी भी आये। ९-१० बजे तक मीटिंग हुई। ८ बजे सादा गरम पानी चार औंस पीया। ९॥। बजे पेशाब करने के बाद उठकर बिस्तर तक गये।

कुल पानी ६८ औंस, पेशाब २८ औंस—इस तरह बापू की शारीरिक स्थिति है। पानी पीने के अनुपात से पेशाब नहीं होती, इससे सबको बहुत चिन्ता है। बापू का वजन पहले साधारणतः १०८ पौण्ड के आसपास रहता था। लेकिन कलकत्ते के उपवास के बाद १११, ११२ तक भी हो जाता था। इसका कारण भी यही है कि गुर्दे मे दोष होने से पानी पेट मे भरा रहता है। ● ● ●

महायज्ञ का प्रभाव

: १७ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१६-१-'४८

बचपन के संस्मरण

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। बापू प्रार्थना के लिए एकदम अपने-आप ही उठ गये। प्रार्थना के बाद भी रोज की तरह ही वे भीतर के कमरे में अपनी बैठक में चलकर गये। बापू को ओढ़ाकर हम सब वहीं बैठ गये। बापू ने कहा : "आज मुन्नालाल (आश्रमवासी) प्रार्थना में क्यों नहीं आये ? क्या वे यहाँ नहीं सोये थे ? कल्याणम् (टाइपिस्ट) भी नहीं था। तो, क्या वह बहुत देर से सोया है ?"

···ने कहा कि "वह तो हमेशा देर से ही सोता है। कोई काम न हो, तो आखिर वह गुजराती ही लिखने बैठ जाता है।"

बापू ने कहा : "मुझे पता नहीं कि यह भी जवाहर जैसा बड़ा आदमी हो गया है। कलकत्ते में तो इन लड़कियों के साथ यह भी मेरे पास ही सोता था और वह मुझे अच्छा भी लगता था। अगर ३॥ बजे उठ जाता है, तो प्रार्थना में क्यों नहीं आता ? मैं तो अपने ही बारे में सोचता हूँ कि मुझमें कुछ ऐब होगा। नहीं तो अत्यन्त तीव्र इच्छा से यहाँ आये हैं, फिर भी प्रार्थना जैसे कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होते, तो बात क्या है ?" बोलते-बोलते बापू थक गये। दो मिनट चुप रहे। फिर हम लोगों की ओर देखकर कहा : "आप लोग सो जाइये।" ···इस तरह सबकी चिन्ता करते ही रहते हैं।

७ बजे बापू जगे। जागकर अखबार सुना। लगभग एक घंटा सोये। अखबार के लिए एक तार भेजना था, पर वह रह गया। इस पर बापू नाराज हो गये। १५ मिनट तक बड़े दुःख के साथ कहने लगे : "इसमें मैं सूक्ष्म असत्य देखता हूँ। लेकिन आप अकेले ऐसा करते हैं, यह कहना नहीं चाहता। सारी दुनिया ऐसा करती है। यह आपकी ऐब निकालने के लिए नहीं कहता। मैंने भी ऐसे बहाने किये ही हैं—बचपन में और इंग्लैण्ड में।" फिर अपनी माता को एक पत्नी-व्रत और मांस न खाने के जो वचन दिये थे, उसके बारे में चर्चा की। अन्त में

कहने लगे : "मै बहुत ताजा हूँ, इसलिए इतना कहा। ईश्वर की कृपा है। अगर ऐसा ही रहा, तो मैं बहुत दिन बिता सकूँगा। इस बीच अगर लोग लड़ेंगे, तो मरना है और एक हो जायँगे, तो खाना है। 'एक होगे' का मतलब यह है कि अगर पाकिस्तान से मुसलमान यहाँ आयें, तो हिन्दुस्तान द्वारा अत्यधिक मूर्खता बरतने के बावजूद वे उसे भूल जायँगे और यह कहने लगेगे कि विभाजन तो हुआ सही, लेकिन ये लोग विभक्त-जैसे कुछ भी दिखाई नही देते।"

बापू मालिश के लिए कुर्सी पर बैठकर ही गये। पैर नही धुलवाये। बापू की जाँच की गयी। कमजोरी तो बढ़ती ही जा रही है। ९॥। बजे बाथ मे पहुँचे। बाथ मे गिरे, तो सिर पर ठढे पानी का टावेल रखा गया। अब से बाथ मे हम दो-दो व्यक्ति साथ रहते है। पहले मै और भाई साहब थे, फिर सुशीला बहन आयीं। बापू कह रहे थे कि कल जैसे चक्कर नही आते। सिर ठंढा रखने के कारण ही ऐसा हुआ हो। वजन किया, तो १०७ ही हुआ, क्योंकि अन्न पानी पेट मे ही रह जाता है।

पचपन करोड़ देना तय

स्थानीय मुसलमान भाइयों ने बताया कि शहर की हालत सुधर रही है। बापू ने कहा : "जो कुछ करे, सोच-समझ कर ही करें और वैसा ही कहे। मुझे फुसलाने के लिए कुछ भी न करे।" बापू यह भी कह रहे थे कि मुझे कल की अपेक्षा आज बहुत अच्छा लगता है।

यह भी खबर मिली कि मन्त्रिमण्डल ने पाकिस्तान को ५५ करोड़ रुपया देना तय कर लिया है।

आज तो एनिमा की पहले से ही तैयारी कर रखी थी, जिससे बापू जब कहे, तभी तुरत वह दिया जा सके और उन्होने ठीक २ बजे एनिमा लेने को कहा भी।

लगभग सारा दिन बापू के आसपास ही बीता है। ४ बजे हम लोग भाषण का अनुवाद करने के लिए गये। बिरलाजी ने कहा कि "आज के भाषण का सन्तोषजनक उत्तर नही मिल सकता। जो कुछ हो रहा है, सिर्फ बापू को खुश करने के लिए ही। मैं तो बापू से कहता ही हूँ कि मैं सिर्फ आपको खुश करने के लिए ही खादी पहनता हूँ। खादी मे मेरी निष्ठा नहीं; अगर निष्ठा रखता, तो मिल क्यों चलाता ?"

शहर मे विभिन्न स्थानो मे सभाएँ हो रही है। आज प्रार्थना के समय मैं और सुशीला बहन प्रार्थना-प्रवचन का अनुवाद करती रही, इसलिए हम लोग प्रार्थना में पॉच मिनट देर से पहुँचे। प्रार्थना तो अन्य लोगो ने शुरू कर ही दी थी।

यज्ञ का स्पष्टीकरण

प्रार्थना के बाद बापू खाट पर लेटे ही लेटे बोले। वह प्रार्थना-स्थल तक सुनायी पड़ता रहा। बापू ने निम्नलिखित भाषण किया :

"भाइयो और बहनो! मुझे आशा नहीं थी कि आज भी मै बोल सकूँगा। लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाज मे जितनी शक्ति थी, आज उससे ज्यादा शक्ति महसूस करता हूँ। इसका मतलब तो यही लगाया जायगा कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझमें—जब-जब मैंने फाका किया है—इतनी शक्ति नहीं रहती; लेकिन आज तो है। मुझे उम्मीद है कि अगर आप सब लोग आत्मशुद्धि का यज्ञ करते रहेंगे, तो बोलने की मेरी शक्ति आखिर तक बनी रह सकती है। मै इतना तो कहूँगा कि मुझे किसी प्रकार की जल्दी नहीं है। जल्दी करने से हमारा काम नही बनता। मैं परम शान्ति में हूँ। मै नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा काम जब ठीक होगा, तभी सारे हिन्दुस्तान मे ठीक होगा। इसलिए मै समझता हूँ कि अब इर्द-गिर्द मे, सारे हिन्दुस्तान मे और सारे पाकिस्तान मे शान्ति नही हुई, तो मुझे जिन्दा रहने मे दिलचस्पी नहीं है। यही इस यज्ञ का अर्थ है।"

बापू ने इतने शब्द कहे। आवाज बहुत ही क्षीण थी और एक-एक शब्द पर श्वास चढ रहा हो, ऐसा मालूम पड़ता था।

हिन्दुस्तान का कदम

बाद का भाषण सुशीला बहन ने पढ सुनाया। बापू ने इसे अंग्रेजी मे लिखवाया था, जिसका यों अनुवाद है :

"किसी जिम्मेदार हुकूमत के लिए सोच-समझकर किये हुए अपने किसी फैसले को बदलना आसान नहीं होता। फिर भी हमारी हुकूमत ने—जो हर माने

मे जिम्मेदार हुकूमत है—सोच-समझकर और तेजी से अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है। उसे कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कराची से लेकर आसाम की हद तक सारे मुल्क को मुबारकबादी देनी चाहिए।

"मैं जानता हूँ कि दुनिया के सभी लोग कहेगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हुकूमत जैसी बड़े दिलवाली हुकूमत ही कर सकती थी! इसमे मुसलमानों को सन्तुष्ट करने की बात नही है। यह तो अपने-आपको सन्तुष्ट करने की बात है। कोई भी हुकूमत, जो बहुत बड़ी जनता की प्रतिनिधि है, बेसमझ जनता से तालियाँ पिटवाने के लिए कोई कदम नही उठा सकती। जहाँ चारो तरफ पागलपन फैला हुआ हो, वहाँ आपके बड़े-से-बड़े नेता बहादुरी से अपना दिमाग ठढा रखकर जो जहाज चला रहे है, उसे क्या वे डूबने से न बचाये ?

"हमारी हुकूमत ने यह कदम क्यों उठाया ? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवास से उनकी विचारधारा ही बदल गयी। उपवास के बिना वे, कानून उनसे जितना करवाता—उतना ही करानेवाले थे। मगर हिन्दुस्तान की हुकूमत का यह कदम सच्चे मानों मे दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तान की भी परीक्षा हो जायगी।

"नतीजा यह आना चाहिए कि न सिर्फ कश्मीर का, बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे जितने मतभेद हैं, उन सबका बा-इज्जत आपस मे फैसला हो जाय। आज की दुश्मनी की जगह दोस्ती ले ले। न्याय कानून से बढ़ जाता है।

"अंग्रेजी मे एक घरेलू कहावत है कि जहाँ मामूली कानून काम नही देता, वहाँ न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नही हुआ, जब कानून और न्याय के लिए वहाँ अलग-अलग कचहरियाँ हुआ करती थी।

"इस तरह देखा जाय, तो इसमे कोई शक नही कि हिन्दुस्तान की हुकूमत ने जो किया है, वह सब तरह से ठीक है। अगर मिसाल की जरूरत है, तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्ड का निर्णय नही, बल्कि सारे ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल का और दूसरी गोलमेज परिषद् के अधिकतर सदस्यों का भी निर्णय था। मगर यरवदा के उपवास ने रातोरात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया है कि मै भारत की हुकूमत को इस बड़े काम के लिए समझाऊँ।

मौत से भय नहीं

"मै जानता हूँ कि जैसे-जैसे मेरा उपवास लम्बा होता जाता है, वैसे ही वैसे उन डॉक्टर लोगो की चिन्ता बढ़ती जाती है, जो स्वेच्छा से काफी त्याग करके मेरी देखभाल करते है। मेरे गुर्दे ठीक तरह से काम नहीं करते। उन्हे इस चीज का खतरा नहीं है कि मै आज मर जाऊँगा। मगर उपवास लम्बा चला, तो हमेशा के लिए शरीर की मशीन को जो नुकसान पहुँचेगा, उससे वे डरते है।

"मगर डॉक्टर लोग कितने ही होशियार क्यो न हो, मैंने उनकी सलाह से उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्वशक्तिमान् है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीर से कुछ और काम लेना होगा, तो डॉक्टर लोग कुछ भी न कहे, वह मुझे बचा लेगा। मै ईश्वर के हाथो मे हूँ, इसलिए ऐसी आशा करता हूँ। आप विश्वास रखे कि मुझे न मौत का डर है और न अपंग होकर जिन्दा रहने का।

"मगर मुझे लगता है कि अगर देश को मेरा कुछ भी उपयोग है, तो डॉक्टरों की इस चेतावनी के परिणामस्वरूप लोगो को तेजी के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनत से आजादी पाने के बाद हमे बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग जिन पर दुश्मनी का शक होता है, उन पर भी विश्वास रखते है। वे अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते है। अगर दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिखों मे ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में आग भभके, तब भी दिल्ली शान्त रहे, तो मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो जायगी।

दोस्ती जरूरी

"खुश-किस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—दोनो तरफ के लोग अपने-आप समझ गये है कि उपवास का अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनो उपनिवेशों मे ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्म के लोग दोनो तरफ बिना किसी खतरे के आ-जा सकें और रह सकें। आत्म-शुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

"हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए दिल्ली पर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। भारत के रहनेवाले भी तो आखिर इन्सान हैं। हमारी हुकूमत ने लोगों के नाम से एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसे उठाते समय उसकी क़ीमत का खयाल तक नहीं किया। इसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो, तो रास्ते बहुत हैं। मगर क्या इरादा है?"

प्रार्थना के बाद बापू खाट पर लेटे हुए थे और कल के जैसे ही आज भी लोग कतार बाँध दर्शन कर लौटते रहे। बापू सी० एच० भाभा के साथ बातें कर रहे थे।

संखिया लूँ तो?

बापू को पेशाब नहीं होती, इसलिए मौलाना साहब ने जरा हिम्मत करके कहा कि "पानी के साथ जरा मोसम्बी का रस ले, तो?..."

"ऐसे मैं नहीं ले सकता। जरा मोसम्बी के रस के बदले संखिया लूँ, तो क्या होगा? सिर्फ खट्टे नीबू के सिवा कुछ भी नहीं लिया जा सकता। मैं तो कभी से समझ गया हूँ कि शरीर में कुछ दरार पड़ गयी है। इतना रामनाम कच्चा है।"

बिरलाजी कहने लगे: "दूसरे अनशनों की अपेक्षा इस बार आपकी तबीयत अच्छी लगती है। इसका कारण तो दिल्ली है।" बापू ने कहा: "नहीं, राम-नाम है।"

आज बापू को पानी नहीं भाता। आज से उनका स्वास्थ्य चिन्ताजनक हो गया है।

हिन्दू, सिख बापू के पास आये, पर उनका असर बापू पर कुछ हुआ हो—ऐसा नहीं दीखता। जवाहरलालजी, जयप्रकाशजी, सुचिता बहन—सभी कहने लगे कि "वातावरण बदल गया है। बहुत-सी सभाएँ हो रही हैं।"

लोहियाजी से बापू ने कहा: "आप सभी सच्चे दिल से काम करें। मैं कोई इस तरह मर जानेवाला नहीं। लेकिन जो काम करें, ठोस होना चाहिए।"

रात ९ बजे बापू बिस्तर तक चलते हुए पहुँचे। बापू की पेशाब की परीक्षा हर घंटे करते रहने की डॉक्टरों ने सलाह दी।

शारीरिक प्रवृत्ति

सुबह ३॥ बजे जगे। दतवन और प्रार्थना। ३-३५ बजे पेशाब। ४। बजे सादा गरम पानी आठ औंस। ५॥। बजे सोये। ''को चिट्ठी लिखायी। ७ बजे सोये और जगे भी। लेकिन ७। बजे ठीक-ठीक सोये। ८-१० बजे जागे। बातें कीं, बंगाली लिखा। ८॥। बजे मालिश के लिए गये। डॉक्टरों ने जाँच की। ब्लडप्रेशर १७०।१०० है। ९-४० बजे बाथ रूम में नहाने के लिए पहुँचे। पाखाना नहीं हुआ। पेशाब हुई। गरम पानी का बाथ लिया। उस समय सिर पर ठंढे पानी का कपड़ा रखा। ठंढे पानी में बैठे। चक्कर नहीं आ रहे थे। १०॥ बजे बाथ रूम से बाहर आये। वजन लिया गया, १०७ पौण्ड हुआ। १०-३५ बजे सादा गरम पानी आठ औंस। घनश्यामदासजी बिरला के साथ १० मिनट बातें। १०-४० बजे देशबंधु गुप्तजी। १०-५५ बजे राजेन्द्रलालजी आये। ११ बजे लेटे-लेटे ही अखबार पढ़ा। ११-५ बजे गोस्वामी गणेशदत्तजी, महाराजा धोलपुर, नाभा और पन्ना सिर्फ दर्शनार्थ आये। इस बीच १२ से १ बजे तक पैर में घी मलवाया। २-२० बजे डॉ० ढड्ढा ने 'कारडियो ग्राम' दिया। १२। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १२-२५ बजे मौलाना हिफजुल रहमान, अहमद सैय्यद, डॉ० जाफरी और एस० एस० अब्दुल्ला। १-४० बजे मिट्टी का प्रयोग, १-५५ बजे उसे उतारा। २ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। १-२० बजे जवाहरलालजी आये और १-५५ बजे लौटे। २ बजे मृदुला बहन १० मिनट। २-२० बजे एनिमा लिया, दस्त साफ हुआ। २-५० बजे मौलाना साहब, जयप्रकाशजी, प्रभावती बहन, होशियारी बहन (एक आश्रमवासी बहन)। ३॥। बजे सादा गरम पानी। ३॥ बजे सुशीला बहन को लेटे-लेटे लिखाया। ४-४० बजे गरम पानी। गरम और ठंढे पानी का सेक पेट और गुर्दे पर, पेशाब लाने के लिए शंकरनजी ने प्रयत्न किया; लेकिन सफलता नहीं मिली। ५ बजे प्रार्थना, फिर बापू बाहर से भीतर आये। प्रार्थना लेटे हुए सुन सकें, इसकी व्यवस्था की गयी थी। ५-५० बजे भाभा के साथ २० मिनट। ६ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ६-५ बजे से गोस्वामी गणेशदत्तजी और पंजाब-दिल्ली के ३५ भाइयों के साथ १५ मिनट बातें। ६-२० जवाहरलालजी, जगरामदासजी, राजकुमारी बहन। १५ मिनट जवाहरलालजी

के साथ, १० मिनट राजकुमारी वहन और उसके बाद खेर साहब और महाराज फरीदकोट। ७-१० बजे लेटे। ८-१० वजे गरम सादा पानी आठ औंस, 'साइट्रेड' की एक पुड़िया १० ग्रेन की ली। ८ बजे शंकररावजी, राममनोहर लोहिया। ८-१० बजे सुचिता बहन और शाहनवाज साहब। ९ बजे बिस्तर पर लेटे। तेल मलवाया। इस तरह दिन तो बीता।

फिर भी तबीयत तो अच्छी है ही नही, हृदय भी बिगड़ने लगा था। कदाचित् आज रात से खतरनाक हालत शुरू हो जाय, तो कुछ कहा नही जा सकती। प्रभु को जैसा मजूर होगा, वैसा ही होगा!

सिख-प्रतिनिधि-मण्डल

७ बजे शाम को सिखो का जो प्रतिनिधि-मण्डल लेकर गोस्वामी गणेशदत्तजी आये थे, उनके साथ निम्नलिखित बाते हुई। गोस्वामीजी ने कहा: "जो दो दिनो मे वातावरण मे फर्क हो गया है, वह केवल आपकी तपश्चर्या है। ये सब आपकी सेवा मे हाजिर है। सबका कहना है कि हम वाणी और कर्म से ईश्वर को साक्षी करके कहते है कि हम मिलकर रहेगे, किसी प्रकार की अशान्ति नहीं होने देगे। करोलबाग के आर० एस० एस० के नेता भी आये हुए है। अब आप व्रत पूर्ण कीजिये।"

बापू: "आप कहते है, वह लिख दे और दस्तखत दे दे, इतना ही कहूँगा।"

आत्मासिहजी (सिख): "हमारी खुशकिस्मती है कि आपका जन्म हमारे यहाँ हुआ है। अगर हमारे मुल्क मे कुछ भी हो जाय और हमे अपनी जिन्दगी भी देनी पडे, तो भी इस कलक को नही लगने देगे। जो सेवा आप माँगेगे, हम देगे।"

बापू: "मुझसे कहते हो कि छोड़ो, लेकिन एकाएक यह व्रत नही छोड़ूँगा। बहस करना नही चाहता। इस तरह सब लोग आते ही रहते है। देखता हूँ, आपको धीरज रखना है। ईश्वर मुझे बचाना चाहेगा, तो कोई नही उठा सकता। मुझे अभी असर नही होता कि अभी छोडूँ। मै पानी तो खाता ही हूँ। पानी की इतनी बरदाश्त करे, तो बड़ा खुराक है। मै शाति से पडा हूँ। अभी ज्यादा बहस करना नही चाहता।"

मृत्युशय्या के वचन : १८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१७-१-'४८

व्यर्थ न बैठें !

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना से पहले दतवन आदि तो रोज की तरह ही हुए। प्रार्थना के बाद बापू चलकर ही भीतर आये। वे कह रहे थे : "आज तो कल से भी अधिक शक्ति मालूम पड़ रही है। आप लोगों की अपेक्षा कितना सारा खाता हूँ ? पानी में भी एक तरह का खुराक ही रहता है।"

अन्दर शंकरनजी, होशियारी बहन और मुन्नालाल भाई बैठे थे। ये सब तनकर बैठे थे, इसलिए बापू कहने लगे : "लगता है, तीनों महर्षि बैठे हैं।" होशियारी बहन से कहने लगे : "कभी भी व्यर्थ नहीं बैठना चाहिए। आखिर हाथ तो हिलाना ही चाहिए।"

बिरलाजी को आशीर्वचन

बापू ने हम लोगों से सोने के लिए कहा, क्योंकि रात में जागना पड़ता है। वे सुबह खुशमिजाज ही थे। रिचर्ड को पत्र लिखवाया और फिर सो गये। फिर ८ बजे घनश्यामदासजी आये। उनके साथ स्फूर्ति के साथ बातें कीं।

घनश्यामदासजी : "मुझे बंबई जाना है। लेकिन जैसे यमराज ने सावित्री को आशीर्वाद दिया कि 'पुत्रवती भव', वैसे ही आप भी मुझे यह आशीर्वाद दीजिये कि 'तुम्हारी वाणी सच्ची हो'।"

बापू : "सर्वथा निर्दोष तो ईश्वर ही हो सकता है। और उपवासों में तो लगता था कि कब छूटे। कलकत्ते में भी कुछ ऐसा ही था, फिर भी मैं निश्चल आदमी हूँ, सो वैसा करता तो नहीं। मगर ऐसा लगता था कि यह आदमी आया, कुछ खबर लाया होगा, तो उपवास छूट सकता है। लेकिन इस वक्त ऐसा नहीं लगता। छूटेगा, तो अच्छा लगेगा, आखिर उपवास करने में कुछ मजा तो है नहीं। पर मन में यह नहीं होता कि चलो, घनश्यामदास आया है, उपवास छूटने की कुछ बातें लाया है क्या ? मृदुला आयी थी और पूछती थी

कि 'पंजाब मे क्या करूँ ?' मैंने कहा, वहाँ सबसे कहो कि इस तरह यह उपवास छूट नही सकता। सबको समझा दो कि हम अच्छे रहेंगे, तो बाकी सब अच्छा हो जायगा। दिल्ली को काफी साफ होने की जरूरत है। दिल्ली मे कुछ (पुलिस का बन्दोबस्त) करना ही न पड़े, तो बड़ा आसान हो जायगा। आज हिन्द का कारोबार सूख गया है। मुझे अटूट धैर्य है। काम भी काफी कर लेता हूँ। अभी-अभी 'हरिजन' के लिए लिखवाया।"

घनश्यामदासजी : "रंधावा (आई० जी० पी०) से कल बाते हुई। उन्होंने कहा कि कल शहर का वातावरण काफी बदल गया है।"

बापू : "रंधावा से कहो कि वह बिना पक्षपात से काम ले, तो बहुत ऊँचा उठेगा। सबको शक है कि वह पक्षपात से काम लेता है। यह बात सच्ची है या नही, मैं नही कह सकता।"

बिरलाजी : "आज किसीको भी निष्पक्ष कहना कठिन ही है। मेरे दिल की भी यही हालत है। इतना दर्द हुआ है, पाकिस्तानवाले इतनी गालियाँ देते है कि कानों मे से कीड़े निकल पडे। उन पर से लोगो का विश्वास ही उठ गया है। गुस्से मे कुछ विचार ही नही सूझता।"

बापू : "तो क्या पंजाब मे जो होता है, वह निष्पक्ष है ?"

बिरलाजी : "कुर्बान अली का आज का······निष्पक्षपात है। अपने भले के लिए भी जातिवाद बुरा है। सोचने पर सब कुछ समझ मे आता है, गुस्से में नही।"

बापू : "तो ठीक है। आपको भी करना चाहिए। उपवास बुरा है, पर परिणाम अच्छा आ रहा है। मै इसे छोड़ दूँ, तो यह परिणाम यहीं रुक जायगा।"

बिरलाजी : "मै तो अपने मन की बाते कहता हूँ। यह बीमार मन की एक स्थिति है। हम ऐसे ही चले, तो कामयाब ही हो सकते है। यह सफाई हमे आगे बढ़ाती है।"

बापू : "वह भी तभी हो सकता है, जब मेरी अपनी काफी सफाई हुई हो।"

बिरलाजी : "वह भी तभी, जब शरीर होता है।"

बापू : "ऐसा लगता है कि अभी शरीर को रहना है। डॉक्टरों की दृष्टि

मे पेशाव कम होना और नींद का बढ़ जाना अच्छा नहीं है। फिर विलकुल न सोऊँ, तो वह भी उन्हे अच्छा नही लगता। मगर मै भगवान् पर कितना भरोसा रखता हूँ! अगर हृदय से नाम लेता हूँगा, तो गुर्दे का कार्य अपने-आप सुधर जायगा।"

विरलाजी : "मेरा दिल तो यहीं पड़ा है। यहीं रहना भी चाहिए। कल श्यामाप्रसाद ने कहा, तो यह विचार हुआ कि जाऊँ—वादा किया था, इसलिए और सरदार का चेहरा—उस दृढ़ आदमी का चेहरा—दीन हो गया, इसलिए उन्होने भी फोन से कहा कि आ सकते हो, तो आ जाओ। दुःख तो भरा ही था! कहा, 'अभी भी उपवास क्यो चलता है?' मैंने कहा : 'उपवास लंबा नहीं चलेगा, ऐसा मानता हूँ, तो भी यहाँ रहना अच्छा लगता है'।"

विचार-शुद्धि बड़ा काम

बापू : "यही एक चीज थी, जिसका पाकिस्तान गलत फायदा उठा सकता था। ५५ करोड़ देने से भारत की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी है। अब उन्हे लड़ना हो, तो एक मासूम बच्चा भी समझेगा कि वे भारत के पैसे से लड़ रहे है। आखिर कितने दिन लड़ेंगे?

"तुम जाओ, यहाँ ब्रजमोहन तो है ही। काम चलता रहेगा। जहाँ जाओ, यहाँ शुद्धि का काम तो होता ही है। नहीं तो विचार करने की बात है ही नही। विचार-शुद्धि भी बडा काम है।"

विरलाजी : "काम तो ईश्वर करता ही है। वह अपने-आप होता रहता है। मगर मनुष्य को लगता है कि मै भी कुछ करता हूँ।"

विरलाजी ने नचिकेता और यमराज की कथा बतलाते हुए कहा कि 'नचिकेता उसके दरवाजे पर अनशन कर रहा था, तो उससे यमराज भी घबरा उठे। फिर एक महात्मा जिसके यहाँ अनशन करते हो, बतलाइये, उसे कितनी चिन्ता होगी?"

इसी तरह बातचीत चल रही थी कि राजकुमारी बहन आयीं, जिससे बातें बंद हो गयीं। मालिश के बीच विधान बाबू, डॉ० जीवराज काका, डॉ० कर्नल ढडढा [illegible] ने बापू की जाँच की। उनका कहना था कि "बापू सिर्फ दो औंस सतरे [illegible], तो काफी है। अब शहर की हालत भी सुधर गयी है।"

बापू ने कहा : "ऐसा करूँ, तो मुझे २१ दिन बिताने की इच्छा है।" सुशीला बहन ने इनकार किया। अगर रस लेने के लिए लोग विवश करें, तो कदाचित् बापू आमरण अनशन ही शुरू न कर दें।

१०॥ बजे बापू बाथ मे आये। मैने और भाई साहब ने उन्हे स्नान कराया। बाथ मे सुशीला बहन ने (बिरला-हाउस मे रिचर्ड नामक एक यूरोपियन रोगी को टाइफाइड होने पर उन्हे बापू की सेवा-शुश्रूषा मे जिस कमरे मे रखा था, वह) एक कमरा बिरलाजी के पास से माँगने की बापू से आज्ञा चाही। बापू ने कहा : "हम तो इतने हिस्से से आगे बढ़ ही नहीं सकते।" १०॥। बजे बापू धूप मे आये। सुशीला बहन कार्यव्यस्तता के कारण कभी-कभी पेशाब मापना या जाँचना भूल जाती। लेकिन बापू उन्हे समय-समय पर याद दिला देते थे।

शुभ लक्षण

स्थानीय मौलाना लोग आये। उन्होने कहा : "शहर की हालत बहुत ही सुधर गयी है। यहाँ के जो मुसलमान भागकर कराची चले गये है, उनका तार आया है कि हम प्रार्थना करते हैं, आप सफल हो। हम लोग वहाँ आने के लिए छटपटा रहे है। कब आये?"

बापू ने कहा : "इसे बहुत अच्छा लक्षण माना जा सकता है। अगर ये लोग दिल्ली आकर रह सकें, तो मै उसे सच्ची परीक्षा समझूँगा।"

१२ बजे मिट्टी का प्रयोग किया। फिर एनिमा की तैयारी की गयी। बापू ने आज एनिमा लिया। आज अधिक मल नही निकला। गर्म और ठंढे पानी से सेक किया गया। मौलाना साहब आये थे। वे कह रहे थे कि आज शाम तक अनशन छुड़वाना है। शहर की हालत काफी सुधर गयी है। बापू ने सात शर्ते रखी है। इन पर सभी प्रतिनिधि हस्ताक्षर कर दे, तभी अनशन टूट सकता है। बापू को आज अत्यन्त बेचैनी है।

काँटो का ताज

सब्जी मण्डी के व्यापारी आये। उन्होंने कहा : "हम लोगो ने अपनी दूकानो पर से मुसलमानो का फल लेना रुकवा दिया था। किन्तु आज से हम

लोग अपनी दूकानें सभीके लिए खोल दे रहे है, जो चाहे, वह आकर ले जाय।"

इसी समय एक करुण दृश्य उपस्थित हो गया। क्षणभर मुझे अपने प्रति तिरस्कार हुआ कि अगर मै चित्रकार या फोटोग्राफर होती तो ? उस समय जवाहरलालजी आये हुए थे। बापू की (मन और शरीर की) बेचैनी देख इनकी ऑखो से ऑसुओ की धाराएँ बह पड़ी। चुपके से दूसरी ओर मुँह करके उन्होने उन्हे छिपा लिया—पोंछ लिया। उनकी छत्रछाया मे आजाद हिंद मे आजादी लानेवाले की यह दशा देखना उनके लिए असह्य ही हो उठा होगा! वातावरण इतना करुण था कि उसके लिखने के लिए शब्द ही नही हैं। 'कॉटो का ताज' कहा जाता है, वह सचमुच ठीक ही है।

मन सर्वोपरि

चार बजे बापू ने भाषण लिखवाना शुरू किया। ४॥ बजे अन्दर आये। राजेन्द्रबाबू आये। उनके साथ निम्नलिखित बाते हुईं : "जितने प्रतिनिधि हों, मुझे सही करके दें। मैं उन्हे घोषित कर दूँगा। जबानी बात मैं निकम्मी समझता हूँ, लिखी हुई चीज को ही मानता हूँ। मान लीजिये कि वहाँ के आश्रित लोग आयें और बीच मे ही मार डाले जायँ तो ? अगर वे दिल्ली आ सकते हैं, तो बाहर क्यो न जायँ ? आज जब मुसलमानों को टिकट नही दिया जाता, उससे ज्यादा मैं क्या समझूँ ? पाकिस्तान मे पागलपन हो रहा है, तो क्या हम भी पागल बनें ? मुझे मरना होगा, तो मरूँगा। मन की सादी स्थिति डॉक्टर नहीं जान सकते। मन सर्वोपरि है। मेरी परवाह किसीको नहीं करनी चाहिए। हम सही करते है या नहीं, इतना ही देखना है। हम शुद्धि करते है या नही ! फाका का अर्थ हम जाग्रत् बने, यही है। अवश्य ही अब डॉ० विधान घबरा गया है सही। उसने मौलाना को कह दिया है। मगर मैं नहीं चाहता कि कोई अपने को धोखे में डालकर फाका छुड़वाये। अगर ऐसा होगा, तो हालत और भी बिगड़ जायगी।"

इसके बाद हम लोगों ने प्रार्थना-प्रवचन का अनुवाद किया।

५ बजे प्रार्थना हुई। इस बीच सभी नेता विभिन्न दलो को समझा रहे है,

सभाएँ हो रही है। बेचारे राजेन्द्रबाबू कांग्रेस के प्रधान है, इसलिए उन्हें इतना सारा काम और चिन्ता रहती है कि खुद उनकी तबीयत खराब होने लगी है। फिर भी वे पू० बापू के अनन्य भक्त है। अतः चूँकि बापू ने दलील करने के लिए मना कर दिया है, इसलिए अब वे स्वयं काम कर दिखलायेगे, तभी चैन लेंगे।

पाँचवाँ दिन

पाँच बजे बापू ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही प्रार्थना सुनी। फिर स्वयं बड़ी ही धीमी आवाज मे तीन मिनट तक निम्नलिखित भाषण किया :

"भाइयो और बहनो ! ईश्वर की कृपा है कि आज उपवास का पाँचवाँ दिन है, तो भी मै बगैर परिश्रम के आपको दो शब्द कह सकता हूँ। जो मुझे कहना है, वह तो लिखवा दिया है। इसे प्रार्थना-सभा मे सुशीला बहन सुना देगी।

"मुझे इतना कहना ही है कि जो भी कुछ आप कहे, उसमे परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर वह नही है, तो कुछ भी नही है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे जिन्दा रखा जाय, तो बड़ी भारी गलती करेगे। मुझे जिन्दा रखना या मारना किसीके हाथ मे नही है। वह सिर्फ ईश्वर के हाथ मे है। इसमे मुझे शक नही और किसीको भी नही होना चाहिए।

अहिंसा के नियम

"इस उपवास का मतलब यह है कि अन्तःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो—ऐसा करे। तभी सबकी भलाई है। मुझ पर दया करके आप कुछ न कीजिये। जितने दिन उपवास के काट सकता हूँ, काटूँगा। ईश्वर की इच्छा होगी, तो मर जाऊँगा। मै जानता हूँ कि मेरे बहुत-से मित्र दुःखी है और सभी कहते हैं कि आज ही उपवास क्यो न छोड़ा जाय ? किन्तु आज मेरे पास ऐसा कारण नही है। वह मिल जाय, तो न छोड़ने का आग्रह न करूँगा। अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए। अभिमान नहीं करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मै जो कुछ कह रहा हूँ, उसमे अभिमान नही है, शुद्ध प्यार से कह रहा हूँ। ऐसा जो जानता है, वही रहनेवाला है।"

कहते-कहते जो थकान बढ़ रही थी, वह भी माइक पर स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी। बाद का लिखित सन्देश इस प्रकार है :

आध्यात्मिक उपवास का लक्ष्य

"मै पहले भी कह चुका हूँ और आज फिर दोहराता हूँ कि फाके के दवाव से कई वाते कही जाती है और फाका खतम होने के वाद मिट भी जाती हैं। अगर ऐसा कुछ हुआ, तो वहुत वुरी वात होगी। ऐसा कभी होना ही नही चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है और वह है, दिल की सफाई! मगर दिल की सफाई ईमानदारी से की जाय, तो जिस कारण से वह की गयी, उसके मिट जाने पर भी सफाई नही मिटती। किसी प्रियजन के आगमन के उपलक्ष्य मे कमरे मे सफेदी की जाती है, तो उसके आकर चले जाने पर भी वह मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तु की वात है। कुछ अर्से वाद सफेदी मिटने लगती है और फिर से उसे करवाना पड़ता है। लेकिन दिल की सफाई तो एक दफा हो गयी, तो मरने तक कायम रहती है। फाके का दूसरा कोई योग्य मकसद नहीं हो सकता।

दिल की वात

"राजा-महाराजा और आम लोगों के तारों का ढेर वढ़ता जा रहा है। पाकिस्तान से भी तार आ रहे है। वे अच्छे है, मगर पाकिस्तान के दोस्त और शुभचिन्तक की हैसियत से मैं पाकिस्तान के रहनेवालो और जिन्हें पाकिस्तान का भविष्य वनाना है, उनसे कहना चाहता हूँ कि अगर उनका विवेक जाग्रत न हुआ और अगर वे पाकिस्तान के गुनाह को कवूल नहीं करते, तो वे पाकिस्तान को कभी कायम नहीं रख सकेंगे। इसका यह मतलव नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के दोनो टुकड़े अपनी-अपनी खुशी से फिर से एक हो। मगर मै यह साफ करना चाहता हूँ कि जवर्दस्ती से उसे मिटाने का मुझे ख्याल तक नहीं आ सकता। मै उम्मीद रखता हूँ कि मृत्युशय्या पर पड़े मेरे ये वचन किसीको नहीं चुभेंगे।

"मै उम्मीद रखता हूँ कि सव पाकिस्तानी समझ जायेगे कि अगर कमजोरी की वजह से या उनका दिल दुखाने के डर से मै उनके सामने अपने दिल की सच्ची वाते न रखूँ, तो मै अपने प्रति और उनके प्रति झूठा सावित हो जाऊँगा। अगर मेरे हिसाव मे कुछ गलती हो, तो मुझे वताना चाहिए। मै वादा करता

हूँ कि अगर मै गलत समझा होऊँ, तो अपना वचन वापस ले लूँगा। मगर जहाँ तक मै जानता हूँ, पाकिस्तान के गुनाह के बारे मे दो विचार हो ही नही सकते।

अन्तरात्मा की आवाज

"मेरे उपवास को किसी तरह भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्मा की जबर्दस्त आवाज के जवाब मे 'धर्म' समझकर किया गया है। महान् यातना भुगतने के बाद मैने फाका करने का फैसला किया है। दिल्ली के मुसलमान भाई इस बात के साक्षी है। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिनभर की रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौके पर मेरा उपवास छुड़वाने के हेतु मुझे धोखा देकर राजा-महाराजा, हिन्दू-सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेगे और न हिन्दुस्तान की! वे सब समझा ले कि मै कभी इतना खुश नही रहता, जितना कि आत्मा के लिए उपवास करते वक्त रहता हूँ! इस फाके मे मुझे हमेशा से ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमे विघ्न डालने की जरूरत नही है। विघ्न इसी शर्त पर डाला जा सकता है कि ईमानदारी से आप यह कह सके कि आपने सोच-समझकर शैतान की तरफ से अपना मुँह फेर लिया है और आप ईश्वर की तरफ चल पड़े है।"

प्रार्थना के बाद बहने तो शान्ति से बापू के दर्शन करके लौट रही थी, लेकिन भाइयो ने धूम मचानी शुरू कर दी। लोग एक के ऊपर एक गिर रहे थे। आज तो बेहद भीड़ थी। सभीने स्वयंसेवको का काम किया, बहनो ने एक-दूसरे का हाथ पकड़कर घेरा डाला और हम लोग खड़े रहे।

हिन्दू-मुसलिम भाई-भाई!

शान्ति होने के बाद बापू को बरामदे से कमरे मे लाया गया। सुशीला बहन ने कहा कि बापू को पेशाब नही होती, इसलिए कैपिंग की जाय। बापू को यह पसन्द नहीं पड़ा। उन्होने कहा : "आप लोगो का प्रेम मैं जानता हूँ। जो होना होगा, होगा। मुझे पड़ा रहने दो।" सुशीला बहन ने कहा कि "लेकिन यह भी एक तरह का शक ही है।"

बापू : "ऐसा करते-करते ही मानव गिरता है। मुझे तो मिट्टी और बाथ भी अधिक मालूम पडते है। मै तो इन्हे भी छोडना चाहता हूँ।"

शाम को लगभग एक लाख आदमियो की भीड़ आयी, जो ये नारे लगा रही थी : 'हिन्दू-मुसलिम भाई-भाई, गाधीजी जिन्दाबाद !' हम लोग बाहर देखने के लिए गये। वहाँ दो पार्टियाँ बन गयी थी। एक 'भाई-भाई' की थी, तो दूसरी 'मारो, काटो' कहती रही। झगड़ा हुआ। हम लोग बरामदे मे आ गये। पडितजी ने अपनी लाक्षणिक शैली मे रसभरा और चूभता हुआ भाषण दिया।

सात बजे लार्ड माउण्टबैटन लेडी माउण्टबैटन के साथ आये। उन्हें देख बापू ने बड़ी कठिनाई से हाथ जोड़कर उनका स्वागत किया और अत्यन्त धीमे स्वर मे बोले : "तुम्हे मेरे पास लाने के लिए उपवास आवश्यक है (It Takes a fast to bring you to me.) ।'

उनके साथ बातचीत ठीक हुई, लेकिन अगर बापू की सात शर्तें मजूर हो, तभी वे उपवास छोड़ने को राजी है।"

सभी जान दे देगे

आज तो बापू की बेचैनी बढ़ती ही जा रही है। उन्होने भजन गाने के लिए कहा। 'श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन' और गीता का १२वाँ अध्याय भी सुनने की इच्छा व्यक्त की। इसलिए वह भी सुनाया गया। यह सब हो जाने के बाद दो मिनट जयरामदासजी के साथ बातें की।

९ बजे बिस्तर पर लेटे। तेल की मालिश हुई। आज राजेन्द्रबाबू वहाँ बड़ी मेहनत से लोगो को समझा रहे है। बापू ने हम लोगो को सूचित कर दिया था कि राजेन्द्रबाबू के यहाँ से कुछ भी सन्देश आये, तो चाहे जब मुझे जगाओ। प्यारेलालजी आये, तो बापू गाढ़ निद्रा मे थे। उन्होने कहा : "सभीने बापू की सात शर्तों पर हस्ताक्षर करना मंजूर कर लिया है और अगर कुछ हुआ, तो सभी अपनी जान दे देगे।" लेकिन बापू ने अभी धैर्य रखने के लिए कहा और सो गये।

आज के वातावरण से ऐसा लगता है कि अब बापू का अनशन अधिक लम्बा न होगा। कदाचित् कल सुबह तक अनशन छूट जाय। लेकिन अब तो घड़ी-घड़ी, पल-पल जी घबरा रहा है।

आज बापू ने नींद में ही बेचैन होते हुए कहा : "चलो, अब बिस्तर पर लेटें !" रात मे घड़ी-घड़ी थूकना पड़ता था ।

शारीरिक स्थिति तथा प्रवृत्ति

३॥ बजे बापू जग गये । दतवन किया, पेशाब की। प्रार्थना और फिर सुशीला बहन को लिखवाया । आश्रम के पत्र पढ़े । ४॥ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। ५-२४ बजे सोये। ६-५५ बजे जगे। लेटे-लेटे ही मृदुला बहन के साथ बातें की। ७-२० बजे उठे। नाक साफ की। फिर बिशेन भाई को लिखवाना शुरू किया । ७॥। बजे तक लिखवाया । ७-२५ बजे गरम सादा पानी आठ औंस । ७-४५ के बाद सोये और ८-३५ बजे जागे । घनश्यामदासजी, व्रजमोहनजी बिरला के साथ बातें की। ८-५५ बजे राजकुमारी बहन आयीं। ९ बजे गरम सादा पानी आठ औंस। फिर मालिश के लिए उठे। ९। बजे विधान बाबू, डॉ० जीवराज काका, डॉ० कर्नल ढड्ढा और सुशीला बहन ने जॉच की । ब्लडप्रेशर १८४।१०४ था । १०-३५ बजे मालिश के बाद बाथ में गये। ११-५ बजे स्नान पूरा हुआ। वजन लिया गया, १०७ पौण्ड हुआ । ११-७ बजे गरम सादा पानी आठ औंस । ११-२७ बजे नवाब सल्यमिन और नवाब सिदाकतअली खॉ आये। ११-३८ बजे सर पद्मसिंहजी आये। ११॥। बजे मिट्टी का प्रयोग, घी मलवाया । १२॥ बजे मिट्टी उतारी । बहावलपुर की बहनों, राममनोहर लोहिया और वासुदेव खन्ना एक हजार हस्ताक्षर लेकर आये । १॥। बजे गरम सादा पानी आठ औंस। २-२८ बजे पेशाब की। २॥। बजे जॉच के लिए रक्त लिया गया। २-५० बजे मौलाना साहब, बारदोलोई, विरादेवी आयीं । ३ बजे गरम पानी आठ औंस 'साईट्रेड' के साथ। ३-५ बजे जवाहरलालजी आये। ३॥ बजे पेशाब के लिए उठे। ४-४० बजे भीतर आकर सो गये। ४-५० बजे गरम पानी आठ औंस। ५ बजे लेटे-लेटे ही बोले। आवाज कमजोर थी। ५-५० बजे गरम पानी सादा आठ औंस—दो-चार बूंद नीबू के साथ। इसके बाद राजेन्द्रबाबू, शंकररावजी, सत्यनारायण सिनहा आये। पेशाब की। ८-३५ बजे गरम पानी नीबू के बूंदो के साथ आठ औंस। उससे पहले आर्थर मूर, किटवई, उनकी भाभी, लड़कियॉ वगैरह आयी थीं। ६-५५ बजे

रंधावा आये। ६॥ बजे जवाहरलालजी आये। ७-५ बजे लार्ड और लेडी माउण्टबैटन आये। ८-३५ बजे भजन गवाया और गीता के १२वें अध्याय का पाठ कराया। ९ बजे बिस्तर पर पहुँचे। तेल मलवाया। बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी।

● ● ●

क्रोध नहीं, मोह नहीं ! : २० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१८-१-'४८

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना। प्रार्थना के बाद बापू बिस्तर से कमरे तक चलकर ही गये। अन्दर आकर गरम पानी लिया और लिखवाना शुरू किया, जो निम्नलिखित है। बीच-बीच में थक जाते थे, इसलिए आँखें बन्द कर पड़े रहते थे। लेख का शीर्षक है—'क्रोध नहीं, मोह नहीं !'

'हरिजन'

एक भाई लिखते हैं: "उर्दू हरिजन के बारे में आपका लेख देखा। यदि वह आपका लेख न होता, तो मैं यही समझता कि किसीने बहुत ही क्रोध में लिखा है। जीवनजी भाई ने जो कुछ लिखा है, उससे सिर्फ यही साबित होता है कि लोगों को उर्दू लिपि में हरिजन की जरूरत नहीं है। पर आप उसके कारण 'नागरी हरिजन सेवक' को क्यों बन्द करें ? क्या आप समझते हैं कि पहले 'हिन्दी नवजीवन' निकालते थे (उर्दू नहीं), तो कोई गुनाह करते थे ? उसके बाद भी 'नागरी हरिजन सेवक' निकलता रहा। पर आपने 'उर्दू हरिजन' उस समय नहीं निकाला।

"अगर आपने 'उर्दू' और 'नागरी' 'हरिजन' केवल हिन्दुस्तानी का प्रचार करने के लिए निकाले होते, तो बात ठीक भी थी। पर नागरी 'हरिजन सेवक' पहले से ही निर्बल रहा है। उसमें घाटा हो, तो आप भले ही बन्द करें। आपने 'नागरी हरिजन' बन्द करने की जो चेतावनी दी है, उसमें मुझे एक प्रकार का बलात्कार दीखता है।

"क्या 'अग्रेजी हरिजन' से भी ज्यादा 'नागरी हरिजन सेवक' ने गुनाह किया है ? सच बात तो यह है कि पहले अग्रेजी का 'हरिजन' बन्द हो जाना चाहिए। पर होता यह है कि अग्रेजी के 'हरिजन' को जितना महत्त्व मिलता है, उतना दूसरे संस्करणों को नहीं।

"यह कितने बड़े दुःख की बात है कि आप अपने प्रार्थना-प्रवचन हिन्दुस्तानी में देते है, पर उनका साराश आपके दफ्तर मे अग्रेजी मे रहता है। फिर उसका उल्था नागरी और उर्दू 'हरिजन' मे छपता था—यह कहकर कि अग्रेजी से अब तो यह नहीं लिखा रहता, शायद अब सीधा हिन्दुस्तानी मे ही लिया जाता हो।

"आपने कई वर्ष पहले लिखा था कि जहाँ तक सम्भव हो, आप केवल गुजराती मे या हिन्दुस्तानी मे ही लिखेगे और उसका अनुवाद अग्रेजी मे होगा। पहले ऐसा चला भी, लेकिन बाद मे यह सिलसिला शिथिल हो गया।

'मैं फिर आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप 'अंग्रेजी हरिजन' बन्द कर दे और दूसरे संस्करण जारी रखे।"

शब्द का सही प्रयोग

बापू : "जो बात वाकई सही है, वह अगर कही जाय, तो उसे क्रोध मानना, शब्द का सही प्रयोग नहीं होगा। क्रोध मे आदमी बेतुका काम कर लेता है। अगर 'उर्दू हरिजन' बन्द करना पड़ा, तो साथ-साथ नागरी भी बन्द करना लाजिमी यानी आवश्यक हो जाता है। लाजिमी बात करने मे क्रोध कैसा ? जिसे मै लाजिमी समझूँ, उसे दूसरे न भी समझे—जैसे इस पत्र के लेखकों पर—इससे मुझे क्या ? हम जिसे लाजिमी माने, वही सारा जगत् भी माने—ऐसा होना जरूरी नहीं। हर चीज के कम-से-कम दो पहलू होते ही है।

नागरी के साथ उर्दू

"अब यह बताना रहा कि एक को छोड़ूँ या दोनों को ? यह ठीक है कि जब मैंने नागरी मे 'नवजीवन' निकाला और 'हरिजन' निकालना शुरू किया, तब दो लिपियों की चर्चा नहीं थी। अगर थी, तो मुझे उसका पता नहीं था।

"बीच मे स्व० भाई ज[illegible]की इच्छा से हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा

कायम हुई। इससे 'उर्दू रिसाला' निकालना लाजिमी हो गया। अब माना कि 'उर्दू रिसाला' बन्द हो और नागरी निकलता रहे, तो यह मेरी निगाह में बड़ा ही अनुचित होगा। क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की हिन्दुस्तानी का अर्थ यह है कि वह जैसी नागरी लिपि में लिखी जाती है, वैसे ही उर्दू लिपि में भी लिखी जा सकती है।

"इसलिए जो अखबार दोनों लिपियों में निकलना था, उसे वैसे ही निकलना चाहिए। वह भी एक ऐसे मौके पर, जब कि हिंद के लोग चारों ओर से कह रहे हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही है और वह नागरी लिपि में ही लिखी जाय। यह विचार ठीक नहीं है—यह बताना मेरा काम हो जाता है। यह दलील अगर ठीक है, तो मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं नागरी लिपि के साथ उर्दू लिपि भी रखूँ; और न रख सकूँ, तो मुझे उर्दू 'हरिजन सेवक' के साथ नागरी 'हरिजन-सेवक' का भी त्याग करना चाहिए।

नागरी सर्वोत्तम

"लिपियों में मैं सबसे आला दरजे की लिपि नागरी को ही मानता हूँ। यह कोई छिपी बात नहीं है। यहाँ तक कि मैंने दक्षिण अफ्रिका में गुजराती लिपि के बदले में नागरी लिपि में गुजराती खत लिखना शुरू किया था। इसे मैं समय के अभाव में आज तक पूरा न कर सका। नागरी लिपि में भी सुधारने की गुंजाइश है, जैसे कि करीब-करीब सब लिपियों में है। लेकिन यह दूसरा विषय हो जाता है। यह इशारा जो मैंने किया है, सो यह बताने के लिए कि नागरी लिपि का विरोध मेरे मन में जरा भी नहीं है। लेकिन जब नागरी के पक्षपाती उर्दू लिपि का विरोध करते हैं, उसे दूसरी लिपियों के मुकाबले में बतलाते हैं और अन्त में उसका साम्राज्य होने की बात करते हैं, तो मुझे यह कहना पड़ता है कि वह पूर्ण है। इस दृष्टि से देखा जाय, तो मेरा फैसला निर्दोष लगना चाहिए और जरूरी भी।

जीत हिन्दुस्तानी की

"हिन्दुस्तानी के बारे में मेरा पक्षपात सही है। मैं मानता हूँ कि नागरी और उर्दू लिपियों के बीच अंत में जीत नागरी लिपि की ही होगी। इसी तरह लिपि

का खयाल छोड़कर भाषा का ही खयाल करें, तो जीत हिन्दुस्तानी की होगी, क्योंकि संस्कृतमय हिन्दी बिलकुल बनावटी है और हिन्दुस्तानी बिलकुल स्वाभाविक। इसी तरह फारसीमय उर्दू अस्वाभाविक और बनावटी है। मेरी हिन्दुस्तानी मे फारसी लब्ज बहुत कम आते है, तो भी मेरे मुसलमान दोस्तो और पंजाबी तथा उत्तर के हिन्दुओं ने मुझे सुनाया है कि मेरी हिन्दुस्तानी समझने मे उन्हे दिक्कत नही होती।

दुःखदायी स्मरण

"हिन्दी के पक्ष मे मै तो बहुत कम दलील पाता हूँ। खूबी यह है कि पहले-पहल जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे मैने हिन्दी की व्याख्या की, तब उसका विरोध नही के बराबर था। विरोध कैसे शुरू हुआ, इसका इतिहास बड़ा करुणाजनक है। मै उसे याद भी नही रखना चाहता। मैने यहाँ तक बताया था कि 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' नाम ही राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए सूचक नही था और न वह आज भी है।

"लेकिन मै साहित्य के प्रचार की दृष्टि से अध्यक्ष नही बना था। स्व० भाई जमनालालजी और दूसरे अनेक मित्रो ने मुझे बताया था कि नाम चाहे कुछ भी हो, उन लोगो का मन साहित्य मे नही था और इसीलिए मैने दक्षिण मे राष्ट्रभाषा का प्रचार बड़े जोर से किया।

"प्रातःकाल उपवास के छठे दिन प्रार्थना के बाद लेटे-लेटे मै यह लिखवा रहा हूँ। कितने ही दुःखदायी स्मरण ताजे होते जा रहे हैं, पर उन्हे और बढ़ाना मुझे अच्छा नही लगता।

नाम नहीं, काम

"नाम का झगड़ा मुझे बिलकुल पसंद नही है। नाम कुछ भी हो, लेकिन काम ऐसा हो, जिसमे सारे राष्ट्र का, देश का कल्याण हो। उसमे किसी भी नाम का द्वेष होना ही नहीं चाहिए।

क्या कहूँ?

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा—इकबाल के इस वचन को सुनकर किस हिन्दुस्तानी का दिल न उछलेगा? अगर न उछले, तो उसे कमनसीब

समझूँगा। इक़बाल के इस वचन को मै हिन्दी कहूँ, हिन्दुस्तानी कहूँ या उर्दू कहूँ? कौन कह सकता है कि इसमे राष्ट्रभाषा नही भरी है? इसमे मिठास नही है? विचार की बुजुर्गी नहीं है? भले ही इस विचार के साथ आज मैं अकेला होऊँ। साफ है कि जीत कभी भी संस्कृतमय हिन्दी की होनेवाली नहीं है, न फारसीमयी उर्दू की। जीत तो हिन्दुस्तानी की ही हो सकती है। जब हम अंदरूनी द्वेषभाव को भूलेंगे, तभी हम इस बनावटी झगडो को भूल जायँगे, उससे शर्मिंदा होगे।

हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा, अंग्रेजी विश्वभाषा

"अब रही 'अंग्रेजी हरिजन' की बात! इसे मैं छोटी बात मानता हूँ। अंग्रेजी 'हरिजन' को छोड़ नहीं सकता। क्योंकि अंग्रेज लोग और अंग्रेजी के विद्वान् हिन्दुस्तानी लोग मानते है कि मेरी अंग्रेजी मे कुछ खूबी है। पश्चिम के साथ का मेरा सम्बन्ध भी बढ रहा है। मुझमे अंग्रेजो का या दूसरे पश्चिमी लोगों का द्वेष न कभी था, न आज है। उनका कल्याण मुझे उतना ही प्रिय है, जितना हमारे देशवासियों का। इसलिए मेरे छोटे-से ज्ञान-भंडार मे से अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार कभी न होगा। मै उस भाषा को कभी भूलना नही चाहता और न चाहता हूँ कि सारा हिन्दुस्तान अंग्रेजी भाषा को छोड़े या भूल जाय। मेरा आग्रह हमेशा अंग्रेजी को उसकी योग्य जगह से बाहर न ले जाने का रहा है। वह कभी राष्ट्रभाषा नही बन सकती और न हमारी तालीम का जरिया ही। ऐसा करके हमने अपनी भाषाओ को कंगाल बना रखा है। विद्यार्थियो पर हमने बड़ा बोझ डाला है। यह करुण दृश्य—जहाँ तक मुझे इल्म है—सिर्फ हिन्दुस्तानी में ही देखा जाता है। भाषा की इस गुलामी ने हमारे करोड़ो लोगो को बहुतेरे ज्ञान से बरसों तक वंचित रखा है, इसकी हमे न समझ है, न शर्म और न पछतावा ही! यह कैसी बात है? यह सब साफ-साफ जानते हुए भी मै अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार नही कर सकता। जैसे तमिल आदि प्रान्तीय भाषाएँ है और हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा, ठीक उसी तरह अंग्रेजी विश्वभाषा है, जगत् की भाषा है—इससे कौन इनकार कर सकता है? अंग्रेजो का साम्राज्य जायगा, क्योंकि वह मलिन था और है। लेकिन अंग्रेजी भाषा का साम्राज्य कभी नहीं जा सकता।

"मुझे ऐसा लगता है कि गुजराती भाषा मे या अंग्रेजी भाषा मे कुछ भी लिखूँ, तो भी अग्रेजी 'हरिजन' और गुजराती 'हरिजन-बधु' अपने पैरो पर खड़े रहेगे।"

५॥। बजे तक इतना लिखवाया।

सात शर्ते

बापू ने अपना अनशन छोड़ने की निम्नलिखित सात शर्तें रखी है :

१. महरौली मे ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार की मजार है, वह मुसलमानो के लिए बिलकुल सुरक्षित होनी चाहिए। दरगाह के खिदमतगारो की जान का कोई खतरा न हो। सात-आठ दिनो से वहाँ मुसलमानो का जो उर्स का मेला लगनेवाला है, उसमे वे बिना किसी खतरे के आ-जा सके। महरौली के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलाये कि वहाँ मुसलमानो की जान का कोई खतरा नही होगा।

२. दिल्ली की ११७ मसजिदे, जिन पर हाल के उपद्रवो मे हिन्दू और सिख शरणार्थियों ने कब्जा किया है या जिनको मन्दिर बना लिया गया है, स्वेच्छा से मुसलमानो को वापस लौटा दी जायँ और उनमे उनको इबादत करने दी जाय। जिन-जिन इलाको मे मसजिदे है, वहाँ के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलाये कि ये मसजिदे दगो से पहले जैसी थी, वैसी ही रहेगी।

३. करौलबाग, सब्जीमडी और पहाड़गंज मे मुसलमान आजादी से आ-जा सके और उनकी जान को वहाँ कोई खतरा न हो।

४. दिल्ली के जो मुसलमान तग आकर पाकिस्तान चले गये है, वे अगर वापस आकर यहाँ बसना चाहे, तो हिन्दू और सिख उनका रास्ता न रोके।

५. रेलो मे मुसलमान बिना किसी खतरे के सफ़र कर सके।

६. मुसलमान दूकानदारो का बहिष्कार न किया जाय।

७. दिल्ली शहर के जिन हल्को मे मुसलमान रहते है, उनमे हिन्दुओ और सिखो के बसने का प्रश्न वहाँ के मुसलमानो की रजामदी पर छोड़ दिया जाय।

मौलाना अबुल कलाम आजाद साहब ने करीब तीन लाख हिन्दू-सिखो की विराट् सभा के समक्ष इन सात शर्तों की घोषणा की। राजेन्द्रबाबू उस सभा के अध्यक्ष थे। इसलिए उसका प्रभाव भी काफी अच्छा पड़ा होगा।

आज सुवह से शुभ शकुन ही दीख रहे है। मालूम पडता है कि कदाचित् दोपहर तक अनशन छूट ही जाय। ८॥ वजे वापू मालिश के लिए गये। वहाँ डॉ० विधानवावू, डॉ० जीवराज काका और सुशीला वहन ने वापू की परीक्षा की। वापू आज पेट दुखने की शिकायत कर रहे थे और सिर भी भारी लग रहा था। विधानवावू ने पुनः रस लेने के लिए दलील शुरू की। लेकिन वापू ने कहा कि फिर तो उसी क्षण से पुनः २१ दिनो का अनशन करेगे, चाहे शान्ति हो या न हो। इसे सभीने इनकार कर दिया। देखे, आज का दिन कैसा वीतता है!

यह सब तो ठीक है। लेकिन अभी भी जिन्ना साहव एक भी शब्द नहीं वोले, यह आश्चर्य की वात है।

आज सुशीला वहन मालिश मे नही थी। राजेन्द्रप्रसादजी के यहाँ सभा मे गयी थी। वाथ मे वापू काफी वेचैन थे। वहाँ एक घटा वीता। वजन १०७ पौण्ड ही रहा, जरा भी कम-वेशी नही हुआ। इस कारण सभी काफी फिक्र मे पड़े है। आज वजन के समय पडितजी आ पहुँचे थे। उन्होंने ही वजन लिया। वे तो इतने अधिक खिन्न है कि मुझे वापू को देख जितना दुःख नही होता, उतना पडितजी को देखकर होता है।

प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर

आज तो असख्य लोग आते-जाते रहे। कही भी स्नान-घर खाली न थे। मै तो ऊपर नहाने चली गयी। नीचे आयी, तो वापू के कमरे मे सौ से अधिक लोग जमा थे। जवाहरलालजी, राजेन्द्रवावू, हिन्दू, सिख, मुसलमान, रधावा! फोटोग्राफरो की तो भीड ही उमड पडी थी। वातारण कुछ उत्साहभरा मालूम पडा। इसलिए मै तो, कही खडे रहने की भी जगह न होने पर भी, धीरे-धीरे वापू के पास ही जाकर इसलिए घुसकर वैठ गयी कि लिखना न छूट जाय।

प्रमुख व्यक्तियो मे—जवाहरलालजी, शकररावजी, पकवासा वगैरह मन्त्रि-मण्डल, हिन्दू महासभा और आर० एस० एस० के लाला हरिश्चन्द्र, अनेक हिन्दू और मुसलमान भाई, पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जनाव जहीद हुसेन भी थे। राजेन्द्रवावू ने सवकी ओर से कहा :

"पिछली रात को सब लोग मेरे घर पर इकट्ठे हुए थे और पूरी चर्चा के बाद सबने तय किया कि उसी वक्त और वहीं प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये जायँ। चूँकि कुछ सस्थाओ के प्रतिनिधि उस बैठक मे उपस्थित न थे, इसलिए हमने महसूस किया कि हस्ताक्षर किया हुआ प्रतिज्ञापत्र लेकर आपके पास तुरन्त न पहुँचा जाय; बल्कि जब तक बाकी के हस्ताक्षर न हो जायँ, तब तक रुका जाय। इसके मुताबिक सबेरे फिर हमारी बैठक हुई और पिछली रात की बैठक मे जो लोग अनुपस्थित थे, उन्होने भी इस बैठक मे शामिल होकर अपने हस्ताक्षर कर दिये।

"सबेरे की बैठक के दौरान मे देखा गया कि पिछली रात को जिन लोगों के दिलो मे थोड़ी हिचकिचाहट थी, वे भी पूरे आत्मविश्वास के साथ कहते थे कि हम पूरी जिम्मेवारी की भावना से गाधीजी से अनशन छोड़ने के लिए कह सकते है। उन लोगो ने एक साथ और अलग-अलग जो गारण्टी दी, उसे ध्यान मे रखकर मैंने काग्रेस के सभापति के नाते उस मसविदे पर हस्ताक्षर किये। उसके बाद दिल्ली के चीफ कमिश्नर जनाब खुरशीद और डिप्टी कमिश्नर श्री रंधावा ने—जो वहाँ हाजिर थे—शासन की ओर से उस पर हस्ताक्षर किये। यह तय किया गया है कि इस प्रतिज्ञापत्र पर अमल करने के लिए कुछ कमेटियाँ कायम की जायँ। मुझे उम्मीद है कि अब आप अपना अनशन छोड़ देगे।"

चालीस करोड़ के नाथ

उनके बाद लाला देशबन्धु ने कहा : "आज सुबह मुसलमान भाइयो का जुलूस हिन्दू महल्लो मे पहुँचा था और वहाँ हिन्दुओ ने बड़े प्रेम से उन्हे फल दिये और नाश्ता कराया। इन सबसे मालूम पड़ता है कि लोगो के दिल बदल गये है। आप भारत की ४० करोड़ जनता के नाथ है। इसलिए अनशन छोड़िये, यही प्रार्थना है।"

तो यह दगा होगा

इस तरह विभिन्न प्रतिनिधियों के भाषणो के बाद बापू अत्यन्त क्षीण आवाज मे बोले। उसे लिख लेने के बाद प्यारेलालजी सबको जोर से पढ़ सुना देते थे। बापू की आवाज बड़ी मुश्किल से सुनी जा सकती थी। मै तो बिलकुल

बापू के मुँह के पास ही कान लगाकर लिखती रही, इसलिए ठीक लिखा जाता था और फिर प्यारेलालजी को देती जाती थी। वे उसे सबको सुना देते थे। यह सारा कार्यक्रम ११॥ बजे शुरू हुआ।

बापू ने इस प्रकार कहा : "यह मुझे अच्छा तो लगता है, मगर एक बात अगर आपके दिल मे न हो, तो यह सब निकम्मा समझिये। इस मसविदे का अगर यह अर्थ है कि दिल्ली को आप सुरक्षित रखेंगे और बाहर चाहे जितनी भी आग जले, उसकी आपको परवाह न होगी, तो आप बड़ी गलती करेंगे और मैं भी उपवास छोड़कर मूर्ख बनूँगा। इलाहाबाद में क्या हुआ, सो तो आपने अखबार मे पढ़ा ही होगा। न पढ़ा हो, तो पढ़िये। राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ और हिन्दू महासभा भी इस समझौते मे शामिल है—ऐसा मैं समझा हूँ। अगर यहाँ के लिए वे इस समझौते में शामिल है और दूसरी जगह के लिए नहीं, तो वह भी बड़ा दगा होगा। मैं देखता हूँ कि ऐसा दगा आज हिन्दुस्तान मे बहुत चलता है।

"दिल्ली तो हिंदुस्तान का दिल है—पायतख्त है। यहाँ हिन्दुस्तान के बड़े लोग इकट्ठे हुए है। भले ही मनुष्य जानवर बने, मगर यहाँ जो हैं, वे दूध की मलाई जैसे है। वे अगर सारे हिन्दुस्तान को इतना भी न समझा सके कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सब धर्मों के लोग भाई-भाई हैं, तो यह दोनो उपनिवेशों के भविष्य के लिए बुरा होगा। अगर हम आपस मे लड़ते रहे, तो हिन्दुस्तान का क्या होगा ?..."

मुख भगवान् की तरफ

इतना कहते-कहते बापू बहुत ही थक गये। मानव-दुःख की इस अपार वेदना से वे काँपने लगे। हृदय रो रहा था। प्यारेलालजी भी बोल नही पाते थे, इसलिए सुशीला बहन ने ही पढ़ सुनाया। दो मिनट बाद पुनः भाषण शुरू करते हुए बापू ने कहा :

"मैं घबराहट मे पड़ गया। थकान है, इसलिए अपनी बात पूरी न कर सका। हम ऐसा कोई काम न करें, जिसके लिए बाद मे हमें पछताना पड़े। हमें अव्वल दर्जे की बहादुरी दिखानी है। हम यह कर सकेंगे या नहीं, सो तो

देखना है; अगर नही कर सकते, तो मुझे फाका छोड़ने को न कहिये। आपको और सारे हिन्दुस्तान को यह करना है। इसका यह मतलब नहीं कि यह आज के आज हो जायगा। मुझमे वह ताकत नही। मगर इतना कहूँगा कि आज तक हमारा मुँह शैतान की तरफ रहा, अब भगवान् की तरफ रहेगा। अगर जो बात मैने आपके सामने रखी है, उसे आप दिल से मंजूर नही करते या आपने यह मान लिया है कि वह आपके काबू के बाहर है, तो आपको साफ-साफ यह बात मुझे बता देनी चाहिए।

समझकर निर्णय लें !

"यह कहना कि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओ के लिए ही है और पाकिस्तान सिर्फ मुसलमानों के लिए ही—तो इससे बड़ी बेवकूफी क्या हो सकती है ? शरणार्थी यह समझें कि पाकिस्तान का उद्धार भी दिल्ली के ही मार्फत होगा।

"मै फाके से डरनेवाला आदमी नही हूॅ। मैने बहुत बार फाके किये हैं और जरूरत हुई, तो फिर भी कर सकता हूॅ। इसलिए आप जो भी करे, बार-बार सोच-समझकर करे।

दृढ़ निर्णय सर्वथा सम्भव

"जो मुसलमान भाई हमेशा मेरे पास आते और ऐसी बाते करते हैं कि अब दिल्ली ठीक हो गयी है और हिन्दू-मुसलमान साथ रह सकेंगे, उनके दिल मे अगर कुछ भी बलबला है—मन मे ऐसा लगे कि आज तो मजबूरन साथ रहना है, न रहे तो जायॅ कहाॅ ? लेकिन आखिर कभी-न-कभी अलग होगे ही—तो उन्हे यह बात मुझे साफ-साफ कह देनी चाहिए। सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को ठीक करना बड़ी मुश्किल बात है। मगर मैं तो बड़ी उम्मीद रखनेवाला इन्सान हूॅ। सोचता हूॅ, जो बात ठान ली, वह क्यो न हो सकेगी ? हिन्दुओं और मुसलमानो का समझौता आज आप कहते है। मगर हिन्दू माने कि मुसलमान तो यवन है, असुर हैं, ईश्वर को पहचान ही नहीं सकते और मुसलमान हिन्दुओ के बारे ऐसा ही माने, तो इससे बढ़कर कुफ्र नही।

एक को दगा, सबको धोखा

"पटने मे मुझे एक मुसलमान बड़े प्रेम से एक किताब दे गया था। लिखने-

वाला बड़ा मुसलमान है। उस किताब में लिखा है : "खुदा फरमाता है कि एक काफिर—और हिन्दू काफिर है—एक जहरी जानवर से भी बदतर है। उसे मार सकते हैं। उसे धोखा देना फर्ज है। उसके साथ शराफत क्या करना ?" यह चीज अगर मुसलमानों के दिल में छिपी-छिपी भी पड़ी है, तो यह कहना कि 'हम अच्छे रहेंगे', हिन्दुओं के साथ धोखेबाजी है। एक को धोखा दिया, तो सबको दिया !

"मैं अगर सच्चे दिल से पत्थर की पूजा करता हूँ, तो उसमें किसीको धोखा नहीं देता। मेरे उस पत्थर में भगवान् है। मैंने सोचा, अगर दोनों के दिलों में कुफ्र ही भरा है, तो मैं जीकर क्या करूँ ?

"आज जो तार आये हैं, उनमें बड़े-बड़े मुसलमानों के भी तार हैं। उनसे मुझे खुशी होती है। ऐसा लगता है कि वे समझ गये हैं कि राज चलाने का यह तरीका नहीं।

यहाँ के बाद पाकिस्तान

"यह सब सुनकर भी आप मुझे फाका छोड़ने को कहेंगे, तो मैं छोड़ूँगा। पीछे आप मुझे रिहाई दे देंगे। आज तक तो दिल्ली में ही रहकर करने-मरने की बात थी। यहाँ अगर काम हो गया हो, तो मैं पाकिस्तान चला जाऊँगा और वहाँ के मुसलमानों को समझाऊँगा। दूसरी जगह कुछ भी हो, यहाँ के लोग शान्त रहें। यहाँ के शरणार्थी समझ लें कि अगर पाकिस्तान से दिल्ली के कोई लोग वापस आते हैं, तो उन्हें अपना भाई समझकर रखना है। वहाँ वे परेशान पड़े हैं। मुसलमान जो काम कर रहे थे, वह सब हिन्दू सीख नहीं गये हैं, तो अच्छा है, वे आ जायँ। भले-बुरे सबमें हैं। यह सब सोच-समझकर आप सब मुझे कह दें कि फाका छोड़ो, तो मैं छोड़ूँगा। मगर हिन्दुस्तान वैसा-का-वैसा रहे, तो यह खेल-सा हो जायगा। इससे बेहतर है कि मुझे आप फाका करने दें। ईश्वर को उठाना होगा, तो मुझे उठा लेगा।"

मौलाना के उद्गार

बापू के बाद मौलाना साहब ने कहा : "महात्माजी ने जो पूछा है, उसका साम्प्रदायिक शान्ति की गारण्टी से ताल्लुक है। वह दिल्ली के नागरिकों के

प्रतिनिधियो द्वारा ही दी जा सकती है । किताब के बारे मे कहूँगा कि इसलाम के नाम पर यह कलंक है । इसलाम को बदनाम करनेवाली यह किताब है । इसलाम के पैगम्बर साहब ने 'कुरानशरीफ' मे एक ऐसी उम्दा आयत बतलायी है कि तमाम इसलाम भाई-भाई हैं, फिर वह किसी भी जाति का या मजहब का क्यो न हो ! महात्माजी ने इन मुसलमान दोस्तो के जिन विचारों का जिक्र किया है, वे इसलाम की सीख के बिलकुल खिलाफ है । वे सिर्फ उस पागलपन को जाहिर करते है, जो थोड़े समय पहले कुछ वर्ग के लोगो पर सवार था ।"

वफादारी का फर्मान

उनके बाद स्थानीय मुसलमान भाई हबीब-उल रहमान ने फरमाया : "दो ही बाते ऐसी है, जिनके मुताबिक कह सकता हूँ । एक तो यह बिलकुल गलत है कि मेरे धर्म-भाई हिन्दुस्तान को अपना मुल्क नही मानते । हम यहाँ पाँच बजे आते थे । हमने ३० साल से काग्रेस के झण्डे के नीचे काम किया है । जब हमसे हिन्दुस्तान की तरफ अपनी वफादारी दोहराने के लिए कहा जाता है, तो हम इसे अपनी राष्ट्रीयता का अपमान समझते है । मुझे याद है कि हाल के दगो मे एक मौके पर हमारे काग्रेसी दोस्तो और साथियो ने हमे दिल्ली के बाहर एक सुरक्षित जगह देने की बात कही थी । क्योकि उन्हे इस बात का यकीन नहीं था कि वे हमे दगाइयो से अच्छी तरह बचा सकेगे । लेकिन हमने उस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया और भगवान् पर भरोसा रखकर शहर मे रहना और घूमना पसन्द किया ।

"जहाँ तक जमीयतुल उलेमा का सम्बन्ध है, मै कह सकता हूँ कि उसके मेम्बर मौलाना आजाद साहब के और काग्रेस के पक्के अनुयायी है । जो पाकिस्तान चले गये हैं, वे सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए और दूसरी बदतर बातो के डर से ही वहाँ गये है । हम सब हिन्दुस्तान के नागरिको की तरह आत्मसम्मान और इज्जत से हिन्दुस्तान मे रहना चाहते है, न कि दूसरो की दया पर ! मै निश्चय के साथ कहता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान पर हमला हुआ, तो हम सब अपने मुल्क हिन्दुस्तान के आखिरी आदमी तक हिफाजत करेगे । हमने बार-बार साफ लफ्जो मे कहा है कि जो ऐसा करने के लिए तैयार नही है, उन्हे हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले जाना चाहिए ।

शुभ शकुन

"आज की परिस्थिति जो बदल गयी है, इसे हम बहुत ही अच्छा शकुन समझते है। हमे सन्तोष है कि प्रवाह बदल गया है और अब वह फिरकेवालो के मेल-जोल और शान्ति की तरफ बह रहा है, जब कि पहले कड़ुवाहट की तरफ बह रहा था। जब कि पहले कड़ुवाहट और नफरत की वजह से दगे हो रहे थे, अब चूँकि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये आश्वासनो पर हुकूमत की तरफ से दस्तखत हो गये हैं, हमे सतोष है कि इन आश्वासनो पर अमल होगा। अब मै अपने पूज्य महात्माजी से फाका तोड़ने की प्रार्थना करता हूँ।"

इसके बाद गोस्वामी गणेशदत्तजी ने कहा कि "श्री महाराज ने इतनी तपश्चर्या की है, तो बहुत परिवर्तन हुआ है। रात को ७५ प्रतिशत हृदय-परिवर्तन था, मगर अब ९० प्रतिशत हो गया है। तो, हम आपकी आज्ञा का सम्पूर्ण पालन करेगे।"

घर-घर रोना

आर० एस० एस० के श्री हरिश्चन्द्रजी ने कहा : "हम सब आपके सामने शपथ लेते हैं कि आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेगे। आपके अनशन से घर-घर रोना मच गया है। हम शपथ लेकर कहते है कि पूर्ण शान्ति रहेगी। हम मकान नहीं माँगेगे और न नौकरी ही माँगेगे। ईश्वर जैसे रहने देगा, वैसे रहेगे।"

पाकिस्तान की बेचैनी

पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जाहिद हुसेन साहब ने कहा : "मैं इसलिए हाजिर हूँ कि पाकिस्तान के लोग बेचैन है। सब पूछते है कि आपकी हालत कैसी है। इस बारे मे हम जो मदद कर सके, करने को तैयार है।"

आज्ञा पालन करेगे !

सिखों के प्रतिनिधि श्री हरबसन सिहजी ने, जो दिल्ली निवासी हैं, कहा : "आज गुरु गोविन्दसिह का जन्म-दिन है। मै गुरुद्वारे से आ रहा हूँ। वहाँ आपके लिए प्रार्थना की गयी है। वहाँ सबको आपका सन्देश सुनाया गया। मुझे कोई सिख ऐसा नहीं मिला, जो मुसलमानों को मारना चाहता हो। बल्कि

सब यही कहते हैं कि हमे महात्माजी की जान बचानी है। आप व्रत की पारणा कर दे। जो सिख यहाँ है, वे पूरी तरह आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

श्री रंधावा

डिप्टी कमिश्नर श्री रधावा ने कहा : "टाउनहाल मे जलसा हुआ था, तो मैंने प्रार्थना की थी कि जितनी जल्दी हो सके, हम अब महात्माजी को बचाने के लिए प्रयत्न करें। मुझे खुशी है कि पिछले तीन-चार दिनो से दिल्ली की हुकूमत जो पहले थी, आज नही है। जो आपकी सात शर्तें है, हम अपनी तरफ से (हुकूमत की ओर से) उनका सपूर्ण पालन करेंगे। हम पूरी मुहब्बत से रहेंगे।"

राजेन्द्रबाबू ने पुनः कहा : "मैंने तो प्रजा की तरफ से दस्तखत दिये ही है। अब आप उपवास छोड़े।"

यह सारा सुनने के बाद बापू ने कहा : "मै फाका छोड़ूँगा। ईश्वर की मर्जी होगी, वह होगा। आप सब साक्षी बनते हैं, तो बने।"

हे गोविन्द राखो शरण !

बापू ने पहले प्रार्थना करने के लिए कहा और वातावरण मे उत्साह की एकदम अनोखी झलक दीख पड़ी। सारा कमरा पवित्र उत्साह से भर गया। सभी हम लोगो की प्रार्थना मे शामिल हो गये।

पहले 'नम्यो हो रेगे क्यो' यह बुद्ध-मन्त्र पढ़ा गया। फिर दो मिनट शान्ति ! उसके बाद उर्दू प्रार्थना—'अईज बिल्लाह' और जरथुस्त की 'मज्दा' हुई। फिर 'ईशावास्य', 'वण्ड्रस कोस' और अन्त मे 'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय।'

और—

'हे गोविंद राखो शरण, अब तो जीवन हारे !
नीर पिबन हेतु गयो सिधु के किनारे
सिधु बीच बसत ग्राह चरण धरि पछारे !
'हे गोविंद राखो शरण...
चार प्रहर युद्ध भयो, ले गये मझधारे
नाक-कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे !

द्वारका में शब्द गयो, शोर भयो भारी
शंख चक्र गदा पद्म गरुड़ ले सिधारे!
सूर कहे श्याम सूनो, शरन है तिहारे
अबकी बार पार करो, नंद के दुलारे!'

इस भजन के समय तो हरएक की आँखों में आँसू और गला रुँध जाय, ऐसे हर्षाश्रु भर आये। मानो सचमुच भगवान् कृष्ण इस मँझधार दरिया के तूफान के समय ही उपस्थित न हुए हों! इस दृश्य का वर्णन शब्दों में करना कठिन है। बापू की आँखें बंद थीं। चेहरे पर अनुपम तपश्चर्या का तेज चमक रहा था। चाहे कितना ही पापी आदमी अगर इस समय की बापू की झाँकी देख ले, तो सचमुच उसका सारा पाप धुल ही जाय। यह इतना पवित्र अवसर रहा। कलकत्ते के अनशन की अपेक्षा इस बार की यह झाँकी कुछ अजब ही है!

उसके बाद रामधुन और फिर १२ औंस ग्लूकोज-मिले रस का गिलास मौलाना साहब ने बापू के हाथ में थमाया। फोटोग्राफर दनादन अपनी मशीनें दबाने लगे। १२-२५ बजे अनशन छूटा। पूरे बिरला-भवन में आनन्द छा गया। जवाहरलालजी के चेहरे का वर्णन करना असंभव ही है। आनन्द ही हो तो वह स्वाभाविक है, पर वह होते हुए उन्हें यह ग्लानि भी थी कि मेरे प्रधानमंत्रित्व में सिर्फ छह महीनों के भीतर ही बापू को ऐसी कसौटी से पार करवाना पड़ा! मानो इसके लिए वे स्वयं को भयानक अपराधी न मानते हों! उनके चेहरे से यही भावना टपक रही थी कि इतना आनन्द रहते हुए भी उनसे भूतकाल भुलाया ही नहीं जा रहा हो। इसके बाद बापू ने सभीको केला और संतरे का प्रसाद बाँटा।

सच्ची बहादुरी

रस पीने के बाद बापू ने गुरुद्वारे में होनेवाली गुरु गोविन्दसिंह-जन्मोत्सव की विराट् सभा के लिए निम्नलिखित सन्देश लिखवाया, जिसकी सिखों ने माँग की थी: "सिख भाइयों ने बड़ी बहादुरी दिखायी है कि वे अपना गुस्सा पी गये। यही तो सच्ची बहादुरी है। गुरु महाराज ने भी यही सिखाया है। 'एक सिख

सवा लाख के सामने खड़ा रह सके' इसका अर्थ यही है कि 'सिखों की जय हो' !"

मुसलिम बहनें

लगभग सौ बुरकेवाली मुसलिम बहने बापू का अनशन छुड़वाने के लिए आयी थी। लेकिन बापू का कमरा ठसाठस भरा हुआ था, इसलिए वे सब आ न सकी।

बापू बहुत ही ज्यादा थके हुए थे। सभीको हाथ जोड़े और बोले : "मेरे पास कोई बुरका रख ही नहीं सकती। मैं तो आपका भाई-बाप हूँ, तो मेरे सामने पर्दा ही क्या है ? हृदय का पर्दा होना चाहिए।" बहनों ने तुरत पर्दा निकाल फेका।

"क्या कोई हिन्दू, सिख दिक तो नही करते न ? आप सब बहनो की दुआ होगी, तो मैं जैसा था, वैसा ही हो जाऊँगा। दुआ का जवाब खुदा देगा।"

चिरञ्जीवी भव !

इस बीच इन्दिरा बहन ने खबर दी कि "पडितजी भी अनशन कर रहे हैं।" बापू मे अभी जरा भी शक्ति हो ही कैसे सकती है ? खूब बोले, सुना और दर्शनार्थियो की भी अपार भीड़ !... बापू तत्काल खड़े हो गये। अपने हाथ से पडितजी को सुन्दर पत्र लिख भेजा :

"चि० जवाहरलाल,

अनशन छोड़ो। साथ मे पा० पंजाब के स्पीकर के तार की नकल भेज रहा हूँ। जहीद हुसेन ने, मैंने तुमसे कहा, वही कहा था। बहुत वर्ष जियो और हिन्द के जवाहर बने रहो।

१२-१-'४८ —बापू के आशीर्वाद"

अनशनों का दौर

सब चले जाने के बाद हम लोग भी बापू को प्रणाम कर खाने के लिए गये।

आर्थर मूर भी अनशन कर रहे थे। वे बापू की तबीयत का हाल जानने के लिए आये थे। २॥ बजे उन्होने अपना अनशन छोड़ा। बापू ने कहा : "मेरे

शरीर को तो खासकर ग्लूकोज की जरूरत थी। वह मिल गया, इसलिए अब ठीक है।"

वावेल-कैण्टीन के निर्वासितो ने अनशन शुरू किया है। उन्होने तो बापू का दर्शन करने के बाद ही खाने का निश्चय किया है।

आज तो बापू काफी थके हुए हैं। हम लोगो का समय भी इस तरह आने-जाने में ही बीता। प्रार्थना मे बहुत-से लोग थे। रिम-झिम, रिम-झिम मेह बरस रहे थे। मानव-हृदय के आनन्दित हृदय-पटल के साथ प्रकृति की भी आनन्दित सहानुभूति थी। आज आवाज भी (शोर भी) खूब हो रहा था। बापू का प्रवचन लगभग २० मिनट तक चला। रोज की तरह बिस्तर पर से ही माइक पर बोले और बाकी तो रोज की तरह ही लिखवा दिया था :

आजादी खो देंगे

"आज का दिन मेरे लिए तो मंगल है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कितना अच्छा है कि आज ही गुरुगोविन्द सिंह की जन्मतिथि है। इसी शुभ तिथि पर मै आप लोगो की दया से फाका छोड़ सका हूँ। जो दया आप लोगों से—दिल्ली के निवासियो से, दिल्ली मे जो दुःखी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे और यहाँ की हुकूमत के सब कारबार से—मुझे मिली है, उसे, मुझे लगता है कि, मै जिन्दगीभर भूल न सकूँगा। कलकत्ते में ऐसे ही प्रेम का अनुभव मैंने किया। यहाँ मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि शहीद साहब ने कलकत्ते में बड़ा काम किया। अगर वे मदद न करते, तो मै यहाँ ठहरनेवाला न था। शहीद साहब के लिए हम लोगो के दिल में अभी भी बहुत शक है। उससे हमे क्या? आज हम सीखे कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उसके साथ हमे दोस्ताना तौर पर काम करना है। हम किसीके साथ, किसी हालत मे दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड मुसलमान यूनियन मे पड़े है। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं नही। वैसे ही सब हिन्दू और सिख भी फरिश्ते थोड़े ही हैं? हममें अच्छे लोग भी हैं और बुरे भी! हमारे यहाँ जिन्हें हम जरायम पेशा जातियाँ कहते है, वे लोग भी पड़े हैं। उन सबके साथ मिल-जुलकर हमें रहना है। मुसलमान बड़ी कौम है। यहीं नहीं, सारी दुनिया मे मुसलमान पड़े

है। अगर हम ऐसी उम्मीद करे कि सारी दुनिया के साथ हम मित्रभाव से रहेगे, दोस्ती के तौर से रहेगे, तो क्या वजह है कि हम यहाँ के मुसलमानो से दुश्मनी करें ? मै भविष्यवक्ता नही हूँ। फिर भी ईश्वर ने मुझे अक्ल दी है, दिल दिया है। उन दोनो को टटोलता हूँ और आपको भविष्य सुनाता हूँ कि अगर किसी-न-किसी कारण एक-दूसरे से दोस्ती न कर सके, वह भी यहाँ के ही नही, बल्कि पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानो से हम दोस्ती न कर सके, तो हम समझ लें—इसमें मुझे कोई शक नही—कि हिन्दुस्तान हमारा न रहेगा, पराया हो जायगा। गुलाम हो जायगा—पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पायी है, उसे हम खो बैठेंगे।

"आज मुझे इतने लोगो ने आशीर्वाद दिये हैं, सुनाया है, यकीन दिलाया है कि हम सब हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी भाई-भाई बनकर रहेगे और किसी भी हालत मे कोई कुछ भी कहे, दिल्ली के हिन्दू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई—सब जो यहाँ के वाशिंदे है, और सब शरणार्थी भी दुश्मनी नही करनेवाले है, यह छोटी बात नही है। इसके मानी यह है कि अब से हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे जितने लोग पड़े है, वे सब मिलकर रहेगे। हमारी कमजोरी के कारण हिन्दुस्तान के टुकड़े हो गये, लेकिन वे भी दिल से मिलते हैं। अगर इस फाके के छूटने का यह अर्थ नही है, तो मै बड़ी नम्रता से कहूँगा कि फाका छुड़वाकर आपने कोई अच्छा काम नही किया।

इन्सान का फर्ज

"दिल्ली मे और दूसरी जगह मे भेद क्यो हो ? जो दिल्ली मे हुआ और होगा, वही सारे यूनियन मे होगा, तो पाकिस्तान मे भी होना चाहिए। उसमे आप शक न रखे। आप डर न करे। एक बच्चे को भी डरने का काम नही है। अब तक मेरी निगाह मे हम शैतान की तरफ जाते थे। आज से मै उम्मीद करता हूँ कि हम ईश्वर की ओर जाना शुरू करते है। लेकिन हम तय करे कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुँह ईश्वर की ओर घुमाया, तो वहाँ से कभी नही हटेगे। ऐसा हुआ, तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनो मिलकर

हम सारी दुनिया को ढँक सकेंगे—सारी दुनिया की सेवा कर सकेंगे और सारी दुनिया को ऊँचा उठा सकेंगे। मैं और किसी कारण जिन्दा रहना नही चाहता। इंसान जिन्दा रहता है, इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ जाना ही इंसान का फर्ज है। जबान से ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल—कुछ भी नाम लो, वह सब झूठा है, अगर दिल मे वह नाम नहीं है। सब एक ही हस्ती है, तो फिर कोई कारण नही कि हम उस चीज को भूल जायँ और एक-दूसरे को दुश्मन माने।

सर्व-धर्म-समभाव

"आज मे आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नहीं हूँ। लेकिन आज के दिन से हिन्दू निर्णय कर ले कि हम लड़ेगे नहीं। मै चाहूँगा कि हिन्दू कुरान पढ़े, जैसे कि वे भगवद्‌गीता पढ़ते है। सिख भी वही करे। और मै चाहूँगा कि मुसलिम भाई-बहन भी अपने घरो मे ग्रन्थ साहब पढ़े, उनके अर्थ समझे। जैसे हम अपने धर्म को मानते है, वैसे ही दूसरो के धर्म को भी मानें। उर्दू-फारसी—किसी भी जबान मे बात लिखी हो, अच्छी बात तो है। जैसे कुरान शरीफ, वैसे ही गीता और ग्रन्थ साहब है। मेरा मकसद यही है, चाहे आप माने या न मान। अभी तक मैं ऐसा करता रहा हूँ। मैं आपको दावे के साथ कहूँगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता। अगर मैं सनातनी हिन्दू हूँ, मैं पत्थर की पूजा करनेवाले से नफरत नही करता। खुदा पत्थरों में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है, वह उसमे पत्थर नही, खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न माने, तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यो माना जायगा? क्या वह बुत-परस्ती नहीं है?

ईश्वर सद्‌बुद्धि दे!

"दिलो मे भेद न रखे, तो हम यह सब सीख सकते है। ऐसा हो, तो फिर यह नहीं होगा कि यह हिन्दू है, वह सिख है, यह मुसल्मान है। सब भाई-भाई हैं, सब मिल-जुलकर काम करनेवाले हैं। पीछे ट्रेनो मे आज जो अनेक किस्म की परेशानियाँ होती है—आदमी फेंक दिये जाते हैं, लड़कियो को फेक दिया जाता है, औरते फेंक दी जाती है—वह सब मिट जायगा। हर कोई आसानी से हर जगह रह सकेगा, कहीं किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने, पाकि-

स्तान भी ऐसा होना चाहिए। तभी मुझे शान्ति मिलेगी। तब तक मुझे परम शान्ति नही मिलनेवाली है, जब तक यहाँ के शरणार्थी, जो पाकिस्तान से दुःखी होकर आये हैं, अपने घरो को वापस न जा सके और जो मुसलमान यहाँ से हमारे डर से तथा मार-पीट से भागे है एवं वापस आना चाहते हैं, वे आराम से यहाँ न रह सकें।

"बस, इतना ही कहूँगा। ईश्वर हम सबको और सारी दुनिया को अच्छी अक्ल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी तरफ खीच ले, जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।"

अनशन सत्य के नाम पर

इतना बोलने के पश्चात् बापू का निम्नलिखित सन्देश पढ़ सुनाया गया : "मैने सत्य के नाम पर यह उपवास शुरू किया, जिसका जाना-पहचाना नाम ईश्वर है। जीते-जागते सत्य के बिना ईश्वर कही नही है। ईश्वर के नाम पर हम झूठ बोलते है, हमने बेरहमी से लोगो की हत्याएँ की हैं और इसकी भी परवाह नही की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष, मर्द है या औरते, बच्चे हैं या बूढ़े! हमने भी ईश्वर के नाम पर लड़कियाँ और औरते भगायी हैं। जबरन् धर्म पलटवा दिया है। मै नहीं जानता कि किसीने ये काम सत्य के नाम पर किये हो। उसी नाम का उच्चारण करते हुए मैने अपना उपवास तोड़ा है। हमारे लोगो का दुःख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू १०० आदमियो को लाये, जिनमे हिन्दुओं, मुसलमानो और सिखो के प्रतिनिधि थे; हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के प्रतिनिधि थे तथा पजाब सरहदी सूबे और सिंध के शरणार्थियो के प्रतिनिधि भी थे। इन्ही प्रतिनिधियो मे पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जहीद हुसेन साहब थे, दिल्ली के चीफ कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर थे तथा आजाद हिन्द फौज के प्रतिनिधि जनरल शाहनवाज भी थे। मूर्ति की तरह मेरे पास बैठे हुए पडित नेहरू और मौलाना साहब भी थे।

"राजेन्द्रबाबू ने इन प्रतिनिधियो के दस्तखतवाला एक दस्तावेज पढ़ा, जिसमे मुझसे कहा गया था कि मै उन पर ज्यादा चिन्ता का बोझ न डालूँ और अपना उपवास छोड़कर उनके दुःख को दूर करूँ। पाकिस्तान से और

यूनियन से तार पर तार आये हैं, जिनमे मुझसे उपवास छोड़ने की अपील की गयी है। मै इन सारे दोस्तो की सलाह का विरोध नही कर सका कि हर हालत मे हिन्दुओ, मुसलमानो, सिखो, ईसाइयो, पारसियो और यहूदियो मे पूरी-पूरी दोस्ती रहेगी—ऐसी दोस्ती, जो कभी न टूटेगी। उस दोस्ती को तोड़ने का मतलब राष्ट्र को तोडना, खतम करना होगा।

मानव-प्रतिज्ञा की सेवा

"जब मै यह लिखवा रहा हूँ, मेरे पास सेहत और दीर्घ-जीवन की कामनावाले तारो का ढेर लग रहा है। भगवान् मुझे ऐसा विवेक दे कि मै मानव-प्रतिज्ञा की सेवा कर सकूँ। अगर आज का दिया हुआ पवित्र वचन पूरा हो जाय, तो मै आपको यकीन दिलाता हूँ कि मैं चौगुनी शक्ति से भगवान् से प्रार्थना करूँगा कि मैं अपनी पूरी जिन्दगी जी सकूँ और जीवन के आखिरी पल तक मानव-समाज की सेवा कर सकूँ। विद्वानो का कहना है कि आदमी की पूरी जिन्दगी १२५ बरस की है। कोई उसे १३३ बरस की बताते है। दिल्ली के नागरिको के साथ हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ की सद्भावना से मेरी प्रतिज्ञा के शब्दों का तो आशा से जल्दी पालन हो गया है।

उपवास मे भगवान् का हाथ

"मुझे पता चला है कि कल से हजारो शरणार्थी और दूसरे लोग उपवास कर रहे है। ऐसी हालत मे इससे दूसरा नतीजा हो ही नही सकता था। हजारो लोगो की तरफ से मुझे लिखित रूप मे दिली दोस्ती के वचन मिल रहे है। सारी दुनिया से मेरे पास आशीर्वाद के तार आये हैं। क्या इस बात का इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवास मे भगवान् का हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञा के शब्दो के पालन के बाद उसकी आत्मा भी है। उसके पालन के बिना शब्दों का पालन बेकार हो जाता है। प्रतिज्ञा की आत्मा है—यूनियन और पाकिस्तान के हिन्दू, सिख और मुसलमानो मे सच्ची दोस्ती! अगर पहली बात का यकीन दिलाया जाता है, तो उसके बाद दूसरी बात आनी ही चाहिए, जैसे रात के बाद दिन आता ही है। अगर यूनियन मे अँधेरा हो, तो पाकिस्तान मे उजाले की आशा रखना मूर्खता है। लेकिन अगर यूनियन मे रात के मिटने

मे कोई शक नही रह जाता, तो पाकिस्तान मे भी रात मिटकर ही रहेगी। उस तरह के निशान भी पाकिस्तान मे दिखाई देने लगे है। पाकिस्तान से बहुत-से सन्देश आये हैं, उनमे से एक मे भी इस बात का विरोध नही किया गया है। भगवान् ने, जो सत्य है, जैसे इन छह दिनो मे हमे जाहिरा तौर पर रास्ता दिखाया है, वैसे ही वह आगे भी हमें रास्ता दिखाये।"

अद्‌भुत दृश्य

बापू को कमजोरी तो बहुत ही आ गयी। ज्यो ही प्रवचन पूरा हुआ, त्यो ही—कटघरे मे बंद लोगों को छोड़ देने का हुक्म मिलने पर वे जैसे भाग निकलते है, वैसे ही—सभी लोग एकाएक, एक साथ बापू के दर्शनार्थ दौड़ पड़े। बापू को कुर्सी पर बिठाया गया। वे बरामदे मे से ऊँचे···, जिससे नन्हे-से-नन्हा बच्चा भी उन्हे देख सके। यह दृश्य तो इतना अद्‌भुत, आनन्ददायक और भव्य था कि मुझे रामायण के उत्तरकाड का एक छंद याद आ जाता है। भगवान् रामचन्द्र चौदह वर्षों का वनवास और विरह सहकर अयोध्या पधारे है ! लोग आनन्दोत्सव मनाते है और वनवास दिलाने का प्रायश्चित्त कर वरदान माँग रहे हैं कि "प्रभो ! एक ही वरदान चाहिए और वह है, भक्ति !" आज लोगो और बापू के बीच का चित्र भी हूबहू वैसा ही खड़ा हो जाता है। मानो अनेक कठिनाइयाँ सहकर इस तपश्चर्या से बापू उबरे है। यह संध्या कभी भी भूल नही सकती। मैं मन ही मन यह छंद गाती रही :

'जय राम रमारमन समन। भवताप भयाकुल पाहि जनम् ॥
अवधेस सुरेस रमेस विभो। सरणागत माँगत पाहि प्रभो ॥
दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतग रहे। सर पावक तेज प्रचड दहे ॥
महि मडल मडन चारुतर। धृत सायक चाप निषंग धरम् ॥
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुज दिवा कर तेज अनी ॥
मन जात किरात निपात किये। मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
इति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगन्हि लोग हये। भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥

भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्हके पद पंकज प्रीति नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्हके । प्रिय संत अनंत सदा तिन्हके ॥
नहि राग न लोभ न मान मदा । तिन्हके सम वैभव वा विपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये । पद पंकज सेवत सुद्ध हिये ॥
सम मानि निरादर आदर ही । सब संत सुखी विचरंती मही ॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । महिपाल विलोकय दीन जनं ॥

इतना तो जानिये कि बापू के कार्य की स्तुति प्रजा कर रही हो और फिर माँग कर रही हो कि—

बार-बार वर माँगऊँ, हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी, भगति सदा सतसंग ॥

रामदास काका आये थे । डॉ० मेहता, जहाँगीरजी और जमशेदजी भी आये । इन सबके साथ बापू ने बातचीत की । बापू ने कताई शुरू कर दी । आज के दिन न कातने के लिए बहुत समझाया, पर बापू ने कहा कि "यज्ञ किये बिना खाना चोरी का अन्न कहा जाता है । मैंने अब खाना शुरू कर दिया है, तो मुझे यज्ञ करना ही चाहिए ।"

१० बजे बापू बिस्तर पर लेटे ।

आज की स्थिति

३॥ बजे जागे । दतवन, पेशाब ६ औंस । ३॥। बजे प्रार्थना । ४। बजे गरम पानी, एक चम्मच नींबू का रस और नमक । ५॥। बजे 'हरिजन' के लिए लिखवाना शुरू किया । सो गये । ८॥ बजे जाग गये । ९-५ बजे पेशाब की । ९। बजे मालिश के लिए गये । १०-२० बजे बाथ में आये । वजन १०७ रहा ।

११ बजे गरम पानी आठ औंस। फिर तो असंख्य लोगो का आवागमन शुरू हो गया। उनके साथ बाते। १२। बजे अनशन छूटा।

अनशन के बाद का खुराक : आठ औंस संतरे का रस, दो टेबल स्कुन ग्लूकोज के साथ। १ बजे मुनक्का का पानी १२ औस। ३॥ बजे गरम पानी शहद के साथ और नीबू। ८ बजे आठ औस दूध, ४ औस गरम पानी के साथ मिलाकर, चार संतरे। ८॥ बजे गरम पानी शहद के साथ आठ औस।

इस तरह आज का दिन बिताया। अब रात के १२ बज रहे है। यह सब लिखकर, सबको"'चिट्ठियाँ लिखकर सोने के लिए जा रही हूँ। ○○○

बीती ताहि बिसारि दे ! : २१ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
१९-१-'४८

मौन दिन

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। फिर बापू रोज की तरह भीतर बैठे और काम किया। आज तो मौन का दिन है, इसलिए खास और कोई बात रहेगी ही नहीं। मालिश और बाथ भी नियमानुसार हुए। डॉ० दिनशाहजी ने हजामत बनायी। मैंने बापू को बाथ कराया। बापू का वजन किया गया, १०६ पौंड हुआ। एक पौण्ड घट गया। फिर जमशेदजी, जहाँगीरजी पटेल और डॉ० दिनशाहजी के साथ बाते की। उन्होने जो बाते कही, बापू उनका जवाब देनेभर का ही लिखते थे। जमशेदजी और मेहता कराची (सिन्ध) की करुण कहानी सुना रहे थे। वे रहनेवाले भी हैं। अन्त मे इन लोगो ने बापू से पाकिस्तान आने की प्रार्थना की। बापू ने लिख बताया कि "मै पाकिस्तान आना चाहता ही हूँ, लेकिन आपने जो-जो बाते कही है, उन्हे लिख दीजिये, जिससे मैं उनके बारे मे उचित व्यवस्था करूँगा।"

इन लोगो के जाने के बाद बापू सो गये। हम लोगो का समय लगभग बापू के साथ ही बीता। बापू ने रेंडी का तेल लिया था, लेकिन जुलाब नहीं हुआ। खाना तो अभी खाया ही नहीं। मुनक्का का पानी, मोसम्बी का रस,

चार्ली और हर बार ग्लूकोज लेते है। पेशाब अच्छी तरफ साफ होने लगी है। आज प्रार्थना मे कुर्सी पर ही आये। आज के प्रवचन मे, लिखित सन्देश मे बताया :

आभार-प्रदर्शन

"मेरे पास देश-विदेश से मेरी तबीयत के बारे मे पूछताछ के और उपवास छोड़ने की खुशी के तारो का ढेर लग गया है। अभी भी तार आ ही रहे हैं। उन सबके प्रति व्यक्तिशः आभार-प्रदर्शन सम्भव नही। इसलिए आप सबके समक्ष उन सबका हृदयपूर्वक आभार मानता हूँ। इन तारो पर से तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरा यह कार्य किसी भी तरह अनुचित था ही नही। लेकिन इन तारो मे से दो तार आपको पढ सुनाने है—एक तो पश्चिम पंजाब के मुख्य मन्त्री का और दूसरा भोपाल के नवाब साहब का है। इन दोनो के बारे मे लोग वहम रखते है, इसलिए तार सुनाकर जाहिर करता हूँ। हमे तो जो कोई कुछ कहे, उस पर विश्वास करना चाहिए। अगर उनके हृदय दूसरे तरह के होते, तो ऐसे तार क्यो भेजते ? तार निम्नलिखित हैं :

दो ऐतिहासिक तार

"नवाब साहब सूचित करते है : 'आपने सभी जातियो के हृदयो को जोड़ने के लिए जो अपील की है, उसे भारत और पाकिस्तान के सभी भले आदमियो का अवश्य ही समर्थन प्राप्त होगा। पिछले वर्ष हम लोग सभी जातियों के भीतर प्रेम, मैत्री और सद्भाव की भावना फैलाने का प्रयत्न करते रहे है, जिसके फलस्वरूप भोपाल राज्य की शान्ति मे बाधा डालनेवाली कोई भी अवाछनीय घटना नही घट सकी। हम आपको इस बात का विश्वास दिलाते है कि मैत्री की इस भावना का और अधिक विस्तार करने मे हम अपनी पूरी शक्ति लगाने मे कोई कमी न करेंगे'।

"और अब यह देखिये पश्चिमी पजाब के मुख्य मन्त्री का तार : 'पश्चिमी पजाब का मन्त्रिमण्डल महत्त्वपूर्ण लक्ष्य के प्रसार के लिए आपके बड़े कदम की सराहना और प्रशसा करता है। हमारा मन्त्रिमण्डल अल्पसख्यको के जीवन, सम्मान और सम्पत्ति की रक्षा करने के लिए और उन्हे नागरिकता

के समान अधिकार प्रदान करने के लिए सदा ही प्रयत्नशील रहा है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हमारा मन्त्रिमण्डल इस नीति के पालन में अब पहले से भी दूनी शक्ति लगायेगा। हम इस बात के लिए उत्सुक है कि सारे भारतवर्ष की स्थिति मे तत्काल सुधार होगा, जिससे आप अपना अनशन भंग कर सकें। इस प्रान्त मे आप सरीखे अमूल्य जीवन की रक्षा करने के लिए कोई भी उपाय उठा नहीं रखा जायगा'।"

बापू की चेतावनी

आगे बापू ने कहा : "मुझे आप लोगो को एक और चेतावनी देनी है कि अभी-अभी लोग बिना सोचे, और चाहे जो आदमी चाहे जब अनशन कर रहा है। देखना है कि थोड़े ही समय मे, इस तरह फल की अपेक्षा रखकर किये गये अनशनो से कदाचित् निराशा ही हाथ लगे। अलावा इसके अनशन जैसे अमोघ इलाज का इस तरह दुरुपयोग हो, तो उसका असर भी रह ही नही जायगा। अनशन करनेवाले को खूब विचार करना चाहिए। अगर ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा न हो और अपना स्वार्थ हो, तो उस अनशन की कौडी भी कीमत नहीं। उसके लिए दृढ़ ईश्वरीय आदेश होना चाहिए।

बीती ताहि बिसारि दे !

"अब दिल्लीवासियों और निर्वासितों पर असीम उत्तरदायित्व आ पड़ा है। सभीको एक-दूसरे के प्रसंग मे कभी-कभी मिलते-जुलते रहने का यत्न करना चाहिए। बीती बिसार देनी चाहिए। कल बहुत-सी मुसलिम बहने मुझसे मिलने आयी थी। उनमे से कितनी तो परदा रखती थीं। लेकिन मेरे पास उन्होने परदा छोड दिया। उन सब बहनो से मिलकर मुझे सतोष हुआ। अब हम लोग यह भलीभाँति समझ लें कि हम कानून अपने हाथ मे न लेगे। अन्याय का बदला हम न लेगे, बल्कि वह काम सरकार के सिपुर्द कर देगे। साथ ही शाति-समिति जाग्रत रहे।"

प्रार्थना के बाद शाम को ६॥ बजे जमशेदजी, जहाँगीरजी और दिनशाह मेहता के साथ बाते हुई।

जिन्ना का हृदय-परिवर्तन ?

···बापू कहने लगे : "मुझ पर पाकिस्तान के बारे मे क्या असर हुआ, वह बतलाता हूँ। आप कहते है कि जिन्ना साहब का हृदय-परिवर्तन हो गया है; लेकिन इसका सबूत क्या है ? फिर वे अब भी सरदार के लिए चाहे जैसा बोल रहे हैं। इनकी दलील झूठी है। अपने यहाँ कहावत है न कि 'नाच न आवे, आँगन टेढ़ा' !"

जहाँगीरजी ने दलील की कि "बबई मे गाधी-जिन्ना की भेंट के समय की स्थिति भिन्न थी और आज भिन्न है।"

बापू : "मेरी दृष्टि से जरा भी भिन्न नहीं। फिर मै तो काम को मानता हूँ, बातों को नहीं। जैसा वे कहते है, वैसा ही हो, तो सरदार के बारे मे ये सब अफवाहे क्यो उडाते है ?"

जहाँगीर पटेल : "ये लोग समझते है कि आपकी काफी गलतफहमी होती है। गुलाम मुहम्मद का वक्तव्य पढ़ा ?"

बापू : "मुझे अच्छा नहीं लगा।"

जहाँगीरजी : "उसने तो कहा कि मुझे तो मत्री की हैसियत से जवाब देना चाहिए।"

बापू : "इसीके वक्तव्य पर ही सरदार के सामने मैने जवाब दिया है और उसमे जवाहरलालजी भी थे ही। भाषा का चाहे जितना दोष निकालना हो, निकालते हैं। फिर भी अब अदालत को ही सौंपने की बात है। ५५ करोड़ तो क्या, पर दूसरे पॉच-दस करोड़ की बाते करते है। रिजर्व बैंक से इन लोगो ने कहा है और बाते ऐसी करते हैं कि हमने उससे कहा नही है। मै किसी दिन गुलाम मुहम्मद से मिलूँगा, तो पहला ही यह सवाल पूछनेवाला हूँ।"

जहाँगीरजी पटेल : "लेकिन वे मानते है कि आप सत्य के पुजारी है। स्वय भी साधु जैसे हैं और आपके प्रति भी उनकी हार्दिक सहानुभूति है।"

बापू : "ऐसे लोग मैने बहुत-से देखे है। लेकिन वे आचरण और काम मे साधु नहीं होते।"

जहाँगीरजी : "आपके अनशन के समय मुझसे जिन्ना साहब ने पूछा कि

तार करें ? मैंने कहा कि आपके दिल मे बैठता हो, तभी तार करें ! गांधीजी की हालत खराब है ही । सिर्फ पानी ही ले रहे है । इस तरह सब समझाया ।"

बापू : "उसकी तो मुझे कुछ भी जरूरत नही और न उसकी कुछ परवाह ही है ।"

पाकिस्तान का आन्तरिक अभिप्राय

जहाँगीरजी : "वे अब काफी सुधर गये है । अब्दुल निश्तर तो वकील है । उसने कहा है कि 'अथारिटी' के बगैर आयें, तो कुछ भी नहीं हो सकता ।"

बापू : "वह भी शाति तो पसंद करता है, पर अपनी शर्तों पर । वह किस काम की ?"

जहाँगीरजी : "यह कहने से पहले उसे समझना चाहिए । फिर भारत सरकार उसे आर्थिक दृष्टि से कमजोर बनाना चाहती है । तब अगर आप उसके साथ सचाई से बात करेंगे, तो वे आपके वफादार रहेंगे और मारकाट करेंगे, तो वे भी मारेंगे । यही मुसलमानों का और पाकिस्तान का आन्तरिक अभिप्राय है ।"

बापू : "इससे बढ़कर और कोई असत्य क्या हो सकता है ? आप देखिये तो सही कि भारत के लोग—हिन्दू और सिख, कितने दब गये हैं ? उसमे भी निर्वासितो और सिखो ने तो गजब की बहादुरी दिखाई है और इतने इतने दुःख झेलते हुए भी समता बरतने का वचन दिया है । यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं कही जा सकती । सात दिनो मे इतने गजब के परिवर्तन को आप और पाकिस्तान छोटी-मोटी बात समझते है ?"

कोई भरोसा नहीं !

मुझे लगा कि सरदार दादा डॉ० दिनशाहजी और जहाँगीर पटेल पर नाराज है, वह सोलहो आने सच ही है । बापू इतने थके हुए थे और सभी व्यर्थ की, निस्तत्त्व दलील कर रहे थे । अच्छा हुआ कि ये बातें चल रही थीं कि इसी बीच जवाहरलालजी आ खड़े हुए । बापू ने उनसे ये बाते कहीं :

"उसमें मुझे कुछ नहीं लगता । मै कितनी दफे मिल चुका हूँ । चीज तो वही है । जिन्ना साहब की मार्फत अब कोई फैसला हो ही नहीं सकता । किसीको

वहाँ जाना ही नहीं चाहिए। मुझे व्यक्तिशः भी नहीं जाना चाहिए। वहाँ लियाकत आयेगा, तो मैं जाऊँगा या नहीं, पता नहीं। मैं थक गया हूँ। हमारी हर बात का वे फायदा उठाते हैं। और उसका मेरे दिल में कोई भरोसा नहीं है!"

हत्या का षड्यंत्र : २२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२०-१-'४८

असंख्य पत्र

नियमानुसार ३॥ बजे प्रार्थना। प्रार्थना में श्री जमशेदजी मेहता भी उपस्थित थे। उन्हें मेरे साथ गीता के श्लोकों को कहते हुए देख प्रार्थना के बाद बापू ने उनसे गीता के विषय में पूछा। उनके साथ बातचीत की। आयी हुई डाक भी देखी। डाक में अभी तो खासकर बापू के अनशन त्यागने पर उस बारे में मुबारकबादी के ही पत्र आते हैं। डॉ० दिनशाहजी को बातचीत करनी थी, इसलिए मालिश और बाथ उन्होंने ही कराया। आज बापू का वजन १०७ हुआ। एक पौंड और बढ़ गया। बाकी सब कल की तरह ही खाने-पीने में तरल पदार्थ ही लिये। मिट्टी और कताई, मुलाकातें आदि नियमानुसार ही चल रहे हैं। ४ बजे एनिमा दिया गया। एनिमा लेने के बाद कमजोरी मालूम पड़ी। अभी चलने में सीधे पैर नहीं रख पाते। कमजोरी तो बहुत ही है। लगभग पूरा दिन बापू के पास ही बीतता है। जो कोई बापू की तबीयत का हाल पुछवाता है, तो उन सबको चिट्ठी से जवाब देना पड़ता है। असंख्य लिफाफे और पोस्टकार्ड तो ऐसे आते हैं कि उनमें जवाब के लिए टिकट भी होते हैं। इसलिए जवाब देने का काम मेरे जिम्मे है।

भावनगर का उत्तरदायी शासन

एक समाचार मिला है कि भावनगर के उत्तरदायी शासन बनने के बाद सभी राजा लोग एकत्र होकर काठियावाड़ को एक बनाने के निर्णय पर लगभग पहुँच गये हैं। बापू भावनगर में उत्तरदायी शासन सौंपते समय, अपने अनशन

के कारण, व्यक्तिगत रूप से कुछ भी सन्देश नही भेज सके। इसलिए आज प्रार्थना मे उसका उल्लेख करने का नोट मुझे लिखाया।

जोर का धड़ाका

'प्रार्थना में जाते समय ग्वालियर से बापू के नाम एक तार आया है कि वहॉ मुसलमानो को लूट लेने और मारने के यत्न चल रहे है। इस पर से मालूम पड़ता है कि अभी देश मे अन्दर-अन्दर आग धधक ही रही है।

आज बापू प्रार्थना-सभा मे कुर्सी पर ही गये थे। प्रवचन चल रहा था, वहॉ कही एकाएक इतनी जोर का धड़ाका हुआ कि कान बहरे ही हो जायँ। अभी बापू की आवाज बहुत ही धीमी हो जाने से मै तो बिलकुल उनके पास बैठकर लिखती रही और इस धड़ाके से इतनी डर गयी कि एकदम बापू के पैर ही पकड़ लिये। प्रार्थना की ''भीड़ के लोग भी जहॉ-तहॉ भाग गये। बापू लोगो को शान्त करने के लिए प्रवचन देने लगे। हाथ से बैठ जाने का सकेत करने लगे। लेकिन कौन कहॉ मानता है? मुझसे कहने लगे : "क्यो डर गयी? अरे! कोई सैनिक लोग गोलीबार की तालीम ले रहे होगे। यह तो ठीक, लेकिन तुझे और मुझे अगर कोई सचमुच गोली मारने के लिए आये, तो क्या करेगी?" लोगो से भी बापू ने यही कहा कि "कोई सैनिक लोग तालीम लेते होगे" और प्रवचन जारी रखा।

मुसलमान का दुश्मन हिन्दुस्तान का दुश्मन

आज के प्रवचन मे बापू ने कहा कि "अब दिल्ली मे भलीभॉति शान्ति स्थापित हो गयी है। इसलिए मुझे आशा है कि परिणाम अच्छा ही होगा। लेकिन कलकत्ते से मुझे चेतावनी दी गयी है कि परमेश्वर को उसमे कुछ भी भेद नही होगा (आर० एस० एस० के प्रतिनिधि की तरफ से कोई भेद नहीं होगा)। यहॉ आये हुए हजारो भाई-बहनों के दुःख का पारावार नही है। लेकिन वे भी शान्ति की इस अपील मे शामिल हुए है। इसलिए इतनी अच्छी दिल्ली सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को बचाकर दिली दोस्ती करने के काम मे बेजोड़ रूप में आगे रहेगी। हमारे नेता सरदार और जवाहर अलग नहीं है। अलग हो ही नहीं सकते। दोनों की बात एक ही है। कदाचित् कहने के ढंग मे अन्तर हो। सरदार कोई मुसलमानों के दुश्मन नही है। हॉ, अगर उन्हे कोई बनाने

का यत्न करे, तो वह उसके सामने टिक नही सकता। आप सबको समझ लेना चाहिए कि जो मुसलमान का दुश्मन है, वह सारे हिन्दुस्तान का दुश्मन है। अमेरिका मे आज भी हब्शियो को गुलाम के तौर पर हैरान कर छोड़ते हैं और फिर न्याय की लम्बी-चौड़ी बाते बघारते है। फिर भी उन्हे वैसा करने मे कुछ भी अनुचित नहीं मालूम पड़ता। लेकिन हम लोग उनके इस काम को गलत ही बताते है। हमारे अखबारवाले भी इस कुकृत्य की सर्वत्र निन्दा करते रहते है। इसलिए हम लोगो ने ईश्वर को साक्षी रखकर जो उम्दा निर्णय किया है, उससे चिपके रहेगे, तो हम बहुत ही ऊँचे चढ़ जायँगे।"

पाकिस्तान जाने की व्यग्रता

[बापू ने इतना कहा, तो इसी बीच वहाँ एकाएक धड़ाका होने से अत्यन्त अशान्ति छा गयी, जिसमे दस मिनट बीत गये। फिर शान्ति होने पर पुनः प्रवचन जारी करते हुए बापू ने कहा :]

"जैसा कि मै पहले कह चुका हूँ, कदाचित् अब पाकिस्तान जाने के लिए चल पडूँ। वहाँ की सरकार और डॉक्टर लोग मुझे आज्ञा दे, तो तत्काल ही चल पडूँगा। अभी मैंने अनाज नहीं शुरू किया है। उसे शुरू करने मे अभी करीब पन्द्रह दिन लग जायँगे।

जवाहर : अनमोल रत्न

"हमारा सौभाग्य है कि हमारे प्रधानमन्त्री सचमुच ही नाम जैसे गुण से भी अनमोल रत्न हैं। हिन्दुस्तान की इस रमणीय भूमि मे जवाहर तो सचमुच ही 'रत्न' पैदा हुआ है। इनका मकान मेहमानो से भरा रहता है। फिर भी अपने इस मकान मे उन्होने निर्वासितों के लिए दो कमरे अलग रखे है। उन पर आज इतनी सारी चिन्ताएँ है कि उनके पास गीला और सूखा, दो बिस्तर होगे, तो खुद गीला बिस्तर काम मे लेगे या अपना शरीर कसरत करके गर्म रखेगे। अगर समझदार वर्ग और बडे-बडे पूँजीपति इसका अनुकरण करे, तो देश के कितने ही प्रश्न अपने-आप हल होकर ही रहेगे।

बनावट से पेट क्यों भरना ?

"दूसरी, मुझे यह खबर दी गयी है कि मेरे अनशन से लाभ उठाकर कितने

ही आलसी लोगो ने करेन्सी नोट निकालना शुरू किया है। मै पूछता हूँ कि इस तरह बनावट करके पेट क्यो भरना पड़ता है ? क्या पेट का गड्ढा भरने का दूसरा कोई सच्चा मार्ग नही मिल पाता ?

कश्मीर की समस्या

"लाहौर से 'कश्मीर फ्रीडम लीग' के प्रधान का मेरे नाम एक तार आया है। वे सूचित करते है कि जब तक कश्मीर का प्रश्न हल नही होता, तब तक कोई काम सफल नही होगा। भारत सरकार को चाहिए कि कश्मीर से अपनी सेना वापस बुला ले और कश्मीर जिसका हो, उसे सौप दे।

"इस पर मै पूछता हूँ कि जब तक कश्मीर के प्रश्न का निर्णय नही होता, तब तक क्या वहाँ के हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के दुश्मन बनकर ही रहेगे ? फिर जब कश्मीर के महाराज और शेख अब्दुल्ला ने भारत-सरकार के पास सेना माँगने की बिनती की, तभी वहाँ सेना पहुँची है। कश्मीर जिसका है, उसे सौंप देने की बात तो ठीक है। लेकिन किसे सौंपा जाय ? बाहर से जो लोग वहाँ घुस गये है, वे पहले चले जायँ। फिर कश्मीर जिसका होगा, उसे सौंपने में किसीको भी कदाचित् ही कुछ हरकत हो। मै तो अभी-अभी अनशन कर चुका हूँ। मै किसीका भी दुश्मन नहीं हूँ और न किसीको अपना दुश्मन ही मानता हूँ। इसलिए तार भेजनेवाले भाई से प्रार्थना करता हूँ कि वे यहाँ आयें और अपनी बात मुझे समझाये।

ग्वालियर की हैरानी

"मैं यहाँ आ रहा था, तो ग्वालियर के मुसलमानो का मेरे नाम यह सन्देशा आया है कि वहाँ मुसलमानो को बेहद हैरानी भुगतनी पड रही है। आपकी मार्फत मै वहाँ के लोगो को सूचित करता हूँ कि इस तरह करने से हम लोग यहाँ किये हुए अपूर्व कार्य पर पानी फेर देगे।

"मुझे ऐसे समाचार मिले है कि काठियावाड़ मे छोटे-बड़े लगभग २०२ देशी नरेश है। उन सभी नरेशो ने मिल-जुलकर यह निर्णय किया है कि एक राज्य बनाया जाय। अगर यह निर्णय सच हो, तो स्वागतार्ह है और एक भव्य काम वे कर दिखायेगे। भावनगर राज्य ने अपना राज्य स्वेच्छा से, त्यागमय

रीति से प्रजा को सौंप दिया है। इसलिए मैं वहाँ के महाराज और प्रजा को हार्दिक धन्यवाद और मुबारकबादी आपकी मार्फत भेज रहा हूँ।"

हत्या का षड्यंत्र

प्रार्थना से जब हम लोग अन्दर गये, तो पता चला कि यह तो बापू को मार डालने का एक षड्यन्त्र था। मदनलाल नामक एक निर्वासित युवक बापू को मारने की कुछ फिराक में ही था। उसका विचार तो यह था कि हम लोग जहाँ बैठते हैं, उसके पीछे बिरलाजी का नौकर रहता है और वहीं से बम फेंककर एक साथ हजारों का खात्मा कर दिया जाय। लेकिन सौभाग्य से बिरलाजी के नौकर ने स्पष्ट कह दिया कि जैसे सब बैठते हैं, वैसे ही प्रार्थना-सभा में बैठिये न? इसलिए उसने इस तरह बम फेंका। वह बम फेंककर भाग रहा था कि एक पंजाबी बहन ने बहादुरी के साथ उसे पकड़ रखा और पुलिस के हवाले कर दिया।

बहादुरी कब?

यह समाचार देखते-देखते दिल्लीभर फैल गया और मुबारकबादी के टेली-फोन पर टेलीफोन आने लगे। हम लोग फोन उठाते-उठाते थक गये। आखिर रिसीवर नीचे ही रख दिया। लेडी माउण्टबैटन भी यह समाचार सुनकर बापू के पास दौड़ी आयीं। बापू बच गये, इसके लिए उन्हें मुबारकबादी दी। लेकिन तब तक बापू ने तो यही कहा कि "कहीं निकट में सैनिक अभ्यास ही होता होगा।" और······के बारे में बापू ने कहा कि "इसमें कुछ भी बहादुरी नहीं। जब मुझे सचमुच कोई मारनेवाला सामने ही आये और मैं उसका वार हँसते-हँसते झेलूँ और मन में 'राम' रटता रहूँ, तभी मुबारकबादी के लायक माना जाऊँगा।"

मदनलाल का बयान

हम लोग तो इस आदमी की जिस कमरे में जाँच चल रही थी, वहीं थे। जहाँ बापू बैठते हैं, वहाँ से ७५ फीट दूर यह बम फेंका गया। मदनलाल की उम्र अन्दाजन २५ साल की होगी। वह हिम्मत के साथ सारा बयान दे रहा था और कह रहा था कि महात्मा गांधी को मार डालने के लिए ही मैंने यह बम फेंका है। उसकी जेब में से और भी हाथ से बनाये बम के गोले भी निकले।

जमशेदजी भी आये हैं। बापू ने शाम को ७।। बजे का समय उन्हे दिया था। उन्हे तो कुछ पता ही न था। बिरला-भवन मे खूब भीड़ और धाँधली देख वे जिस किसी तरह भीतर तो आ पाये। वे कहने लगे : "कराची मे ऐसे लड़को से तो इसी तरह के काम लिये जाते है। मैने तो यह सब बहुत देखा है। इन लोगों को यह तालीम ही रहती है कि अगर पकड़ लिये जायॅ, तो किसी भी तरह का उत्तर नही देना और हॅसते ही रहना चाहिए।" मदनलाल ने तो एक ही जवाब दिया कि "हमे गाधीजी की सुलह-शान्ति पसन्द नही पड़ी, इसलिए हमने ऐसा किया है।"

रात को जवाहरलालजी, राजकुमारी बहन वगैरह सभी एक के बाद एक आते-जाते रहे। खुरो बापू को सिन्ध बुलाने के लिए राजी है, यद्यपि पण्डितजी को उनके इस कहने मे विशेष तथ्य नही दीखता।···१० बजे बापू सोये।··· का चित्र अभी डगमगा रहा है।···से बापू ने कहा : "ऐसा करने मे महान् पाप देख रहा हूॅ। उसकी अपेक्षा···'मुझे छोड़े या राजकोट चली जाय। या राष्ट्रीय पाठशाला मे संगीत भी सीखेगी। क्योकि इस बारे मे कनु और नारायण-दास एक ही विचार रखते है। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा है कि अब नारायण दास जैसे या कनु जैसे भी कुछ निर्णय पर नही पहुॅचते। इसलिए जो होना चाहिए, वह नही हो पाता।"

जाको राखे साइयाँ ! : २३ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२१-१-'४८

डरूॅ क्यो ?

नियमानुसार प्रार्थना ! रात मे तो मेरे मन मे लगातार, मदनलाल ने बापू को मारने के लिए जो षड़यन्त्र रचा था, उसीके विचार घूमते रहे। इस अशुभ कल्पना का चित्र ऑखो के सामने ही घूम रहा था। अगर कुछ हो जाता, तो क्या हाल होता ? 'जाको राखे साइयाॅ' यह कहावत सर्वथा सत्य है। इन लोगो का कितना बड़ा षड़यन्त्र होगा ? बापू ने तो सबको एक ही जवाब दिया कि

"भगवान् को मेरी जरूरत होगी, तब तक मुझे रखेगा और जरूरत न होने पर उठा लेगा। मै तो उसका दास हूँ, सेवक हूँ। मैं क्योंकर चिन्ता करूँ ?"

कल शाम को ही विरला-भवन में मिलिटरी रखी गयी। यों तो एक सुझाव यह भी दिया गया था कि प्रार्थना मे आनेवालो की तलाशी ली जाय, लेकिन साफ-साफ इसे इनकार कर दिया और काफी वाद-विवाद के बाद सरदार दादा के सन्तोष के लिए इतना पहरा रहने दिया।

प्रार्थना के बाद विरलाजी ने कहा भी कि "मुझे तो डर था कि आप इतनी पुलिस को कैसे रहने देगे ?"

मेरा रक्षक राम !

बापू ने कहा : "आपको जितनी दहशत लगती है, उतनी मुझे नहीं। फिर भी मै इसे 'ना' कह दूँ, तो सरदार और जवाहर की इन सब चिन्ताओं मे एक मेरी भी चिन्ता बढ जायगी। आज इन लोगो पर असीम जिम्मेदारी है और मैं तो मानता हूँ कि मेरा रक्षण करनेवाला राम ही है। उसे मुझे उठा लेना हो, तो लाखो मनुष्यो का चाहे जितना रक्षण हो, फिर भी कोई मुझे बचा ही नहीं सकता। लेकिन शासकों की मेरी इस अहिंसा पर श्रद्धा नहीं है। उनकी यही श्रद्धा है कि मुझे पुलिस का यह पहरेदार बचा सकेगा। तब भले ही वैसा किया जाय। इन दिनो अहिंसा को माननेवाला कदाचित् एक मै ही हूँ। ईश्वर से एक ही प्रार्थना है कि ऐसी अहिंसा कम-से-कम अकेला मैं ही दिखा सकूँ, ऐसी शक्ति दे। इसलिए मेरी रक्षा के लिए यहाँ पुलिस हो या न हो, सेना के बड़े-बड़े लोगो का सरंजाम रहे या न रहे, मेरे लिए सब समान ही है। कारण मेरा रक्षक तो राम है। बाकी सब बेकार ही है, इस विचार पर मै अत्यन्त दृढ़ होता जा रहा हूँ।"

आज युधिष्ठिर कहाँ ?

नियमबद्ध सारा दैनिक कार्यक्रम चलता है। अभी कमजोरी तो रहेगी ही, लेकिन मालिश के लिए धीमे-धीमे पैर रखते हुए चलकर जाना शुरू कर दिया है। बम के इस धड़ाके के बाद शायद बापू अपने बारे में और भी अधिक बेखबर न बन गये हो ? हर बारे मे और हर मौके पर वे यही कहते है कि "मेरी

क्या बात है ? ईश्वर को अभी मुझसे काम लेना होगा, इसीलिए उसने बचाया है। यों तो मानव ने जिस दिन जन्म लिया, उसी दिन से मृत्यु उसके साथ लगी है। उसकी चिन्ता हम लोग क्यों करे ?"

एक बातचीत में—अभी-अभी''के बीच अमुक विषयो मे एक विचार नही हैं। उसे''यह बापू से कहा : "बापू ! आप ऐसा क्यों नहीं सोचते कि किसीमे अमुक शक्ति कम होती है, तो किसीमे अधिक ! किसी शक्कर मे मीठा कम होता है, तो किसीमे अधिक। आप जब शुद्ध धर्म की बाते करते है, तब दूसरे आपद्धर्म की बातें करते है। युधिष्ठिर का जब स्वर्गारोहण हुआ, तो आगे ही आगे बढ़ते गये और उन्हींके सगे भाई एक के बाद एक गिरते गये।" बीच मे ही एक व्यक्ति बोल उठा : "लेकिन युधिष्ठिर के साथ कुत्ता भी तो था न ? और आपके दृष्टान्त के अनुसार स्वर्ग पहुॅचनेवाला आज ऐसा कुत्ता भी कौन है ? फिर वह तो पशु था, जब कि यहॉ मैं मानव की बात कर रहा हूॅ—ऐसा कोई मानवीय व्यक्ति तो नही है न ?" इस पर बापू ने कहा : "लेकिन आज ऐसा युधिष्ठिर भी कहॉ है ?" और सब हॅस पड़े !

दुश्मनी नहीं, दोस्ती

सिखो के एक प्रतिनिधि-मडल के साथ वार्तालाप मे ज्ञानी करतारसिह ने सिखो पर हुए अत्याचारो का वर्णन किया।

बापू ने एक बात नोट करते हुए कहा : "मैं जानता हूॅ कि वहॉ क्या हो रहा है। मगर इस तरह बुजदिली करके हमारा काम बननेवाला नही है। मैंने आज एक बात सुनी कि इन दिनो यू० पी० मे हिन्दुओ को ऐसा लगता है कि अगर हम दाढ़ी रखेंगे, तो बहादुर बन जायॅगे। लेकिन इस तरह बहादुर थोड़े ही बनते है ? मै आपका ग्रन्थ साहब पढ़ता हूॅ, तो आपको खुश रखने के लिए थोड़े ही पढ़ता हूॅ या आपको पूछकर थोड़े ही पढ़नेवाला हूॅ। मगर ऐसा कहे कि 'दाढ़ी रखो, कृपाण रखो और अमुक-अमुक रखो', तो यह सब गुरु साहब ने कहीं नहीं लिखा है। 'मुसलमान हिन्दुओ को जहरी सॉप मानते हैं', तो आपको फाका छुड़वाने की कोशिश नही करनी थी। अगर ऐसा है, तो मुझे खाना जहर-सा लगेगा। मुझे पता चले कि सब दगा ही दगा है, तो निकम्मा है—यह मैंने मुसलमानो से साफ-साफ कह दिया था।

"आज का नजारा आले दरजे की बहादुरी है। अब बदला दुश्मनी का नहीं, दोस्ती का लेना है। आपकी बात मुझे मान्य है। अच्छा हुआ कि आपने सब बातें बतायीं। अब दिल्ली में पूरी शान्ति है, तो मैं कौन-सी सिक्युरिटी माँगनेवाला था! मगर दगा होगा, तो मुझे यह सन्तरे का प्याला जहर जैसा लगेगा। अभी तो यह तीसरा दिन (उपवास छोड़कर) है। जब मैं तैयार हो जाऊँगा, तब जो कहना चाहे, कहे और करे।"

गांधी आप जैसा ही

ज्ञानी करतारसिंहजी: "दुःखी आदमी की अक्ल ठिकाने नहीं रहती। सभी महात्मा गांधी तो नहीं हो सकते।"

बापू: "महात्मा गांधी न फरिश्ता है और न शैतान। वह सिर्फ आप जैसे इन्सान ही है।"

सिख भाई: "नहीं, हमारे महात्मा गांधी तो एक ही है।"

बापू: "क्या आप दो है?"

सिख भाई: "दुनिया के कोने-कोने मे आपकी आवाज पहुँचती है।"

बापू: "ठग भी दुनिया मे बहुत है न? (हँसी)। शेखपुरा मे जो कत्लेआम हुआ, वह तो नादिरशाही से भी ज्यादा हुआ। रावलपिंडी मे भी वही था। इसलिए अब मै शेखपुरा का नाम क्या लूँ? किसने ज्यादा और किसने कम काटा, यह कहने का अब कोई मतलब नहीं है। सिखो ने तो इस वक्त ऐसी बहादुरी बतायी है कि मैं सचमुच उनका एहसान मानता हूँ। इतना दुःख होते हुए भी मेरा फाका छुड़वाने के लिए उन सबने तमाम शर्तें मंजूर कर रखी है, यह कोई कम नहीं है। मगर एक इन्सान जितना ज्यादा-से-ज्यादा कर सकता है, उतनी कोशिश मैं कर रहा हूँ।

जिन्ना का हुक्म

"मेरे पास तीन पारसी आये है। वे लोग जिन्ना साहब और पाकिस्तान के नेताओं से मिलकर आये है। उन्होने कहा कि कराची में बहुत ज्यादा लोगों को परेशानी तो जरूर हुई। मगर कराची मे सब शरमिन्दे भी हुए है। कोई ऐसा नहीं कहता कि हमारी गलती नहीं हुई। अब जिन्ना साहब ने हुक्म दिया

है कि एक भी आदमी इस तरह गुनहगार होगा, तो उसे कड़ी सजा होगी। लूट का माल अफसरों के घरो मे से निकाला गया है। इसलिए मै- आपको यकीन दिलाता हूँ कि मुझसे जितनी सेवा हो सकेगी, उतनी करनेवाला ही हूँ। आखिर मुझे तो करना है या मरना है। कल ही आपने देखा होगा, मगर मैं मानता हूँ कि राम को अभी भी मेरे पास से कुछ काम लेना ही है, तो मुझे करना ही है।"

प्रार्थना-सभा मे पहुँचने मे दस मिनट देर हुई। बापू ने सबसे माफी मॉगी और अपने प्रवचन मे कहा :

सौभाग्य की प्रतीक्षा

"कल जो धड़ाका हुआ और उसके बावजूद मैने जो शान्ति रखी, इसलिए बहुत-से लोग मुझे शाबासी देते है। मुबारकबादी के तार और टेलीफोन तथा चिट्ठियाँ लिख रहे है। लेकिन वस्तुतः देखा जाय, तो इसमे किसी तरह की बहादुरी की, यह कहा ही नही जा सकता। जब बम का धड़ाका हुआ, तब मुझे यही लगा कि आसपास कहीं सैनिक लोग अभ्यास करते होंगे। लेकिन बाद मे ही यह खबर लगी कि यह तो मुझे मारने का षड्यन्त्र ही था। सच्ची बहादुरी तो तभी कही जायगी, जब मेरे सामने ही बम फूटे और मैं न डरूँ और आप देख सकें कि उस समय भी मैं हॅसता हुआ ही आपसे बिदा लूँ! इस सौभाग्य की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। लेकिन आज लोग जो मेरी प्रशसा कर रहे हैं, मै उसके योग्य हूँ ही नहीं।

भगवान् दण्ड देगा

"आप सबसे मेरी यह विनम्र प्रार्थना है कि जिस भाई ने यह काम किया है, उसको कोई भी नफरत से न देखे और न उसका तिरस्कार ही करे। उस बेचारे को यह लगता होगा कि मै हिन्दू-धर्म का दुश्मन हूँ। इस युवक पर तो मुझे दया ही आती है। फिर भी उसने बड़ी बहादुरी के साथ पुलिस को बयान दिया है। हम सब जिसे दुष्ट मानते हो, उसे सजा देने का हमारा अधिकार नहीं। जो सचमुच दुष्ट होगा, उसे सजा देने के लिए भगवान् बैठा ही है। फिर भी इस तरह हिन्दू-धर्म को बचाया ही नही जा सकता। मै बचपन से ही सर्वधर्मों के प्रति समादर दिखाता आ रहा हूँ। अगर मेरे हाथों हिन्दू-धर्म का रक्षण होना हो, तो ईश्वर मुझे यह भावना सभीमे प्रकट करने के लिए निमित्त बनायेगा।

प्रेम से जीतें !

"कल सिख भाई मुझसे कह गये कि इस काम में उनमें से किसीका हाथ नहीं है। वह एक सिख या मुसलमान चाहे जो हो, उससे क्या ? मैं यही प्रार्थना करूँगा कि भगवान् उसे सन्मति दे। मैंने आई० जी० पी० से भी कह ही दिया है कि उसे कोई सताये नहीं, इसका ध्यान रखें। उसे प्रेम से जीतने का यत्न करना चाहिए। अगर उसे यह प्रायश्चित्त हो कि ऐसा करके मैंने किसीकी भी सेवा नहीं की, तो वह दया का पात्र ही है। लेकिन अगर आपके मन में...भी यह लगता हो कि बूढ़े ने व्यर्थ ही अनशन किया और चूँकि अनशन में मर जाय, तो कलंक का टीका लगेगा, इसलिए...मुझे जिलाने के लिए ही यह प्रयत्न हुआ, तो आप सौ गुनहगार हैं। लेकिन अगर आपको यह लगता हो कि दिल्ली में अशान्ति करने में हम लोगों की ही बदनामी है, तो वातावरण का असर उस भाई पर अवश्य ही होनेवाला है। दुनिया में कहीं ठिकाना ही नहीं रहता।

"इस प्रार्थना-सभा में ही आप सब भगवान् का नाम लेने और उसका काम समझने के लिए एकत्र हुए हो, ये चारों ही तरफ घूमनेवाले पुलिसवाले या और कोई आपकी मदद के लिए न पहुँचे, गोलियाँ दनादन छूटती हों और फिर भी मैं मुक्त मन और मुक्त कंठ से रामनाम लेता तथा लिवाता रहूँ—जब ईश्वर मुझे ऐसी शक्ति देगा, तब मैं सचमुच धन्यवाद का पात्र हो सकूँगा।

"मैं यह जानकर खुश हुआ कि बम फेंकनेवाले को एक अबला बहन ने हिम्मत के साथ पकड़ रखा। मैं मानता हूँ कि बलवान् हो या निर्बल, गरीब हो या पूँजीपति, लेकिन जिसका मन साफ है, उसके पास सभी कुछ है। चाहे जो हो, लेकिन आप सबका मेरे प्रति जो अपार प्रेम है, मैं उसके लायक बनूँ, यही भगवान् से प्रार्थना है।

पाक सरकार से प्रार्थना

"बहावलपुर के भाई अत्यधिक घबरा उठे हैं। आज ही मेरे नाम वहाँ के नवाब साहब ने तार भेजा है कि उनसे जितनी बनेगी, पूरी मेहनत करेंगे। बम्बई से सिख भाइयों का तार है कि सिंध में दस-पन्द्रह हजार सिखों का जान-माल भारी संकट में पड़ गया है। मैं यहीं से पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना

करता हूँ कि वे सिखो को विश्वास दिलाये कि "आप यहाँ रहे, तो हम आपकी रक्षा करेंगे।" अगर ऐसा न कह सको, तो सभी सिखो को एक जगह इकट्ठा कर पूरी सुरक्षा के साथ यहाँ भेज दे। सिखो जैसी बहादुर जनता पर और उसकी इज्जत-आबरू पर हाथ डालने की किसीकी ताकत नही देखता। सिख जनता धैर्य रखे। मैने हालत देखने के लिए आज ही अपने तीन निजी पारसी भाइयो को भेजा है।

बयालीस का ही परिणाम

"एक भाई ने १९४२ के और अभी के मेरे अनशन की तुलना करते हुए लिखा है कि अगर आपका शरीर छूट जायगा, तो और भी अधिक हिंसा फूट पड़ेगी आदि।

"यह सच है कि १९४२ मे मेरे जेल जाने के बाद हिंसा फूट पड़ी। आज हम उसीके कारण भुगत रहे हैं। अगर उस समय सारा देश अहिंसक बना रहता, तो आज हमारी यह दशा कभी भी न होती। मुझे बचाना होगा, तो भगवान् ही बचायेगा। अगर अहिसा से भरा मानव मरता है, तो भी नुकसान नही होगा। मै तो गरीब मनुष्य हूँ। मुझे किसी बात की बिसात नही है। ईश्वर तो बिना बिसात के गरीब मानव को निमित्त बनाकर स्वय जो चाहता है, करने मे समर्थ ही होता है।

"दिल्ली मे अब हिन्दू-मुसलिम दंगे नहीं होते, यह सुनकर मुझे सन्तोष हुआ। मुसलिम बहने भी अब खुलेआम घूम-फिर रही है, इससे भी मुझे सन्तोष होता है। हम अपने हृदयो, अपने दिलो को भगवान् का मन्दिर बनाये, यही प्रार्थना है।"

खतरा मिटा नही

प्रार्थना के बाद बापू कुर्सी पर ही भीतर गये। मुलाकातो का ताँता ही लगा हुआ है। आने के बाद प्रवचन देखा। सिन्ध की यह असह्य कहानी सुनकर सभीका हृदय द्रवित हो उठता था। देखे, अब बापू कौन-सा नया कदम उठाते हैं !

रात मे पण्डितजी के साथ घण्टेभर बातचीत की। अवश्य ही यह अनशन और बम की घटना भयानक थी। लेकिन मालूम पड़ता है कि अभी बापू पर

से खतरा नहीं मिटा। फिर भी उनके लेखों, विचारो और प्रवृत्तियो से अभी भी कुछ नया ही या जनता को चमका देनेवाला कृत्य करने का रग-ढग दीख रहा है। दो दिनों में कार्यसमिति की बैठक भी होने जा रही है। उसमे क्या होता है, देखे। अभी तो दबी आग जैसा ही लगता है। शान्ति का कोई असर नहीं दीखता।

पाप को किसीका सहारा नहीं

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई। मैं तो भाई साहब के साथ बातें करने और लिखने मे रोक ली गयी। अब सबको समझने लगा है और सभी एक ही बात कहते हैं कि "अब पता चलता है कि सभी बापू के कितने वफादार है।" सस्ती कीर्ति मिल जाती है, इसलिए सभी बापू के पास पहुँचते हैं। लेकिन बापू कितने उदार हृदय है कि सभीका कितने प्रेम से स्वागत करते है।

मेरे मन मे विचार आया कि नारायणदास काका जैसे और जितनो को बना, सबको भाई ने उपदेशात्मक पत्र तो लिखे, पर उन्होने जुदी बात नहीं पायी। लेकिन अब तो मुझे सब पर अपार दया आती है। उनमे एक बंगाली बहन, जो नोआखाली से आयी हैं, भी चर्चा की विषय बन गयी हैं। उनकी अपेक्षा···विवाह ही कर ले, तो सभीके लिए शोभास्पद होगा, यही दीखता है। बापू मुझसे कहते : "सभी जैसे है, अपने-आप दीख पड़ेंगे। उन्हे वैसा दिखलाने मे कोई निमित्त न बने, इसीमे लाभ है। मैंने आज ही प्रार्थना मे कहा है न कि पाप को किसीका भी सहारा नहीं होता। इसी कारण सभीको बैठाकर इतने भारी विरोध के बीच भी तुझे तार कर महुवा से ठेठ नोआखाली तक बुलवाने का यही उद्देश्य था। उनकी दृष्टि से ही···इन सबको देखने दो। हम लोग कहाँ है, कहाँ थे और कहाँ जायेंगे?"—पैर धोते हुए बापू ने ये शब्द कहे।

● ● ●

विस्फोट : जाग्रति का शुभ लक्षण : २४ :

विरला-भवन, नयी दिल्ली
२२-१-'४८

'बा' के श्राद्ध पर उद्गार

आज बड़ी बा के मासिक श्राद्ध के निमित्त गीता-पारायण हुआ। आधा पारायण सुनने के बाद बापू बीच मे ही सो गये। अभी कमजोरी तो है ही।

प्रार्थना के बाद मेरे साथ रात की सारी बातें कीं : "मुझे लगता है कि जिन लोगो को धिक्कार सहना पड़ा है, उन्हे चाहे जब अपना हृदय अपने-आप खोलना ही पड़ेगा।"···नोआखाली से···अपने साथ लायी हुई 'दीदी' के बारे में बातें कहते हुए बापू कहने लगे : "यह भी मेरी ऑखों से ओझल नहीं है। लेकिन मैं अब किसीका काजी क्यो बनूॅ? सभी खुद ही अपने काजी बने और समाज मे जिस तरह रहना हो, उस तरह रहे। काग्रेस, भारत और पाकिस्तान के विषय मे भी मेरी यही नीति है। कल की कौन जानता है? लेकिन अब जब तक अपने जीवन का अन्तिम श्वास चले, तब तक पूरी सचाई से ही रहना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि अपने विचारो को माननेवाला मै अकेला ही हूॅ, लेकिन अब उनमे परिवर्तन नही हो सकता। जैसे ही जैसे मै सोचता हूॅ, वैसे ही वैसे अत्यन्त दृढ़ होता जा रहा हूॅ। किन्तु जिनका मेरे विचारो के साथ प्रहारभरा विरोध है, उन्हे अपनी छाती पर हाथ रखना होगा। मै मानता हूॅ कि बम का धड़ाका अनिवार्य रहा। मेरी जाग्रति के सुलक्षण ही भगवान् ने भेजे है। आज इस यज्ञ की और अपनी अत्यन्त कसौटी मे तू अगर शुद्धता के साथ टिक पायी है, तो कदाचित् इसी तरह आगे भी टिक सकेगी। क्योकि तू मेरे पास स्वेच्छा और निःस्वार्थ भाव से आयी है। लेकिन और सब लोगो की अधिक कसौटी जो मैंने नहीं की, उसे अब करना नही चाहता। उसकी कसौटी समाज करेगा ही। उसीमे समाज और साथियो का भला है। मुझे तुझसे यह बात कहनी ही थी।

तेरी सच्ची मॉ हूँ!

"आज बा की मरण-तिथि के उपलक्ष्य मे गीता-पारायण चल रहा था, तो उस

समय मैं गहरे विचार मे था कि···के जैसो का यह हाल ? इस बंगाली महिला के पीछे यह भावना ?···के जैसी इतना झूठ बोल सकती है ? नोआखाली से या राजकोट से ···ये दोनो आज चुप बैठे है ? लेकिन भगवान् कहता है कि तुझे मैं एक के बाद एक सभीका असली रूप दिखला दूँ। इसीलिए यह धड़ाका भी किया। इस धड़ाके के पीछे भारी गंभीरता भरी हुई है और उसे कोई पहचान नहीं सकता। लेकिन अब इस चर्चा मे आज तुझे फँसाने मे कोई लाभ नहीं है। मैं अत्यन्त दबा ही हुआ हूँ और उस तरह तुझे तो मुझे समझाना ही चाहिए। तू अपना तो बेड़ा पार ही समझना। और जैसा कि मैंने कल की प्रार्थना-सभा में कहा, मुँह मे राम का नाम हो, तेरी गोद हो और हँसते-हँसते ही किसीके छर्रे या बदूक की गोली का वार झेलता रहूँ। इसलिए दुनिया कहे या न कहे—क्योंकि वह दुरगी है—पर मैं तुझसे कहता हूँ कि तू मानना कि मै तेरी सच्ची माँ हूँ। सच्चा महात्मा हूँ। अगर ऐसा ही कुछ हो, तो अब मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा। अब जा और बिसन को भेज दे, 'हरिजन' की तैयारी करनी है।···"

बहुत दिनो बाद बापू ने इस तरह की बाते कहीं। इन्हे तुरन्त लिख रही हूँ। बापू डाक देख रहे है। उनके पास 'हीटर' रखा हुआ है।

क्षणभर तो बापू ने कही हुई बात के चित्र की कल्पना की। लेकिन ऐसा तो वे कहते ही रहते है। मै तो मानती हूँ कि बापू का अपघात ही टल गया। अब कुछ भी नहीं होगा। और बापू १२५ वर्ष तक जियेगे ही। लेकिन वे 'दीदी' की बात पर कहते थे, इसलिए उनके हृदय मे···साथियो की ठगी के बारे मे कदाचित् वेदना भरी हो। इसीलिए बड़े ही गभीर दिल और चेहरे से कह रहे थे। मैंने इस बारे मे उनके सामने कुछ भी नहीं कहा, क्योंकि सुबह-सुबह बापू का व्यर्थ समय खराब होगा और वे थक जायेगे। और किसीकी नाराजगी उठानी पड़े, लेकिन बापू के पास सभीके···पेश ही हो गये और मुझे खासकर लिख लेने के लिए कहा है। इसमे कुछ आन्तरिक हेतु होना चाहिए। देखें, क्या गुल खिलता है ? मुझे हर घड़ी डर लगता है कि इतने शिष्य, साथी और विद्वानो के रहते इन दिनों बापू के निकट मेरा स्थान इतना प्रमुख हो गया है। वे मुझे ऊँची दृष्टि से देखते है, सिखलाते है, तो कदाचित् कहीं गहरी खाई में गिरने का मौका न आ जाय। इसलिए बापू जब-जब मुझे किसीके बारे मे

कहते या लिखते है, तो अच्छा ही नहीं लगता। कही इतना ऊँचा चढ़ाते है, तो कभी गिरने का समय न आ जाय। इसकी अपेक्षा बीच की स्थिति ही ठीक है।

दूसरा जवाहर नहीं

रामदास काका १२ बजे आये थे। वे आज नागपुर जानेवाले है। बापू सुशीला बहन को वहावलपुर भेजनेवाले है।...एक बात की खोज के लिए। बापू कहने लगे : "...की जवाहर के साथ तुलना हो ही नही सकती। इस परिवार की शिक्षा ही अलग है। भारत मे बैरिस्टरो या धनवानो की कमी नही। मुझे बता कि क्या भारत मे दूसरा भी कोई जवाहर है ?"

बापू का और सब तो नियमानुसार ही चला करता है। भोजन मे अभी अनाज शुरू नही किया है। वजन १०८ पर पुनः स्थिर है। अब तो मुसलमान कोई खास शिकायत नही करते। दिल्ली मे भलीभाँति शान्ति दीख रही है।

सब कुछ भगवान् के हाथ

आज बापू धीरे-धीरे प्रार्थना-सभा तक चलकर ही गये। उनके पैरों मे अभी ताकत नही आयी। खभे तक हाथ था, तब साधारण तबीयत से बापू के टेकने का वजन मालूम नही पड़ता था। लेकिन आज हाथ के टेकने का वजन मालूम पड़ता था। यही बताता है कि अभी बापू को कमजोरी तो है ही।

फिर भी यह सच है कि चलते हुए जाते देख सभीको बहुत आनन्द हुआ। बापू ने आज के प्रवचन मे कहा : "आप देख सकते है कि ईश्वर धीरे-धीरे मेरे शरीर मे ताकत भर रहा है। मैं आशा करता हूँ कि अब जल्दी ही पहले जैसा हो जाऊँगा। लेकिन आखिर सब कुछ भगवान् के ही हाथ मे है।

"एक भाई का अभी मुझे एक लिखित सन्देश मिला है कि जवाहरलालजी और अन्य मंत्रियो या अधिकारियों ने अपने-अपने घरो मे रहने की व्यवस्था कर दी है। लेकिन उनमे कितने समा सकते है ? और बडे लोग तो बातें ही करना जानते है।

"यह सवाल लिखनेवाले भाई की बात यो तो सच्ची है कि इतनेभर से शरणार्थियो को पोसा नही जा सकता। लेकिन ऐसा करने से एक प्रकार का

आदर्श उपस्थित हो जाता है। इसी तरह दुखियों पर उनके प्रति दिखाई हुई सहानुभूति का असर भी पड़ता है।

स्पर्धा : देश की मृत्यु

"दूसरी एक बात यह आयी है कि लोग कहते हैं : 'पहले कांग्रेस को एक लाख रुपये जुटाने मे बड़ी ही मुश्किल पड़ती थी। लेकिन आज हम लोगों के पास करोड़ो रुपये तो आये ही हैं, पर इनके सिवा और भी इतने रुपये उगाहने हो, तो कोई कठिनाई नहीं होगी।' पैसा इकट्ठा करने की ताकत हममें आयी, यह ठीक ही है। पर मैं देखता हूँ कि खर्च तो अंग्रेजों के जमाने मे चलता था, वैसा ही चल रहा है। इस नाजुक समय मे शौक के खातिर तो पैसा खर्च किया ही नही जा सकता। हम सोचे कि अमुक बारे मे हमे विलायत के साथ स्पर्धा करनी है, तो ऐसा करने मे भले ही आज हमे कोई रोक नहीं सकता। लेकिन इतना याद रखना चाहिए कि वहाँ की अपेक्षा यहाँ प्रति व्यक्ति हमारी आय बहुत ही कम मानी जायगी। अगर हम जैसा गरीब देश खर्च करने के बारे मे विदेशो के साथ स्पर्धा करने लगे, तो देश की मृत्यु ही समझिये। यह बात विदेशों मे जानेवाले हमारे प्रतिनिधियों पर भी लागू होती है। हम कांग्रेसी ही कहा करते थे कि हमारा राज्य होने पर हम यह सब (फिजूलखर्ची) बन्द कर देंगे। तब फिर अब अमेरिका से स्पर्धा करके खाने-पीने, पार्टी या मौज-शौक के पीछे व्यर्थ पैसे का अपव्यय करना छोड़ देना चाहिए। किन्तु आज मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि हम अभी ऐसा नही कर पाये है। मनुष्य को आत्म-शुद्धि का प्रयास करना चाहिए। पैसे से या पैसा बिगाडने से किसीकी कीमत नहीं बढती।

आत्मशुद्धि-यज्ञ मे समान भाग

"मैने कुछ दिन पूर्व आपसे ग्वालियर के दंगे की बात कही थी। लेकिन आज एक खुशखबरी सुना रहा हूँ कि ग्वालियर के महाराज ने अपनी प्रजा को उत्तर-दायी शासन सौंपना तय कर लिया है। प्रजामण्डलवाले यह शासन-सत्ता भले ही स्वीकार करें, यह तो प्रसन्नता की ही बात है। लेकिन साथ ही साथ उसमें अगर हिन्दू-मुसलिम-वैमनस्य घुस जाय, तो बड़ी कठिनाई हो जायगी। महाराज

को तो प्रजा का सेवक बनकर रहना है। आज की आत्म-शुद्धि के यज्ञ में क्या राजा और क्या प्रजा, सभीको समान रूप से ही अपना भाग अर्पण करना होगा। तभी आज की दुनिया की इस कठिन परिस्थिति से उद्धार पा सकते हैं।"

प्रार्थना के बाद बापू घूमने नहीं गये। धीरे-धीरे आये। डॉक्टर और सभी मुलाकाती बैठे ही हुए थे। आकर उनसे बातचीत की। वर्किंग कमेटी में पेश किये जानेवाले मुद्दों पर चर्चा हुई। पण्डितजी आये। उसके बाद प्रवचन लिखकर सोने की तैयारी हुई।

असीम वात्सल्य

मैं मालिश कर रही थी, तो पुनः मुझसे कहा : "मैंने सुबह तुझे जो-जो बातें कही हैं, उन्हें नोट कर कल मुझे देना। उस बारे में अभी किसीसे चर्चा करने की जरूरत नहीं। तुझे तो मुझे बतलाना ही चाहिए। अगर न बताऊँ, तो मेरा धर्म भ्रष्ट हुआ माना जायगा। इसीलिए तुझसे कहा। तू सुखी और स्वस्थ रहेगी, तो मैं जीत गया।"

बापू के अपार प्रेमभरे वात्सल्य की तो सीमा ही नहीं! इतनी-इतनी कठिन समस्याएँ रहने पर भी इनकी सावधानता और कार्यदक्षता को कदाचित् ही कोई उपमा दी जा सकती है। कुछ अजीब ही लेना ले रही हूँ।

मैं भी बातचीत कर और अपना काम पूरा कर ११ बजे सोयी। आज बापू के लिए दतवन कूचने में काफी देर हो गयी। कहाँ कूचा जाय, जिससे बिरला-भवन में सोये हुए लोगों को शोर न हो। आखिर दरवाजे पर जाकर कूचा। पुलिस का पहरा है, इसलिए कम्पाउण्ड और बँगला काफी सजग है।

अहिंसक साम्राज्य का अवसर : २५ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली

२३-१-'४८

सेवा सफल हो!

नियमानुसार प्रार्थना के बाद बापू ने मेरी डायरी ही माँग ली, उसे देखा और उसके बारे में अपना निम्नलिखित अभिप्राय लिखवाया :

"चि० मनुड़ी,

तेरी डायरी बहुत दिनों बाद देखी। बहुत ही प्रसन्न हुआ। तेरी परीक्षा तो पूरी हो गयी है। तूने मेरी सेवा में अद्भुत भक्ति दिखलाई। परिवार और उससे बाहर अब तक मुझे ऐसी शुद्ध छोकरी नहीं मिली। इसीलिए किसीकी भी माँ न बनकर तेरी माँ बना हूँ। फिर तेरे नोट मे तेरे मन की अस्वस्थता क्यों दीख पड़ती है? और वह मुझे बतायी क्यों नहीं?···की या किसीकी तुझे किस बात की दरकार करनी चाहिए? यह लड़की मुझे छल रही है। लेकिन सच पूछो तो छला जानेवाला छला जाता है। इस महायज्ञ मे तेरी अद्भुत सेवा की मेरे मन मे अपार कीमत है। लेकिन तेरा अपराध इतना ही है कि तूने अपना शरीर सर्वथा बिगाड़ डाला। उसमे तेरी शारीरिक मेहनत की अपेक्षा तुझे तेरा संकोच मारे डालता है। कौन जानता है कि फिर बम फूटे और कदाचित् मैं राम-नाम लेता-लेता तेरी पास से चला न जाऊँ? अगर ऐसा हो, तो तू शत प्रतिशत जीत गयी। यह देखने के लिए मैं जीवित न रहूँगा! लेकिन ये अक्षर और तू तो जीवित रहेंगे न? और मैं तो तभी विजयी माना जाऊँगा, जब कि तू ७० वर्ष की बुढ़िया के बदले, जैसी कि अभी दीखती है, १७ वर्ष की खिलती बालिका बन जायगी। तू देख कि ईश्वर कितनी सहायता कर रहा है? सभी जैसे हैं, वैसे अपने-आप दीख पड़ रहे है न? लेकिन क्या कांग्रेस मे भी ऐसा ही अँधेर है? आज यह लंबी चिट्ठी लिखी है। इसकी नकल जयसुखलाल को भेज देना।

२३-१-'४८ —बापू के आशीर्वाद।"

[इस प्रकार मेरी डायरी में, लेटे-लेटे ही कमजोरी के कारण मेरे हाथ से ही लिखवाया और अपना हस्ताक्षर, यह लिखकर कर दिया कि "तेरी सेवा सफल हो", बापू के आशीर्वाद। न०···दि०···, बिरला-भवन। फिर छह बजे]

इसके बाद दूसरे नोट में···की आयी चिट्ठी का उत्तर दिया।···इस भाई ने यह लिखा था :

"परम पूज्य बापू की सेवा में,

दोपहर को पता चला कि आपका अनशन शुरू हुआ है। अनशन के बीच आपको कष्ट देना नहीं चाहता। लेकिन आज तो यह बिना लिखे नहीं रहता—

दोस्ती असम्भव

(१) आपके अनशन के पॉच-सात दिनो के भीतर हिन्दू-मुसलमानों के बीच दिली दोस्ती हो जाय, यह असंभव है। हॉ, ऐसी एकता हो गयी है, इसे दिखलानेवाले जुलूस और सभाओं के प्रदर्शन काफी होंगे। वे हों, यह ठीक ही है। फिर भी पूरी तरह हृदय की एकता के सबूत के तौर पर नही। इसीलिए आपका अनशन टूट जाय, तो इस भ्रम मे न रहे कि हृदय की एकता भी आ गयी है। कलकत्ते की शान्ति को मै हृदय की एकता नही मानता। लेकिन आपके अनशन से इतना हो सकता है कि हिन्दू अपना गुस्सा काबू मे रखकर निर्दोष मुसल्मानो का कत्ल न करे। मै मानता हूॅ कि आपके अनशन टूटने के लिए इतना काफी होगा।

गृह-युद्ध की सूचना

(२) आपने अपनी तपस्या से जनता के हृदय मे अपूर्व स्थान पाया है। दूसरी ओर लोगो मे शरीर मरे, तो उसकी चिन्ता ही क्या है? आत्मा अमर है, ऐसा ज्ञान पैदा नही हुआ है। इसलिए आपका शरीर क्षीण होता हुआ देखने के लिए लोग तैयार नही है। फलतः इस शरीर को बचाने के लिए लोग अपना गुस्सा और तिरस्कार दबा देगे। दबा क्रोध मौका पाकर भभक उठता है। मुझे लगता है कि इसी विचार के कारण अपने देश के सामने भारत का विभाजन करने की अपेक्षा 'सिविल वार' ही पसद करने की सूचना पेश की हो।

केन्द्रित उत्पादन क्यो ?

(३) अगर लोगो के दिलो से द्वेष और क्रोध निकाल फेकना हो, तो सरकार को चाहिए कि उन्हें अपना जीवन रचनात्मक कार्यक्रम पर ही रचने की शिक्षा देनी चाहिए। लेकिन आज तो मै अखबारों मे पढता हूॅ कि थोड़े ही दिनो मे ६०० ट्रैक्टर और ६००० से अधिक आमोनियम सल्फेट खाद विदेश से यहॉ आनेवाली है। देश की सुरक्षा के लिए देश के औद्योगीकरण की बात तो ठीक है। लेकिन जीवन की मुख्य आवश्यकताओ—अन्न और वस्त्र—को केन्द्रित उत्पादन का सिद्धान्त क्यो लगाया जाता है, यह समझ मे नहीं आता।

जहाँ आज अमेरिका मे लोग प्राकृतिक खाद की ओर आकृष्ट हो रहे है, वहीं हम लोग रासायनिक खाद की शुरुआत करते हैं।

मुसलमान पूर्ण निर्दोष नहीं

(४) भारत के मुसलमान हमें जितने निर्दोष दीख पड़ते है, उतने नहीं है। यह बात मैं अपने निजी अनुभव से कह रहा हूँ। फिर दिल्ली के मुसलमान आपसे अपनी जो करुणाजनक स्थिति बताते है, उससे यह न समझ ले कि हिन्दुस्तान के सभी मुसलमान या उनमे अधिकतर निर्दोष हैं और दयनीय स्थिति में जी रहे हैं। इसके विपरीत बहुत बड़ा भाग यह आशा लगाये बैठा है कि कब पाकिस्तान चढ़ाई कर देता है और हम अपना सौभाग्य प्राप्त करते हैं। कितने ही गॉवों के लोगो की कल्पना नहीं करता, लेकिन ये लोग भी बच्चो की छोटी लकड़ी का काम करेंगे। इसलिए मै मानता हूँ कि आज पाकिस्तान जो अपनी मर्यादा नहीं समझता, उसका कारण यह है कि उसका पूरा विश्वास है कि भारत के मुसलमान हमारे ही हैं। वे हमारी हस्ती से पूरा लाभ उठायेगे। सिवा इसके पीछे किन्हीं स्वार्थी राष्ट्रों की मदद भी है ही, ऐसा मै मानता हूँ।

(५) इन सभी विचारो के आधार पर मैं मानता हूँ कि आपका अनशन हिन्दुओं से कुछ संयम रखने की ही अपेक्षा रखता है।

(६) मै मानता हूँ कि मुसलमानो का झगड़ा दो ही तरह से शान्त हो सकता है। एक तो अगर हिन्दू शुद्ध हृदय बन जायॅ तो, लेकिन यह आशा तो कब से निष्फल हो गयी है।

निर्बलो की अहिंसा

आपने ही कहा है कि आज तक की कांग्रेस की लड़ाई दुर्बलों की अहिंसा थी। इसलिए जब सत्ता हाथ लगी है, तो यह संस्था दूने जोर से हिंसा के रास्ते ही चलेगी। आजकल की कांग्रेसी सरकार का रुख देखते हुए यह बात प्रमाणित हो सकती है। दूसरा रास्ता यही है कि भारत-सरकार दृढ़ता से काम ले। मुझे लगता है कि वह अभी ऐसा नहीं करती और जितने अंशो में वह आपके असर और अपनी ढिलाई की आभारी है, उतने अंशो में देश की हानि है।"

इस पत्र का उत्तर बापू ने निम्नलिखित दिया :

जातीय एकता : स्वतन्त्रता का स्तम्भ

"ऊपर का पत्र विचारणीय होने से प्रकाशित किया गया है। क्षण मे हृदय-परिवर्तन के उदाहरण दीख सकते है। ऐसे परिवर्तन टिक नहीं पाते, यह कहना अधिक उपयुक्त है। अनशन छूट गया। स्थायी परिणाम क्या आता है, यह देख रहा हूँ। यह कहकर मै ऊपर के पत्र का मूल्य कम नही करना चाहता। हिन्दू, सिख, मुसलमान—सभीको इससे शिक्षा लेनी है। कौमी एकता नयी बात नही। इसका प्रयास हमेशा चलता रहा है। हिन्दुस्तान की आजादी का यह एक स्तंभ है। यह न हो, तो आजादी टिक नही सकती। इसे स्वयंसिद्ध वचन मान लेना चाहिए। बीच का समय बीता (अगर बीत गया हो, तो)। उसे हमारी बेहोशी का समय माना जायगा। इसलिए दिल्ली मे हुई एकता टिकने या चिपकी रहने की आशा की जा सकती है।

रचनात्मक कार्यक्रम अपनायें !

'एकता टिकने का आधार रचनात्मक कार्यक्रम है', यह वचन याद कर लेने योग्य है। यह कैसे सभव होगा, यह खोजना होगा। हर सेवक को, जो यह बात मानता है, अपने जीवन मे उसे उतारना और अपने पड़ोसी को समझाना चाहिए। उसका शास्त्र समझने से उसे सरस बनाया जा सकता है। जड़-वत् नकल करने से वह बात आगे बढ़ नही सकती, यह हम प्रतिदिन ही अनुभव करते है।

रासायनिक खाद घातक

ट्रैक्टर और रासायनिक खाद घातक है, इस बारे मे मुझे जरा भी सन्देह नही। भारत के सभी मुसलमान निर्दोष हैं, ऐसा मै नही मानता। पाकिस्तान बनने पर यहाँ वे अकल्पित कठिन स्थिति मे रखे गये हैं, ऐसा मैं मानता हूँ। बहुसंख्यको को चाहिए कि उनके साथ शुद्ध न्याय करे। बहुसख्यक अपने मन मे यह माने कि अल्पसख्यको को पीस सकते है और हिन्दू-राज्य हो सकता है, तो मैं उसमें बहुसख्यको एव हिन्दू-धर्म का नाश देखता हूँ। यह अवसर ऐसा है, जब शुभ और सतत प्रयत्न से दोनो के हृदय से मैल और अज्ञान मिट सकता है।

पाँचवीं धारा, अगर गुजराती ठीक समझ पाया होऊँ, तो कुछ अस्पष्ट मालूम पड़ता है। मेरा अनशन सभीकी शुद्धि होकर, सबसे—हिन्दू, सिख, मुसलमान और अन्य सभीसे—शुद्धि की आशा रखता था और है।

अहिंसा का सच्चा मौका

छटी धारा मे सिर्फ बुद्धिवाद (कोरा तर्क) है। उसमे हृदय को स्थान नहीं दिया गया है। स्वतन्त्रता की लड़ाई के बीच जो नहीं हो पाया, वह अब नहीं ही होगा—ऐसा निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। अहिंसा का साम्राज्य दिखलाने का आज सच्चा मौका है। यह सच है कि जनता सभीको सशस्त्र बनाने के वहम मे पड़ गयी है। अगर इस वहम से कुछ भी बच जायँ, तो वह वीरों की अहिंसा से बचे माने जायँगे। वे भारत के सर्वोपरि सेवक माने जायँगे। जब तक यह बुद्धि या तर्क से सिद्ध नहीं किया जा सकता और अनुभव मे नहीं आता, तब तक श्रद्धा की ही शरण लेनी होगी। वह न हो, तो अनुभव कहाँ से होगा ?

दूसरा रास्ता नहीं

स्वतन्त्र सरकार को दृढता और हिम्मत से काम लेना चाहिए। इसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। जो सरकार कमजोर हो, किसीकी भी···विना समझे काम करती हो, तो वह शासन करने योग्य ही नहीं। पण्डित नेहरू और सरदार ढीले पड़ते है, यह कहना और मानना उनसे परिचित न होना सिद्ध करता है। मेरे स्पर्श का यह असर हो, तो मुझे शर्म लगेगी और देश की भी हानि होगी।"

मालिश, वंगाली पाठ, बाथ वगैरह नियमानुसार हुआ। बीच मे पन्तजी आ गये। उनकी···बहुत अच्छी नहीं दीखी। आज बाथ मे हजामत करवाते समय बापू सो गये।

मै राम का दास नहीं

···को लिखा : "अनशन टूटा, इससे उत्तरदायित्व कम नहीं हुआ, बढ ही गया है। मुझे धीरे-धीरे शक्ति आ रही है। दिल्ली मे किया तो माना जायगा और मुझे २० तारीख को मरना भी था। लेकिन रामजी को अभी काम लेना होगा, इसीलिए बचा लिया। किन्तु इसी तरह हँसते-हँसते मर पाऊँ,

तो मुझ पर ईश्वर की अपार कृपा ही मानी जायगी। क्या मैं ऐसी भव्य कृपा का पात्र बन सकूँगा? ऐसी मृत्यु का पात्र बनने का प्रयत्न तो मेरा है ही। इतना ही नहीं, वह बढ़ता ही जा रहा है। आज सुबह ही बहुत दिनो बाद चि० मनुड़ी के साथ भलीभॉति बातें की। मै तो रामजी का दास हूँ। उनका हुक्म होगा, तब तक काम करूँगा। जब हुक्म हो जायगा, तब चला भी जाऊँगा। दोनो तरह से तैयार ही हूँ। लेकिन सिर्फ अहिंसा को अपनेभर भी पहचान सकूँ और पहचनवा सकूँ, ऐसी शक्ति भगवान् मुझे दें, यही प्रार्थना है। इस प्रार्थना मे तू भी साथ देना।

—बापू के आशीर्वाद।"

सुभाष-जन्मतिथि पर

बापू खुराक मे अभी तरल पदार्थ ही ले रहे है। दोपहर को भलीभॉति सोये। जाड़ा अभी खूब ही है। दिन मे जहॉ तक बनता है, धूप मे ही रहते है और सिर पर नोआखालीवाली टोपी ही पहनते हैं।

जूनागढ़ अब शान्त हो गया, ऐसा दीखता है। बापू तो कहते ही है कि अगर नवाब साहब भाग न गये होते, तो उनका उचित सम्मान तो होता ही। उन्हे आर्थिक दृष्टि से हैरान न होना पड़ता। लेकिन पाकिस्तान की चढ़ाई के कारण ही ऐसा हुआ। इस बीच ·· यहॉ आते थे। उसमे भी बापू को कुछ रहस्य मालूम पड़ता है। कदाचित् उन्हे पैसा भी छीनना हो। बलवन्त भाई आने पर उनके बारे मे पूछताछ करने के लिए बापू ने मुझसे कहा है। कार्य-समिति होने से अब आयेगे ही।

पण्डितजी, सुचिता बहन, कृपालानीजी और अन्य स्थानीय नेता तो आया-जाया ही करते है। लेडी माउण्टबैटन भी कभी-कभी बापू की तबीयत का हाल पुछवा लेती है। शैलन भाई ने खबर दी कि आज नेताजी (सुभाष बाबू) का जन्म-दिवस है, इसलिए बापू प्रार्थना मे उनके बारे मे कुछ कहे।

'संत हंस गुण गहहि पय'

आज प्रार्थना मे बहने बहुत शोर-गुल कर रही थी। इस कारण लिखने मे कठिनाई पड रही थी। रेकार्ड मे भी आवाज आया ही करती है।

बापू ने कहा : "आज सुभाष बोस का जन्म-दिवस है। यद्यपि मैं किसीका जन्म-दिवस कदाचित् ही याद रखता हूँ, फिर भी आज मुझे इसकी याद करायी गयी, इसलिए खुश हूँ।

"सुभाष बाबू हिंसा के पुजारी रहे और मैं अहिंसा का! लेकिन उससे क्या? तुलसीदासजी ने रामायण मे लिखा है :

'सन्त हस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकारी।'

हस जैसे पानी छोड़ दूध पी जाता है, वैसे ही मानव में गुण-दोष होते ही हैं; पर हमे तो गुणो का ही पुजारी बनना चाहिए। सुभाष बाबू कितने देशभक्त थे, इसका वर्णन करना असामयिक होगा। उन्होंने देश के लिए जिन्दगी का जुआ खेलकर दिखा दिया। कितनी बड़ी सेना खड़ी की और वह भी किसी भी तरह के जात-पॉत के भेदभाव के बगैर! उनकी सेना मे प्रान्तीय भेदभाव भी नहीं था और न रगभेद ही था। स्वयं सेनापति होने के बावजूद यह बात न थी कि स्वय विशेष सुख-सुविधा भोगे और दूसरे कम। सुभाष बाबू सर्व-धर्म-समभाव रखते थे, इसी कारण उन्होंने सारे देश के भाई-बहनो के हृदय जीत लिये थे। स्वयं निर्धारित काम पूरा किया। उनके इन गुणों को याद रखकर हम उन्हे अपने जीवन मे उतारे, यही उनकी स्थायी स्मृति होगी।

मुसलमान भाइयों से

"मुझे ग्वालियर से तार मिला है कि वहॉ किसी गॉव में भीतर-ही-भीतर कुछ झगड़ा चल रहा था। हिन्दू-मुसलमान के बखेड़े की बात ही न थी। इस समाचार से मुझे प्रसन्नता हो रही है। दो शब्द मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूँ। मैं तो जो बात मेरे पास पहुँचती है, उसे जनता के सामने रख देता हूँ और इस रेडियो द्वारा वह तत्काल वहॉ पहुँच जाती है। लेकिन जो मुसलमान भाई इस तरह बनावटी बातें करेंगे या पूर्वग्रह रखकर झूठी-झूठी कल्पनाएँ करेंगे, तो उनके प्रति सम्मान या प्रेम नहीं रहेगा। उनके बारे में अन्यथाभाव उत्पन्न हो जायगा। इसलिए कोई भी बात बढा-चढ़ाकर कहनी ही नही चाहिए। हमेशा अपनी भूलों को पहाड़-सी बतलाने और पराये की भूलो को राई जैसी माननेवाला ही आगे बढ़ सकता है। खुदा के दरवाजे पहुँचने की यह एक बड़ी आसान तरकीब है।

"मैसूर के बारे मे मैंने वहाँ की सरकार को लिख दिया है कि घटना की सच्ची रिपोर्ट दीजिये। जूनागढ़ के मुसलिम भाइयो के तार आये हैं कि जब से सरदार साहब की देखरेख मे जूनागढ़ का कारोबार चलने लगा है, तब से हमे न्याय मिलने लगा है। अब जूनागढ़ मे कोई फूट नही डाल सकता। यह सुनकर मै बहुत ही प्रसन्न हुआ।

विश्वास आवश्यक

"मेरठ के मुसलमान भी कहते है कि' मेरे अनशन का परिणाम अच्छा ही हो रहा है। आज जो सरकार है, वही हमे चाहिए'।

"सरकार बदलने का प्रश्न कहाँ से उठा होगा, यह भगवान् ही जाने। लेकिन अगर आपको ये लोग ठीक न पड़ते हो, तो इन्हे बदलना भी आपके हाथ मे ही है। लेकिन मुझे कहना होगा कि आज की स्थिति मे उनके बगैर इतना ज्यादा उलझा हुआ राज्य चलाना बड़ी ही कठिन बात है। आज का राजकाज अविश्वास से निभ नही सकता। न्याय करने का काम सरकार का है। वह उसे ही सौंप देना चाहिए।

"मेरे नाम मेरी तबीयत की पूछताछ के कई तार आते है। सभीको व्यक्तिगत रूप मे उत्तर तो दे पाना सम्भव नही। लेकिन उन सबके आशीर्वाद सफल हो, यही प्रार्थना करता हूँ।"

प्रार्थना के बाद एक चक्कर आ गया। अभी पूरी ताकत तो आयी ही नही है।

प्रार्थना के बाद भाषण लिखा। पण्डितजी से बातें की। बापू स्वय ही काग्रेस की नीति के बारे मे मसविदा बना देंगे, ऐसा कहा। वे पण्डितजी के आग्रह के कारण ही ऐसा करेगे।

९। बजे सोने की तैयारी हुई। कदाचित् हमे वर्धा जाना पड़े। वहाँ जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त गोपुरी मे कार्यकर्ताओ की एक बैठक बुलाने का विचार हो रहा है। सेवाग्राम-आश्रम मे बापू का स्थिर रूप मे रहना तय नही। इसलिए अब ये सारी सस्थाएँ किस तरह चलायी जायँ, इस बारे मे भी विचार करना होगा। फिर इस बहाने दिल्ली की परीक्षा भी हो जायगी कि

बापू की अनुपस्थिति में कितनी शान्ति बनी रहती है ? अगर वैसा होगा, तो वे पाकिस्तान जाना भी सोच रहे हैं।

तेल मलते समय बापू ने मुझसे कहा : "मैं चाहता हूँ कि हम लोग पाकिस्तान जायँ, इससे पहले जयसुखलाल आ सके, तो आकर मिल ले।" मैंने कहा : "मैं नहीं लिखूँगी। आपको लिखना हो, तो लिखिये। क्योंकि मेरे लिखने से वे नहीं आयेंगे।" उन्होंने कल सुबह लिखने के लिए याद दिलाने के लिए कहा है।

● ● ●

कथनी मीठी खाँड़-सी : २६ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२४-१-'४८

जयसुखलालजी को पत्र

नियमानुसार प्रार्थना ! फिर बापू ने भीतर जाकर पहले मेरे पिताजी के नाम पत्र लिखवाया। मुझे उन्हें स्मरण नहीं कराना पड़ा।

"चि० जयसुखलाल,

बहुत दिनों बाद आपको यह चिट्ठी लिखवा रहा हूँ। इस बीच चि० मनु आपको लिखती रही और आप उसे। इसलिए हम एक-दूसरे की हाल-चाल से परिचित तो हो ही जाते हैं।

कहा जा सकता है कि दिल्ली में कुछ कर पाया। लेकिन वह कब तक चलेगा, यह तो भगवान् ही जाने। अनशन के बाद अब भी कमजोरी तो है, पर ईश्वर मेरी शक्ति तो रोज-रोज बढ़ाता ही रहता है। गुर्दा और 'लीवर' ठीक-ठीक काम नहीं कर पाते।

यह चिट्ठी लिखने का खास कारण तो यह है कि आपने चि० मनुड़ी को मेरे पास और इस यज्ञ में गत एक वर्ष से होम ही दिया है। मुझे आपको लिखना चाहिए कि उसे कसौटी पर कसने में मैंने कितनी ही बार क्रूरता ही बरती होगी। अगर ऐसा कहूँ, तो वह झूठ न होगा, यद्यपि इस क्रूरता पर भी मनु को क्रूरता की अपेक्षा कृपा ही काफी मिली, यह माना जायगा। लेकिन यह... बगैर अडिग रहकर, सतोषजनक ढंग से... निकल पड़ी, यही माना जायगा।

मैने स्वयं श्रीरामपुर मे कहा था कि इस यज्ञ मे तो करना होगा या मरना ! यहाँ ये दोनो बाते चल रही है। २० तारीख को बम का धड़ाका हुआ, उस समय मनुड़ी मेरे पास ही और लोगो के साथ बैठी थी। इसलिए मरते, तो हम दोनों मरते। लेकिन राम बचाता है, तो उसे कौन मार सकता है !

शर्त-पूर्ति

कल मैने मनु के साथ खूब बाते की। कहा कि जयसुखलाल को छुट्टी हो, तो तू लिख दे कि वे सेवाग्राम या यहाँ आ सकते है। जमनालालजी की पुण्यतिथि के निमित्त कदाचित् वर्धा जाना पड़े। कुछ तय नही है। मुझे तो ऐसा नही दीखता कि दिल्ली को छोड़ पाऊँगा। लेकिन इस पर चि० मनु ने कहा कि मैंने ही यज्ञ मे शर्तें रखी थीं, इसलिए मुझे ही आपको लिखना चाहिए। अतएव यह लिखवा रहा हूँ। आप अखबारो मे देखकर इस तरह आ सके, तो सचमुच मुझे अच्छा लगेगा। तब आप देखेगे कि मैंने अपने ऊपर का कर्ज चुकता कर दिया है। आपको वह (मनु) अपनी डायरी तो भेजती ही है। उसमे भी इसने काफी प्रगति की है। उसे नोट करने मे बड़ा ही रस आता है। जब यह देखता हूँ, तब महादेव का चेहरा मेरी आँखों से हटता ही नही।

यह पत्र प्रार्थना के बाद तुरन्त ही लिखवा रहा हूँ। अपनी चिट्ठियो का ढेर लगा हुआ है। ईश्वर मिलायेगा, तो हम लोग थोड़े दिनो मे अवश्य मिलेंगे। तब बाकी रूबरू बाते होगी। चि० मनुड़ी मजे मे है। उसे मोटा करने की कोई कीमिया आपके पास हो, तो मुझे बतलाइये। लड़कियाँ ससुराल मे मजे में ही होगी।

—बापू के आशीर्वाद।"

···को बापू ने लिखवाया : "यहाँ की हालत तो ठीक चल रही है। मगर दूसरी जगह गोलमाल तो है ही। सिन्ध और सरहद का मामला बिगड़ रहा है। मैंने जहाँगीर पटेल और दीनशाह मेहता को जिन्ना साहब, लियाकत अली आदि से सलाह-मशविरा करने के लिए भेजा तो है। उम्मीद है कि मुझे पाकिस्तान लिवा जाने मे सुहरावर्दी साहब की काफी मदद मिलेगी। लेकिन ये सब आसमानी सुलतानी बाते हैं।

मनचाही मृत्यु का स्वागत

"खुदा की कृपा से मुझमे आहिस्ता-आहिस्ता शक्ति आ रही है। मै तो राम का दास हूँ। उनकी मर्जी होगी, वहाँ तक उनका काम करूँगा। अपने जीवन से सत्य-अहिसा की सफलता बता सकें—ऐसी मौत खुदा देगा, तभी कामयाब हो सकता हूँ। बीस तारीख को जो हुआ, उसमे मेरी कुछ बहादुरी है ही नहीं। मैंने तो माना था कि कोई लश्करी तालीम ले रहा है। अगर मौत की खबर होती, तो मै क्या करता? इसलिए अभी तो मै महात्मा नहीं हूँ। लोगो ने महात्मा बना दिया, तो उससे क्या? अभी तो एक मामूली-सा आदमी हूँ। हाँ, अगर मैंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि व्रतो का सपूर्ण पालन किया होगा और ईश्वर को साक्षी रखकर किया होगा, तब तो वैसी ही मृत्यु आयेगी, जैसी मै चाहता हूँ और प्रार्थना-सभा मे कहा भी है कि 'मुझे कोई मारते हो, फिर भी मै उन पर जरा-सा भी गुस्सा न करूँ और राम का नाम लेता-लेता ही मरूँ'।

"आज अभी प्रार्थना के बाद एक खत मनु के पिता को लिखा और दूसरा यह है। खतो का तो ढेर ही लगा है। आज से 'वर्किंग-कमेटी' भी चलेगी। इसलिए डाक का काम सुबह प्रार्थना के बाद ही होता है।

"वहाँ का हाल लिखा करो। सेवाग्राम आने का अभी कोई निश्चय नहीं है।"

ये दोनो पत्र लिखवाकर बापू थोड़ी देर सो गये। मालिश, स्नान वगैरह नियमानुसार ही चला। आज थकान अधिक मालूम पड़ रही थी, इसलिए सुबह से मौन ही रखा है। फिर दोपहर को वर्किंग-कमेटी भी थी, इसीलिए ऐसा किया। खुराक में अभी तरल पदार्थ ही चल रहा है। सुशीला बहन तो बहावलपुर मे है। प्रवचन का अंग्रेजी अनुवाद तो मेरे हिंदी के नोटो पर से चाँदवानीजी करते है। लेकिन बापू को उसे अच्छी तरह जाँचना पड़ता है।

चाँद बहन के गाल पर कुछ ''होने के कारण उन्होने एक छोटा ऑपरेशन कराया। उन्हे भी कमजोरी तो है ही। इन्हे ट्रेन से फेंक दिया था, उसका असर तो अभी तक बना हुआ है। दोपहर मे चाय पीने से उन्हे उलटी हुई। बापू उनका बहुत ध्यान रखते है और हर समव उपाय करते ही है। इस तरह

अपने उपवास की कमजोरी और काम का असह्य बोझ, साथ ही देश-विदेश की भरपूर मुलाकातो के बीच भी सबकी देखभाल मे बापू तनिक भी कमी नही आने देते। दोपहर मे तो वर्किंग-कमेटी बैठी थी। उसके बाद बापू तुरन्त प्रार्थना मे गये।

विलंब अशोभनीय

आज प्रार्थना-सभा मे अच्छी भीड़ रही और शोरगुल भी खूब चलता रहा। कश्मीर का प्रश्न भी अब अधिक उग्र हो गया है।

आज के सन्देश मे बापू ने कहा : "यह तय हुआ था कि दोनो प्रदेश (हिन्द और पाकिस्तान) अपने कैदियो की अदला-बदली कर ले और भगायी गयी स्त्रियो को यथास्थान पहुँचा दिया जाय। लेकिन अभी इस पर अमल खटाई मे पड गया है। पश्चिमी पंजाब की सरकार ने यह एक नयी माँग खड़ी कर दी है कि दूसरे कैदियों के साथ पूर्वी पंजाब के देशी राज्यो के कैदियो को भी लौटाया जाय। इस पर पूर्वी पंजाब सरकार का कहना है कि समझौते के समय पश्चिमी पजाब की सरकार के साथ ऐसा किसी भी तरह का स्पष्टीकरण नही हुआ था। अब आज ये लोग नयी-नयी शर्तें घुसेड़ते जा रहे है। यह ढग ठीक नही कहा जा सकता। मै व्यक्तिशः यह सलाह दूँगा कि पश्चिमी पजाब हमे १० लड़कियाँ लौटाये, तो हम भी १० ही लौटायेंगे, १० से ११ नहीं करेंगे, ऐसा किसने कहा है? ऐसी बातो मे शर्तों की बात ही क्या है? यदि मेरी यह आवाज पश्चिम पजाब की हुकूमत तक पहुँच पाये, तो मै उससे यही कहूँगा कि कही कम अपराध हुआ हो, तो कही अधिक। लेकिन यदि इरादा सौजन्यपूर्ण है, जब कि दोनो की भूले समान ही है, तो ऐसे सुन्दर कामो मे तथा अदला-बदली मे विलम्ब का जो कारण बताया गया, वह न तो शोभनीय है और न सबल ही है। जब लोग मुँह से तो कहते एक है और करते कुछ है, तो मुझे लगता है कि अपना अनशन छोड़ने मे कदाचित् मैं उतावली कर गया। मेरे शब्दो का पालन मात्र करने की बात नही, उसका रहस्य भी समझना चाहिए।" बहनो का शोरगुल इतना अधिक हो गया कि बापू को बोलने और श्रोताओ को उसे सुनने मे भी तकलीफ हो रही थी।

वर्किंग कमेटी मे भी अदला-बदली पर चर्चा हुई।

प्रार्थना के पश्चात् पण्डितजी आये थे। वे निश्चित समय तक बैठे। अब वातावरण इस प्रकार का हो गया है कि २७ तारीख से मरौली मे उर्स का मेला शान्तिपूर्वक लग सकता है। दिल्ली मे तो प्राय: शान्ति ही है, लेकिन सिन्ध सता रहा है और उसका प्रभाव पुन: यहाँ न दिखाई पड़े, यही खैरियत होगी।

महत्ता की कसौटी

कताई, मालिश आदि काम नियमानुसार हुए। ९। बजे के बाद सोने की तैयारी हुई।

...जिस बहन को नोआखाली से ले आये है, मालूम पड़ता है कि उसके साथ शादी कर लेना चाहते है, यद्यपि सुशीला बहन यह मंजूर नही करेगी। सचमुच बापू की विशाल शक्ति का दर्शन तो उनके ऐसे ही विविध ढंगों के दरबार मे हुआ करता है। इस दरबार में रहना पूरी कसौटी है। जिस पर ईश्वर की कृपा हो, वही पार पा सकता है। बहुतो को लगता है कि महान् व्यक्ति के पास भी ऐसे व्यक्ति हुआ करते हैं और इसीके बीच उनकी महत्ता की कसौटी हुआ करती है।

● ● ●

हृदय की वेदना : २७ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२५-१-'४८

अशान्त वातावरण

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना! दतवन करते हुए बापू ने कहा : "देख रहा हूँ कि कांग्रेस, देश और दिल्ली का तथा खुद हमारा भी वातावरण अभी शान्त नहीं हो पाया है। आज भी उसमे मुझे बादल नजर आ रहे हैं। मेरे अनशन के पीछे सिर्फ कौमी शुद्धि ही नहीं रही। बल्कि हम सभी समझदार लोगों को अपने मानस की शुद्धि करनी थी।...नोआखाली मे कच्चा ही खाना तय किया है।...को और...को स्पष्ट बता देना चाहिए। यहाँ आयी हुई बंगाली बहन को भी 'वे क्या चाहते हैं' इसकी ममतापूर्वक पूछताछ करनी

चाहिए। लोग कहते है कि काग्रेस ठग रही है, जिन्ना साहब मुझे ठग रहे है। लेकिन मै समझता हूँ कि मुझे ठगनेवालो मे आप जैसे मेरे अपने ही लोग है। इसीलिए मै कहता हूँ कि ऐसे काम करने की अपेक्षा बेहतर है कि आप सबको ऐसा उचित मालूम पड़े, (फैण्डी) नोच खाइये और मुझे अकेले ही रहने दे। इसीमे मेरा, आपका और समाज का विशेष कल्याण है। मै सोचता हूँ कि··· को भी यह स्पष्ट कर ही देना चाहिए कि उसे क्या करना है। नही तो उसे जो करना हो, वह करे, तो अधिक योग्य हो। मै नही चाहता कि···को नाराज कर कुछ भी करे। यह कोई मेरी सेवा का अंश नही। मनु और···मेरी दृष्टि मे जरा भी जुदे नही हैं। फिर भी मनु का तनिक भी उत्तरदायित्व···पर या··· पर न तो कभी था और न है ही। फिर भी लोगो ने उस उत्तरदायित्व को उठा लिया। लेकिन ये···तो···के ससुर है और · वह उसका पति है। फिर भी आश्चर्य की बात है कि सभी एकदम चुप कैसे वैठे है! इसी तरह···है। यह सच है कि मेरे हृदय मे मनु मेरी पौत्री ही है। फिर भी दूसरी लड़कियाँ नही, ऐसा कदापि नही। इसका साक्षी तो परमात्मा ही है। सभी लड़कियाँ मेरी पौत्री जैसी है और मेरी पौत्री सभी लड़कियो जैसी है। फिर भी यह सच है कि मनु इन सबसे विशिष्ट बन गयी है। कारण वह खुले दिल से इस जलते हुए अग्नि-कुण्ड मे कूद पड़ी। इसने उससे सफलतापूर्वक टक्कर ली है। फल-स्वरूप मैं जीता रहा और मेरी तबीयत भी ठीक रही। अगर लोगो मे सन्मति, सुबुद्धि हो, तो आप सभी देखेगे कि इस यज्ञ का इतिहास भावी पीढ़ी को एक नयी ही प्रेरणा देता रहेगा। आज मै मर जाऊँ या जीवित रहूँ, फिर भी मुझे अपने सिद्धान्त और जीवन का तलपट निकालने का अगर कही कुछ अवसर मिला, तो वह मेरा यह अन्तिम यज्ञ ही है। भले ही आज किसीको इस यज्ञ का मूल्य न मालूम पड़े। कदाचित् मनु को भी न मालूम पड़े, क्योकि वह इतनी छोटी है कि वह भविष्य की आशा रखकर मुझसे निश्चिन्त होकर बैठ ही नही सकती। फिर भी गहराई से विचार करने पर मुझे यह प्रकाश प्राप्त होता है कि मै अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण कार्य, जो कि पूर्ण रूप से स्थितप्रज्ञ होना है, लगभग पूरा कर चुका हूँ।"

दतवन करते हुए बापू ने बड़ी ही गभीरता के साथ ये बाते कही।

कर्तव्य-पालन करें !

प्रार्थना के बाद अन्दर आकर उन्होंने मुझसे कहा : "अभी भी मै यह अनुभव नहीं कर पाता कि परस्पर प्रेम का वातावरण बन गया है। बापू को अमुक बात पसन्द नहीं पड़ती, इसीलिए कुछ लोग उससे बचते है। लेकिन यही मुझे अच्छा नही लगता। आज 'वर्किंग-कमेटी' मे भी यही ढंग चलता रहा। इसमे मै अपनी हिंसा ही देखता हूँ। बापू को पसन्द न होने के कारण ही किसी बात से बचने मे न तो बापू का कोई लाभ है, न देश का और न हमारा खुद का ही। वास्तव मे यही देखना चाहिए कि हमारा अपना क्या कर्तव्य है? सूक्ष्म दृष्टि से मेरे उपवास का लक्ष्य मुझे अपने ही अन्तःकरण की जॉच करना था और है। मैने जो कुछ कहा, उसमे मेरे हृदय की वेदना भरी हुई है। मै स्वय तो अब दिन-प्रतिदिन निःस्पृह ही होता जा रहा हूँ, यह कहूँ तो चल सकता है। यही कारण है कि व्रजकिशोर जब मुझसे कहता है कि 'अमुक-अमुक बाते जवाहरलाल से कहे और अमुक-अमुक सरदार से कहकर काम करा ले', तो मैं साफ-साफ इनकार कर देता हूँ कि 'अगर वे लोग मेरे सामने बात चलायेगे, तभी कहूँगा, अन्यथा नहीं'।"

आज सुबह से ही वातावरण कुछ गंभीर ही है। यद्यपि बापू का सारा कार्यक्रम अपने निश्चित ढग से ही चल रहा है, फिर भी दीखता है कि वे कुछ गंभीर विचार मे उलझे हुए है। दोपहर में···के साथ एक छोटी-सी घटना हो गयी थी। मैं वर्किंग-कमेटी के समय तकिया रख रही थी कि बापू ने कहा: "···से कह दे कि ··यहॉ शान्ति से रह सके, तो रहे। इतना अधिक क्रोध कर मेरी सेवा न करे।" बापू दुःख और नाराजगी से यह कह रहे थे। इसी बीच बलवन्त राय मेहता आ गये और बापू के चरण छूने के लिए आगे बढ़े। इसलिए बात वहीं रुक गयी, यह अच्छा ही हुआ। मुझे लगा कि मैं व्यर्थ ही धर्म सकट मे आ पड़ी। लेकिन बापू कहते : "सभीको सच्ची बात कहने की अब भी मुझमे हिम्मत नहीं आयी, तो कब आयेगी?" आखिर मुझे बापू का सन्देश जहाँ का तहॉ पहुँचाना ही पड़ा। २ बजे से ५ बजे तक वर्किंग-कमेटी की बैठक हुई। काठियावाड के राज्यो का एकीकरण प्रायः पूर्णतः तय ही हो गया है। वहॉ के राजा लोग समझ गये है कि अब हम ऐसे नहीं रह सकते। यह भी

अच्छा ही है कि वे समझ-बूझकर राज्य सौपे, इससे परस्पर सम्बन्ध भी अच्छे रहेगे।

काग्रेस की वर्तमान अवस्था के विषय मे बापू 'हरिजन' मे कुछ लिखेगे। उन्होने लोगो का मार्गदर्शन करना भी स्वीकार कर लिया है। बापू ने दिल्ली छोडने की इच्छा भी व्यक्त की, लेकिन नेतागण मानते है कि अभी यहाँ बापू की आवश्यकता है। कश्मीर मे अब तो जरा भी नरमाई बरती ही न जाय, यह भी स्पष्ट हो गया। अभी आबादी की अदली-बदली के बारे मे पाकिस्तानी नीति मे किसी भी तरह का सुधार नही हुआ है। सरदार दादा के शब्दो मे 'दूध मे से सूक्ष्मतम जीव' निकालने जैसा ही उसका इस दिशा मे काम चलता है। 'भाषावार प्रान्त' के प्रश्न पर भी चर्चा हुई।

अपनी डायरी के साथ···को भी रोज डायरी लिख देती हूँ। क्योकि···से गुजराती मे अधिक लिखते नही बनता।

रात ९॥ बजे बापू बिस्तर पर लेटे। उन्होने मौन ले लिया है। मै भी आज विचारो मे खूब ही उलझी हुई थी। मुझे नये-नये अनुभव प्राप्त होते हैं और उनसे मुझे खुद को तो अपार लाभ है। लेकिन जब कभी किसीके लिए बापू का कोई दुःखद सन्देश पहुँचाना पड़ता है, तब तो कॅपकॅपी ही छूट पड़ती है। भगवान् से यही मनाती हूँ कि "प्रभो! मुझे किसीके दुःख का निमित्त न बनाओ!"

हिन्दू रक्षक बने

आज के प्रवचन-सन्देश मे बापू ने कहा : "मेरे पास हिन्दू और मुसलमान आया करते है। वे सभी अब एक ही बात कहते हैं कि अब दिल्ली मे पूर्ण शान्ति है। हम लोग समझ गये हैं कि लडते ही रहेंगे, तो कोई भी काम न होगा। इसलिए अब आप इस बारे मे बिलकुल बेफिक्र हो जायॅ।

"मरौली मे जो दरगाह है, वहाँ कल से उर्स का मेला लगनेवाला है। ऐसी सुन्दर कारीगरी की दरगाह हम लोगो ने तोड़ डाली। लेकिन अब कुछ सुधार-कार्य हुआ है। इसलिए वहाँ प्रतिवर्षानुसार मेला लगेगा। इस मेले मे हिन्दू और मुसलमान सभी एक साथ जाया करते थे। अब भी उसी तरह जाइये।

लेकिन हिन्दुओं से प्रार्थना करूँगा कि आप लोग वहाँ जायँ, तो इस तरह का कोई भी वातावरण पैदा न करे, जिससे मुसलमानो को डर लगे। पुलिस-रक्षण के बदले आप लोग ही उनके रक्षक बने।

"अब एक दूसरी बात कह रहा हूँ कि दो फरवरी को मुझे कदाचित् वर्धा जाना पड़े। राजेन्द्र बाबू तो मेरे साथ जायँगे ही और जहाँ तक होगा, जल्दी ही लौटूँगा। लेकिन मेरा जाना तो तभी हो सकता है, जब कि आप सब मुझे आशीर्वाद दे कि 'अब आप निश्चिन्त हो जहाँ जाना चाहे, जा सकते हैं।' उसके बाद मै पाकिस्तान भी जाना चाहता हूँ। मै वहाँ जाऊँ, इससे पहले पाकिस्तान-सरकार को ही मुझसे कहना पड़ेगा कि यहाँ आइये और प्रसन्नता के साथ अपना काम कीजिये।

भाषावार प्रान्त-रचना

"जब-जब यहाँ मेरे पास वर्किंग-कमेटी होती है, तब-तब कुछ तो जानने योग्य समाचार मुझे मिल जाते है। मै हमेशा उन्हें आपको बताता रहता हूँ। आज इसी तरह की एक बात भाषावार प्रान्त-रचना सम्बन्धी चर्चा हुई। काग्रेस का यह प्रस्ताव कोई आज का नही। बीस वर्ष पहले से ऐसे प्रस्ताव होते ही आ रहे हैं। आज देश मे नौ से दस प्रान्त है और सभी केन्द्र के अधीन है। फिर, और भी अगर प्रान्त बने तथा वे दिल्ली-शासन के अन्तर्गत रहे, तो कदाचित् ही कुछ हानि हो सकती है। लेकिन यदि सभी प्रान्त स्वतन्त्र रहने की माँग करे और किसीको भी उत्तरदायी न माने, तो पुनः प्रान्त-रचना सम्प्रति भूल होगी। अलग-अलग प्रान्त बनने के बाद बम्बई को ऐसा न मालूम पड़ना चाहिए कि अब महाराष्ट्र के साथ मेरा कुछ भी लेन-देन नहीं और न महाराष्ट्र को ही ऐसा लगे कि मेरा कर्नाटक के साथ कोई ताल्लुक, नाता नही। यदि ऐसा हुआ, तो हमारा काम बिगड़ जायगा। सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर यदि भाषावार प्रान्त बनाये जायँगे, तो प्रान्तीय भाषाओं की उन्नति होगी, प्रगति होगी। एक दूसरी बात भी वहाँवाले कहते हैं कि प्रान्त के लोगो को हिन्दुस्तानी के माध्यम से ही शिक्षा दी जाय। यह बात भी बिलकुल वाहियात है। अग्रेजी का माध्यम तो सर्वथा बुरा ही है।

"सीमा-पंच बनाने की बात भी मेरे गले नहीं उतरती। हर प्रान्त के लोग अपने नजदीक के प्रान्तों के साथ हिल-मिलकर रहे। इसीको 'सच्चा लोकतन्त्र' कहते है। यदि सरकार सब कुछ खुद ही करेगी, तो लोग पंगु बन जायँगे।"

प्रार्थना के बाद से आज बापू ने मौन ले लिया। ● ● ●

स्वाधीनता-दिवस पर बापू के उद्गार : २८ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२६-१-'४८

हरिजन-मंदिर-प्रवेश

नियमानुसार प्रार्थना! आज मौन का दिन है, इसलिए प्रार्थना के बाद बापू को भीतर पहुँचाकर मै सो गयी।

बापू ने आज 'हरिजन' सम्बन्धी काम शुरू किया। हरिजन-मन्दिर-प्रवेश के बारे मे एक पत्र भगवान्‌जी भाई का वढवाण से आया था। उन्होने लिखा था कि "हरिजनो का हवेली-प्रवेश ट्रस्टियों की मर्जी के विरुद्ध कराया जा रहा है। किन्तु अन्य मन्दिरों मे याने दा० त० जैन, स्वामीनारायण आदि सम्प्रदायों के मन्दिरों मे, जिन्हे हरिजन विशेष नहीं मानते, बलात् प्रवेश कराने का कोई अर्थ नहीं।" इसके उत्तर मे बापू ने सूचित किया कि "इस पत्र मे पत्र लिखनेवाले ने जो विभाग किये है, उनमें मुझे कोई वास्तविकता मालूम नहीं पड़ती। स्वामी-नारायण के मन्दिर, जैन-मन्दिर आदि मे हर कोई हिन्दू जा सकता है और जाता भी है। अतः उनमें हरिजन भी जाने चाहिए। हरिजन और ब्राह्मण दोनो को समान हक है, यह सिद्ध करने की हलचल वर्षों से चली आ रही है। उसमे अधिकाश सफलता प्राप्त है। अब तो बम्बई-प्रदेश मे कानून भी बन गया है। अगर वह लोकतन्त्र के विरुद्ध होगा, तो उसका अमल धीमा-धीमा होगा। लोकतन्त्र मे कानून का अमल बलात् नही हो सकता। उसमे सदा विवेक की जरूरत हुआ करती है। सुधारक उसकी मदद समझदारी से ले, तो सफल हो सकता है। अगर वह उतावली करता है, तो कानून व्यर्थ हो जाता है।

"ट्रस्टी लोग मन्दिर के मालिक नही हैं। मन्दिर के बनानेवाले जब उन्हे

आम जनता के लिए बना देते हैं, तो उनकी मालकियत खतम हो जाती है। फिर उन मन्दिरो के मालिक भक्त हो जाते हैं। भक्त वे ही हैं, जो उनमे पूजा करने या पूजा का दिखावा दिखाने जाते हैं। इस दृष्टि से जैन, स्वामीनारायण आदि मन्दिर हिन्दुओ के माने जाते है। इन मन्दिरो मे मैं खुद हो आया हूँ। मुझे या मुझ जैसे सैकड़ो को कोई नहीं पूछता कि आप कैसे है? हिन्दू जैसा दीख पड़ूँ, तो उतना ही काफी है। इसलिए जहाँ हिन्दू जायँ, वहाँ हरिजन भी जायँ। हरिजनो जैसी अलग जाति आज नही है। उसका समावेश चार या अठारह वर्णों मे हो जाता है। जाग्रत जनमत यही कहता है। उसे सम्मान देनेवाला कानून यही कहता है। उसके समक्ष जानेवालों का जनमत आज चल नहीं सकता। देवताओ मे प्राण भरनेवाले भक्त हैं। वे अच्छे, तो भगवान् भी अच्छा!"

आग्रह भक्ति नहीं

एक और पत्र है, जिस पर लिखनेवाले का नाम नही है। अक्षर बनाकर लिखे गये हैं और भाषा भी अलग ही है। उन्होंने सूचित किया है कि "उन्हे संक्रान्ति के दिन स्वामीनारायण का दर्शन करने जाना था, लेकिन वहाँ तो सुबह ८ बजे से ही ताला लगा हुआ था। यदि स्वतन्त्रता के युग में हमे मन्दिर मे जाने का अधिकार न मिलेगा, तो कब मिलेगा? फिर कांग्रेसियो से बहुत कुछ कहा जाता है, तो वे दस-पाँच मिनट आकर चले जाते हैं। वे कुछ भी प्रयत्न नहीं करते। बेचारे हरिजन सर्दी और धूप मे सत्याग्रह करके बैठे है। अतः इस बारे मे क्या किया जाय?"

बापू: "यह पत्र मेरे मतानुसार दृढ होने के बावजूद हरिजनो का आग्रह मैं समझ नहीं पाता। जो आग्रह करके बैठे हैं, वे सच्चे भक्त नही है। उन्हे देव-दर्शन की तो पड़ी नहीं है, वे तो अपने हक के पीछे पडे हैं और इसी कारण धर्म से दूर हट रहे हैं। वे लिखते हैं कि इसमें हम हस्ताक्षर नहीं करते। इसी तरह वे अपनी ओर से दूसरे से लिखवाते हैं। सच्चा भक्त तो नन्दनार का अनुसरण करता है। नन्दनार के पीछे ईश्वर के सिवा कोई नहीं था। उस नन्दनार को स्वयं को ऊँचा माननेवाला ब्राह्मण आज शौक से पूजता है। हरिजनों मे स्वेच्छा

से बने हरिजन नन्दनार का दर्शन करना चाहते हैं और जन्म से हरिजन माने जानेवाले भी चाहते हैं। अगर हरिजनेतर हिन्दू-समाज को गरज हो, तो हरिजन हिन्दू को आग्रहपूर्वक ले जाय। यदि ऐसा न हो, हरिजन हिन्दू को घर बैठे गंगा लाये, तो उसमे स्नान करे। उसे किसी मन्दिर के सामने जाकर अनशन करने की कोई आवश्यकता नहीं। इसे मैं अधर्म मानता हूँ। ऐसे अनशन को हिन्दी मे··'बैठना कहते हैं। गुजराती मे 'लंघन' कहेगे। 'त्रागुं' या हठ कहा जायगा। इससे पुण्य तो होता ही नहीं, पाप ही होता है। ऐसे पाप से सभी सौ योजन दूर रहे।"

सुबह आराम के समय अन्य चिट्ठी-पत्रियाँ देखी।

स्वाधीनता-दिवस

आज स्वाधीनता-दिवस होने के कारण बापू के निकट बहुतो का आना-जाना जारी है। सभी नेता लोग तो आये ही, उनके सिवा गोपीचंद भार्गव, प्रफुल्ल बाबू और अन्नदा बाबू भी आये थे। आज पण्डितजी के घर पर भी स्वाधीनता-दिवस के निमित्त पार्टी थी। बापू का वजन १०९ पौण्ड ही है। अभी शाक, दूध, सूप और गुड़ ही एक-एक दिन खाने के लिए लिया करते है। भेट-मुलाकाते भी बेहद बढ़ गयी हैं। अनशन से पहले जितना कामकाज करते थे, वह पुनः शुरू कर दिया है। आज दिन मे २॥ बजे से ५ बजे तक वर्किंग-कमेटी हुई। सरदार दादा की अनुपस्थिति बड़ी ही सूचक थी।···ने कहा कि···मन्त्रिमण्डल से अलग होना चाहते है। बापू उन्हें समझाने का यत्न करेगे।

···की घूसखोरी की बाते भी सप्रमाण बापू के पास पहुँच गयी है। बम्बई मे ये काग्रेस के चोटी के नेता माने जानेवाले लोग अपने पिता या और किसी दूसरी पहुँच से इस तरह कमाया करे, यह बात बापू के लिए अत्यन्त कष्टप्रद हो गयी है। देखना है, और नया गुल क्या खिलता है? आज कदाचित् महुआ मे भाई साहब को बापू की चिट्ठी पहुँच गयी हो और सभव है, कदाचित् वे वहाँ से चल भी पड़े हो।

स्वतंत्रता में ही सम्भव

आज का प्रार्थना-सन्देश तो प्यारेलालजी ने खुद ही हिन्दी मे अनुवाद कर

सुनाया : "आज स्वाधीनता-दिवस है। जब तक हम लोग परतंत्र थे, तब तक इस उत्सव को मनाया करते थे। आज हम लोग स्वतंत्र भी हो गये है। 'एक दिन हम लोग स्वतन्त्र हो जायेगे' यह मान्यता अभी तक केवल भ्रम के रूप मे ही थी, किन्तु आज उसे हम प्रत्यक्ष साकार देख रहे है। तब हम इस उत्सव को क्यो मनाये ? क्या हम जिसे भ्रम कहते थे, वह झूठ हो गया, इसलिए ? आज हम यह उत्सव इसीलिए मना सकते हैं कि हमारी अनेक नयी आशाएँ परिपूर्ण हों। अब भारत के सात लाख गॉव स्वतंत्र होकर यह दिखायें कि भारत का सच्चा सोना और खमीर तो हम ही हैं। यह नूर दिखाना स्वतंत्रता में ही सभव है।

न्याय के लिए पूरा अवकाश

"हम सबको इस भूमि को सर्व-धर्म-समानता की भावना के साथ आजादी के रास्ते ले जाने का जी तोड़ श्रम करना होगा। लेकिन मै तो आज इससे विपरीत ही स्थिति देख रहा हूँ। हम लोग बात-बात मे हड़ताले करते हैं। अपने लिए अशोभनीय काम किया करते हैं। यही बताता है कि हमे अपनी आशा पूरी करने के लिए काफी श्रम उठाना पड़ेगा। खासकर मजदूर-वर्ग को अब अपना गौरव पहचानना चाहिए। मजदूर-वर्ग की शक्ति और गौरव हमारी जनता मे जो व्याप्त है, उसके समक्ष पूॅजीपति हतप्रभ हो जाते हैं। लेकिन वे अपने-आपको पहचान पाये, तो सुघड़ और सुव्यवस्थित समाज मे अन्याय का न्याय पाने का उन्हे पूरा अवकाश बना हुआ है। आज कोयले की खानों और दैनिक जीवन के आवश्यक पदार्थों के उत्पादक कारखानों मे हड़ताले देख मुझे दुःख होता है। इससे सारे समाज को और स्वयं हड़तालियो को भी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। यहॉ एक बात का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक समझता हूँ। हड़ताली लोग कहेंगे कि आप खुद ही बड़ी-बड़ी हड़ताले कराते थे और आज हमें यह लम्बा-चौड़ा व्याख्यान देने बैठे हैं ? इनसे मै बता देना चाहता हूँ कि उन दिनों हम लोग दास थे, साथ ही आज जैसी न्याय पाने की स्थिति न थी। लेकिन यह सब देखकर सचमुच मुझे यही लगता है कि पूर्व और पश्चिम के देशों में सत्ता पर कब्जा पाने के लिए जो दॉव-पेच खेले जाते हैं और जिस तरह की

राजनीति खेली जाती है, क्या उन दुर्गुणों से हम बच सकते हैं ? फिर भी मैं आशा करता हूँ कि भौगोलिक दृष्टि से विभाजन होने के बावजूद हम लोग दिल के टुकड़े न होने देंगे और दुनिया के समक्ष अन्ततः एक ही होकर खड़े रहेंगे।

कण्ट्रोल

"कण्ट्रोल उठा लेने के बाद चारो ओर से इसके लिए काफी स्वागत हुआ है। लेकिन मेरे मन मे यह सन्देह ही नही है कि जिस देश मे इतनी अधिक रूई पैदा होती हो, जहॉ इतने अधिक बुनकर और कातनेवाले मौजूद हों, वहॉ कपड़े की तगी हो सकती है। उसके बाद इंधन पर से भी कंट्रोल उठ गया है। इसलिए भी लोगो को काफी राहत मिल गयी है। गुड़ भी अब तो बाजार मे देखते है, उससे अधिक सस्ता मिल जाता है। फिर भी एक भाई अपने गॉव के बारे मे लिखते है कि माल के हेरफेर की अव्यवस्था के कारण ही उसकी यह तंगी मालूम पड़ रही है।

वे भी उतने ही अपराधी

"वि···अप्रामाणिकता और घूसखोरी की बात कोई नयी नही है। लेकिन उसके लिए उच्च प्रकार के राजकीय अमल की जरूरत हुआ करती है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति स्वयं यह न समझेगा कि हम देश के लिए काम कर रहे है, तब तक हम लोग ऊपर नहीं उठ सकेंगे। भले ही कुछ लोग स्वय घूसखोरी और लगाव-बझाव मे न फॅसे हों, लेकिन उसमे फॅसे हुए लोगों को जानते हुए भी उसके प्रति उदासीनता बरतते हैं, वे भी उतने ही अपराधी है।"

आज की प्रार्थना-सभा मे · बम्बई के··नेताओ की जो बाते बापू के पास पहॅुची थीं, उसी पर से उन्होने यह बात सदेश मे भी कही।··अगर समझ जाय, तो अच्छा है। नही तो बापू उसकी गहराई मे उतरेंगे और कदाचित् जाहिर भी कर दें, तो··का तो बुरा हाल हो जायगा। लेकिन उतना समाज मे भी एक·······रूप बनेगा। कारण बापू अब किसीकी परवाह न करेंगे।···प्रार्थना के बाद·· के साथ खूब बाते की। बापू ने···से पुनः नोआखाली जाने की बात भी कही।

● ● ●

कांग्रेस की नीति

: २९ :

विरला-भवन, नयी दिल्ली
२७-१-'४८

नियमानुसार प्रार्थना ! प्रार्थना के बाद तत्काल ही आज की कांग्रेस की अवस्था के विषय में स्वयं लिखा और लिखाया। फिर उसे शीर्षक दिया : 'Congress Position' (कांग्रेस की स्थिति) । इसे मैं उनके ही शब्दों में उद्धृत कर रही हूँ :

हम ईश्वर के सेवक

"The Indian National Congress which is the oldest national political organization and which has after many battles fought her non-violent way to freedom can not be allowed to die. The Congress can only die with the nation. A living organism ever grows, or it dies. The Congress has won political freedom but it has yet to win economic freedom, social and moral freedom. These freedoms are harder than the political, if only because they are constructive, less exciting and not spectacular. All-embracing constructive work evokes the energy of all the units of the millions.

The Congress has got the preliminary and necessary part of her freedom. The hardest has yet to come in it's difficult ascent to democracy, it has inevitably created rotten boroughs, leading to corruption and creation of institutions popular democratic, only in name. How to get out of the weedy and unwieldy growth ?

The Congress must do away with its special register of the members, at no time exceeding one crore, not even then easily identifiable. It had an unknown register of millions, who could never be wanted. It's register should now be co-extensive with all the men and women on the voters', rolls in the country. The Congress business should be to see that no false name gets in and no legitimate name is left out. On it's own register, the Congress will have a body of the servants of the nation, who would be workers doing the work allotted to them from time to time.

Unfortunately for the country, they will be drawn chiefly for the time being from the city-dwellers, most of whom would be required to work for and in the villages of India. The ranks must be filled in increasing numbers from villagers.

These servants will be expected to operate upon and serve the voters, registered according to law, in their own surroundings. Many persons and parties will woo them. The very best will win. Thus, and in no other way can the Congress regain its fast ebbing unique position in the country. But yesterday, the Congress was unwittingly the servant of the nation, it was Khudai Khidmatagar—God's servant. Let the Congress now proclaim to itself and the world that it is only God's servant—nothing more, nothing less. If it engages in the

ungainly skirmish for power it will find one fine morning that it is no more. Thank God, the Congress is now no longer in sole possession of the field.

I have only opened to view the distant scene. If have the time and health, I hope to discuss in these columns what the servants of the nation can do to raise themselves in the estimation of their masters, the whole of the adult population, male and female."

...को लिखा : "जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः, जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः— इस वाक्य को यदि मैं खुद के लिए ही झूठा बना सकूँ, तो काफी मानूँगा। लेकिन यह तो तभी सभव है, जब कि गोलियों की बौछार प्रसन्नता के साथ खुशी-खुशी से सहता रहूँ ! इसलिए २० तारीख की घटना के बारे में खुद को मुबारकबादी के योग्य नहीं समझता। वह तो भगवान् की कृपा ही मानिये। लेकिन मेरी पूरी तैयारी है कि जब हुक्म आयेगा, तभी तैयार रहूँगा। दूसरी को वर्धा जाने की बात तो चला रहा हूँ, लेकिन मुझे खुद ही नहीं लगता कि जा पाऊँगा। कल का कौन जानता है ?

" • आज ही मैंने काग्रेस की नीति के बारे मे लिखा है, वह तुम देखोगे ही।...को समझाने की कोशिश कर रहा हूँ।...कहते है कि मुझे...के बिना नही चलेगा। और...कहते है कि मुझे...के बिना नहीं चलेगा। अगर एक इत्तिफाक की बात करता है, तो...वह तो तैयार ही है। कश्मीर के बारे में मैं मानता हूँ कि हमे लेकसक्सेस तक जाने की कोई जरूरत नही। फिर भी देखें, क्या होता है ?

"यहाँ करने या मरने का सकल्प किया था। [कुछ काम तो बन गया है, ऐसा दीखता है। फिर भी बहुत सँभालना होगा ही।

"आज महरौली जानेवाला तो हूँ।"

बापू का 'रिक्कुशन'

बापू कातते है, तो उनके सूत के जो टुकडे-टुकडे निकलते है, उन्हे वे इकट्टा

किया करते हैं और उसे भरकर वे अपने पुराने रूमाल की चौकोर थैली सी लेते हैं। फिर उसे पिन रखने के लिए 'पिनकुशन' बनवाया। आज महरौली से आकर यही काम किया।

औलिया की दरगाह और बापू

दस बजे हम लोग कुतुबुद्दीन औलिया की दरगाह का उर्स देखने महरौली गये। वहाँ हिन्दू, सिख, मुसलमान हजारो की संख्या मे जुटे थे। किसीको जरा भी आशा न थी कि यहाँ इतना सुन्दर मेला लग सकेगा। मोती मसजिद मे संगमरमर की पत्थर की जालियाँ तोड़ डाली गयी। कब्र के पास कुरान शरीफ की आयत पढ़ी। फिर मौलवी साहबों ने बापू के प्रति बड़ी ही कृतज्ञता व्यक्त की। बापू की तन्दुरुस्ती के लिए दीर्घायु बख्शी। फिर बापू से दो शब्द कहने की प्रार्थना की। बापू ने कहा :

"भाइयो और बहनो !

"बहनो से मेरी प्रार्थना है कि वे बिलकुल खामोश हो जायँ। चन्द मिनट मुझे दे दे। मेरे मन मे जरा भी यह नहीं था कि यहाँ मुझे बोलना होगा। मैं तो एक यात्री की हैसियत से आया हूँ। मैंने कुछ दिन पहले सुना था कि हर साल जैसा इस साल मेला नही होगा। अगर ऐसा होता, तो मुझे भारी दुःख होता। आज तो मेरी आपसे इतनी ही प्रार्थना है कि अगर हम हिन्दू, सिख, मुसलमान यहाँ सच्चे दिल से आये है, तो हम इस पाक जगह पर ऐसा निश्चय कर ले कि अब कभी भी झगड़ा नही होने देगे। हम लोग दोस्त बनकर, एक होकर भाई-भाई बनकर रहेगे। तब तो दुनिया यही कहेगी कि दो भाई लड़ते थे, मगर आखिर एक-दूसरे के दुश्मन नहीं बने। भले ही हम ऊपर से जुदे-जुदे रहे, मगर आखिर एक पेड़ की ही पत्तियाँ है। शैतान की बदगी करनेवाले की बात नही करता। मेरी जिन्दगी तो चलती आयी है। कोई चीज नयी नही है। अभी भी हम कहीं-न-कहीं तो लड़ते ही है। आज ही पढ़ा कि सरहद मे हिन्दू काटे गये। इसके लिए यहाँ के सब मुसलमानों को दुःख होना चाहिए। हम अपना दिल साबित रखे और सोचे कि जो वहाँ मारे गये, वे वापस तो नही आयेगे। इसलिए हम वहाँ चिट्ठी लिखे, तो यही लिखे कि हम इसका बदला

किसीकी कतल करके नहीं लेंगे, वल्कि और पाक करेंगे व मुहब्बत करेंगे। जव हम यह समझ लेंगे, तभी हिन्द के लिए खैर है। फाका छोड़ने का यही मतलव था कि दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान पाक बनें। अगर सिर्फ मुझे जिन्दा रखने के लिए ही फाका छुड़वाया हो, तव तो वह गलत ही है।"

नाक काटने की तैयारी

१२ वजे हम लोग वहाँ से लौटे, तो बापू कह रहे थे कि "यहाँ इतना हुआ है, फिर भी मेरा विश्वास है कि पाकिस्तान मे इससे भी ज्यादा हुआ होगा। इससे कम तो नहीं ही। पेशावर मे १३० काटे गये, यह तो वहाँ की सरकार कहती है। लेकिन मेरा विश्वास है कि इससे कहीं अधिक काटे गये होंगे। फिर भी अभी वहाँ का एक भी मुसलमान यह नहीं कहता कि यह सव वन्द होना ही चाहिए। सिखों से तो जो आशा रखी गयी थी, उससे बहुत अधिक बहादुरी उन्होंने दिखाई है, यह मुझे कवूल करना ही होगा। फिर पेशावर में जो हुआ, वह किसी कारण के वगैर ही हुआ माना जायगा। 'यू० एन० ओ०' वाले तो सोलहों आने सफेद झूठ पर उतर पड़े हैं। ये जवाहर की नाक काटने की तैयारी करते हैं। जवाहरलाल की इतनी सारी मेहनत पर पानी फिर जायगा, अगर वे चतुराई से काम न लें।"

बापू थक गये थे। घर पहुँचने पर उन्होंने पैर धुलवाये। मिट्टी का प्रयोग किया। हम लोग भी आकर जुट गये।

दोपहरभर मुलाकातें ही चलती रहीं। मिलनेवालों मे निम्नलिखित नाम उल्लेख्य हैं : सर्वश्री पन्तजी, मौलाना साहव, विजयानगरम् के महाराजकुमार, जस्टिस रामलालजी, मेहरचन्द खन्ना, पण्डितजी, रामेश्वरी वहन आदि। श्री मेहरचन्द खन्ना ने सीमाप्रान्त की घटनाएँ वतलाते हुए उन पर असह्य दुःख व्यक्त किया।

आज की प्रार्थना-सभा मे बापू ने कहा कि "आज यहाँ जितने मुसलिम भाई और वहनें हैं, वे हाथ उठायें।" किन्तु एक ही हाथ ऊपर उठा।

घोर जंगलीपन

फिर उन्होंने महरौली की चर्चा की। सभा में वहाँ के हिन्दू और सिख भी

अधिक सख्या मे उपस्थित थे : "बड़े दुःख की बात है कि यह दरगाह तो बादशाही जमाने की है। यहाँ मुख्यतः नक्काशी का काम रहा। पुराने जमाने का इतना सुन्दर नक्काशी-काम तोड़-फोड़ डालना कोई समझदारी की बात नही। उस औलिया की टूटी-फूटी भव्य कब्र देख मेरे मन मे यह प्रश्न खड़ा हुआ कि क्या हम लोग इतने नीचे उतर आये है ? मान लीजिये, पाकिस्तान मे इससे भी अधिक भयकर और बीभत्स काम हुए हो। लेकिन क्या बुरे कामो मे भी प्रतियोगिता की जा सकती है ? दूसरी बात यह कि आज मुझे यह खबर मिली है कि सीमाप्रान्त और पाकिस्तान मे एक जगह, एक साथ १३० हिन्दू और सिख काट डाले गये। फिर लूट-पाट जो हुई, वह तो घलुए मे है। मै पूछता हूँ कि आखिर इन सबको किसने मारा ? इसी तरह मरनेवालो का कुछ अपराध था, यह भी कोई कह नही सकता। लेकिन यदि आप लोग वहाँ के इस भयंकर काण्ड का यहाँ बदला ले, तो निश्चय ही वह जंगलीपन कहा जायगा। अतः इस पर पूरा ध्यान रखे कि ऐसा कोई भी अनुचित काम आज के शान्तिमय वातावरण मे न हो पाये। पाकिस्तान मे जो भी कुछ सत्यानाशी चल रही है, उसके विषय में तो हमारी सरकार सतर्क है ही।

स्वतंत्रता का मूल्य

"राजकुमारी अमृतकौर अभी-अभी मुझसे मिलने आयी थी। वे अजमेर होकर आ रही है। उन्होने बताया कि वहाँ के हरिजनो से जो काम करवाया जाता है, वह सब तो वे करते ही है। लेकिन वे जहाँ बसते है, वहाँ की गन्दगी की तो पूछिये ही नही। आखिर वहाँ तो हमारी सरकार का ही शासन चल रहा है। इसलिए वहाँ के हिन्दू-सिख अधिकारी एक दिन उस बस्ती मे जाकर देखे, तभी उन्हे पता चलेगा। वे बेचारे हरिजन है, इसीलिए उन्हे इस तरह सड़ते हुए रखा जा रहा है। दिल्ली मे भी जब मै भगी-बस्ती मे था, तो उनका यही हाल देखा। लेकिन अजमेर तो उससे भी बढ़ा-चढ़ा निकला। हम लोगो ने स्वतन्त्रता तो पायी, लेकिन उसके साथ ही अगर ऐसी-ऐसी बुरी दशाओ मे सुधार न करेगे, तो उस स्वतन्त्रता का मूल्य दो कौड़ी का हो जायगा। हम लोग आज ईश्वर को भूल गये है। एक-दूसरे का ऐब देखने से हमे फुर्सत ही नही मिल पाती।

किससे क्या कहूँ !

"आज मेरे पास मीरपुर के लोग आये थे। बेचारे हमलावरों के शिकार हुए है। हमलावर उनकी बहनो और बूढ़ो को उठा ले जाते और उनकी आबरू लूटते है।

"मै किससे क्या कहूँ ? इतना ही कहता हूँ कि आखिर ऐसे कुकृत्यो की कोई सीमा भी है या नहीं ? फिर भी कहते है कि आजाद कश्मीर के लिए हम लोग ऐसा काम करते है। यदि खाने-पीने के लिए न मिले, तो लूट-पाट की बात समझ मे भी आ सकती है। लेकिन छोटी-छोटी छोकरियों की आबरू लेना, उन्हे खाना-कपड़ा न देना—क्या यह सब इसलाम-धर्म और कुरान शरीफ में लिखा हुआ है ?

"बेचारे मीरपुर के लोग मेरे पास आये थे। हृष्ट-पुष्ट थे, पर बेचारे शरमाते रहे। जवाहरलालजी को इस बात का गहरा दुःख है। वे पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन उससे जिन्होंने जान-माल खोया है, उनका समाधान कैसे हो सकता है ? आज जो भाई मेरे पास आये थे, अभी उनके करीब पन्द्रह लोग हमलावरो के हाथो मे पड़े हुए है। सारी दुनिया के नाम और ईश्वर के नाम पर वहॉ जो हमलावर चढ आये है, उनसे और उनके पीछे रहनेवाली पाकिस्तान सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि किसीकी भी कैसी ही मॉग हो, उससे पहले खुद ही समझ-बूझकर अपनी इज्जत बचाये और बहनो को वापस लौटा दे। मैने भी इसलाम-धर्म का अध्ययन किया है। उसके बारे में काफी पढ़ा है। इसलाम या दुनिया का और भी कोई धर्म यह हर्गिज ही नही सिखलाता। इसलिए इसमे ईश्वर या खुदा नहीं, वरन् शैतान की ही भक्ति कही जायगी। इसे छोड़ देने मे ही आपका और सबका भला है।"

प्रार्थना के बाद बापू घूमे। घूमते समय मिस्टर सिआम (Mr. Sheeam) साथ थे। उनसे आजाद-कश्मीर के विषय मे बाते हुई। शाहनवाज साहब भी थे। वे कश्मीर जाने के लिए तैयार हैं। बाद में पण्डितजी आये थे। उन्होने भी आज मीरपुर की घटना के बारे मे बातचीत की। वे कल माउण्टबेटन के साथ भी इस बारे मे सलाह-मशविरा करेंगे।

९॥। बजे सोने की तैयारी हुई।

● ● ●

दुखिया-सुखिया के आधार

: ३० :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२८-१-'४८

गुण ही अपनायें

मालिश के समय बापू ने बंगाली-पाठ किया। स्नान के समय वे बाथ मे ऑखे बन्द करके ही पड़े रहे। मैने भाई साहब को चिट्ठी भेज दी या नही और वे यहॉ कब आयेगे, इस बारे मे पूछताछ की। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका की समस्या खड़ी होने के तार और पत्रो मे छपे हुए समाचार पढ़ सुनाये।

बाथ के बाद लगभग घण्टेभर से ऊपर राजेन्द्र बाबू से बातचीत की। ...की घूसखोरी की बातों के बारे मे बापू आज प्रार्थना मे चुटकी लेगे।

...को ऐसा लगता है कि बापू मेरे और ...के बारे मे पक्षपात करते है। बापू कहते है : "यो तो मै किसीका भी पक्षपात नही करता। फिर इसमे तो कौन-सी पक्षपात की बात है ? कदाचित् सम्भव है कि मै अपना दोष न देख पाता होऊॅ ! मेरे जो दोष हो, उन्हे फेक दिया जाय और जो गुण हो, उन्हे ही ग्रहण किया जाय।"

बापू भी हम जैसे नन्हे बच्चो को भी इस तरह जवाब देते है कि आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है। खुरशीद बहन आयी थीं, इसलिए उनके साथ पाकिस्तान सम्बन्धी बाते की। सर सुलतान अहमद के साथ भी सरहद के बारे मे बातचीत की।

सरकार मेरे हाथ में नहीं

दो बजे सेण्ट्रल रिलीफ कमेटी मिलने आयी। लोगो को दिये जानेवाले अनाज के बारे मे उन लोगो ने बातचीत कर बापू से प्रार्थना की कि "वे इस बारे मै ध्यान देने के लिए सरकार से कहे।" बापू ने कहा : "सरकार मेरे हाथ मे नही है। मै तो आप जैसी ही उसे प्रार्थना करके देखूॅगा। भावनगर के बंशीधरजी मूॅगफली की फसल के बारे मे बातचीत करके गये। बापू मानते हैं कि मूॅगफली की फसल पर भी सरकार को यह नियन्त्रण रखना चाहिए कि इतने भाग मे अत्यावश्यक रूप मे अनाज की फसल होनी ही चाहिए।"

आज किसीने दो आने के लिफाफे मे हजारों रुपये भेजे है। किसकी ओर से आये है, यह कोई भी नही जानता। किसन भाई ने बापू से कहा कि "आप इस बारे मे प्रार्थना-सभा मे दो शब्द कहे, क्योकि इसी तरह दो आने के लिफाफे मे हजारो के नोट भेजने पर वे कभी गायब भी हो सकते है।"

करके बताइये

हैदराबाद के नवाब जग सादिक अली खान आये हुए हैं। उन्होने तो बापू से यह कहा कि "हमारे सिर पर तो आपका ही छत्र है।" बापू ने कहा: "मुझे यह लिखकर दीजिये और करके बताइये। सरहद, बहावलपुर, सिंध आदि स्थानो मे जहाँ-जहाँ हिन्दुओ पर हमले हो, हैदराबाद की जनता और खासकर मुसलमान भाइयो का कर्तव्य है कि उनकी जोरदार शब्दो मे निन्दा करे!"

बहावलपुर के भाइयो से बापू मिल न पाये, क्योंकि इसी बीच पंडितजी आ गये। बापू ने भाई साहब से कहा कि "उनसे बाते समझ लो।" प्रार्थना मे भी उसके विषय मे कहा। सचमुच बापू सभी सुखिया और दुखिया लोगों के आधार है। उनसे मुलाकात का समय भी भरपूर रखा जाता है। दुखियो से न मिल पाना उन्हे अच्छा नहीं लगता। वे कहते है: "आखिर मै दिल्ली मे इसीलिए तो रह रहा हूँ। इनका दुःख दूर करनेवाले अलग हैं, लेकिन इनकी बातें समाधानपूर्वक सुनने के लिए भी समय न दे सकूँ, तो मैं किस काम का रहूँगा?"

यही कारण है कि आज प्रार्थना-सन्देश में उन्होने आरम्भ मे ही कहा:

"बहावलपुर के भाइयो से मिल नहीं पाया, इसके लिए मुझे खेद है। उन लोगो को वचन देता हूँ कि उनसे मिलने के लिए किसी भी तरह समय निकाल दूँगा। लेकिन उनके लिए हर सम्भव मदद देने के लिए मैं पूरा यत्न कर रहा हूँ। यही कारण है कि मैंने डॉ० सुशीला नायर को बहावलपुर भेजा है।

"ईश्वर की कृपा से तीनो जातियो के बीच यहाँ जो एकता स्थापित की जा सकी है, वह चल ही रही है। इस सहयोग के लिए आप सब लोगो का मै आभारी हूँ।

अफ्रीकी सरकार को संदेश

"आज मुझे आपसे दक्षिण अफ्रीका के बारे में कुछ बाते कहनी है। हमारे यहाँ चाहे जो जनता आकर रह सकती है। चाहे जहाँ जमीन लेकर रहा जा

सकता है। यह हक कोई नही छीनता, यद्यपि यह सच है कि हम लोग हरिजनो के साथ दुराव करते है।

"लेकिन दक्षिण अफ्रीका मे तो काले आदमी को अमुक रास्ते से भी जाने नही देते, तो फिर अन्य अधिकारो की बात ही क्या है ? इसका साक्षी स्वय मैं हूँ। यही कारण है कि हमारे लोग वहाँ लड़ाई लड़ रहे है। लड़ने के तो अनेक रास्ते है, लेकिन वहाँ के प्रवासी भारतीयो ने तो उस लड़ाई को सत्याग्रह का ही नाम दिया है। वहाँ की सरकार उन्हे एक शहर से दूसरे शहर में भी जाने नहीं देती। जैसे—नेटाल, ट्रान्सवाल, हिलस्टेट, केपकॉलनी आदि। अफ्रीका खण्ड तो बहुत बड़ा खण्ड है। वही के वही एक जगह से दूसरी जगह जाना हो, तो पासपोर्ट लेना पड़ता है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है। अतएव कुछ लोग नेटाल से कूच-कर ट्रान्सवाल पहुँच गये। मुझे कहना चाहिए कि वहाँ की सरकार ने इतना विवेक और सौजन्यता दिखलायी है कि अभी उन्हे गिरफ्तार नही किया गया। बल्कि वहाँ लोगो ने इस कूच का काफी स्वागत भी किया। यह एक बहुत ही बहादुरी का काम माना जायगा। फिर वहाँ तो हिन्दू, मुसलमान भी हैं। वे सब हिल-मिलकर ही अपना काम करते है। जब तक गिरफ्तार न होगे, तब तक ये अपने कूच मे आगे बढ़ते जायँगे। आगे चलकर कदाचित् हम उन्हे इस बहादुरी के लिए धन्यवाद भी दे। अगर भारतीय अपनी जगह पर जिम्मेदारी के साथ रहते है, तो गोरो को उसके लिए दुःख होने की क्या बात है ? जैसे वे स्वतन्त्र है, वैसे ही हम भी स्वतन्त्र है। इसलिए यही से मै दक्षिण अफ्रीका की सरकार को भी यह सन्देश देना चाहता हूँ कि जो कोई जहाँ भी रहे, वहाँ अपना समझकर रहना हो, तो उसकी दृष्टि मे वह स्थान अपना ही है। मै बीस वर्ष तक दक्षिण अफ्रीका में रह चुका हूँ। इसलिए मै उस देश को भी भारत की तरह अपना ही देश मानता हूँ।

"मैसूर के मुसलमानो ने मुझे तार भेजकर अपनी परेशानियाँ बतायी है। इस सम्बन्ध मे कानून और व्यवस्था-विभाग के प्रधान का मेरे पास तार आया है, जिसमे वे लिखते है कि मैसूर के मुसलमानो की भलीभाँति देखभाल की जा रही है। इस सम्बन्ध मे मुझे वहाँ के मुसलमानो से कहना है कि अगर आप अपना भला चाहते हो, तो किसी भी तरह की अतिशयोक्ति न करें।

ऐसी भूल न करें

"अब हम लोगो के भोलेपन की भी एक बात सुन ले। कितने ही लोग मुझे दान में पैसे भेजते है। बेचारो को समझ मे ही नही आता कि किस तरह पैसे भेजे जायँ। इसलिए वे दो आने के लिफाफे मे उसे पोस्ट कर देते है। वे यही सोचते होगे कि लिफाफा कौन खोलेगा ? इस प्रसग मे मुझे अपने बचपन का एक किस्सा याद आ रहा है। मेरे पिताजी के पास एक कीमती जवाहिरात था और उसे उन्होंने इसी तरह लिफाफे मे पोस्ट कर दिया। समय पर उस पत्र की पहुँच न आने पर वे बड़ी ही चिन्ता मे पड़ गये और उसका पता लगाने के लिए उन्हे तार करना पड़ा। इसलिए इस तरह किसीके हाथ मे पत्र लग जाय और रुपये गलत जगह पहुँच जायँ, तो दाता का दान भी व्यर्थ चला जायगा और दरिद्रनारायण की पूँजी भी चली जायगी। इसलिए कभी भी कोई ऐसी भूल न करे।"

प्रार्थना के बाद राजकुमारी बहन के साथ बातचीत की। "अब प्रार्थना-सभा मे आवाज होती है या नही", यह पूछने पर "Were there any noises in your prayer meeting today Bapu ?" बापू ने उनसे कहा : "No. But does that question mean that you are worrying about me ? If am to die by the bullet of a mad man I must do so smiling. There must be no anger within me. God must be in my heart and on my lips. And any thing happens, you are not to shed one tear......"

उसके बाद मन्त्रिमण्डल के विषय मे बातचीत हुई। फिर पैर धोकर और कसरत करके सोने की तैयारी की।

शाम को भाई साहब का तार आया है कि वे ३१ तारीख को सुबह यहाँ पहुँचेंगे। बापू ने कहा : "ठीक है, अगर यहीं आता है तो, क्योकि वर्धा जाना अभी अनिश्चित ही कहा जायगा। फिर यदि जाना ही हो, तो हमारे साथ वर्धा चल सकते है। फिर वहाँ से उन्हें महुवा जाना हो, तो जा सकते है। वर्धा जाने

की आशा में वर्धा न पहुँचकर यही आ रहे हैं, यह उनकी बुद्धिमानी ही मानता हूँ।"

मालिश हुई। आज तो सारा बहुत ही छिछला लिखा गया है।

९॥ बजे सोने की तैयारी हुई। सब कुछ निपटाकर मैं १०॥ बजे सोने गयी। जाड़ा तो कम हो ही नही रहा है।

● ● ●

बापू का वसीयतनामा : ३१ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२९-१-'४८

मृत्यु सच्चा मित्र

३॥ बजे नियमानुसार प्रार्थना !···प्रार्थना के समय जगी नहीं थी। बापू ने उन्हें जगाने से रोक दिया था। मुझसे उन्होंने कहा : "अब मै किसीका काजी बनना नहीं चाहता। सभी अपनी इच्छानुसार ही अपना-अपना धर्म पाले। इसीमें मेरा और आप सबका भला है। तुझे अब·· से कुछ भी न कहना चाहिए।"

फिर चॉदवानीजी के लिखे पत्रों का संशोधन किया। वे बेचारे हिन्दी समझ नहीं पाते और न बापू की अंग्रेजी ही पढ़ पाते हैं। बापू इतना कम लिखते हैं कि दो लकीरों मे ही सब कुछ समझ में आ जाय। लेकिन चॉदवानीजी का लेख तो लम्बा होता है। वे कल ही मुझसे कह रहे थे कि "बापू के साथ रहने का मतलब है—तलवार की धार पर रहना।"

फिर सेवाग्राम के लिए सुलोचना बहन की मृत्यु के बारे मे उसके पिता के नाम पत्र लिखा :

"तुम्हारी पुत्री सुलोचना के स्वर्गवास की खबर चि० किशोरलाल ने दी। मुझे कुछ भी पता नही था। मै क्या लिखूॅ? तुम्हे आश्वाशन क्या दिया जाय? मृत्यु सच्चा मित्र है। हमारा अज्ञान ही हमे दुःख देता है। सुलोचना की आत्मा तो कल थी, आज है और भविष्य मे भी रहेगी। शरीर तो जाना ही है। सुलोचना अपने दोष लेकर और गुण रखकर गयी है। उसे हम न भूले। फर्ज अदा करने मे और सावधान बनो।

—बापू के आशीर्वाद।"

"चि० किशोरलाल,

आज प्रार्थना के बाद का समय पत्र लिखने मे ही दे रहा हूँ। शंकरजी की कन्या की मृत्यु का समाचार आपने ठीक ही दिया। उसे पत्र लिख दिया है। मेरी वहाँ आने की बात हवाई ही समझिये। यो तो ३ से १२ तारीख तक वहाँ रहने की बातचीत चला रहा हूँ। लेकिन दिल्ली मे निश्चित क्या कहा जाय? अतः प्रतिज्ञा का पालन करने का प्रश्न नही। कारण यह यहाँ के साथियो पर ही निर्भर है। कदाचित् कल निश्चय हो सके। मुझे ताकत आ रही है। इस समय 'किडनी' और 'लीवर' दोनो बिगड़े है। इसका कारण मेरी दृष्टि में राम-नाम की कमी है।

—बापू के आशीर्वाद।"

जयप्रकाश और बापू

५-४० बजे बापू चिट्ठियों का काम पूरा करके सो गये। फिर जयप्रकाशजी और प्रभावती बहन अन्तिम बार, दिल्ली छोड़ने से पहले मिलने के लिए ही आये। बापू ने उनके समक्ष अपना दुःख व्यक्त किया। उन्होने यह इच्छा व्यक्त की कि "समाजवादी लोग जिस तरह आजादी के लिए एकदिल होकर अंग्रेजो के साथ लडे, उसी तरह आज आजादी के जमाने मे भी साथ दे, तभी 'समाजवाद' सच्चे अर्थ मे निखर उठेगा।" उनकी ओर से भी यह वचन दिया गया कि "जब तक बापू जीवित हैं, तब तक तो वे बापू का हुक्म हमेशा सिर चढ़ायेंगे।" किन्तु बापू 'हुक्म' नहीं, 'फर्ज' को मानते हैं। फिर भी जयप्रकाश जैसे वफादार और बुद्धिमान् लोग है कहाँ? बापू तो गुणपूजक है, इसीलिए वे इन्हे संगृहीत किये हुए है।

बाथ के समय बापू ने हम सबके बारे मे बाते की। मैंने कहा: "···से मैं उम्र में छोटी हूँ। इसलिए उनके बारे मे आप मुझसे कुछ भी कहते हैं, तो···को अच्छा नहीं लगता।···को अकेले बातचीत के लिए समय मिलना चाहिए।" बापू ने कहा: "मै उम्र का छोटा या बड़ापन देखता ही नहीं। लेकिन···से काम लेना बड़ा कठिन है। आज उसे समय दूँगा। वह खुद ही मुझसे क्यो नहीं कहती?"

भोजन के समय पौन घंटा···के साथ एकान्त मे बातचीत हुई। १०॥ बजे पद्मजा बहन, कृष्णा बहन हठीसिंह, इन्दिरा बहन गांधी और तारा बहन (श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित की कन्या) आयी थीं। बापू ने उनके साथ विनोद करते हुए कहा : (सभी नेहरू परिवार कै स्त्री-सदस्य होने के कारण) "आइये, क्या ये रानियॉ मुझसे मिलने आयी है ?" सभी खिलखिलाकर हॅस पड़ी। बापू ने कहा कि सभी लोग जहॉ चाहे, बैठे। बापू जाड़े के कारण धूप मे नोआखालीवाला हैट पहनकर बैठे थे। इन चारो बहनो के परिवारो की हाल-चाल पूछी। पद्मजा बहन ने कहा : "बापू, क्या यह बर्मी हैट है ?" बापू ने कहा : "सुन्दर बर्मी हैट तो अभी आनेवाला है। तब तो मैं बहुत ही सुन्दर दीख पड़ूंगा न ?" सभीने खूब-खूब मजाक किया। आखिर बापू ने कहा : "अब तुम सब लड़कियॉ भाग जाओ। नही तो जो बाहर लोग है, वे तुम लोगो को गालियॉ देगे।"

···ने बापू से एकान्त मे मिलने के लिए समय मॉगा, क्योकि बहुत लोगो के बीच उन्हे बोलना पसन्द नही पड़ता। उन्होने कहा : "हर बार एकान्त में मिलना अब कठिन हो गया है। अब तो आप लोगो की भीड़ मे ही मिल सकते है।"

इसके बाद स्थानीय मौलाना आये। उनके साथ सरहद और सिन्ध के बारे मे बातचीत की। अब दिल्ली मे तो पर्याप्त शान्ति हो गयी है।

मिट्टी, कताई आदि सभी नियमानुसार ही चलता रहता है। सुधीरदास ने 'लन्दन टाइम्स' में छपे पण्डितजी और सरदार दादा के मतभेदों की खबर सुनायी। बापू तो यह समझ ही गये हैं कि कोई हम लोगो के बीच फूट डाल रहा है, लेकिन हम लोग इसके लिए इतना हायतोबा क्यों मचायें ? बापू तो उन दोनो से यही बात कहनेवाले हैं। फिर ग्वालियर के दीवान और श्रीनिवासजी आये। श्रीनिवासजी ने मद्रास की अनाज की तगी के बारे मे बातचीत की।

मिस मार्गरेट के साथ बापू

श्रीमती राजेन नेहरू अमेरिका जा रही हैं, इसलिए बापू को प्रणाम करने आयी थीं। २॥ बजे मिस मार्गरेट आयी थी। वे अमेरिका मे रहती है। उन्होने

अपना परिचय एक सतानेवाली (Torturer) के तौर पर दिया। वे प्रेस-रिपोर्टर हैं। मुझे पहचानती थीं, क्योंकि वे नोआखाली आयी हुई थीं। उन्होंने 'ट्रस्टीशिप' के विषय मे वापू के विचार पूछे। वापू ने इसके जवाब मे यह कहा :

"A trustee is one who discharges the obligations of his trust faithfully and in the best interests of his words.'

फिर उन्होंने पूछा कि "क्या भारत मे ऐसा आदर्श रखनेवाला कोई आपके ध्यान मे है ?" वापू ने कहा :

"No—though some instance my host Shri G. D. Birla. I hope he is not deceiving me. If I saw him do so, I would not live under his roof."

उन्होंने वापू से एक दूसरा सवाल पूछा कि "आप १२५ वर्ष जीने की जो इच्छा रखते हैं, उस पर दृढ़ ही हैं ?"

वापू ने कहा : " I have lost that hope because of the terrible happenings of the world. I don't want to live in darkness."

उन्हे वापू ने सिर्फ दो मिनट ही समय दिया था। आज का समय तो काफी है। लेकिन उन्होंने खुद वापू के फोटो लिये थे। उन पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्हे वापू के सामने रखा और साथ ही साथ वातचीत भी समाप्त करते हुए उनसे पूछ ही दिया कि "क्या वापू चाहते है कि अमेरिका को अणुवम नही वनाना चाहिए ?" उन्होंने कहा :

"Would you advise America to give up the manufacture of Atom bombs ?"

वापू ने जोर देकर कहा :

"Most certainly. As things are, the war ended disastrously and the victors are vanquished by jealousy and lust for power. Already a third war is being canvassed which may prove even more dis-

astrous. Ahimsa is a mightier weapon by for then the Atom bomb. Even if the people of Hiroshima could have died in their thousands with prayer and good-will in their hearts, the situation would have been transformed as if by a miracle."

बापू को लगा कि इस बहन का लोभ मिट नहीं सकता। अतः अन्तिम फोटो पर सही करने के साथ ही घड़ी की ओर देखकर कहा : "आपके दो मिनट तो कबके हो गये। देखिये, दो मिनट पर कितने सेकण्ड हो गये है ?"

उसके बाद तुरत ही दूसरी अमेरिकन बहन भी मिलने आयी थी। वे जनरल सेक्रेटरी आफ दि वर्ल्ड हेड क्वार्टर्स ऑफ दि वाई० डब्ल्यू० सी० ए० थी। वे स्विट्जरलैण्ड मे रहती है। इन दिनों भारत मे आयी है। इन्हे भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक प्रश्नो मे विशेष रुचि है। उन्होने बापू से इस विषय मे पथ-प्रदर्शन पाने की इच्छा व्यक्त की कि "हिन्दुस्तान की अच्छे-से-अच्छे रूप मे किस तरह सेवा हो सकती है अथवा भारत को इस तरह देखना हो, तो उसके लिए क्या करना चाहिए ?" बापू ने कहा :

"American visitors should endeavour to see India could go round and offer friendly and constructive criticism but to describe its dirty spots as India would be a caricature."

बापू ने इसी प्रसग मे Emily Kinnaired की याद कराते हुए कहा कि "वे स्वेच्छा से बापू के पास आये थे और उनके साथ चलकर प्रार्थना-सभा मे जाते थे। वे शुद्ध शाकाहारी थे। मरने तक उनके और मेरे बीच आत्म-चिन्तन के विषय मे बहुत ही अच्छा पत्र-व्यवहार चलता रहा।"

उसके बाद भारत के ईसाइयो के बारे मे किये गये सवाल के जवाब में बापू ने कहा :

"The best course would be to leave them to their own resources, to help them settle down as sons of the soil."

ईश्वर की आवाज

उसके बाद अन्धे लोग मिलने आये। वे बापू के निकट आश्वासन पाने के लिए पाकिस्तान से आये हुए थे। अन्त में बन्नू के लोग आये। वे अपनी करुण कहानी बड़ी ही नाराजगी और आवेश के साथ सुना रहे थे। एक बूढ़े भाई ने तो बापू को हिमालय चले जाने के लिए कहा। लेकिन बापू ने उसे जरा कड़े स्वर में कहा कि "मेरा हिमालय तो यहीं है। आप लोगों का दुःख दूर करना, आपकी सेवा करते-करते मरना ही मेरे लिए हिमालय में जाने जैसा है।"

बापू को इन लोगों की बात इतनी चूभ गयी कि प्रार्थना के लिए उठते हुए उन्होंने मुझसे कहा : "इसे तू अपने और मेरे लिए एक नोटिस ही समझ। जो लोग मेरे एक एक बोल को झेल लेते थे, सिर चढ़ाते थे, वे ही आज मुझे हिमालय चले जाने के लिए कह रहे हैं। इन दुःखी भाइयों के हृदय की यह चीत्कार इस यज्ञ में पड़े हम लोगों के लिए ईश्वर की आवाज ही समझ। यह बात तुझसे ही कह रहा हूँ, क्योंकि इस यज्ञ में यहाँ प्यारेलाल, सुशीला, आभा, चाँद, देव, बिसेन सभी होते हुए भी मेरे निकट कोई भी नहीं है। अकेली तू ही मेरे साथ बँधी हुई है। इसलिए आत्मा की आवाज तुझसे कैसे छिपाई जा सकती है?" बापू बड़े ही दुःखी दीख पड़े।

उसमें भी फिर ' 'की घूसखोरी संबंधी अन्य बातें भी सामने आ गयीं।

आज का दिन तो इतना व्यस्त था कि श्वास लेने तक की फुर्सत नहीं मिली। बापू कांग्रेस के संविधान के विषय में लिख रहे हैं। प्रार्थना-प्रवचन को चाँदवानीजी ने खूब ही उलझा दिया था। अतः उसे सुधारने के लिए बापू को उसे फिर से लिखना पड़ा। इस कारण और भी ज्यादा मेहनत पड़ी। वे काफी थक गये हैं, लेकिन काम तो पूरा करना ही पड़ेगा!

[पूज्य बापू का आज का प्रार्थना-प्रवचन इस पृथ्वी पर का अन्तिम प्रार्थना-प्रवचन बन गया। इसी तरह कांग्रेस-संविधान संबंधी उनके विचार भी किसी अशुभ घड़ी में लिखे हुए अन्तिम विचार ही सिद्ध हुए। अतः उन दोनों को उन्हीं के शब्दों में यहाँ दे रही हूँ।]

"कहने की चीजें तो काफी पड़ी हैं, मगर आज के लिए ६ चुनी हैं।

१५ मिनट मे जितना कह सकूँगा, कहूँगा। देखता हूँ कि मुझे यहाँ आने मे थोड़ी देर हो गयी है, वह होनी नही चाहिए थी।

गलतफहमी की सफाई

"सुशीला बहन बहावलपुर गयी है, उस बारे मे थोड़ी गलतफहमी हो गयी है। वह वहाँ के दुःखी लोगो को देखने के लिए ही गयी है। दूसरा कोई अधिकार तो है नही और न हो सकता था। वह फ्रेण्ड्स-सर्विस के लेसली कोस साहब के साथ गयी है। मैने फ्रेण्ड्स-यूनिट मे से किसीको भेजने का सोचा था, ताकि वह वहाँ के लोगो को देखे, उनसे मिले और मुझे हालत बता दे। उस समय सुशीला बहन के जाने की बात नहीं थी, लेकिन जब उसने सुना कि वहाँ सैकड़ो आदमी बीमार पड़े हैं, तब मुझसे पूछा कि क्या मै जाऊँ? मुझे बहुत अच्छा लगा। वह नोआखाली मे काम करती थी, तभी फ्रेण्ड्स-यूनिट के साथ उसका संघर्ष था। आखिर वह कुशल डॉक्टर है और पंजाब के गुजरानवाला इलाके की है। उसने भी काफी गँवाया है, क्योकि उसकी तो वहाँ काफी जायदाद है। वह उर्दू और अंग्रेजी भी जानती है। अतः वह कोस साहब को मदद दे सकती है।

"वहाँ जाने मे खतरा अवश्य है। लेकिन उसने कहा : "मुझे क्या खतरा है? ऐसे डरती, तो नोआखाली ही कैसे जाती? पंजाब मे बहुत लोग मर गये हैं, बिलकुल मटियामेट हो गये है। लेकिन मेरा तो ऐसा नही। खाना-पीना मिलता है। सब कुछ ईश्वर करता है। सो आप मुझे भेजेगे और कोस साहब ले जायँगे, तो मै वहाँ के लोगों को देख लूँगी"।

"मैंने जब कोस साहब से भी पूछा कि क्या सुशीला को आपके साथ भेजूँ, तो वे खुश हो गये। कहने लगे : "यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मै उनकी मार्फत वहाँ के लोगों से अच्छी तरह बातचीत कर सकूँगा। साथ मे कोई हिन्दुस्तानी जाननेवाला रहे, तो वह बहुत बड़ी बात हो जाती है। सुशीला बहन आये, इससे बेहतर क्या हो सकता है?" कोस साहब 'रेड-क्रास' के है। 'रेड-क्रास' के माने यह है कि लड़ाई के मरीजों की दवा-दारू करना! अब तो वे लोग दूसरे-तीसरे काम भी करते है।

"अब यह सवाल है कि डॉक्टर सुशीला कोस साहब के साथ गयी है या कोस साहब डॉक्टर सुशीला के साथ? यह जरा पेचीदा हो जाता है, मगर पेचीदा नहीं है। वे दोनो दोस्त हैं। सेवा-भाव से गये हैं। पैसा कमाने की तो बात ही नहीं है। कोस साहब मेरे मित्र हैं और सुशीला तो मेरी लड़की है। मै उसका बाप हूँ। तो, मैंने उसे ऊँचा उठाने के लिए नहीं भेजा। कोई ऐसा न सोचे कि वह तो डॉक्टर है और कोस साहब दूसरे है! कोई ऊँच है और कोई नीच, ऐसा भेदभाव न करे। कोस साहब औरत साथ मे हो, तो उसे ही आगे कर देते हैं और अपने को पीछे रखते हैं। मगर निःस्वार्थ सेवा में ऊँच-नीच का भेद नहीं होता। अगर कोई भेद है, तो कोस साहब बड़े हैं। सुशीला उनके साथ उनकी मदद के लिए गयी है। वे दोनो आकर मुझे वहाँ का हाल बतायेंगे।

"नवाब साहब ने लिखा है कि मुझे कई लोग झूठी बाते भी लिख देते हैं। उन्हें मान लेने का मुझे क्या अधिकार है? सो मैंने सोचा कि अब मुझे क्या करना चाहिए? इसीलिए कोस साहब और सुशीला बहन को मैंने बहावलपुर भेजा है। वहाँ के मुसलमानो का तार भी आ गया है कि वे वहाँ पहुँच गये हैं। वहाँ से लौटेंगे, तब मुझे सब सही हाल बता देंगे। वे तीन-चार दिनो में लौटने-वाले थे। मगर कुछ काम निकल आया होगा, इसलिए नहीं आये।

किसकी सुनूँ?

"अभी बन्नू के कुछ भाई-बहन मेरे पास आये थे। शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो थे, मगर ऐसी हालत नहीं कि चल न पाते हों। किसीकी उँगली मे घाव थे, कहीं कुछ था, तो कहीं कुछ। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो, ब्रजकृष्णजी से कह दें। लेकिन इतना समझ लें कि मैं आप लोगों को भूला नहीं हूँ। वे सब भले आदमी थे। उनका गुस्से से भरा होना स्वाभाविक था। मगर वे मेरी बात मान गये। एक आदमी थे, मैं नहीं जानता कि वे शरणार्थी थे या अन्य कोई और न मैंने उनसे यह पूछा ही, उन्होंने कहा : "तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बड़े महात्मा हो, तो क्या हुआ? हमारा काम तो

बिगड़ता ही है। तुम हमे छोड़ दो, हमें भूल जाओ, भागो।" मैंने पूछा : "कहाँ जाऊँ ?", तो उन्होने कहा : "हिमालय जाओ !" मैने उन्हे डाँटा। वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं थे।

"वैसे तो वे बुजुर्ग हैं, तगड़े हैं—मेरे जैसे पाँच-सात आदमियो को चट कर सकते हैं। मै तो महात्मा ठहरा ! कमजोर शरीर ! घबड़ा जाऊँ, तो मेरा क्या हाल होगा ? इसलिए मैंने हँसते हुए कहा : "क्या मैं आपके कहने से चला जाऊँ ? किसकी बात सुनूँ ! कोई कहता है, यहीं रहो, तो कोई कहता है, जाओ। कोई डाँटता है, गाली देता है, तो कोई तारीफ करता है। तब मैं क्या करूँ ? इसलिए ईश्वर जो हुक्म करता है, वही मैं करता हूँ। आप कह सकते हैं कि हम ईश्वर को नही मानते। तो कम-से-कम इतना तो करें कि मुझे अपने दिल के अनुसार करने दें। यदि आप कहें कि 'ईश्वर तो हम ही हैं', तो परमेश्वर कहाँ जायगा ? ईश्वर तो एक है। हाँ, यह ठीक है कि पच परमेश्वर है। मगर यह पच का सवाल नही। दुखियो का वली परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद परमात्मा नही। जब मैं दावा करता हूँ कि हरएक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तो उनका दुःख मेरा दुःख है। आप यह क्यो मानते है कि मैं आपका दुःख नही जानता, आपके दुःखो में हिस्सा नही लेता, हिन्दुओ और सिखों का मैं दुश्मन हूँ और मुसलमानों का दोस्त" ?

ईश्वर की बात मानता हूँ !

"उस भाई ने तो मुझे साफ-साफ कह दिया। लेकिन कोई गाली देकर लिखते हैं, तो कोई विवेक से लिखते हैं कि "हमें छोड़ दो, चाहे हम जहन्नुम में जायँ। तुम्हे हमारी क्या पड़ी है ? तुम भागो !" लेकिन मैं किसीके कहने से कैसे भाग सकता हूँ ? किसीके कहने से मैं खिदमतगार नही बना और न किसीके कहने से मिट ही सकता हूँ। ईश्वर की इच्छा से जो मैं बना हूँ, बना हूँ। उसे जो करना होगा, करेगा। ईश्वर चाहे, तो मुझे मार सकता है। मैं समझता हूँ कि मैं ईश्वर की बात मानता हूँ। मै हिमालय क्यो नही जाता ? वहाँ रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। ऐसी बात नही कि वहाँ मुझे खाना-पीना, ओढ़ना नहीं मिलेगा। वहाँ जाकर शान्ति मिलेगी। लेकिन मैं अशान्ति मे से शान्ति चाहता

हूँ। नहीं तो उसी अशान्ति में मर जाना चाहता हूँ। मेरा हिमालय यही है। यदि आप सब हिमालय चले, तो मुझे भी अपने साथ ले चलें।

काम करके खायें !

"यहाँ शरणार्थियों की खिदमत करनेवाले लोगों ने मेरे पास लम्बी-चौड़ी शिकायतें लिखकर दी हैं, जो सही भी है। उनका कहना है कि यहाँ जो शरणार्थी पड़े है, उन्हे खाना, पीना, पहनना—जो कुछ हो सकता है, सब दिया जाता है। लेकिन वे मेहनत ही नहीं करना चाहते, काम ही करना नहीं चाहते। इस बारे में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ, जो कि पहले भी कह चुका हूँ, कि अगर दुखिया लोग अपना दुःख मिटाना चाहते है, दुःख से सुख निकालना चाहते है, दुःख मे भी हिन्दुस्तान की सेवा करना चाहते हैं—उसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है—तो उन्हे काम करना ही चाहिए। दुःखी को यह हक नहीं कि वह काम न करे और मौज करे। गीता मे तो कहा है कि यज्ञ करो और खाओ—यज्ञ करो और जो फिर शेष रह जाता है, उसे खाओ। यह मेरे लिए है और आपके लिए नही, ऐसी बात नही। यह सबके लिए है—जो दुःखी है, उसके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये—यह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है—पृथ्वी पर भार है। हाँ, यदि कोई लाचारी हो—पैर न चलते हो, कोई अन्धा हो या वृद्ध हो गया हो, तो वह अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा हो, वह काम क्यों न करे? इसलिए जो कोई काम कर सकते हों, अवश्य करे। शिविरों में जो तगड़े लोग पड़े हों, वे पाखाना भी उठाये, चरखा चलाये। जो काम कर सकते हों, करें। जो लोग काम करना नहीं जानते, वे लड़कों को पढ़ायें। इस तरह काम लें। लेकिन कोई कहे कि कैम्ब्रिज मे जैसी पढ़ाई होती थी, वैसी करायें—मैं और मेरे बाबा कैम्ब्रिज में पढ़े थे, अतः लड़कों को भी वहाँ भेजेंगे, तो यह कैसे हो सकता है? अन्त मे मैं इतना ही कहूँगा कि जितने शरणार्थी हैं, वे काम करके खायें, उन्हे काम करना ही चाहिए।

भारत का गवर्नर जनरल किसान होगा

"आज एक सज्जन आये थे। उनका नाम तो मैं भूल गया! उन्होंने किसानों

की बात की। मैने कहा : "मेरी चले, तो हमारा गवर्नर जनरल किसान होगा, क्योंकि यहाँ का राजा किसान है। मुझे बचपन से सिखलाया गया था, एक कविता है :

'रे खेडूत ! तुं खरे जगतनो तात गणायो !'

याने हे किसान, तू पादशाह है। किसान जमीन से पैदा न करे, तो हम क्या खायेगे ? हिन्दुस्तान का सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाये हुए हैं। आज किसान क्या करे ? क्या एम० ए० बने ? बी० ए० बने ? ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नही चलायेगा। जो आदमी अपनी जमीन से पैदा करता और खाता है, वही जनरल बने, प्रधान बने; तो हिन्दुस्तान की शक्ल ही बदल जायगी। आज जो वह सड़ता पड़ा है, वैसा नही रहेगा।

"मद्रास मे खुराक की तंगी है। श्री जयरामदासजी के पास मद्रास-सरकार की ओर से एक दूत यह कहने आये थे कि वे वहाँ के सूखे के लिए अन्न देने का बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रासवालो के इस सूखे से दुःख होता है। मै मद्रास के लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि वे अपने ही सूबे मे मूँगफली, नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थों के रूप मे काफी खुराक पा सकते हैं। उनके यहाँ मछलियाँ भी काफी है, जिन्हे उनमे से ज्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हे भीख माँगने के लिए बाहर निकलने की क्या जरूरत है ? उनका चावल का आग्रह रखना (वह भी पालिश किया हुआ, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते हैं) या चावल न मिलने पर मजबूरी से गेहूँ मंजूर करना ठीक नही है। चावल के आटे मे वे मूँगफली या नारियल का आटा मिला सकते हैं। उन्हे जरूरत है, आत्मविश्वास और श्रद्धा की। मद्रासियो को मै अच्छी तरह जानता हूँ। दक्षिण अफ्रीका मे सत्याग्रह-कूच के वक्त उस प्रान्त की सभी भाषाओवाले हिस्सो के लोग मेरे साथ थे। उन्हे रोजाना राशन मे सिर्फ डेढ़ पौण्ड रोटी और एक औन्स शक्कर दी जाती थी। लेकिन जहाँ-जहाँ उन्होने रात मे डेरा डाला, वहाँ जगल की घास मे से खाने लायक चीजे चुनकर और मजे से गाते हुए उन्हे पकाकर मुझे अचरज मे डाल दिया। ऐसी सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी

कैसे महसूस कर सकते हैं ? यह सच है कि हम सब मजदूर थे और ईमानदारी से काम करने में ही हमारी मुक्ति और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भरी हुई है।"

आखिरी वसीयतनामा

प्रवचन अभी पूरा देखा, सुधारा नहीं गया था। इसी बीच बापू ने कांग्रेस के लिए पथ-प्रदर्शन लिखा। (वह भी अन्तिम ही बन गया, अतः उसे पू० बापू के शब्दों में ही दे रही हूँ) :

"Though split into two, India having attained the political independence through means devised by the Indian National Congress, the Congress, in its present shape and form, i.e. as a propoganda vehicle and a parliamentary machine, has outlived its use. India has stil to attain social, moral and economic independence in term of its seven hundred thousand villages as distiguished from its cities and towns. The struggle for the ascendency of civil over military power is bound to take place in India's progress towards its democratic goal. It must be kept out of unhealthy competition with the political parties and communal bodies. For these and other similar reasons, the all India Congress Committee resolves to disband the existing Congress organisation and flower into a Lok Sevak Sangh under the following rules with power to alter them as occasion may demand.

Every Panchayat of five adult men or women being villagers or village-minded shall form a unit.

Two such contigous Panchayats shall form a working party, under a leader elected from among themselves.

When there are one hundred such Panchayats, the fifty first grade leaders shall elect, from among themselves a second grade leader and so on, the first grade leaders in the meanwhile working under the second grade leader. Parallel groups of two hundred panchayats shall continue to be formed, till they cover the whole of India, each succeeding group of panchayats electing second grade leader after the manner of the first. All second grade leaders shall serve jointly for the whole of India and severally for their respective areas. The second grade leaders may elect, whenever they deem necessary, from among themselves a chief who will during Leisure, regulate and command all the groups.

(As the final formation of provinces or districts is still in a state of flux, no attempt has been made to divide this group of servants into provincial or district councils and jurisdiction over the whole of India has been vested in the group or groups that may have been formed at any given time. It should be noted that this body of servants derive their authority or power from service ungrudgingly and wisely done to their master, the whole of India.)

1. Every worker shall be a habitual wearer of Khadi made from self-spun yarn or certified by the A. I. S. A. and must be a teetotaller. If a Hindu he must have observed untouchability in any shape or form in his own person or in his family and must be a believer in the ideal of inter-communal unity, equal respect and regard for all religions, equality of opportunity and status for all irrespective of race, creed or sex.

2. He shall come in personal contact with every villager with in his jurisdiction.

3. He shall enrol and train workers from amongst the villagers and keep a register of all these.

4. He shall keep a record of his work from day to day.

5. He shall organise the villages so as to make them self-contained and self-supporting through their agriculture and handicrafts.

6. He shall educate village folk in sanitation and hygiene and take all measures for prevention of ill health and disease among them.

7. He shall organise the education of the village folk from birth to death along the lines of the Nai Talim, in accordance with the policy laid down by the Hindustani Talimi Sangh.

8. He shall see that those whose names are missing on the statutory 'voters' roll are duly entered therein.

9. He shall encourage those who have not yet acquired the legal qualification, to acquire it for getting the right of franchise.

10. For the above purposes and others to be added from time to time, he shall train and fit himself in accordance with the rules laid down by the Sangh for the due performance of duty.

The Sangh shall affiliate the following autonomous bodies : 1. All-India Spinners' Association. 2. All-India Village Industries Association. 3. Hindustani Talimi Sangh. 4. Harijan Sevak Sangh. and 5. Go-seva Sangh.

FINANCE

The Sangh shall raise finances for the fulfilment of its mission from among the villagers and others, special stress being laid on collection of poor man's Pice."

भारत को, यद्यपि यह दो भागो मे विभक्त हो गया है, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस द्वारा बताये गये उपायों से राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, काग्रेस अपने वर्तमान स्वरूप और ढॉचे मे अर्थात् प्रचार के साधन और संसदीय यंत्र के रूप में अपनी उपयोगिता खो बैठी है। भारत को अब भी नगरों और कस्बो के अलावा ७ लाख गॉवो के लिए सामाजिक, नैतिक और आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करनी है। भारत की अपने लोकतन्त्रात्मक ध्येय की ओर प्रगति मे सैनिक शक्ति पर असैनिक शक्ति की श्रेष्ठता के लिए संघर्ष अनिवार्य है। इसे राजनीतिक दलो और साम्प्रदायिक संस्थाओं की अस्वस्थ प्रतियोगिता से अलग रखना है। इन तथा अन्य कारणो से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी वर्तमान काग्रेस-सघटन को विघटित करने तथा निम्नलिखित नियमो के अन्तर्गत उनमे

परिस्थितिवश संशोधन करने के अधिकार के साथ लोकसेवक-संघ के रूप में विकसित होने का निश्चय करती है।

'पाँच वयस्क व्यक्तियों (स्त्रियों या पुरुषों) की, जो ग्रामवासी या ग्राम-प्रवृत्त (विलेज-माइण्डेड) हो, प्रत्येक पचायत एक इकाई बनेगी।

'दो निकटवर्ती पचायते आपस मे एक नेता निर्वाचित कर उसके अधीन एक कार्यकारी दल संघटित करेगी।

'जब इस प्रकार १०० पंचायते हो जायँगी, तो पचास प्रथम श्रेणी के नेता आपस मे द्वितीय श्रेणी का एक नेता चुनेगे तथा प्रथम श्रेणी के नेता फिलहाल द्वितीय श्रेणी के नेता के अधीन कार्य करेंगे। दो सौ पंचायतो के समान दलो का इस प्रकार संघटन होगा कि वे समस्त भारत मे फैल जायँगे तथा पचायतो का प्रत्येक दल प्रथम श्रेणी के नेता के चुनाव की भाँति क्रमशः द्वितीय श्रेणी का एक नेता निर्वाचित करेगा। द्वितीय श्रेणी के सभी नेता सम्मिलित रूप से सम्पूर्ण देश तथा व्यक्तिगत रूप से अपने-अपने क्षेत्र की सेवा करेंगे। द्वितीय श्रेणी के नेता आवश्यकता पड़ने पर अपने में से एक को प्रमुख नेता चुनेगे, जो अपने इच्छानुसार सभी दलो का नियमन और संचालन करेगा।

'[चूँकि प्रान्तों और जिलो का अन्तिम पुनस्संघटन अभी अनिश्चित स्थिति मे है, इसलिए सेवको के इस दल को प्रान्तीय या जिला-परिषदो मे बाँटने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है तथा समस्त भारत में कार्य करने का अधिकार उस दल या दलों मे निहित है, जो किसी समय संघटित किये गये हों। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सेवको की यह सस्था अपने स्वामी, अर्थात् समस्त भारत की सहर्ष और बुद्धिमत्तापूर्वक की जानेवाली सेवा से अपना अधिकार अथवा शक्ति प्राप्त करती है।]

'(१) प्रत्येक कार्यकर्ता आदतन, अपने हाथ से कते सूत की अथवा अखिल भारत चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित खादी पहनेगा तथा मदिरा का कतई सेवन न करेगा। यदि वह हिन्दू हो, तो उसने व्यक्तिगत रूप से या परिवार में किसी भी रूप मे अस्पृश्यता का भाव त्याग दिया हो तथा वह साम्प्रदायिक ऐक्य, सभी धर्मों के प्रति समान आदर और प्रतिष्ठा और बिना किसी जाति,

धर्म या स्त्री-पुरुष के भेदभाव के सभीके लिए समान अवसर और स्थिति के आदर्श मे विश्वास करता हो।

'(२) वह अपने कार्यक्षेत्र मे स्थित प्रत्येक ग्रामवासी से व्यक्तिगत सम्पर्क रखेगा।

'(३) वह ग्रामवासियों मे से ही कार्यकर्ताओ को भरती और प्रशिक्षित करेगा तथा उनका एक रजिस्टर रखेगा।

'(४) वह अपने प्रतिदिन के कार्य का लेखा रखेगा।

'(५) वह ग्रामवासियो को इस प्रकार संघटित करेगा कि वे अपनी खेती और दस्तकारी से आत्मनिर्भर और स्वयपूरित हो जायँ।

'(६) वह ग्रामवासियों को सफाई और स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे प्रशिक्षित करेगा तथा उनमे रोगों और अस्वास्थ्य के निवारण के लिए सभी उपाय बरतेगा।

'(७) वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार नयी तालीम के आधार पर ग्रामवासियो की जन्म से मृत्युपर्यन्त शिक्षा का आयोजन करेगा।

'(८) वह इसके लिए भी सतर्क रहेगा कि जिन व्यक्तियो के नाम वैधिक निर्वाचक सूची (स्टैट्युटरी वोटर्स रोल) मे छूट गये हैं, उन्हे विधिवत् चढ़वाया जाय।

'(९) वह उन व्यक्तियो को, जिन्होने मताधिकार प्राप्त करने के लिए अभी कानूनी योग्यता प्राप्त नही की है, उक्त योग्यता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

'(१०) उपर्युक्त उद्देश्यो तथा समय-समय पर इनमे जुड़नेवाले अन्य उद्देश्यो की दृष्टि से वह अपने कर्तव्य के समुचित पालन के लिए संघ द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार अपने को प्रशिक्षित करेगा और योग्य बनायेगा।

'संघ निम्नलिखित स्वायत्त संस्थाओं को सम्बद्ध करेगा :

'(१) अखिल भारत चरखा-सघ, (२) अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघ, (३) हिन्दुस्तानी तालीमी सघ, (४) हरिजन-सेवक-संघ और (५) गो-सेवा-संघ।

'संघ अपने ध्येय की पूर्ति के लिए ग्रामवासियो और अन्य व्यक्तियो से धन-

संग्रह करेगा, किन्तु निर्धन व्यक्तियों से पैसा इकट्ठा करने पर विशेष जोर दिया जाय।'

है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज !

शाम को मुलाकात करनेवालों में क्रमशः श्री सोहनसिंहजी, हैदराबाद के मुख्यमन्त्री आदि थे। मौलाना साहब के साथ भी काफी चर्चा हुई।

रात में अत्यन्त श्रान्त होने पर भी बापू ने कांग्रेस-संविधान का मसविदा पूरा करके छोड़ा। फिर नियमानुसार ९। बजे पैर धोने के लिए उठे और सीधे सोने के लिए जाने लगे। वे इतने श्रान्त थे कि कसरत करना भी भूल गये। जब याद दिलायी, तब उन्होंने कसरत की।

मैं बापू के सिर में तेल मलती रही। दो मिनट मौन रहकर वे बोले: "आज मुझे चक्कर आ रहा है।"···के लड़कों की घूसखोरी की बात चल पड़ी। कहने लगे: "आखिर हम लोग कहाँ के रह जायँगे ? आजादी की लड़ाई में पूरा योग देनेवाले लोगों पर ही सारे राष्ट्र का आधार है। अगर वे ही इस तरह सत्ता का दुरुपयोग करें, तो हमें कहीं खड़े होने के लिए भी जगह न रह जायगी। इस तरह हम कब तक अपनी इज्जत सँभाल पायेंगे ? यों तो मैं इसे आजादी ही नहीं मानता, फिर भी बाह्य दृष्टि से जो आजादी प्राप्त हुई है, उसे भी हम ऐसी करतूतों से कलंकित ही कर रहे हैं। सोचता हूँ कि आखिर मैं कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ ? इस अशान्ति से शान्ति कैसे मिले ?

"है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज,
देख लो, जिसका तमाशा चन्द रोज।"

पाखण्डी अथवा सच्चा महात्मा ?

इतना कहते हुए बापू को खाँसी आने लगी। यह देख-सुनकर मेरी आँखें डबडबा उठीं—हाय ! बापू के हृदय की वेदना कितनी बढ़ती जा रही है ! मानो इस समय उनके लिए सिवा ईश्वर के कोई भी नहीं है। खाँसी आते समय मैंने धीरे से पूछा: "आप पेन्सिलिन की गोली ले लीजिये न, सुशीला बहन मुझे दे गयी हैं। अन्यथा अगर इन्फ्लूएन्ज़ा हो जाय तो ?"

मैंने कह तो दिया, पर बापू और भी दुःखी हो गये और कहने लगे: "इस

यज्ञ में तो तू अकेली ही मेरी साझीदार है, मददगार है। आज तक मैंने किसीको भी ऐसी शिक्षा नहीं दी, जैसी कि माँ बनकर तुझे दी है। तेरे लिए ही मैं जूझता रहा। आखिर तू होम दी गयी और सही-सलामत बाहर निकली। मैंने तुझमे जो कुछ देखा, वह अन्य किन्ही लड़कियो मे नही। इसलिए आज एक बात तुझे कहना चाहता हूँ, जो कई बार कह भी चुका हूँ। यदि मै किसी रोग से या छोटी-सी फुन्सी से भी मरूँ, तो तू जोर-शोर से दुनिया से कहना कि यह दम्भी महात्मा रहा। तभी मेरी आत्मा को, भले ही वह कहीं हो, शान्ति मिलेगी। भले ही मेरे लिए लोग तुझे गालियाँ दे, फिर भी यदि मै रोग से मरूँ, तो मुझे दम्भी-पाखण्डी महात्मा ही ठहराना! और यदि गत सप्ताह की तरह धड़ाका हो, कोई मुझे गोली मार दे और मै उसे खुली छाती झेलता हुआ भी मुँह से 'सी' तक न करता हुआ राम का नाम रटता रहूँ, तभी कहना कि यह सच्चा महात्मा था।...इससे भारतीय जनता का कल्याण ही होगा।"

राम-नाम का अभाव

मैं अकेली ही सिर में तेल मलती रही। नीरव शान्ति मे बापू के मुँह से ये हृदयविदारक शब्द निकल रहे थे। आगे कुछ बोलने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई। हृदय भर आया और गला रुँध गया...रसोड़े मे पानी लेने गये थे। इसी बीच आश्रम की...बहन आयी। उनकी तबीयत ठीक नही रहती, इसलिए वे अपने गाँव जानेवाली हैं। बापू ने कहा : "अगर तेरे हृदय मे राम-नाम अंकित हुआ होता, तो तू बीमार ही न पड़ती। लेकिन इसके लिए श्रद्धा तो होनी ही चाहिए।" उसके लड़के को भी सूचना दी।

उन्होने चाँद बहन की शादी के सम्बन्ध का उलझा हुआ सवाल पेश कर दिया। हम लोगों ने उस बहन को इशारे से कहा कि "बापू काफी थके हुए हैं, उन्हे चक्कर आ रहे हैं।" बापू से भी कहा गया, लेकिन वे तो सभी के बापू है न? उन्होंने एक न मानी और बाते जारी ही रखीं। अच्छा हुआ, जो देवदास काका और काकी आ गयी। बापू ने उनसे विनोद किया और काकी ने भी। बापू ने रोज की तरह पूछा कि "कोई नया समाचार हो, तो कहो।" फिर तो काका और बापू दिल्ली की वर्तमान स्थिति के बारे मे बाते करने लगे। इसीलिए

मै वहाँ से चली आयी और यह लिखने बैठी हूँ। खासकर इस समय सुशीला बहन या प्यारेलालजी कोई भी बापू के पास नहीं था। इसलिए काका को उनसे बाते करने का अच्छा अवसर मिला। काका की हमेशा की शिकायत है कि "सभी लोग बापू से जब चाहे और जैसे चाहे, मिल सकते हैं; लेकिन मुझे ऐसा समय मिलता ही नही और न मैं ऐसा समय लेना ही पसन्द करता हूँ।"

वर्धा जाने की बाते अखबारो मे छप गयी हैं। बापू कहते है : "यह कौन बापू और कौन-सा गाधी होगा, मै नहीं जानता। अखबारवालों से ही पूछिये। मैं नहीं जानता कि मै वर्धा जानेवाला हूँ।"

बापू लगभग ११ बजे सोये। मैं भी अभी आध घंटे बाद सोने जाऊँगी। बापू पर यहाँ का साधारण बोझ नहीं है। लेकिन जब दरिया मे ही आग लगी हो, तो हो ही क्या सकता है?

● ● ●

हे राम! : ३२ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
२०-१-'४८

नियमानुसार बापू प्रार्थना के लिए जगे, मुझे भी जगाया। ·· बहन उठी नहीं। आजकल सुशीला बहन नहीं हैं, इसलिए गीता-पाठ मुझे ही करना पड़ता है। भाई साहब और प्यारेलालजी जागते रहते हैं, तो वे आवाज में आवाज ही मिलाते हैं। ·· तो गीता के श्लोक बोल ही नहीं पाते। ···उठे नहीं, इसलिए बापू ने दतवन करते हुए आज भी एक बात कही : "मैं देख रहा हूँ कि मेरा प्रभाव मेरे निकट रहनेवालों पर से भी उठता जा रहा है। प्रार्थना तो आत्मा को साफ करने की झाड़ू है। मै प्रार्थना मे अटल श्रद्धा रखता हूँ। ऐसी प्रार्थना करना ···जैसी को पसन्द नहीं पड़ता, तो फिर उसे चाहिए कि मेरा त्याग ही कर दे। इसीमें दोनो का भला है। यदि तुझमे इतनी हिम्मत हो, तो मेरी ओर से उसे यह कह देना। समझा देना कि ये सब बातें मुझे अच्छी नहीं लगती। यह सब देखने के लिए भगवान् अब मुझे अधिक न रखे, यही चाहता हूँ। आज मैं तुझसे यह भजन सुनना चाहता हूँ :

'थाके न थाके छताय हो,
मानवी न लेजे विसामो ।'

आश्चर्य की बात है कि आज पहली बार बापू ने यह भजन पसन्द किया ! मुझे खुद को बापू के बारे मे कुछ विलक्षण-सा ही लग रहा है। कभी-कभी यह भी आशका होने लगती है कि कदाचित् वे पुनः अनशन तो नही करने जा रहे हैं ? आज दोपहर को सरदार दादा विशेष रूप से मिलने के लिए आनेवाले है। वे और बापू एकान्त मे बातचीत करेंगे। उसके बाद कल-परसो मन्त्रिमण्डल की बैठक बुलाकर सारा निर्णय किया जायगा। देखे, ईश्वर इसे कहाँ तक सफल करता है ? कल सुबह भाई भी आ रहे है।

प्रार्थना के बाद मैं बापू को बरामदे से भीतर ले आयी। उन्हे कपड़ा ओढ़ाया। बापू कल रात तैयार किये हुए काग्रेस-सविधान के मसविदे का सशोधन करने बैठ गये। नियमानुसार ४।।। बजे गरम जल, शहद और नीबू और ५।।। बजे सन्तरे का रस १६ औंस लिया ! अभी उपवास की कमजोरी तो है ही। लिखते-लिखते थक जाने से बापू बीच ही मे सो गये और मैंने उनके पैर भी दबाये।

पू० किशोरलाल भाई को कल जो पत्र लिखा था, नकल न हो सकने के कारण वह बापू के कागजो मे ही पड़ा रह गया। बापू को यह अच्छा नहीं लगा। मैंने सहज ही पूछा कि "इसमें एक पंक्ति यह लिख दूँ कि हम लोग दूसरी को वर्धा जानेवाले है ?", तो बापू ने कहा : "कल की कौन जानता है ? अगर जाना तय ही हो जायगा, तो आज प्रार्थना में कह दूँगा। फिर रात मे रेकार्ड रिले होगा, तो उसमे वह आ ही जायगा। फिर भी इस तरह चिट्ठी पड़ी रहनी नहीं चाहिए थी। भले ही यह काम बिसेन का हो, लेकिन तू मेरे किसी भी काम से मुक्त नही हो सकती। दूसरों की गलती होने पर भी मैं उसे तेरी ही गलती मानता हूँ, अगर तू उसे स्वीकार करे।" मैने कहा : "मुझे तो स्वीकार करना ही होगा।" बापू प्रसन्न हो गये।

टहलते समय श्रीमती राजेन नेहरू आयी। मै घूमने के लिए जानेवाली नहीं थी, पर मुझे जबर्दस्ती चलने के लिए कहा।

आठ बजे नियमानुसार मालिश और स्नान हुआ। मालिश के समय अखबार देखे। बंगाली पाठ किया। फिर मालिश के कमरे से बाथ रूम मे लाया गया। उस समय उन्होने प्यारेलालजी से कहा : "कल रात मैंने कांग्रेस का मसविदा (संविधान) 'हरिजन' मे भेजने के लिए बना रखा है। उसे ठीक से देख लें और विचारो की जो कमी रह गयी हो, उसे पूरी कर दें। बहुत ही थके-माँदे मैंने उसे तैयार किया है।"

नियमानुसार मै बापू को बाथ देती रही। मुझसे कहने लगे कि "तू हाथ की कसरत करती है या नहीं ?" मैंने 'ना' कहा। इस पर कहने लगे : "यह तो मुझे जरा भी पसन्द नहीं।" मैंने कहा : "फिर तो करना ही होगा।" बापू ने कहा : "अवश्य ! तेरा वजन नहीं बढ़ता और तबीयत नहीं सुधरती, इससे मुझे बहुत ही दुःख होता है। जब तू अपने बाप के यहाँ से नोआखाली आयी, तो कितनी तन्दुरुस्त थी ! तेरा शरीर नहीं सुधरता, इसका कारण तेरा भावुक और संवेदनशील स्वभाव ही है। कभी किसीके दुःख से अधिक दुःखी या किसीके सुख से अधिक प्रसन्न न होना चाहिए। दोनो मे सन्तुलित स्वभाव रखने पर ही भगवान् का सान्निध्य पाना आसान होता है। यह कानून मेरा नहीं, अनादिकाल से चला आ रहा है और सभी धर्म-ग्रन्थो मे लिखा है। स्थितप्रज्ञ होने के उपायो मे इसे भी एक माना गया है। तू १८ वर्ष की उभरती छोकरी है। मैंने तेरा मन कितना गढ़ा है, इसका खयाल तुझे आज नहीं हो सकता। नोआखाली से लेकर आज तक मैंने तुझे खूब तपाया है और तरह-तरह के विलक्षण अनुभवो से गढ़ा है। भले ही आज तुझे इसका मूल्य न मालूम पड़े, लेकिन मेरे ये शब्द लिख रखो कि तेरे भावी जीवन के लिए यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, कदाचित् मै जिन्दा रहूँ या न रहूँ।

"तू जानती ही है कि···आज सुबह प्रार्थना के समय नहीं उठी। इसलिए मै सोच रहा हूँ कि आखिर मुझमे कहाँ खामी है ? दूसरी लड़कियाँ या और कोई इस वक्त मे मेरा साझीदार नहीं। अकेली तू ही मेरी सेवा और मेरे कामों की जिम्मेदारी उठा रही है। इसमे तनिक भी भूल नहीं होने देती। लेकिन अपनी तबीयत सँभाल रखना भी मेरी सेवा का एक अंग है। अतः यह जिम्मेदारी

भी तुझे अदा करनी ही चाहिए ।"—बाथ के समय बापू ने बड़े ही प्रेम से ये बातें कहीं और मेरी पीठ सहलायी ।

बाथ से निकलने के बाद वजन किया गया—१०९॥ पौण्ड हुआ । भोजन मे उबाला हुआ शाक, बारह औंस दूध, एकआध मूली और करीब चार-पाँच पके टमाटर और चार सन्तरों का रस लिया । खाते समय प्यारेलालजी के साथ नोआखाली के विषय मे बातें हुई । उन्होने आबादी की अदला-बदली के बारे मे बापू से पूछा, जिस पर बापू ने साफ-साफ कह दिया :

"हम लोगों ने तो 'करेंगे या मरेंगे' यह मन्त्र लेकर ही नोआखाली का वरण किया है । भले ही आज मै यहाँ बैठा हुआ हूँ, पर काम तो नोआखाली का ही चल रहा है । हमे जनता को भी इसके लिए तैयार करना चाहिए कि वह अपनी इज्जत और सम्मान बनाये रखने के लिए बहादुरी के साथ वही रहे । भले ही अन्ततः वहाँ गिने-गिनाये लोग ही रह जायँ, लेकिन जहाँ दुर्बलता से ही सामर्थ्य पैदा करनी हो, वहाँ दूसरा उपाय ही क्या है ? आखिर सशस्त्र युद्ध मे भी साधारण सिपाहियो का सफाया होता ही है । फिर अहिंसक युद्ध मे उससे भिन्न और हो ही क्या सकता है ?"—और उन्हे नोआखाली जाने का ही सुझाव दिया ।

फिर पैरों मे घी मलवाते हुए बापू ने थोडा आराम किया । थोड़ी देर सोकर पुनः उठे और बाथरूम मे जाने के लिए बाहर के पटरे पर से आ रहे थे । मैने कहा : "बापू ! अकेले ही अकेले आ रहे है, तो कैसे लग रहे हैं ?" (कमजोरी के कारण इधर वे बिना किसीका सहारा लिये चलते नही थे) बापू ने कहा : "क्यो, अच्छा दीखता है न ? 'एकला चलो !"

१२॥ बजे डॉ० भार्गव को नर्सिंग होम बनाने के लिए एक मकान चाहिए । यतीमखाने की बात कही गयी । बापू ने कहा कि "जब स्थानीय मुसलमान यहाँ आते है, तब मुझे इसके लिए याद दिलाये ।" उन्होने यह भी कहा कि "हुकूमत मुझसे डर-डरकर कब तक चलेगी ? मेरे डर से नही, बल्कि अपने मन से करना चाहिए । जब नियोगी यहाँ आये, तो पूछ देखें ।" बापू के पास मुसलमान लोग आये, तो उन्हे याद दिलायी गयी । लेकिन उन्होने कहा कि "अभी उसे न

दिया जाय, तो अच्छा है।" बापू ने कहा : "अच्छा, मैंने तो वैसे ही पूछ लिया। इसके पीछे इसे वक्त देने की जरूरत ही क्या है?"

उसके बाद मौलाना रहमान ने सेवाग्राम के बारे में पूछते हुए कहा कि "आप वहाँ जा सकते है, पर १४ को वापस लौट ही आये।" बापू ने कहा : "हाँ, चौदह को तो मै यहीं रहूँगा। फिर यह सब तो खुदा के हाथ मे है। वह तो आसमानी सुलतानी बात है।"

महादेव भाई की जीवनी लिखने का—डायरी-सपादन करने का काम व्यवस्थित होने जा रहा था। उस बारे मे शान्तिकुमार भाई के साथ बाते की। शान्तिकुमार भाई की शिकायत थी कि "चन्द्रशकर भाई और नवजीवन के बीच झगडा चल रहा है। अधिक पैसा लेने की बात है।"

बापू ने कहा : "जहाँ देखता हूँ, वहीं जैसे यादव आपस मे कट मरे, वही स्थिति हमारी है। हम लोग आपस मे झगड़ा कर समाज की कितनी हानि कर रहे है, इसका खयाल किसीको भी नही आता। इसमे आप या और कोई कर ही क्या सकता है? इन सबमे मेरी ही खामी है। ईश्वर ने ही मुझे अन्धा बना दिया हो, तो कोई क्या कर सकता है? फिर भी अपने जीते जी यह सब अपनी आँखो देखकर जितना सुधार सकूँ, उतना सुधार लूँगा; जिससे भावी पीढ़ी को गाली न खानी पडे, इतना ही भगवान् का आभार मानिये।

"यह काम मुझे ही करना चाहिए। डायरी को अच्छी तरह ग्रन्थरूप मे बनाना ही होगा। नरहरि की तबीयत साथ नहीं देती और अब!···इसने तो मेरे सभी कामों से छुट्टी पा ली है। लेकिन वह बिना समझे-बूझे ली है, यह कैसे कहा जा सकता है? क्योंकि सभी अपने-अपने विचार के लिए स्वतन्त्र है। यदि चन्द्रशकर यह बोझ उठाता है, तो वह अपनी कमाई खर्च करेगा। इन दोनों के अक्षरों मे कितना साम्य है? मै उसे लिखूँगा।"

डॉ० सिन्हा और उसकी लड़की लका मे मुख्य प्रतिनिधि थे। उन्हे अपना आटोग्राफ दिया।

दोपहर मे किसेन भाई के साथ चिट्ठियों का रुका हुआ काम पूरा करने के लिए लगा। २ बजे मिट्टी ली। पैर दबाये। बापू ने मिट्टी उतारी। हम लोग

बापू से छुट्टी लेकर शहर मे एक संबंधी के यहाँ मिलने गये। वहाँ से ४। बजे लौटे।

यदि जीवित रहा तो…

बापू और सरदार दादा बातचीत कर रहे थे। …काठियावाड़ के बारे में भी चर्चा हुई। इसी बीच काठियावाड़ के नेता रसिक भाई पारीख और ढेबर भाई भी आ गये। उन्हे बापू से मिलना था। लेकिन आज तो एक क्षण खाली नही है। फिर भी मैंने उनसे कहा कि "बापू से पूछकर समय तय किये देती हूँ।" बापू और सरदार दादा बातों मे एकदम तल्लीन थे। मैने पूछा तो कहने लगे : "उनसे कहो कि यदि जिन्दा रहा, तो प्रार्थना के बाद टहलते समय बातें कर लेगे।" मैंने उनसे प्रार्थना के लिए रुक जाने को कहा। कारण यदि वे प्रार्थना के बाद तत्काल न मिल लेगे, तो और कोई घुस ही जायगा और फिर बाते न कर पायेगे। वे रुक गये और बापू के कमरे मे जा बैठे।

[इसके बाद की डायरी मै पहली फरवरी की रात मे दो बजे बाद लिख रही हूँ। क्या लिखूँ। समझ मे ही नही आता ! पूरे बिरला-भवन मे रोने के सिवा कुछ भी नही है। अरे ! क्या बापू सोये हुए तो नही है ? मुझे इतनी देर तक लिखती देख उलहना देने के लिए उठकर तो नही आयेगे ? नही, नही, बापू ! आप मेरी भूल क्षणभर भी क्षमा नही करते थे और आज इतने उदार हो गये ? हाय मुझ पर गजब ढा गया ! मुझसे कहते थे : "इस यज्ञ मे तू और मैं दो ही है। तू मुझे छोड़ सकती है, पर मै तुझे नही छोड़ सकता।" लेकिन आज तो बापू ! आप ही मुझे छोड़ गये ! भाई कल आनेवाले है। क्या मुझे सौप देने के लिए ही तो चार दिन पहले उनको चिट्ठी नही लिखी ? कुछ भी नही सूझता !…पण्डितजी का यह पुक्का फाड़-फाड़कर रोना अच्छे-अच्छे धीर-गम्भीर लोगो का भी हृदय विदीर्ण कर देता है। नन्हा गोपू कह रहा है : "मनु बहन ! दादा क्यो सोये है ?"…]

थाके न थाके छताये हो !

…बापू सरदार दादा के साथ बातचीत में इतने तन्मय हो गये थे कि दस मिनट देर हो गयी। इस गम्भीर वातावरण मे उन्हे विक्षेप करने की किसीको

भी हिम्मत नहीं हुई। आखिर मणि वहन ने हिम्मत की ही, क्योंकि यह सभी जानते थे कि यदि वापू को समय का ध्यान न कराया जाय, तो वाद मे हम लोगो पर नाराज हो जायॅगे। वाते करते हुए ही वापू ने भोजन भी कर लिया। भोजन मे चौदह औंस वकरी का दूध, चार औंस शाक का रस और तीन संतरे थे। वाते करते हुए उन्होने कताई भी कर ली। विना यज्ञ किये खाना चोरी का खाना माना जाता है। अतः वे विना कताई किये रह ही कैसे सकते है? आज ब्राह्म मुहूर्त मे कभी न कहलवाया हुआ यह भजन कि 'थाके न थाके छताये हो, मानवी न लेजे विसामो' मुझसे गवाया। क्या वापू उसे साकार करना चाहते रहे है? चाहे जो हो, पलभर भी विश्राम लिये वगैर अपनी ज्वलंत प्रवृत्ति का वेग और भी वढा दिया। वे एकदम उठ खड़े हुए।

नर्सों का धर्म

मैने अपने हाथ मे रोज की तरह कलम, वापू की माला, पीकदानी, चश्मा का केस और जिस पर प्रवचन लिखती हूँ, वह नोटबुक ले ली। दस मिनट देर हो जाने के लिए वापू ने रास्ते में नापसन्दगी जाहिर की: "आप लोग ही तो मेरी घड़ी है न? फिर मै घडी के लिए क्यो रुका रहूँ?" खासकर आजकल वापू घडी देखते ही नही। समयानुसार एक के वाद एक सारा काम यो ही कर लिया करते है। घड़ी को चाभी भी हम लोगों मे से ही कोई दे दिया करता था। इसीलिए उन्होंने यह कहा। मैने कहा कि "वापू! आपकी घड़ी वेचारी उपेक्षा से दुवली होती होगी।" इसीके उत्तर मे उन्होने यह वात कही। विनोद तो किया ही, पर साथ ही यह भी कहा कि "मुझे ऐसी देरी विलकुल पसन्द नहीं।"

चॉद वहन को दिल्ली मे ही रखने की वात कही। "अभी खुराक की मात्रा थोडी-सी ही वढायी है।" यद्यपि अनशन के वाद अनाज तो अभी शुरू करना ही नहीं है, "पर अव प्रवाही (तरल खाद्य) कम करना है" ये वाते करते हुए प्रार्थना-स्थल की सीढियॉ चढे। कहने लगे: "प्रार्थना मे दस मिनट देर हो गयी, इसमें आप लोगों का ही दोष है।" सरदार दादा दो-चार दिनो वाद आये थे और ऐसे गम्भीर प्रश्नो पर चर्चा कर रहे थे कि टोकने की हिम्मत ही नहीं हुई, पर भी वापू को पसन्द नहीं पड़ा। उन्होंने कहा: "नर्सों का तो धर्म है कि

साक्षात् ईश्वर भी बैठा हो, तो भी वे अपना धर्म, अपना कर्तव्य पूरा करे। किसी रोगी को दवा पिलाने का समय हो गया हो और किसी भी कारण यह विचार करते रहे कि उसके पास कैसे जाया जाय, तो रोगी मर ही जायगा। यह भी ऐसी ही बात है। प्रार्थना मे एक मिनट की देर भी मुझे खल जाती है।"

यह नियम-सा बन गया था कि प्रार्थना मे जाते समय हम लोग ही बापू की लकड़ी का काम करती थी। कभी हम लोग नाराज हो जायॅ और इस नियम के अनुसार लकड़ी बनना न चाहे, तो बापू हम लोगो को जबरदस्ती पकड़ कर लकड़ी बना लेते थे। लौटते समय दूसरी लड़कियॉ रहती थी।

हे राम !

बापू चार सीढ़ियॉ चढ़े और सामने देख नियमानुसार हम लोगों के कन्धे पर से अपने हाथ उठाकर उन्होंने जनता को प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगे। मै उनके दाहिनी ओर थी। मेरी ही तरफ से एक हृष्ट-पुष्ट युवक, जो खाकी वर्दी पहने और हाथ जोड़े हुए था, भीड़ को चीरता हुआ एकदम घुस आया। मैं समझी कि यह बापू के चरण छूना चाहता है; रोज ऐसा ही हुआ करता था। बापू चाहे जहॉ जायॅ, लोग उनका चरण छूने और प्रणाम करने के लिए पहुॅच ही जाते थे। हम लोग भी अपने ढंग से उनसे कहा करते कि बापू को यह ढंग पसन्द नही। पैर छूकर चरण-रज लेनेवालों से बापू भी कहा ही करते कि "मैं तो साधारण मानव हूॅ। मेरी चरण-रज क्यो लेते है?" इसी कारण मैने इस आगे आनेवाले आदमी के हाथ को धक्का देते हुए कहा: "भाई! बापू को दस मिनट देर हो गयी है, आप क्यो सता रहे है?" लेकिन उसने मुझे इस तरह जोर से धक्का मारा कि मेरे हाथ से माला, पीकदानी और नोटबुक नीचे गिर गयी। जब तक और चीजे गिरी, मै उस आदमी से जूझती ही रही। लेकिन जब माला भी गिर गयी, तो उसे उठाने के लिए नीचे झुकी। इसी बीच दन-दन···एक के बाद एक तीन गोलियॉ दगी। अन्धेरा छा गया! वातावरण धूमिल हो उठा और गगनभेदी आवाज हुई। "हे रा—म! हे रा···" कहते हुए बापू मानो सामने पैदल ही छाती खोलकर चले जा रहे थे। वे हाथ जोड़े हुए थे और तत्काल वैसे ही नीचे जमीन पर आ गिरे। कितने ही लोगो

ने उस समय बापू को पकडने का यत्न किया। आभा बहन भी नीचे गिर गयीं। एकदम उन्होने बापू का सिर अपनी गोद मे ले लिया। मैं तो समझ ही नहीं पायी कि आखिर यह क्या हो गया? यह सारी घटना घटते मुश्किल से ३-४ मिनट लगे होगे। धुँआ इतना घना था। गोलियो की आवाज से मेरे कान बहरे से हो गये। लोगो की भीड़ उमड़ पड़ी।

हम दोनो लड़कियो का क्या हाल हुआ होगा, यह तो शब्दो मे लिखा ही नहीं जा सकता। सफेद वस्त्रो पर से रक्त की धार छूट पड़ी। बापू की घड़ी मे ठीक ५ बजकर १७ मिनट हुए थे। मानो बापू जुड़े हुए हाथों से हरी घास मे पृथ्वी माता की गोद मे अपार निद्रा मे सो रहे हो और हमारे अनुचित साहस पर नाराज न होने पर माफ कर देने के लिए न कह रहे हो।

उन्हे कमरे मे ले जाने तक दस मिनट तो लग ही गये। दुर्भाग्य से वहाँ कोई डॉक्टर भी नहीं मिला। सुशीला बहन की प्राथमिक चिकित्सा (फर्स्ट एड) की पेटी मे खोजने पर भी कोई खास दवा नहीं मिली। वे कहते ही थे कि "मेरा सच्चा डॉक्टर तो रामजी है।" हम अल्पात्मा लोग अपने स्वार्थ के लिए उन्हे जिलाने के निमित्त उनके अपने मात्र के लिए स्वीकृत इस सिद्धान्त को भ्रष्ट न कर दे, शायद इसीलिए हमे उस समय कुछ सूझ नहीं पाया हो! सरदार दादा तो अभी अपने घर भी नहीं पहुँचे होगे कि पीछे मुड़े। हम लोग तो पुक्का फाड-फाड़कर रो रहे थे, पर बापू को आज दया नहीं आ रही थी! किसी समय मुझ जैसी को उदास देखते, तो उसका कारण जानने के लिए पिल पड़ते और उसे जानकर ही छोड़ते थे। लेकिन आज तो बापू सब कुछ सहन किये जा रहे है!

सात बार की आटोमेटिक पिस्तौल की पहली गोली मध्य रेखा से साढे तीन इञ्च दाहिनी ओर नाभि से ढाई इञ्च ऊपर पेट मे लगी। दूसरी मध्य रेखा से एक इञ्च दूर और तीसरी दाहिनी ओर छाती मे मध्य रेखा से चार इंच दूर लगी थी। पहली और दूसरी गोली शरीर के आर-पार हो गयी थी और तीसरी फुफ्फुस मे रह गयी थी। उसका ऊपर का कवच बाद मे कपड़ों में मिला और आर-पार निकली हुई गोलियाँ तो प्रार्थना-स्थल पर ही मिली। अत्यधिक रक्त बहने से सारा चेहरा तो करीब दस मिनट मे ही सफेद पड गया।

बापू नहीं रहे !

भाई साहब ने तो कलेजे पर पत्थर रखकर अस्पताल मे फोन का तॉता ही लगा दिया। बाहर तो हजारों मानवो की भीड़ उमड़ पड़ी थी। भाई साहब बड़ी मुश्किल से सरदार के बंगलों से होकर विलिगटन अस्पताल मे पहुॅचे। लेकिन वहॉ से भी निराश होकर वापस लौट आये। इस बीच कन्हैयालाल मुशी आ गये। सरदार दादा भी तुरत पहुॅच गये। मणिबेन ने हम लोगो को ढाढ़स बॅधाया। मुझे गीता-पाठ शुरू करने के लिए कहा। मणिबेन के आने से और उनके तथा सरदार दादा के आश्वासन की ममताभरी मदद मिलने से मै अपने को थोड़ा-सा सॅभाल पायी और गीता-पाठ शुरू कर दिया। मुशीजी ने पाठ मे पूरा साथ दिया। इसी बीच कर्नल भार्गव आ पहुॅचे और उन्होने बापू का परीक्षण शुरू कर दिया। दो मिनट तो सरदार दादा से लेकर हम सभी उत्सुकताभरी आश्वासन की एक लहर का अनुभव करने लगे। ऐसा लगा कि राहत की कुछ खबर सुनायी पड़े। किन्तु उन्हे तो देखते ही मालूम पड़ गया कि शरीर मे अब कुछ जान नही। लेकिन कहावत है न कि डॉक्टर तो अन्त तक कुछ कहता ही नही। महापुरुष के प्रयाण का यह भयकर समाचार देना इस डॉक्टर के लिए बापू को बेधनेवाली भीषण गोली से भी कठोर था। इन्होने मेरा तो आपरेशन बड़ी ही सावधानी से किया था। आज सुबह ही इनके और इनके नर्सिग-होम के बारे मे बाते हो चुकी थी। समय बिताने के लिए इन्होने दस-पन्द्रह मिनट लगा दिये और अन्त मे कह ही दिया : "मनु बेटी ! अब बापू नही रहे !"··· वज्रप्रहार-सा यह समाचार सुनने के साथ ही जिस कमरे मे रात मे हम बच्चे और बापू किलकारियॉ भरते थे, वहीं भयंकर विलाप छा गया। देवदास काका, गोपू, दोनो सबसे छोटे लड़के और नन्हा पौत्र—सभी बापू की छाती पर कठिन वेदना से विलाप करने लगे। और पण्डितजी तो···ओहो !···भगवान्, ऐसा दिन तो दुश्मन को भी देखने को न मिले ! नन्हे बच्चे की तरह सरदार दादा की गोद मे मुॅह छिपाकर, बिलख-बिलखकर रोने लगे। फिर हम जैसो की तो बात ही क्या थी ?

अन्तिम स्मृति की प्रसादी

देखते-देखते लाखो की भीड़ जुट गयी। करीब घण्टेभर तक यह सब चलता

रहा। आखिर सरदार दादा ने अपने लौहपुरुष के बाने के अनुरूप इस कठोरतम परीक्षा का भी पास करने मे कोई कोर-कसर नही दिखायी। अकेले वे ही सभी को ढाढस बँधा रहे थे। बापू के चश्मे और चप्पल का कही पता न था। तारीख ३० को प्रार्थना मे जाने से पूर्व बातचीत करते हुए बापू ने खुद ही अपने नख काटे और मुझे फेकने के लिए दिये थे। लेकिन मैं रसिक भाई और ढेबर भाई से बातें करने मे उलझी रही, इसलिए वे कागज पर के नख वैसे ही रह गये। मैंने उन्हे अनमोल रत्न की तरह उठाकर सन्दूक मे रख दिया (उनमे एक अँगूठे का, एक उँगली का और एक कानी उँगली का भी नख था।) इसे मैंने आज उनके शरीर की अन्तिम स्मृति की प्रसादी के रूप मे अपने पास सुरक्षित रख लिया।

हमारे बापू !

अन्त मे लार्ड माउण्टबैटन सभी को शान्त करने लगे। बाहर की भीड़ पू० बापू का समाचार सुनने के लिए आतुर है, इसलिए सरदार दादा ने रेडियो पर सारी बाते प्रसारित कर दीं। पण्डितजी तो बोल ही नहीं पाते थे। सारी हिम्मत बटोरकर बोले : "हमारे बापू···" फिर एक गहरी साँस छोड़कर सिसकते हुए कहा : "बापू अब हमारे पास नहीं रहे।"···उस समय तो धरती भी काँप उठे, इस तरह जनता बिलख उठी।

अब कैसे करना !

आखिर जनता की असाधारण भीड़ देख छत पर से ही बापू का दर्शन कराने की व्यवस्था होने लगी। उस समय मै किसी काम से बाहर निकली। पण्डितजी ने एकदम मुझे पकड लिया और क्षणभर भूल गये, कहने लगे : "मनु ! आओ बापू को पूछो, अब कैसे करना ! हे भगवान् !···ऐसे विद्वान्, अपने देश और दुनिया के इस महापुरुष···!" मै तो उनके साये मे खुलकर रो पड़ी। वे भी उतने ही रोये। उस समय हम दोनो की स्थिति मे इतनी एकतानता थी कि इतने बड़े पण्डितजी भी मुझ जैसी नादान बालिका को आश्वस्त करने में असमर्थ सिद्ध हुए।

शायद बापू जाग जायँ !

…'इसी बीच विभिन्न देशो के राजदूत आते हुए दीख पड़े। उनके साथ पण्डितजी भीतर आये ! सतत गीता-पाठ करने मे मै ही प्रमुख थी। भाई साहब और काका सारी व्यवस्था करने के निमित्त बार-बार बाहर आते-जाते थे। सुशीला बहन तो थी हीं नही। और सबसे श्लोक कहते नही बनते थे। प्यारेलालजी भी व्यवस्था मे लगे हुए थे। फिर पण्डितजी कहने लगे : "मनु ! और जोर से गीता-पाठ करो, शायद बापू जाग जायॅ !" इतने वैज्ञानिक विद्वान् होकर भी वे क्षणभर सब कुछ भूल कर बार-बार आते और बापू के शरीर पर हाथ फेरकर जाते थे, मानो स्वयं भूल तो नही कर रहे हो कि बापू सचमुच नही हैं।

महात्मा गांधी की जय !

और कैमरेवालो का तो पूछना ही क्या है ? छत पर मंच बनाया गया और बापू का शव लाया गया। उसे देख छोटे-बड़े, आबाल-वृद्ध सभी की ऑखो से अविरल अश्रुधाराएँ बह पड़ीं, मानो चारो ओर से बारिश ही हो रही हो। 'महात्मा गाधी की जय' के नारो से आकाश गूॅज उठा। देखते-देखते जनता की श्रद्धाञ्जलियो के साथ फूलो और पैसो का ढेर ही लग गया। सर्व-धर्मों की समानतापूर्वक प्रार्थना जारी थी।

दो बजे बापू की देह को नहलाने के लिए बाथरूम मे ले जानेवाले थे। लेकिन अच्छा हुआ कि पू० शान्तिकुमार भाई आ पहुॅचे। वे पू० बा के अन्तिम समय मे भी उपस्थित थे और आज बापू के भी ! उन्होने हिन्दू-धर्मानुसार अन्त्यविधि करायी याने अर्थी बनाना, गाय के गोबर से सारी जमीन लीपना आदि। यदि वे यह सब न बतलाते, तो साधारणतः हममे से कोई भी यह नही जानता था।

यह घड़ी भी उतनी ही भयकर थी। बापू की देह बाथरूम मे लायी गयी। एक-एक कपडा उतारा गया। बापू की आस्ट्रेलियन ऊन की शाल गोली से छिद गयी थी और तीन जगह जल भी गयी थी। धोती और चादर भी खून से सराबोर थी।

बापू की देह पटरे पर सुलायी गयी। रक्त बहते हुए चरण 'भाई एकलो

जाणे रे' गीत की इस कडी को साकार कर रहे थे। काका और हम सब इस तरह आर-पार विधे हुए बापू के शरीर को देख फूट-फूटकर रो रहे थे, फिर भी क्रूर विधाता को दया नहीं आयी ! हमारी हृदय-विदारक चीखों से किसे क्योंकर दया आये ? कारण हम लोग अत्यन्त पापी थे, फिर विधाता की दया की आशा कैसे रख सकते है ? कडकड़ाती सर्दी और हिम-सा ठंढा पानी बापू की देह पर छोडने की कौन हिम्मत करेगा ?...

बापू को नहलाकर पटरा कमरे के बीच रखा गया। उस पर सफेद खादी की चादर बिछायी गयी और बापू की देह को सुलाया गया।

'कर ले सिंगार !'

भाई साहब ने उनके गले मे सूत का हार और उनकी रामनाम जपने की माला पहनायी। गले मे और छाती पर चन्दन-केसर का लेप किया गया। मस्तक पर कुकुम तिलक लगाया गया। सिर की बाजू पत्तियों से 'हे राम' और पैर की बाजू 'ॐ' लिखा गया। सारा कमरा गुलाब और अन्य सुगन्धित फूलों से इतना सुवासित हो उठा था, मानो अर्थी सिर्फ फूलो से ही बनी हो। देखते-देखते ३॥ का घटा बजा। आज मुझे जगाने के लिए बापू के प्रेमभरे हाथ का स्पर्श न हो पाया। आज भाई साहब को उठाते हुए 'ब्रजकिशन' की पुकार सुनायी नहीं पडती थी। सभी ने कहा : "नियत समय पर ब्राह्म मुहूर्त मे प्रार्थना की जाय।" आज हम लोगो को आदेश देकर 'नम्यो' कहनेवाले बापू की आवाज नहीं थी। 'दो मिनट की शान्ति' कौन कहेगा ?

और 'ईशावास्यमिद सर्वम्' से आरभ कर सारी प्रार्थना बड़ी मुश्किल से शुरू की। 'कर ले सिंगार' भजन गाया और 'फिर वहाँ से नही आना होगा'...। क्या बापू के इन पवित्र और तेजस्वी चेहरे का पुनः कभी भी दर्शन न होगा ? ये प्रेमभरी आँखे ! यह आश्रयदायी वात्सल्य ! यह मुक्त हास्य ! अजीब निडरताभरी विशाल छाती और इस चमकते श्वेत चर्मवाले बापू का कभी भी दर्शन न होगा ? राग तो है आशावरी, पर है तो भयकर निराशा ही !

फिर लोगों की अनहद भीड़ हो जाने से बापू की देह ऊपर लायी गयी। देश-विदेश के दूत एवं प्रतिनिधि और सरकारी नौकर भारतीय शान्ति के सम्राट् के अन्तिम दर्शन करने के लिए पहुँच गये थे।

● ● ●

अन्त्येष्टि

: ३३ :

बिरला-भवन, नयी दिल्ली
३१-१-'४८

शोक-दिवस

शनिवार ३१ जनवरी का प्रभात हुआ। कही भी उषःकाल का उत्सव दिखाई नहीं पड़ रहा था। सूर्यदेव भी इस तरह बादलो मे समाये हुए थे, मानो मानव-हृदय के इस करुण कल्पान्त से स्तभित ही न हो गये हो।

आज की इस अन्तिम-यात्रा मे भाग लेने के लिए लाखो मानव बड़े तड़के दिल्ली और बिरला-भवन आ पहुँचे थे। देशभर मे शोक-दिवस मनाया जा रहा था। शहरभर मे सर्वत्र राष्ट्रध्वज आधा झुक गया था। अल्बुकर्करोड सर्वसाधारण जनता के लिए तो बन्द करना पड़ा। वहाँ सेना का कड़ा पहरा था। सैनिको के काम आनेवाली शस्त्रवाहिनी (Weapons Carrier) बापू की देह पधराने के लिए सजायी गयी। यह काफी ऊँची गाड़ी थी, जिससे सारी जनता देख सके। गाड़ी पर भगवा वस्त्र बिछाया गया था और फिर उस पर वह पटरा रखा गया, जिसे बापू बिरला-भवन मे अन्त तक उपयोग मे लाये। उस पर एक नीची छोटी-सी खाट उठाकर रखने की योजना थी, जिस पर बापू की देह धरी हुई थी। यह सारी व्यवस्था करने के बारे मे प्रधान सेनापति जनरल बुशर के निवास-स्थान पर लंबी मत्रणा की गयी थी।

ठीक ११ बजे इस पटरे के साथ पू० बापू की देह शस्त्रवाहिनी पर रखी गयी। सफेद दूध जैसी चादर ओढ़ायी गयी। मै इसी समय पू० भाई की चिन्ता कर रही थी कि स्टेशन पर उनका क्या हाल हुआ होगा! लेकिन अभी बिरला-भवन से बाहर निकले ही नही थे कि किसीने मुझसे कहा : "तेरे पिताजी आ गये हैं!" मुझे लगा, बापू मेरे बारे मे स्वर्ग मे भी चिन्ता कर रहे होगे। स्वयं बिरला-भवन से निकलने के पहले ही मुझे मेरे पिताजी को सौप देना चाहते थे। मानो इसीलिए इतनी देर यहाँ से निकलने के लिए रुके हों।

अश्रु-अंजलियाँ

रामदास काका नागपुर से हवाई जहाज द्वारा आ पहुँचे। पडितजी का

अतिप्रिय गुलाब का फूल उन्होने अपनी अन्तिम अजलि के रूप मे चढ़ाया। बेचारी सुशीला बहन रोती-कलपती बहावलपुर से आ पहुँची। हम तीनो एक-दूसरे से लिपटी और बापू की छाती पर मस्तक रखकर अपने ऑसुओ की अजलियॉ उन्हे अर्पित की। फिर भी आज बापू हम लोगो से बोलनेवाले नही थे। मैने तो बापू से खूब-खूब माफी मॉगी और एक ही मॉग की कि "आपकी दी हुई पूँजी को भले ही मैं बढ़ा न पाऊँ, पर नष्ट भी न करूँ; इसका मुझे सतत भान कराते रहे।"

महायात्रा में सेना के स्थल, जल और वायु तीनो विभागों की टुकड़ियॉ आ पहुँची थीं। लाल वर्दी के सशस्त्र पुलिस-दल की टुकड़ियॉ भी हाजिर थी। चार बख्तर-गाडियॉ इस सारे जन-समुदाय के आगे रखने की योजना थी। मानवो की भीड़ का तो शुमार ही नहीं था। बापू की देह पर पुष्पवृष्टि हो रही थी। पैसो का तो ढेर लग गया। बिरला-भवन के मुख्य द्वार पर तो कड़ा पहरा था। श्रद्धांजलि समर्पण करने के लिए आनेवालों को पास दिया जाता था। लाखो की यह भीड़ शोक-सागर में डूब गयी थी। सभी की ऑखो के ऑसू सूख ही नहीं पा रहे थे।

जाओ महात्मन् !

हम लोगो ने बापू का शव उठाया। मुझे अपने कधो पर बापू की ठठरी (अर्थी) उठाने की नौबत आयी! मैं भाग्यशाली हूँ या अभागिन? कोई कल्पना ही नहीं कर सकता कि जगद्वन्द्य बापू को आज मुझे शव के रूप मे कन्धे पर ढोने का मौका आयेगा! एक ओर भयानक सिसकियो की आवाज! दूसरी ओर रेडियो पर 'रिले' करनेवाले हृदय-विदारक शब्दों मे दुनियाभर ऑखो देखा वर्णन प्रसारित कर रहे है: "बापू के अवशेष को अब बाहर लाया जा रहा है। यहॉ लाखो लोग जुटे हैं। निःश्वास तक सुना जा सके, इतनी शोक-मग्न शान्ति में भारत के राष्ट्रपिता आज अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के लिए बिरला-भवन का द्वार छोड़ रहे हैं। लाखों लोग यहॉ हैं, किन्तु उनमे प्राण कहॉ? प्राण तो वह था, जो अभी अन्तिम यात्रा के लिए जा रहा है! जाओ, महात्मन्! जाओ, अपनी अन्तिम शान्तियात्रा के पावनतम मार्गों पर जन-

हृदय की अंजलियाँ पाते हुए जाओ !…'करोड़ों की जनता आपको—भारत के राष्ट्रपिता को, विश्व के युग-पुरुष को—अन्तिम वन्दना कर रही है। जाओ, महात्मन् !…"

रेडियोवालों के इन शब्दों से तो हृदय का बन्द-बन्द टूटता जा रहा था। हम लोग पण्डितजी का हाथ पकड़कर नीचे उतरे। पण्डितजी की आँखें तो इतनी सूज गयी थीं कि उनका प्रफुल्लित चेहरा देखनेवालो से उनकी यह दशा देखना दुश्वार हो रहा था। वे जनता को रास्ता देने के लिए इशारे से बिनती कर रहे थे। एक लाउडस्पीकरवाली मोटर भी जनता को सूचना दे रही थी। सेना के तीनों विभागो के प्रतिनिधियों ने डोरी खीचकर बापू को—राष्ट्रपिता को—यमुना-तट पहुँचाने के पहले प्रणाम किया, सलामी दी। पू० मणि बहन ने कहा कि "आप लोग पाँच मील चल न सकेंगी, इसलिए घर पर ही रहे।" लेकिन रहा ही कैसे जा सकता है ? शव-वाहिनी गाड़ी पर सरदार दादा, रामदास काका, मौलाना साहब, कृपालानीजी आदि कभी-कभी बैठ जाते, तो कभी पैदल ही चलने लगते। पण्डितजी भी ऐसा ही कर रहे थे। हम लोग पहली टुकड़ी मे रामधुन गाते हुए चल पड़े। हमसे आगे पुलिस भी। सबसे आगे तो चार बख्तरबन्द गाड़ियाँ थी, फिर सैनिक टुकड़ियाँ, पुलिस टुकड़ियाँ, सेवादल और शव-वाहिनी !

शव-वाहिनी के पीछे भारत-सरकार के मंत्री, गवर्नर जनरल लार्ड माउण्ट-बैटन, प्रादेशिक गवर्नर और मुख्य मन्त्री एवं मन्त्रिगण, उच्च सैनिक अधिकारी, विदेशी दूतावासो के प्रतिनिधि, मित्र, स्वजन, बिरला-परिवार, महाराज जाम साहब और अन्य देशी नरेश, काग्रेस महासमिति एव लोकसभा के सदस्य तथा स्थानीय नेता सभी चल रहे थे।

चार हजार स्थल-सैनिक, एक हजार वायु-सैनिक और एक हजार पुलिस की टुकड़ियाँ अपने-अपने गणवेष (वर्दी) में आ पहुँची थीं। चीन के राजदूत के आदेश से दिल्ली मे रहनेवाले सभी चीनी नागरिक भी चीनी भाषा मे 'गाधीजी अमर रहे' यह सुभाषित अपने झडे मे अकित कर महायात्रा मे सम्मिलित हो गये थे। वे लोग शव-वाहिनी के पीछे-पीछे चल रहे थे।

'करेंगे या मरेंगे' का शंखनाद

११॥ बजे अन्तिम यात्रार्थ प्रस्थान किया गया और करीब पॉच घण्टे में साढे पॉच मील का रास्ता निम्नलिखित क्रम से तय किया गया। लोगो ने शंखनाद किया। आखिर यह किस विजय का शंख था? क्या बापू की इस विजय का कि उन्होने 'करेंगे या मरेंगे' इन दोनो सूत्रो को साकार कर दिखाया? अलबुकर्क रोड, किग्स वे रोड, मेमोरियल पोर्च, प्रिंसेस पार्क, शाहजहान रोड से होकर दिल्लीगेट और दरियागज होते हुए यह महायात्रा राजघाट पर जानेवाली थी। 'महात्मा गांधी की जय, महात्मा गाधी अमर हो गये' इन नारो और शंखघोषों के साथ करीब आध घटे मे महायात्रा मेमोरियल पोर्च के पास आ पहुँची। डेढ़ सौ फुट ऊँचे युद्धस्मारक के निकट से जब भीड़ गुजरने लगी, तो मेमोरियल पोर्च के अन्तिम छोर तक और आस-पास के सैकड़ो वृक्षो, तार के खभो, घरो की छतो—जहाँ भी दृष्टि जाती, वहीं मानवो के मुड ही मुंड दीखते रहे। उसमें सर्वधर्मीय कौमे थीं। हजारों लोग हाथ जोड़ते, ऑखो मे ऑसुओ की धाराएँ लिये अपने राष्ट्रपिता को प्रणाम करने के लिए टूट पड़ने को आतुर थे। बीच-बीच में पडितजी और देवदास काका हम सभी लड़कियों को बारी-बारी से शव-वाहिनी पर बैठाते थे। हम लोग रामधुन कर रही थीं, इसलिए बारी-बारी से ही जा पाती थीं। रास्ता साफ रखने के लिए राइफलधारी गुरखा टुकड़ी और स्काउट रास्ते के आगे-आगे चल रहे थे। पडितजी रस्से को लॉघ-लॉघकर इधर-उधर कूद पड़ते थे, उससे पुलिस और स्वयसेवकों को बड़ा ही भय लग रहा था। उनकी रक्षा करना मुश्किल हो गया। यदि कोई कभी उन्हे दौड़कर ऐसा न करने के लिए कहता, तो वे काफी बिगड़कर कहते: "अरे, तुम बापू को तो नहीं बचा पाये!"

पॉच मील का पूरा रास्ता गुलाब के फूलो की पंखुड़ियो और पैसों से एकदम छा गया था। भारतीय हवाई दल के तीन डाकोटा विमान बापू की शव-वाहिनी की तीन प्रदक्षिणा कर पुष्प वृष्टिकर रहे थे। उस समय रामायण में वर्णित पुष्पकविमान का दृश्य ऑखों के सामने साकार खड़ा हो जाता था। तीन बार ऐसा हुआ। तीनो बार चक्कर काटपर सेंट-इत्र के साथ सिर्फ सच्चे गुलाब के फूलों की वर्षा सचमुच बड़ी अद्भुत बात थी।

दिल्ली गेट से आगे बढ़कर महायात्रा दारियागंज के रास्ते यमुना-तट की ओर मुड़ी। रास्ते मे जिला-जेल लगा, जहॉ पू० बापू को कैदी के तौर पर रखा गया था। इस जेल के बाहरी दरवाजे के सामने जेल के चौकीदारो और वार्डरो ने जेलर के नेतृत्व मे सैनिक ढंग से राष्ट्रपिता को सलामी दी, तो उस समय पण्डितजी शव-वाहिनी से नीचे उतर गये थे। राजेन्द्र बाबू तो सीलोन मे थे। वे वहॉ से दोपहर में दिल्ली पहुॅचे। बम्बई से भी बहुत-से मेहमान दोपहर को दिल्ली पहुॅचे। अतः वे सब बीच रास्ते से ही महायात्रा मे शामिल हो गये। दिल्लीगेट के पास तो भीड़ बेशुमार हो गयी थी, लगभग ३।४ लाख होगी। आस-पास के गॉवों से भी लोग आ पहुॅचे थे।

अन्तिम दर्शन

यमुना-तट पर १२×१२″ का २॥ फुट ऊॅचा एक चबूतरा बनाया गया था। उसे यमुना मैया के जल से पवित्र किया गया। वह पंचपल्लव और पुष्पों से सजा हुआ था। १५ मन चन्दन की लकड़ी, ४ मन घी, २ मन धूप, १ मन नारियल, १ मन समिधा, ७॥ सेर कपूर—यह सारा सामान तैयार था। चिता के स्थान से १०० गज दूर मजबूत घेरेबन्दी कर दी गयी थी, जिससे लोगो की भीड़ न हो। यहॉ भी लाखों लोग पहले से ही पहुॅच गये थे। जाड़े की हवा कानों को छेदती जा रही थी। हम लोगों के पहुॅचने के पहले ही वहॉ भीषण भीड़ हो गयी। कितने बेहोश हो गये, तो कितने ही आहत हुए। एम्बुलेन्स कारे उपस्थित थी और उनकी दौड़-धूप जारी रही। इस समय यह स्पष्ट दीख रहा था कि राष्ट्र के सभी मानवो को राष्ट्रपिता का अन्तिम दर्शन का समान अधिकार है। जब हम लोग शव को उतारने चले, तो फूलों के ढेर से सारी देह ढॅक गयी थी। सिर्फ दिखाई पड़ रहा था, चन्दन-कुंकुम-चर्चित चेहरा, जो सदैव ऊॅचा रहकर अपनी अनुपम विजय की साक्षी दे रहा था!

हम सबने उस शव-वाहिनी पर से शव को नीचे उतारा। पण्डितजी भी हिन्दूविधि के अनुसार धोती पहनकर आये थे। सभीने उनसे ही बापू की अन्तिम विधि करने का आग्रह किया, पर उन्होने यह काम रामदास काका को ही करने के लिए कहा। अर्थी उठाते समय वे याद रखकर अचूक हम लोगों को बुला लेते।

दाह-संस्कार

आखिर हम लोगों ने अपने पापी हाथों से बापू की देह को यमुना नदी के जल से सिंचित कर उत्तर दिशा की ओर सिर करते हुए चन्दन की लकड़ियो पर विधि और श्लोको के साथ पधराया। शास्त्री रामधन शर्मा यह विधि करा रहे थे। हम लोगो ने सर्व धर्मों की प्रार्थना की। किसीकी मजाल है कि इस समय कोई अपना हृदय सँभाले रहे! हरे! हरे! जिस बापू को छोटी-सी पिन चुभ जाती, तो हम लोगों के कलेजे काँप उठते थे, आज उन्हींकी इस कोमल देह पर बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ रची गयी हैं। सचमुच ''यह सबसे कठिन क्षण बिताना कितना भयकर हो गया है! मै तो सरदार दादा की गोद मे ढेर हो गयी और बिलख-बिलखकर रो पड़ी। पण्डितजी भी बेहद रोये। सरदार दादा और पण्डितजी तो मानो आज एक ही दिन में एकाएक बूढ़े बन गये! लार्ड माउण्ट-बैटन उन्हे हर तरह से शान्त करने का यत्न कर रहे थे। लार्ड और लेडी माउण्ट-बैटन, उनकी दोनो पुत्रियाँ, उनके दामाद, लार्ड ब्रेबोर्न, मद्रास के गवर्नर सर आर्चीबाल्ड नाई, उत्तर प्रदेश की गवर्नर सरोजिनी नायडू, पूर्वी पजाब के गवर्नर सर चन्दूलाल त्रिवेदी, खेर साहब, राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, राजकुमारी अमृत कौर आदि बहुत-से लोग तो उन्हे समझा ही रहे थे। आखिर एक प्यारी बहन के तौर पर लेडी माउण्टबैटन ने भी पण्डितजी की पीठ सहलाते हुए उन्हें आश्वस्त करने का यत्न किया, फिर भी उनका रुदन बन्द नहीं हो रहा था।

आखिर लपटे बढने लगीं। हवा के साथ चिनगारियाँ भी जोरो से उड़ रही थीं। मानो अग्निदेव हमारे इन पापो को धिक्कारते हो, इसीलिए हवा के साथ इन चिनगारियों का वेग भी बढता ही जा रहा था। हम लोगों को बेहाल देख सरदार दादा ने जो भी ट्रक मिली, उसमे हम लोगो को बैठाया और स्वय बिरला-भवन में पहुँचाने के लिए आये। हम लोगो की यह हिम्मत ही कहाँ हो सकती थी कि बापूवाले कमरे मे पैर रखे। पूरे बिरला-भवन मे हम लोगो के सिवा और कोई नहीं था। इसलिए हम लोग खूब खुलकर रोयीं, प्रलय ही मचा डाला। आखिर ऑख भी सूख गये। काफी रात और कड़कड़ाते जाड़े में हम लोग एकदम ठंडे पानी से नहाये। ३० तारीख से पानी तक गले से नीचे नहीं उतारा था।

करुण दृश्य

हमे राजघाट पर अन्त तक रहना था, लेकिन अपार भीड़ और यह बेहाल हाल देखकर हमे यहाँ पहुँचाया गया। हम लोगों की खोज-खबर लेने के लिए हम पर अत्यन्त प्रेम रखनेवाले काका-काकी भी आ गये। काका के घर मेह-मानों की अपार भीड़ है। देवदास काका ने मुझे तो बहुत ही प्रेम से सँभाला। उन्होंने मुझसे बापू की सभी वस्तुओ की सूची बनाने के लिए कहा और इस तरह बात बदलवायी। अन्त मे हम लोगो के इच्छानुसार अपनी गाड़ी मे ही वे रात मे पुनः चितास्थल पर ले गये। दक्षिण अफ्रीका के बापू के पुराने साथी सोराबजी भाई लगातार पहरा दे रहे थे। रातोरात कॉटेदार तार की बाड़ बना दी गयी और सैनिक पहरा भी रख दिया गया।

हम लोग दो बजे पुनः वहाँ गये। अरे, बापू के कोमल चरण जल रहे थे—हड्डियाँ थी। हमारी ऑखे यह देखती हुई फूट क्यो नही गयी! कितना पाषाण हृदय होगा! मुझे तो यह देख वहाँ खड़ा रहना मुश्किल हो गया। इसलिए गाड़ी मे आकर बैठ गयी। भगवान्! ऐसा करुण दृश्य जीवन मे पुनः कभी मत दिखलाओ। मेरे जीवन के अभी दो दशक भी पूरे नही हो पाये और उसी बीच ऐसी दो करुण घटनाएँ! पू० कस्तूर बा और पू० महात्मा गाधी जैसे विश्व-इतिहास की अमर विभूतियो के अग्निदाह की मुझे साक्षिणी बनाया! दिल मे यह चोट बनी ही रहेगी। और भले ही मै दुनिया के समक्ष भाग्यशाली मानी जाती होऊँ, वह इस आघात के समक्ष एक आश्वासन ही है। ❁ ❁ ❁

दाह-संस्कार के बाद : ३४ :

हम लोगों को तो मानों कुछ काम ही नही है। बापू थे, तब तो समय कम पड़ता था। लेकिन अब तो समय इतना बढ़ गया है कि उसे किस तरह बिताया जाय, यह एक पहेली बन गयी है।

बिरला-भवन मे हम लोग नियमानुसार सुबह उठकर प्रार्थना करते है—बापू बैठते थे, उस गद्दी के पास ही। कमरा तो अत्यन्त सूना लग रहा है। देवदास काका और रामदास काका तथा मेरे पिताजी यही है। इसलिए उनके

पास ही रहते है और उन्हे यह अच्छा भी लगता है। काका और उनकी बनती भी खूब है। भाई भी काका और हम सबके नाम पर आनेवाली चिट्ठियो और तारो का ढेर, ट्रककॉल आदि को बारीकी से छॉटते है, अलग-अलग करते हैं और जो चीज अखबारो मे देने योग्य हो, उसे वहॉ भेज रहे है।

देश-विदेश के सन्देशो में कुछ तो ये है—अमेरिका के प्रमुखजन, अबीसीनिया, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, इटली, इण्डोनेशिया, मिस्र, कनाडा, क्यूबा, कोलम्बिया, चीन, चिली, जर्मनी, जापान, जेकोस्लोवाकिया, जंजीबार, यूनान, डेनमार्क, तुर्की, तिब्बत, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण रेडेशिया, नेपाल, नेदरलैण्ड, नार्वे, न्यूजीलैण्ड, फिलस्तीन, पुर्तगाल, पोलैण्ड, फ्रान्स, फिलीपाइन, फिनलैण्ड, ब्रिटेन, बर्मा, ब्राजिल, बगदाद, मोरक्को, युगाडा, लेबनान, लैक्सम्बर्ग, मानमेरिनो, सीसीलीस, सोमालीलैण्ड, सूदान, स्विट्जरलैण्ड, स्वीडेन, सीरिया, सयुक्त राष्ट्रसंघ, हादाई। इस तरह दुनिया के सभी देशो से वहॉ-वहॉ की सरकारो, ब्रिटिश राजपुरुषो तथा सभी देशो मे रहनेवाले पू० बापू के अनेक व्यक्तिगत मित्रों और शुभेच्छुको के तार और समवेदना के सन्देश आये हुए थे। इसे देखकर सचमुच यही मालूम पडता है कि बापू ने तो सच्चा जीना भी जाना और सच्चा मरना भी जाना !

पू० बापू की अस्थियॉ (फूल) और भस्मी की मुख्य विसर्जन-विधि तो प्रयाग के त्रिवेणी-सगम मे होनेवाली है, किन्तु भारत के राष्ट्रपिता का अन्तिम भस्म-दर्शन करोडो देशवासी कर सकें, इसलिए हर प्रदेश मे भस्म-कुभ पहुँचाना तय हुआ।

अस्थि-विसर्जन

भावनगर के लिए बल्वन्त भाई मुझसे भस्म ले गये। उस समय हर प्रदेश मे भस्म पहुँचाने की बात तय नही हुई थी। महाराजा साहब चाहते थे, इसलिए मैने अपनी प्रसादी मे से थोडी भस्मी दे दी। मुख्य-मुख्य प्रदेशो मे भस्मी के प्रवाह के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की गयी : (१) इलाहाबाद—त्रिवेणी-सगम मे। (२) बम्बई—नासिक की गोदावरी मे। (३) आन्ध्र—बेजवाड़ा की कृष्णा नदी मे। (४) तामिलनाड—श्रीरगम् की कावेरी मे। (५)

बिहार—गया के पास गोमती में (६) मध्यप्रदेश—त्रिपुरी के पास नर्मदा मे। (७) पूर्वी पजाब—जालंधर की सतलज मे। (८) पश्चिम बगाल—दक्षिणेश्वर की हुगली नदी में। (९) इन्दौर और राजस्थान—क्षिप्रा नदी मे (१०) उड़ीसा—महानदी मे। (११) आसाम—ब्रह्मपुत्र मे। (१२) अहमदाबाद—साबरमती मे और (१३) वर्धा—पवनार नदी मे। इसके बाद जगन्नाथपुरी, सेतुबध रामेश्वर, कन्याकुमारी और पोरबन्दर में समुद्र मे भी भस्मी विसर्जित करना तय हुआ है।

२ फरवरी को राजघाट पर लाखो लोगों के साथ प्रार्थना हुई और उसके बाद शास्त्रीय विधि से सारी भस्मी ताँबे के एक कलश मे भर दी गयी। आँखो के सामने पू० बापू की विविध घटनाएँ खड़ी हो जाती है और उनका यह पटाक्षेप ! सचमुच अन्त मे मानव-देह की क्या स्थिति होती है ? मुझ अभागिन के भाग्य मे यह भी देखना बदा था ! देखना ही नही, मेरे हाथो भगवान् ने भस्मी और अस्थियो का सचयन भी कराया···!

अस्थि-कलश

अस्थियो का यह कुंभ हम लोग बिरला-भवन मे ले आये। सारी विधि रामदास काका ने ही की। देवदास काका तो अपार वेदना से दुःखी थे, फिर भी हरएक का भलीभाँति ध्यान रख रहे थे। यह ताम्रपात्र उसी गद्दी पर रखा गया, जहाँ बैठकर पू० बापू हमेशा हँसते हुए कभी किसीको सुख-दुःख मे मार्ग-दर्शन करते, कभी किसीसे यो ही बाते करते थे। तकिया पर बापू का भव्य चित्र रखा गया। यह कितना करुण दृश्य था, उसका वर्णन ही नही किया जा सकता ! यही सुबह रोज प्रार्थना होती। हजारो बहन, भाई और बच्चे इस अस्थिकुंभ के दर्शनार्थ आये थे। एक चरखा अखण्ड चल रहा था और अखण्ड गीता-पारायण भी हो रहा था। फूलो और पैसो का तो ढेर-सा लग गया था।

भस्मी-विसर्जन

बारह फरवरी को सारे देश मे एक साथ अस्थि-विसर्जन करना तय हुआ। आज १० फरवरी को चरखा, प्रार्थना और गीतापाठ के साथ द्वादशाह श्राद्ध

की क्रिया राजघाट पर हुई। यमुना-माता अनादि काल से कितने ही महापुरुषों की अस्थियों को अपने गर्भ मे स्थान देती आ रही हैं। आज वहाँ से लौटकर हम लोग कल इलाहाबाद मे अस्थि-विसर्जन के लिए जाने की तैयारी में लग गये…।

यह डायरी मैं इलाहाबाद जाते हुए गाडी मे लिख रही हूँ। ११ फरवरी को रात मे ३ बजे हम लोग नियमानुसार प्रार्थना के लिए तैयार हुए। प्रार्थना के बाद स्थूल अवशेष का कलश शकु आकार की पालकी पर रखा गया और उसे हम लोगो ने अपने कन्धो पर उठाया और स्टेशन की ओर चल पड़े। सुबह ४॥ बजे हम लोग स्टेशन पर पहुँचे। पण्डितजी, लार्ड माउण्टबैटन आदि अन्य लोग कल हमसे पहले हवाई जहाज से इलाहाबाद पहुँच जायँगे।

अस्थियों को ले जाने के लिए पाँच डिब्बो की स्पेशल गाड़ी की व्यवस्था की गयी। बीच के डिब्बे मे एक टेबुल पर राष्ट्रध्वज बिछाकर उस पर कलश रखा गया था। उसे फूल-मालाओ और बिजली के लट्टुओ से खूब सजाया गया था। सब लोग बाहर से अच्छी तरह देख सकते थे। अखण्ड रामधुन और गीता-पाठ चल रहा था।

ठीक ६ बजे सुबह पण्डितजी, लार्ड माउण्टबैटन का स्टाफ देश-विदेश के राजदूत, अनेक नेताओं तथा विशाल जनसमूह ने विदा दी। पण्डितजी तथा अन्य लोगो की आँखो से सावन-भादो बरस रहे थे।

दिल्ली से इलाहाबाद आते हुए रास्ते मे १० प्रमुख स्टेशनो पर यह अस्थि-स्पेशल रोकी गयी, जहाँ जनता की भारी भीड़ ने बड़ी ही करुणा और भक्ति के साथ राष्ट्रपिता के अन्तिम अवशेषों के दर्शन किये। ● ● ●

त्रिवेणी-संगम पर : ३९ :

१२ फरवरी को सुबह हम सब लोगों ने नियमानुसार एकत्र होकर प्रार्थना की। बापू के सान्निध्य मे यह अन्तिम प्रार्थना रही।

पण्डितजी, सरदार दादा, लार्ड माउण्टबैटन, लेडी माउण्टबैटन कल दोपहर मे ही हवाई जहाज से इलाहाबाद पहुँच गये। सरोजिनी नायडू, पन्तजी, राजेन्द्र बाबू और केन्द्र का पूरा मन्त्रिमण्डल उपस्थित था। उत्तर प्रदेश के मन्त्रिमण्डल

ने अपनी देख-रेख मे सारी तैयारी की थी। पण्डितजी तो आये, तब से खड़े ही खड़े थे।

इलाहाबाद में जब-जब बापू आते थे, तो पण्डितजी एक प्रिय पुत्र की तरह स्वयं उनके स्वागत-सत्कार मे लगे रहते थे। जनता ने भी इसी तरह उनका सत्कार किया है। भारत को स्वतन्त्रता दिलानेवाले राष्ट्रपिता को गोलियो से मार देने के कारण आये हुए इस अस्थि-कलश का स्वागत करते हुए आज स्वतन्त्र भारत के प्रधान मन्त्री के नाते पण्डितजी को देख यहाँ की जनता को कितनी असह्य वेदना होती होगी !

ठीक नौ बजे हमारी ट्रेन इलाहाबाद स्टेशन पर पहुँची। त्रिवेणी-संगम करीब पाँच मील दूर होने पर भी यही से लाखो की भीड़ जमा हो गयी थी। फिर भी वातावरण मे अभूतपूर्व शान्ति छायी हुई थी। स्टेशन पर सारा मन्त्रि-मण्डल, देश-विदेश के प्रमुख जन हाथो मे हार लेकर खड़े थे।

कुंभ में अस्थि-कुंभ

अस्थि-कुम्भ की पालकी को पण्डितजी, डा० जीवराज भाई मेहता, रफी साहब, सरदार दादा और मौलाना साहब क्रमशः अपने कन्धो पर ढोकर १७ फुट ऊँचे बने हुए गाधी-रथ तक ले आये और उसे रथ मे स्थापित किया। विमान ऊपर से रथ पर पुष्प-वृष्टि कर रहे थे। यात्रा क्वीन्स रोड पर से सुव्यवस्थित जुलूस के रूप मे परिणत हो गयी। -

सर्वप्रथम लाउडस्पीकरवाली मोटरें और चार सैनिक-जीपे साथ-साथ चल रही थी। फिर १२-१२ की कतार मे घुड़सवार सैनिक टुकड़ी और उसके पीछे कुमाऊँ रेजीमेण्ट चल रही थी। उसके बाद पुलिस की टुकड़ी और फिर सैनिक टुकड़ी थी। आगे १२-१२ की आठ कतारे और फिर अस्थि-पालकी के दोनो ओर तीन-तीन की कतारे, बीच भीड़ मे हम बहने रामधुन करती हुई चल रही थी। उसके बाद देश के नेता, प्रादेशिक मन्त्री, उच्च सरकारी अधिकारी, देश और विश्व के प्रतिष्ठित नागरिक ६-६ की कतार मे चल रहे थे। पालकी के पीछे सैनिक टुकड़ी, विशाल जन-समुदाय और अन्त मे भी सैनिक टुकड़ी थी। ८।१० लाख के इस जुलूस की व्यवस्था सचमुच अद्भुत थी। ४ हजार लम्बे बाँसो से बाड़ लगा दी गयी थी, जिससे बाहर की जनता दर्शन कर सके।

रास्ते पर पेड़ों, मकानो, तार के खम्भों आदि पर मानवों के मुण्ड ही-मुण्ड दीख रहे थे। बीच-बीच मे विमान से पुष्प-वृष्टि हो रही थी। 'महात्मा गाधी की जय' के नारो से आकाश गूँज उठता था। इन दिनों इलाहाबाद मे कुंभ मेला भी लगा हुआ था। लेकिन उस कुंभ से यह कुभ जन-हृदय मे अधिक स्थान कर गया। साधु-सन्तो ने भी इस महापुरुष को अन्तिम प्रणाम किया।

कुंभ मेले के मैदान में तो एक दैवी वातावरण ही छा गया था। लाउडस्पीकर-वाली मोटर से 'रघुपति राघव' की धुन गायी जाती और दस-पन्द्रह लाख की भीड़ एक ताल और एक स्वर से रामधुन को दुहराकर अन्तिम 'हे राम' कहने-वाले अपने प्यारे पिता को श्रद्धाजलि समर्पित कर रही थी।

कौन किसे आश्वासन दे ?

आखिर अस्थि-रथ यमुनाघाट पर आकर खड़ा हुआ। जीपनाव (डक) पहले से ही सजाकर रखी गयी थी। उसमे रामदास काका, देवदास काका, सरदार दादा, पण्डितजी, पन्तजी, पद्मजा बहन, सरोजिनी देवी, मौलाना साहब आदि ने अस्थि-कुभ को पधराया। यह सैनिक-डक जमीन से चलकर खास टलाव पर से यमुना नदी मे उतरी। हम लोग अलग नाव से संगम पर गये। बाद मे हमे भी उसमें ले लिया गया। इतनी कड़ाके की सर्दी मे भी हजारों लोग जल मे उतरकर दर्शन करने आ रहे थे। ३०।४० लाख की जनता यह दृश्य बड़ी करुणा के साथ देख रही थी। ऊपर आकाश, नीचे पवित्र जल, बीच मे लाखों जनता की आँखो में अश्रुधाराएँ और हृदय मे इष्टदेव की आराधना चल रही थी। सतत वेदमंत्र और रामधुन हो रही थी। एक ओर से आनेवाला गगा मैया का शुभ्र जल और दूसरी ओर से आनेवाला यमुना मैया का श्याम जल तथा बीच मे दोनों को मिलाकर गुप्त रूप मे रहनेवाली सरस्वती—ऐसे त्रिवेणी-संगम में रामदास काका ने अस्थि-कलश को पधराया। उन्होंने हम लोगों के हाथों मे भी एक-एक अस्थि-पुष्प दिया। असह्य वेदना और करुण रुदन के साथ हम लोगों ने भी गगा और यमुना मैया को उसे सौप दिया !

जवाहरलालजी, देवदास काका बिलख-बिलखकर रो पड़े। कौन किसे आश्वासन दे ? गगा और यमुना दोनों बहनें भी इस समय मानो एक-दूसरी से मिलकर अश्रुधाराएँ बहा रही थी ! सूर्यनारायण भी यह दृश्य देख न सके और

मानो इसीलिए वे बादलो मे छिप गये। तीस-तीस लाख मानवों की भीड़ का करुण क्रन्दन कानो से सुना नही जा रहा था ! फिर गीता का बारहवे अध्याय का पाठ किया गया। शरीर मे दुःख का सन्ताप इतना बढ़ गया था कि इतनी ठढ मे बरफ जैसे पानी मे नहाने पर भी शान्ति नही मिल रही थी।

वापस लौटते हुए हम लोगो को बेहद एकाकीपन महसूस हुआ। ४०-५० लाख की भीड़ के सामने ऊँचे मंच पर पण्डित जवाहरलालजी ने भरे हुए गले से सिसकते हुए कहा : "आखिर आज मैं त्रिवेणी मे अपने बापू को छोड़ आया !"

यज्ञ का यह उपसंहार ! : ३६ :

बिरला-भवन वीरान

पूज्य बापू के अन्तिम स्थूल अवशेष को इस तरह त्रिवेणी के अमर गर्भ मे सौंपकर हम लोग आनन्द-भवन मे आये। वहाँ काकी ने जबरदस्ती हम लोगों को खिलाया। रात मे हम लोग दिल्ली के लिए रवाना हुए। दिल्ली मे आने पर इतना बड़ा भव्य बिरला-भवन अब निर्जन और वीरान लग रहा था। सुबह-शाम राजघाट पर की प्रार्थना मे हाजिरी देनेवालो मे मन्त्रिमण्डल और अन्य हजारो लोग रहते थे।

देवदास काका ने हम लोगों से पू० मोटी बा (कस्तूर बा) की पुण्यतिथि (२२ फरवरी) करके ही दिल्ली छोड़ने के लिए कहा। फिर भी यहाँ बिलकुल ही अच्छा नही लगता था। समय भी कट नही पाता था।

२२ फरवरी को हम लोग महरौली के श्री कस्तूर बा-आश्रम मे प्रार्थना करने गये। गीता पाठ किया। सुशीला बहन और मुझे तो इतना रोना आ रहा था कि हम लोग प्रार्थना ही न कर पाये। आगा खाँ महल मे आज से ४ वर्ष पूर्व हम लोगो ने पूज्य बा को इसी तरह अन्तिम विदा दी और ४ ही वर्षों मे पू० बापू को भी। शाम को हम लोग राजघाट पर भी गये। आज रात मे हम लोगो को यहाँ से रवाना होना था। अपना सामान बाँधने और आने-जानेवालो से भग्न हृदय से विदा लेने मे ही सारा दिन बीत गया।

गुमनाम पत्र

हम लोगों के लिए सरकार ने दिल्ली से बम्बई तक तृतीय श्रेणी का डिब्बा रिजर्व करा दिया था। मेरे नाम सौराष्ट्र से गुमनाम पत्र आते थे कि गांधीजी की मृत्यु की साक्षी देगी, उसकी सच्ची-सच्ची हकीकत बतायेगी, तो आप भी गोली की शिकार हो जायँगी। इसीलिए सरदार दादा और बिरलाजी ने अपना एक जमादार भी हम लोगों के साथ कर दिया। कनुभाई भी नोआखाली से लौट आये थे। उनकी ही प्रतीक्षा थी, ताकि सभी साथ जा सकें।

राजघाट से आकर हम लोगों ने सामान गाड़ी में रखा और उसे रवाना कर दिया। हम लोग देरी से निकले। लक्ष्मी काकी ने मुझे बड़ी ही कठिनाई से विदा दी। मुझे एक साड़ी दी और रो पड़ी। आभा भाभी ने रोरी की टिक्की दी। स्टेशन पर भी लोग पहुँचाने आये हुए थे। डॉ० सुशीला बहन, देवदास काका, गोपू, तारा सभी की आँखों से आँसू सूख ही नहीं पा रहे थे। पत्र-प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

गाड़ी दो घंटे लेट थी। देवदास काका मुझे एकान्त में ले गये और गाड़ी खुलने तक मुझसे बातें करते रहे। खासकर तो मेरी डायरी के बारे में ही बातें हुईं। उसके बाद आज की राजनैतिक परिस्थिति में ··· के साथ कुछ बिगड़े हुए सम्बन्धों के बारे में तथा बापू के अन्य साथियों के विषय में चर्चा हुई।··· काका ने मुझे अपनी डायरी का विवरण किसीको भी न बताने की ताकीद की। साथ ही अन्य महत्त्वपूर्ण पत्रों को भी प्रकट करने के लिए कहा।··· की घूसखोरी के विषय में बापू के विचार जान लिये। काका ने स्टेशन के प्लेटफार्म पर चक्कर लगाते हुए आज अन्तिम दिन मुझे बड़ी ही ममता के साथ शिक्षा दी और कहा कि "तू खुद छोटी बच्ची है, पर तेरे पास का साहित्य बहुत बड़ा है। फिर तू भोली-भाली है। लेकिन भाई है, इसलिए निश्चिन्त हूँ।" उन्होंने पुनः दिल्ली आने का आग्रह किया और बीच-बीच में अपना हाल लिखते रहने के लिए भी कहा। गाड़ी ने सीटी दी और हम सब की आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी। बापू को विदा कर आज मैं घर जा रही हूँ। महुआ इस तरह लौटना होगा, यह कल्पना में भी नहीं था। मेरे साथ जानेवालों में मेरे पूज्य पिताजी, मनु भाई, आभा भाभी और जमादार ये चार व्यक्ति थे।

२३ तारीख का सारा दिन गाड़ी मे ही बीता। २४ को हम लोग बम्बई पहुॅचे। वहाँ शान्तिकुमार के आतिथ्य मे १ मार्च तक रहे। पहली को उन्होने भावनगर के लिए हवाई जहाज की व्यवस्था कर दी और हम लोग भावनगर आये।

भावनगर से रवाना

यों तो भावनगर मे एक ही दिन रहना था, पर लग गये पाँच दिन। महाराज और महारानी साहिबा ने मेरे साथ अपनी पुत्री-सा व्यवहार किया। बापू के एक शब्द से इन दम्पती ने अपना राज्य उनके चरणों मे उत्तरदायी शासन के लिए सौप दिया था। बापू की महत्ता और व्यापक प्रभाव का यहाॅ प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। भावनगर के इन पाॅच दिनों मे विभिन्न स्थानो पर कार्यक्रम हुए। ६ मार्च को भावनगर-समाचार के संपादक मिलने आये और उन्होने बापू के संस्मरण लिख भेजने के लिए अत्यन्त आग्रह किया। मैने कहा : "यह लिखना मेरे लिए सभव नही।" बापू के लिए क्या नही लिखा जाय ? यही प्रश्न था। इस बारे मे सुरती साहब ने भी अत्यन्त आग्रह किया। ६ मार्च को दिन मे १० बजे हमलोग भावनगर से रवाना हुए और शाम ५॥ बजे महुआ पहुॅचे।

कालाय तस्मै नमः

आखिर मे क्या आशा लेकर महुआ से नोआखाली मे उस महायज्ञ मे भाग लेने के लिए गयी थी ? बापूने मुझे लिखा था : "करेंगे या मरेंगे" का सकल्प लेकर आओ !" लेकिन आखिर बापू बापू ही थे—दादा थे, माॅ थे, अपनी बच्ची को वे मरने कैसे दे सकते है ? स्वयं ही उन्होंने नोआखाली के इस महायज्ञ मे अपना बलिदान देकर यह मन्त्र सिद्ध कर लिया और उसके बाद ही मुझे महुआ मे आने दिया। यहाॅ आने के बाद आज पहली बार मुझे यह भास हुआ कि अब इस जगत् मे पुनः बापू मिल नही सकते ! वर्षभर पूर्व १९४६ के दिसम्बर मे मै इसी महुआ से कलकत्ता गयी थी और सन् १९४८ की मार्च के इस पहले सप्ताह मे दुनिया की एक विश्ववन्द्य विभूति की जीवन-लीला समाप्त करके ही वापस आयी ! 'कालाय तस्मै नमः !'

सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य

	रु० न० पैसे
गीता-प्रवचन	१–२५ सजिल्द १–५०
शिक्षण-विचार	१–५०
सर्वोदय-विचार और स्वराज्य-शास्त्र	१–००
कार्यकर्ता-पाथेय	०–५०
भूदान-गंगा (छह खण्डों में) प्रत्येक	१–५०
ज्ञानदेव-चिंतनिका	१–००
भगवान् के दरबार में	०–२५
ग्रामदान	०–७५
शांति-सेना	०–५०
गुरुबोध	१–५०
भाषा का प्रश्न	०–२५
लोकनीति	१–२५
जय जगत्	०–२५
सर्वोदय-पात्र	०–२५
साम्य-सूत्र	०–३७
स्त्री-शक्ति	०–७५
धम्मपद	२–००
स्थितप्रज्ञ-लक्षण	०–२५
समग्र ग्राम-सेवा की ओर	३–५०
शासन-मुक्त समाज की ओर	०–५०
नयी तालीम	०–५०
सम्पत्तिदान-यज्ञ	०–५०
व्यवहार-शुद्धि	०–३७
गो-आन्दोलन क्यों ?	२–५०
गांधी अर्थ-विचार	१–००
गांधी समाज-व्यवस्था	२–५०
ग्राम-सुधार की एक योजना	०–७५
सर्वोदय-दर्शन	३–००
हिन्द स्वराज	०–५६

	रु० न० पै०
किशोरलाल भाई की जीवन साधना	२–००
सत्य की खोज	१–५०
माता-पिताओं से	०–३७
बालक सीखता कैसे है ?	०–५०
नक्षत्रों की छाया मे	१–५०
चलो, चले मगरौठ	०–७५
भूदान-गंगोत्री	२–५०
भूदान-आरोहण	०–५०
भूदान-यज्ञ : क्या और क्यो ?	१–५०
सफाई : विज्ञान और कला	०–७५
सुन्दरपुर की पाठशाला	०–७५
गो-सेवा की विचारधारा	०–५०
सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	०–२५
सर्वोदय-संयोजन	१–००
गांधी : एक राजनैतिक अध्ययन	०–५०
व्याज-बट्टा	०–२५
शोषण-मुक्ति और नव समाज	०–६२
समाजवाद से सर्वोदय	०–३७
गांधीजी क्या चाहते थे ?	०–५०
प्राकृतिक चिकित्सा-विधि	१–५०
बापू के पत्र	१–२५
कुष्ठ-सेवा	१–२५
स्मरणांजलि (जमनालाल बजाज)	१–५०
मेरा जीवन-विकास	०–५०
विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था	०–६३
प्यारे बापू (तीन खण्ड)	१–३७
यात्रा के पथ पर	०–५०